

सुधा त्रिपाठीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय
अन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभागको स्नातकोत्तर तह दोस्रो
वर्षको दसौं पत्रका प्रयोजनका लागि प्रस्तुत

शोधपत्र

शोधार्थी

उर्मिला सापकोटा

नेपाली केन्द्रीय विभाग

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

कीर्तिपुर, काठमाडौं

२०७०

सुधा त्रिपाठीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय
अन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभागको स्नातकोत्तर तह दोस्रो
वर्षको दसौं पत्रका प्रयोजनका लागि प्रस्तुत

शोधपत्र

शोधार्थी

उर्मिला सापकोटा

नेपाली केन्द्रीय विभाग

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

कीर्तिपुर, काठमाडौं

२०७०

शोध निर्देशकको मन्तव्य

प्रस्तुत सुधा त्रिपाठीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व शीर्षकको शोधपत्र त्रिभुवन विश्व विद्यालय मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय अन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभागकी छात्रा उर्मिला सापकोटाले स्नातकोत्तर तहको नेपाली विषयको दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि तयार पार्नुभएको हो । मेरा निर्देशनमा तयार पारिएको यस शोधकार्यबाट म पूर्णतः सन्तुष्ट छु र आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि विभाग समक्ष सिफारिस गर्दछु ।

मिति : २०७०।१२।१०

.....
सहप्रा. रमेश प्रसाद भट्टराई
नेपाली केन्द्रीय विभाग
त्रि.वि., कीर्तिपुर
काठमाडौं ।

त्रिभुवन विश्व विद्यालय

नेपाली केन्द्रीय विभाग

कीर्तिपुर

स्वीकृति पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय अन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभागका छात्रा उर्मिला सापकोटाले स्नातकोत्तर तह, दोस्रो वर्षको दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि तयार पनु भएको सुधा त्रिपाठीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व शीर्षकको शोधपत्र आवश्यक मूल्याङ्कन गरी स्वीकृत गरिएको छ ।

मूल्याङ्कन

१. विभागीय प्रमुख, प्रा.डा. देवी प्रसाद गौतम
२. शोध निर्देशक, सहप्रा. रमेश प्रसाद भट्टराई
३. बाह्य परीक्षक, डा. सावित्री मल्ल कक्षपती

हस्ताक्षर

.....
.....
.....

कृतज्ञता ज्ञापन

प्रस्तुत शोधकार्य मैले मेरो श्रद्धेय गुरु सहप्राध्यापक रमेश प्रसाद भट्टराईका निर्देशनमा तयार पारेकी हुँ । यो शोधकार्य पूरा नहुन्जेलसम्मको समयावधिमा मलाई दिनुभएको सल्लाह सुभावा र निर्देशनप्रति म उहाँलाई हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु । यो शोधकार्य लेखनलाई स्वीकृति प्रदान गरिदिनु हुने नेपाली केन्द्रीय विभागका विभागीय प्रमुख प्रा. डा. देवी प्रसाद गौतमप्रति पनि हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु । साथै शोधकार्यमा आएका समस्याहरूमा आवश्यक सल्लाह र सुभावा प्रदान गरी सहयोग गर्नुहुने नेपाली केन्द्रीय विभागका गुरुवर्गप्रति पनि हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्नु मेरो कर्तव्य ठान्दछु ।

मैले यो शोधकार्य तयार पार्दासम्मको लामो समयावधिमा मलाई भर्को नमानी आवश्यक सामग्री उपलब्ध गराई दिनुहुने शोधनायक मेरा आदरणीय गुरु प्रा.डा. सुधा त्रिपाठीप्रति हृदयदेखि नै हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु । त्यसैगरी शोधकार्यकै क्रममा आवश्यक सहयोग गर्नुहुने शोध नायककी छोरी जिगीषा भट्टराईप्रति पनि हार्दिक धन्यवाद व्यक्त गर्न चाहन्छु । मलाई विभिन्न समयमा अध्ययनका लागि सहयोग गर्नुहुने जीवनसाथी अमिर शाक्यप्रति हृदयदेखि नै हार्दिक आभार प्रकट गर्नुका साथै छोराछोरी र परिवारप्रति पनि कृतज्ञता प्रकट गर्न चाहन्छु ।

अन्त्यमा सामग्री सङ्कलनका क्रममा आवश्यक सहयोग पुऱ्याउने त्रि.वि. केन्द्रीय विभाग पुस्तकालयका कर्मचारीहरू, शोधकार्यको टङ्कनमा सहयोग गर्ने साइबर जोनप्रति म कृतज्ञ छु ।

मिति : २०७०/१२/१०

क्रमाङ्क: २८६७५

त्रि. वि. दर्ता नं.: ९७२७-९३

.....

उर्मिला सापकोटा

एम.ए.दोस्रो वर्ष

नेपाली केन्द्रीय विभाग

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

कीर्तिपुर, काठमाडौं ।

सङ्क्षिप्तकृत सूची

| | | |
|-----------|---|------------------------|
| आइ.ए. | : | इन्टरमिडिएट अफ आर्टस् |
| उप.प्रा. | : | उप-प्राध्यापक |
| एस.एल.सी. | : | स्कूल लेभल सर्टिफिकेट |
| गा.वि.स. | : | गाउँ विकास समिति |
| डा. | : | डाक्टर |
| त्रि.वि. | : | त्रिभुवन विश्वविद्यालय |
| ने.के.वि. | : | नेपाली केन्द्रीय विभाग |
| पृ. | : | पृष्ठ |
| बी.ए. | : | व्याचलर अफ आर्टस् |
| वि.सं. | : | विक्रम सम्बत् |
| सम्पा. | : | सम्पादन |
| स्व. | : | स्वर्गीय |

विषय सूची

| | पृष्ठ संख्या |
|---|--------------|
| पहिलो परिच्छेद : शोध परिचय | १-१२ |
| १.१ विषय परिचय | १ |
| १.२ समस्या कथन | २ |
| १.३ शोधकार्यको उद्देश्य | ३ |
| १.४ पूर्वकार्यको समीक्षा | ३ |
| १.५ अध्ययनको औचित्य | १० |
| १.६ क्षेत्र र सीमा | ११ |
| १.७ शोधविधि | ११ |
| १.८ शोधपत्रको रूपरेखा | १२ |
| दोस्रो परिच्छेद : सुधा त्रिपाठीको जीवनी | १३-४४ |
| २.१. पुख्यौली र पारिवारिक पृष्ठभूमि | १३ |
| २.२ जन्मस्थान, जन्ममिति र नाम | १५ |
| २.३ बाल्यकाल | १५ |
| २.४ शिक्षादीक्षा | १५ |
| २.४.१ अक्षरारम्भ र प्रारम्भिक शिक्षा | १५ |
| २.४.२ महाविद्यालय तथा विश्व विद्यालय अध्ययन | १६ |
| २.४.३ विद्यार्थी जीवन र व्यक्तिगत सङ्घर्ष | १६ |
| २.४.३.१ शैक्षिक सङ्घर्ष | १७ |
| २.४.३.२ पेसागत सङ्घर्ष | २० |
| २.४.३.३ साहित्यिक सङ्घर्ष | २१ |
| २.४.३.४ राजनीतिक सङ्घर्ष | २३ |
| २.४.३.५ आर्थिक सङ्घर्ष | २५ |
| २.४.३.६ सांस्कृतिक सङ्घर्ष | २८ |
| २.५ विवाह, दाम्पत्य जीवन र सन्तान | ३० |

| | | |
|---|---|--------------|
| २.५.१ | विवाह | ३० |
| २.५.२ | दाम्पत्य जीवन | ३० |
| २.५.३ | सन्तान | ३२ |
| २.६ | बसोबास | ३३ |
| २.७ | जीवन दर्शन र साहित्य सम्बन्धी दृष्टिकोण | ३३ |
| २.८ | रुचि, स्वभाव तथा शारीरिक व्यक्तित्व | ३६ |
| २.९ | साहित्यिक लेखनको प्रारम्भ र प्रभाव | ३८ |
| २.९.१ | प्रकाशित कृतिहरू | ४० |
| २.९.२ | अनुसन्धान | ४० |
| २.९.३ | अन्य साहित्यिक सक्रियता | ४१ |
| २.१० | विभिन्न सङ्घ संस्थामा आवद्धता | ४१ |
| २.११ | पुरस्कार तथा सम्मान | ४२ |
| २.१२ | भ्रमण | ४४ |
| तेस्रो परिच्छेद : सुधा त्रिपाठीका व्यक्तित्वका पाटाहरू | | ४५-५४ |
| ३.१ | साहित्यकार व्यक्तित्व | ४६ |
| ३.१.१ | निबन्धकार व्यक्तित्व | ४६ |
| ३.१.२ | समालोचक व्यक्तित्व | ४७ |
| ३.१.३ | कवि व्यक्तित्व | ४८ |
| ३.१.४ | नाटककार व्यक्तित्व | ४९ |
| ३.१.५ | कथाकार व्यक्तित्व | ४९ |
| ३.१.६ | अनुसन्धाता व्यक्तित्व | ५० |
| ३.१.७ | सम्पादक व्यक्तित्व | ५१ |
| ३.२ | शिक्षक तथा प्राध्यापक व्यक्तित्व | ५२ |
| ३.३ | समाजसेवी व्यक्तित्व | ५२ |
| ३.४ | अन्य साहित्यिक सक्रियता | ५४ |

| | |
|--|--------|
| चौथो परिच्छेद : सुधा त्रिपाठीको साहित्यिक यात्रा, चरण विभाजन र प्रवृत्ति | ५५-६६ |
| ४.१ चरण विभाजनको औचित्य र आधार | ५५ |
| ४.१.१ चरण विभाजन | ५८ |
| ४.१.१.२ पहिलो चरण (वि.सं. २०३४ - २०४९) | ५८ |
| ४.१.१.२ दोस्रो चरण : वि.सं. २०५०- वि.सं. २०६४ | ६० |
| ४.१.१.३ तेस्रो चरण : वि.सं. २०६५ देखि हालसम्म | ६२ |
| पाँचौँ परिच्छेद : सुधा त्रिपाठीका कृतित्वको अध्ययन र विश्लेषण | ६७-१७८ |
| ५.१ सुधा त्रिपाठीका निबन्धहरूको विश्लेषण | ६७ |
| ५.१.१. 'बादल, धर्ती र आस्थाहरू' निबन्ध सङ्ग्रहको विश्लेषण | ६७ |
| ५.१.१.१ विषयवस्तु | ६७ |
| ५.१.१.२ भाषा | ७१ |
| ५.१.१.३ शैलीशिल्प | ७३ |
| ५.१.१.४ सन्देश | ७४ |
| ५.१.२. 'जीवनसूत्र र स्वप्नाभास' निबन्ध सङ्ग्रहको विश्लेषण | ७५ |
| ५.१.२.१ विषयवस्तु | ७५ |
| ५.१.२.२ भाषा | ७९ |
| ५.१.२.३ शैली शिल्प | ८१ |
| ५.१.२.४ सन्देश | ८२ |
| ५.१.३ 'सुट, टाई र सुँगुर' निबन्ध सङ्ग्रहको विश्लेषण | ८३ |
| ५.१.३.१ विषयवस्तु | ८३ |
| ५.१.३.२ भाषा | ८८ |
| ५.१.३.३ शैली | ९० |
| ५.१.३.४ सन्देश | ९० |
| ५.१.४ 'अमर सिर्जना' निबन्ध सङ्ग्रहको विश्लेषण | ९१ |
| ५.१.४.१ विषयवस्तु | ९२ |
| ५.१.४.२ भाषा | ९८ |
| ५.१.४.३ शैली शिल्प | ९९ |

| | |
|--|-----|
| ५.१.४.४ सन्देश | १०१ |
| ५.१.५ 'चेलीबेटीका बेग्लै कुरा' निबन्ध सङ्ग्रहको विश्लेषण | १०१ |
| ५.१.६ निष्कर्ष | १०३ |
| ५.२ सुधा त्रिपाठीका समालोचनाहरूको विश्लेषण | १०४ |
| ५.२.१ 'दृष्टिचौतारी' समालोचनाको विश्लेषण | १०४ |
| ५.२.२ 'भूपिका कवितामा व्यङ्ग्यालङ्कार-चेतना' समालोचनाको विश्लेषण | १२३ |
| ५.२.३ 'नारीवादको कठघरामा नेपाली साहित्य' समालोचनाको विश्लेषण | १२७ |
| ५.२.४ 'नेपाली उपन्यासमा नारीवाद' समालोचनाको विश्लेषण | १४४ |
| ५.२.५ 'नारीवादी सौन्दर्य चिन्तन' समालोचनाको विश्लेषण | १५० |
| ५.२.६ 'सिर्जनवृत्तका परिधिमा गुणराज उपाध्याय' कृतिको विश्लेषण | १५४ |
| ५.२.७ 'महिला समालोचक र नेपाली समालोचना'को विश्लेषण | १५९ |
| ५.२.८ निष्कर्ष | १६१ |
| ५.३ सुधा त्रिपाठीका नाटकको विश्लेषण | १६२ |
| ५.३.१ 'निःश्वासका गुजुल्टाहरू' नाटक सङ्ग्रहको विश्लेषण | १६२ |
| ५.३.१.१ विषयवस्तु | १६२ |
| ५.३.१.२ चरित्र चित्रण | १६५ |
| ५.३.१.३ परिवेश | १६५ |
| ५.३.१.४ सन्देश | १६६ |
| ५.३.१.५ द्वन्द्व | १६६ |
| ५.३.१.६ रङ्गमञ्चियता | १६७ |
| ५.३.१.७ संवाद | १६८ |
| ५.३.१.८ भाषा शैली | १६८ |
| ५.३.१.९ निष्कर्ष | १६९ |
| ५.४ सुधा त्रिपाठीका कविताको विश्लेषण | १६९ |
| ५.४.१ 'जिराहा वर्तमान' कविता सङ्ग्रहको विश्लेषण | १६९ |
| ५.४.१.१ भाव/विषयवस्तु | १७० |
| ५.४.१.२ भाषा | १७४ |

| | |
|---------------------------------------|---------|
| ॡ.ॡ.ॡ.३ शैलीशिल्प | १७ॡ |
| ॡ.ॡ.ॡ.ॡ विम्ब प्रतीक | १७ॢ |
| ॡ.ॡ.ॡ.ॡ संरचना | १७ॣ |
| ॡ.ॡ.ॡ.ॢ निष्कर्ष | १७ॣ |
| छैटौं परिच्छेद : उपसंहार तथा निष्कर्ष | १७ॡ-१ॢॢ |
| सन्दर्भ सामग्री | १ॢॣ-१ॢॢ |

पहिलो परिच्छेद

शोध परिचय

१.१ विषय परिचय

सुधा त्रिपाठीको जन्म दार्जिलिङको मिरिक बस्तीमा २०१५ साल जेठ महिनामा भवानी त्रिपाठी र जगन्नाथ शर्मा त्रिपाठीकी ज्येष्ठ पुत्रीका रूपमा भएको हो । विद्यालय अध्ययनदेखि नै कविता लेखनबाट आफ्नो साहित्यिक यात्रा सुरु गरेकी त्रिपाठीको प्रज्ञा पत्रिकामा 'मेरा व्यथाहरूको गीत' शीर्षकको कविता २०३४ सालमा प्रकाशित भएपछि सार्वजनिक साहित्य यात्राको प्रारम्भ भएको थियो । प्रारम्भदेखि नै कविता, कथा, निबन्ध, नाटक र समालोचनाजस्ता विविध विधामा कलम चलाउँदै आएकी त्रिपाठी हालसम्म पनि साहित्यिक सिर्जन क्षेत्रमा साधनारत रहेकी छन् । शिक्षित पारिवारिक पृष्ठभूमिमा हुर्किएकी त्रिपाठी परिवारलाई नै साहित्यिक प्रेरणाको स्रोत मान्छिन् । नेपाली विषयमा स्नातकोत्तर सहित विद्यावारिधि पुरा गर्न सफल त्रिपाठी विशेष गरेर नारी पक्षधरता अँगालेर कलम चलाउने विशिष्ट नारी प्रतिभा हुन् । उनका हालसम्म थुप्रै साहित्यिक कृतिहरू प्रकाशित भइसकेका छन् । ती साहित्यिक कृतिहरूमा बादल, धर्ती र आस्थाहरू (निबन्ध सङ्ग्रह २०५०), जीवनसूत्र र स्वप्नाभास (निबन्ध सङ्ग्रह २०५३), निःश्वासका गुजुल्टाहरू (नाटक सङ्ग्रह २०५४), सुट, टाई र सुँगुर (व्यङ्ग्य निबन्ध सङ्ग्रह २०५९), दृष्टिचौतारी (समालोचना सङ्ग्रह २०५८), भूपिका कवितामा व्यङ्ग्यालङ्कार चेतना (समालोचना २०५८), अनिवार्य नेपाली व्याकरण र रचना (सहलेखन २०५३), दोलखा दर्पण (दोलखा जिल्लाको इतिवृत्त २०५०, सहसम्पादन), जिराहा वर्तमान (कविता सङ्ग्रह २०६७) आदि रहेका छन् । यसका साथै उनका केही फुटकर समालोचनाहरू पनि प्रकाशित भएका छन् । ती हुन् "सुलोचना महाकाव्यको सामाजिक पक्ष", मनोरमा (२०३५), "सुलोचना महाकाव्यको प्रकृतिप्रेम," मनोरमा (२०३६), "पहलमानसिंहको साहित्यिक व्यक्तित्व र देन," पहलमानसिंह स्वार स्मृतिग्रन्थ (२०३९) "व्यञ्जनावृत्तिका सन्दर्भमा भूपिको 'हामी' कवितामा पाइने व्यङ्ग्यदृष्टि" उन्नयन (२०४६) आदि रहेका छन् । त्यसैगरी रेडियो नेपालतिर एक दर्जनजति र पत्रपत्रिकातिर तिन दर्जनजति गरी जम्मा चार दर्जन समालोचना प्रकाशित गराएकी त्रिपाठी साहित्यमा सिर्जना मात्र नभई समालोचना पनि आवश्यक भएको कुरा व्यक्त गर्छिन् ।

उनका विभिन्न साहित्यिक विधामा हाम्रो जस्तो पितृसत्तात्मक संरचनाको यस निर्माणाधीन समाजमा नारीहरू हरेक क्षेत्रमा पछाडि परेका छन्, जबसम्म समाजमा आफूले चाहेको जस्तो परिवर्तन हुँदैन तबसम्म नारी र पुरुष बिचको लैङ्गिक विभेदको अन्त्य हुँदैन तथा स्वस्थ समाजको निर्माण पनि हुन सक्दैन भन्ने समाजवादी चिन्तन व्यक्त भएको पाइन्छ ।

सुधा त्रिपाठी एक विशिष्ट समालोचकका साथै उत्कृष्ट सर्जक पनि भएका कारण उनका विषयमा खोज तथा अनुसन्धान गर्दा पाठ्य पुस्तक, साहित्यिक विधा पढ्ने विद्यार्थी एवं पढाउने शिक्षक दुवै थरिलाई थप जानकारी समेत प्राप्त भई पाठ्य पुस्तकबारे अध्ययन विश्लेषण र मूल्याङ्कन गर्न सरल र सुगम बनाउने उद्देश्यले सुधा त्रिपाठीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययनलाई शोधपत्रको विषयका रूपमा लिइएको छ ।

१.२ समस्या कथन

नेपाली साहित्यमा अनवरत रूपले लामो समयदेखि साहित्य साधना गर्दै आएकी विशिष्ट नारी प्रतिभा सुधा त्रिपाठी कविता, नाटक, कथा, निबन्ध र समालोचनाका क्षेत्रमा विशिष्ट स्थान राख्न सफल भएकी छन् । बहुमुखी प्रतिभाकी धनी साहित्यकार त्रिपाठीले समसामयिक लेखन, महिला र संस्कृतिसँग सम्बन्धित लेखन एवं बालकथा लेखनतर्फ पनि कलम चलाएकी छन् । नेपाली साहित्यमा सङ्ख्यात्मक तथा गुणात्मक दृष्टिले उनको महत्त्वपूर्ण योगदान रहेको छ । विभिन्न साहित्यिक विधामा योगदान पुऱ्याउने त्रिपाठीका बारेमा यसभन्दा पहिले उनको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको समग्र रूपमा विस्तृत र सुव्यवस्थित तरिकाले अध्ययन भएको पाइँदैन । नेपाली साहित्यको समालोचनाको इतिहास लेखनका क्रममा केही साहित्यकारहरूले उनका बारेमा सामान्य चर्चा मात्र गरेका छन् । यस्ता व्यक्तित्वको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको प्राज्ञिक शोधबाट सत्यापन गरिनुपर्ने ज्ञानात्मक विषय हो । यो शोधकार्य यही मूल समस्यासँग सम्बन्धित निम्न लिखित प्रश्नहरूको प्राज्ञिक समाधान पहिल्याउने कार्यमा केन्द्रित रहेको छ ।

क) सुधा त्रिपाठीका जीवनीका विभिन्न सन्दर्भहरू के कस्ता छन् ?

ख) सुधा त्रिपाठीको व्यक्तित्वका के कस्ता पक्षहरू छन् ?

ग) सुधा त्रिपाठीको कृतित्व के कस्तो रहेको छ ?

प्रस्तुत शोधकार्य माथि उल्लिखित समस्याहरूमा केन्द्रित रहेको छ । त्यसैले प्रस्तुत शोधकार्यमा सुधा त्रिपाठीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको समग्र अध्ययन गर्ने प्रयास गरिएको छ ।

१.३ शोधकार्यको उद्देश्य

प्रस्तुत शोधकार्यको उद्देश्य शोधकार्यमा सङ्केत गरिएका समस्याहरूको समाधान खोज्नु रहेको छ । त्यसकारण साहित्यकार सुधा त्रिपाठीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको निरूपण गरी नेपाली साहित्यमा उनको योगदानको मूल्याङ्कन गर्नु नै यस शोधकार्यको उद्देश्य रहेको छ । प्रस्तावित शोध समस्याको समाधानमा आधारित उद्देश्यहरू यस प्रकार रहेका छन् :

- क) सुधा त्रिपाठीको जीवनीका विविध सन्दर्भहरूको खोजी गर्नु ।
- ख) सुधा त्रिपाठीको व्यक्तिगत विविध पक्षहरू पत्ता लगाउनु ।
- ग) सुधा त्रिपाठीको कृतित्वका बारेमा अध्ययन गर्नु ।

१.४ पूर्वकार्यको समीक्षा

सुधा त्रिपाठी विभिन्न समविषम परिस्थितिमा पनि नेपाली साहित्य लेखनमा निरन्तर समर्पित नाम हो । त्यसैले उनका बारेमा व्यापक अध्ययन र अनुसन्धान हुन आवश्यक छ तर उनका बारेमा आजसम्म जे जति अध्ययन भएका छन् ती त्रिपाठीका जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वका सर्वाङ्गीण अध्ययनका क्रममा अपूर्ण नै देखिन्छन् । उनका बारेमा प्रकाशित केही लेख तथा टीका टिप्पणी विविध पुस्तक तथा पत्रपत्रिकामा छरिएर रहेका छन् । ती लेख वा टीका टिप्पणीमा सुधा त्रिपाठी नेपाली विविध विधामा साधनारत छन् भन्ने कुराको सामान्य उल्लेख मात्र गरिएको छ । त्रिपाठीका व्यक्तित्व र कृतित्वका बारेमा चर्चा गरिएका केही सन्दर्भहरू यहाँ प्रस्तुत गरिएका छन् :

ज्ञानेन्द्र विवशले 'परिस्थिति' (२०५२ भदौ २९ गते) पृ. ४, मा 'कृति परिचय' अन्तर्गत "बादल, धर्ती र आस्थाहरू" शीर्षकको लेखमा सोही निबन्धको विश्लेषण गर्दै त्रिपाठीलाई आफ्ना कृतिमार्फत जीवनका अनुभूतिका दृश्य र भावनाका तरेलीलाई सिलसिलाबद्ध आकृतिमा ढालेर नयाँ परिदृश्यका स्वाद चखाउन सफल निबन्धकारका रूपमा चिनाएका छन् ।

लेखनाथ भण्डारीले 'विमोचन' (वर्ष १५, अङ्क १, २०५२ चैत), पृ. ८ मा 'सुखको पहिलो सर्त नै समझदारी' शीर्षकमा त्रिपाठीलाई साहित्य क्षेत्र र प्राध्यापन क्षेत्रमा समान रूपमा सक्रिय भई अधि बढ्ने विशिष्ट व्यक्तित्वका रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् ।

सूर्य खड्काले 'लोकपत्र' (२०५३ पुस २० गते) पृ. ४, को 'साक्षात्कार' अन्तर्गत 'यात्रा निबन्धकार अर्थात् साहित्यकार सुधा त्रिपाठी' शीर्षकको लेखमा त्रिपाठीलाई महिला हक र हितका कुरा उठाउने र कालो धन जम्मा गर्ने व्यक्ति वा सङ्घ संस्थाहरूको आलोचना गर्ने कट्टर आलोचकका रूपमा विश्लेषण गरेका छन् ।

कृष्ण प्रसाद पराजुलीले **जीवनसूत्र र स्वप्नाभास** निबन्ध सङ्ग्रह (२०५३) मा प्रकाशित 'जीवनसूत्र र कृतित्वको सामान्य परिचय दिंदै कृतिभिन्नका प्रत्येक निबन्धका आत्मिक भाव र विषयवस्तुलाई उजागर गरी त्रिपाठीको शैलीशिल्पको ओजपूर्ण प्रस्तुतिको चर्चा गरेका छन् ।

सूर्य खड्काले 'गौरी शङ्कर', (वर्ष १, अङ्क १, २०५४, कार्तिक ३०-मङ्सिर १५) पृ. १०, मा 'महिला हस्ताक्षर' अन्तर्गत 'दोलखाकी छोरी अर्थात् साहित्यकार सुधा त्रिपाठी' शीर्षकको लेखमा त्रिपाठीलाई निष्पक्ष समालोचनाकी पक्षपातीका रूपमा चिनाउँदै सुधाले यही कारणले पनि पटक पटक विवादमा पर्नुपरेको कुरा उल्लेख गरेका छन् ।

सुलोचना मानन्धरले 'बुधवार साप्ताहिक' (२०५५, कार्तिक २५ गते) पृ. ३ को 'सम्पूर्ण आकाश' अन्तर्गत **निःश्वासका गुजुल्टाहरू**को एक दृष्टि शीर्षकको लेखमा **निःश्वासका गुजुल्टाहरू** कृतिलाई साहित्यमा अनावश्यक रूपमा महिलाहरूलाई निरीह बनाई खिल्ली उडाएर एक पक्षीय ढङ्गले सस्तो रूपमा प्रयोग भइरहेको महिलाको अस्तित्वका अगाडि नयाँ चुनौतीका रूपमा प्रस्तुत भएको कृतिका रूपमा प्रस्तुत गरेकी छन् भन्ने उल्लेख गरेकी छन् ।

कमला पराजुलीले 'समकालीन' (२०५६, पौष ८ गते), पृ. ६, मा 'नारी संवेदना र **निःश्वासका गुजुल्टाहरू**' शीर्षकको लेखमा **निःश्वासका गुजुल्टाहरू** कृतिको विश्लेषण गर्दै त्रिपाठीलाई सामाजिक कुचक्रमा जेलिएका नारीका उत्पीडनलाई समाजका सामु प्रस्तुत गर्न सफल नटककारका रूपमा चिनाएकी छन् ।

विदुर कोइरालाले 'मधुपर्क', (वर्ष ३२, अङ्क ९, २०५६ माघ), पृ. २४/२५, मा 'नारी स्वतन्त्रताको आवाज' शीर्षकको लेखमा त्रिपाठीलाई नेपाली समाजको पुरुष प्रधान संरचनाबाट

सृजित पर्दालाई उघार्न प्रत्येक नारीलाई उत्प्रेरित गर्न कोसिस गर्ने नाटककारका रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् ।

गीता कार्कीले 'सत्याग्रह', (२०५७, पुस १० गते), पृ. ६ मा 'स्रष्टा र सिर्जना' अन्तर्गत "व्यक्तित्व परिचय" शीर्षकको लेखमा सुधा त्रिपाठीको व्यक्तित्वको परिचय दिंदै त्रिपाठीलाई साहित्यिक व्यक्तित्व, साहित्येतर व्यक्तित्व, सामाजिक व्यक्तित्व र राजनीतिक व्यक्तित्वलाई डोच्याउँदै जीवनको यात्रा मार्गमा निरन्तर अगाडि बढ्ने स्रष्टा पथिकका रूपमा परिचित गराएकी छन् ।

मनोज दाहालले 'कान्तिपुर' (२०५८, चैत २४ गते, पृ. 'च') मा "नोराजस्ता पात्र भएनन्" शीर्षकको लेखमा त्रिपाठीलाई नेपाली साहित्यमा महिला साहित्यकार र महिला पात्रको अवस्था आकलन गर्न कस्सिएकी समालोचकका रूपमा चिनाएका छन् ।

डा. रामदयाल राकेशले 'नेपाल' (वर्ष २, अङ्क १५, २०५८ चैत, पृ. ५०) मा "दृष्टिचौतारीको चियोचर्चा" शीर्षकको लेखमा त्रिपाठीको 'दृष्टिचौतारीको विश्लेषण गर्ने क्रममा त्रिपाठीलाई नारीवादी लेखिकाका रूपमा चिनाउँदै 'लेखिका' र 'समिक्षक' जस्तो विशेषण मन नपराउने साहित्यकारका रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् ।

युवराज नयाँघरेले 'गोरखापत्र' (२०५९, असार १ गते, पृ. 'ख') मा 'नयाँ कृति' अन्तर्गत "दृष्टिचौतारी" शीर्षकको लेखमा दृष्टिचौतारी कृतिको सामान्य परिचय दिने क्रममा त्रिपाठीलाई खरो आलोचक र प्रखर चिन्तक व्यक्तित्वका रूपमा चिन्न सकिने विचार प्रस्तुत गरेका छन् ।

'राजधानी' पत्रिकाको सम्पादकीयमा (२०५९, साउन ७ गते पृ. ६) मा "भूपिको व्यङ्ग्यचेत" शीर्षकको लेखमा त्रिपाठीको भूपिका कवितामा व्यङ्ग्यालङ्कार चेतना शीर्षकको कृति सार्वजनिक भएको जानकारी दिँदा भूपिको व्यङ्ग्य चेतनाको विशद् अध्ययन हुनु आवश्यक भएको र त्यसलाई त्रिपाठीको यस कृतिले केही योगदान दिनेछ भन्ने आशा व्यक्त भएको छ ।

कमल सुवेदीले 'कान्तिपुर' (२०५९, पुस गते, पृ. ७) मा "हो भूपि ! जीउन भन् गाह्रो रहेछ" शीर्षकको लेखमा भूपिको सामान्य परिचय दिंदै त्रिपाठीलाई भूपिले आफैले भोग्नु परेका पीडा र युगीन विसङ्गतिहरूलाई व्यङ्ग्यका रूपमा ग्रहण गर्दै भावुकता र कल्पनात्मक आदर्शलाई भन्दा जीवनको यथार्थ पक्षको अपेक्षा गर्ने निबन्धकार तथा समालोचकका रूपमा चिनाएका छन् ।

यादव भट्टराईले 'छलफल' (२०६०, जेष्ठ २५ गते, पृ. ६) मा समीक्षा अन्तर्गत "सुधा त्रिपाठीको कलम र भूपिको कवित्व" शीर्षकका लेखमा भूपिका कवितामा व्यङ्ग्यालङ्कार चेतना कृतिको विश्लेषण गर्ने क्रममा त्रिपाठीलाई अनुसन्धानात्मक, विश्लेषणात्मक र समालोचनात्मक प्रस्तुति र विषयवस्तुसँग सम्बन्धित पक्षको सफल निरूपण गर्न सक्षम समालोचकका रूपमा चिनाएका छन् ।

गोविन्द गिरीले 'गोरखापत्र' (२०६०, कार्तिक १ गते, पृ. 'ख') मा "सुट, टाई सुँगुर" शीर्षकको लेखमा सुट, टाई र सुँगुर निबन्धको विश्लेषण गर्ने क्रममा त्रिपाठीलाई देशमा विद्यमान यावत् समस्याहरू अभाव, महँगी, अशिक्षा, विकास, बेरोजगारी र यिनका यावत् परिणामहरू एवं राजनीतिक अस्थिरता र त्यसले उब्जाएका तमाम विकृति विसङ्गतिमाथि व्यङ्ग्य गर्ने निबन्धकारका रूपमा चिनाएका छन् ।

राजेन्द्र सुवेदीले नेपाली समालोचना : परम्परा र प्रवृत्ति (२०६१, पृ. २६६) मा सुधा त्रिपाठीलाई नारी अस्मिता र जागरणका सन्दर्भलाई अध्ययनको विषय क्षेत्र बनाउने सक्रिय साहित्यिक कार्यकर्ताका रूपमा चिनाउँदै समाजले भोगेका सामाजिक र सांस्कृतिक जटिलता, अमानवीय व्यवहार र विडम्बनायुक्त संस्कार आज सिङ्गै मानवलाई दुर्नियतिमा धकेल्ने कारक हुन् भन्ने अठोट त्रिपाठीका समालोचनामा पाउन सकिन्छ भन्ने धारणा प्रस्तुत गरेका छन् ।

करूण ढकालले 'सिसार' (वर्ष २६, विशेष अङ्क, २०६४ वैशाख, पृ. ९२-९६) मा "बादल, धर्ती र आस्थाहरू : समाजशास्त्रीय पठन" शीर्षकको समालोचनामा त्रिपाठीलाई नेपाली जातीय स्वभाव, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक पक्षको चित्रण गर्ने निबन्धकारका रूपमा चिनाएका छन् ।

घनश्याम शर्माले 'गरिमा' (वर्ष २८, अङ्क ३, २०६६ फागुन, पृ. ११७) मा "मौलिक सिर्जनाको सँगालो" शीर्षकभित्र अमर सिर्जना कृतिको सामान्य चर्चा गर्ने क्रममा त्रिपाठीलाई महिलाका अत्यन्त संवेदनशील पक्षहरूको सूक्ष्मतम विश्लेषण गर्ने निबन्धकारका रूपमा चिनाएका छन् ।

सङ्गीत श्रोताले 'नयाँपत्रिका' (२०६६, असोज ३० गते, पृ. ६/७) मा "अमर सिर्जना : आमाजस्ता निबन्ध" को शीर्षकको लेखमा त्रिपाठीलाई दैनिक जीवनका घटना र पारिवारिक विषय टपक्क टिपेर निबन्ध बनाउन सक्ने निबन्धकारका रूपमा प्रस्तुत गर्दै राजनीतिक-सामाजिक

रूपान्तरणका लागि मरिमेटने र सामान्य सन्दर्भ र मुलायम भाषालाई माध्यम बनाएर मौलिक ढङ्गले सन्देश सम्प्रेषण गर्ने निबन्धकारका रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् ।

ज्ञानु अधिकारीले 'समकालीन' (वर्ष १९-२०, अङ्क १, २०६६ माग-फागुन-चैत, पृ. १४३-१५२) मा समालोचना अन्तर्गत "नेपाली नारी समालोचनाको विकास प्रक्रिया" शीर्षकको लेखमा सुधा त्रिपाठीलाई साहित्यमा नारीहरूको स्थान र योगदानबारे अध्ययन गर्न रुचि राख्ने सशक्त नारी हस्ताक्षरका रूपमा उल्लेख गर्दै समालोचकीय सचेतताका साथ यस क्षेत्रमा लाग्ने नारीवादी साहित्यकारका रूपमा चिनाएकी छन् ।

बिन्दु शर्माले 'गरिमा' (वर्ष २८, अङ्क ७, २०६७ असार, पृ. १०७-११०) मा "अमर सिर्जनामा मातृत्वबोध" शीर्षकको समालोचनात्मक लेखमा त्रिपाठीलाई किनारामा पारिएको मातृत्वबोधलाई स्थापित गराउने सफल निबन्धकारका रूपमा चिनाउँदै अमर सिर्जना निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका रचनामा लैङ्गिकता, राष्ट्रियता र मातृत्वबोधजस्ता अमूर्त तथा भावनात्मक विषयका साथै राजनीतिक द्वन्द्व, सामाजिक विकृतिजस्ता यथार्थ विषय समेटिएका कुरा उल्लेख गरेकी छन् ।

राम प्रसाद ज्ञवालीले मार्क्सवादी साहित्य र जनयुद्धको सौन्दर्य (२०६७, पृ. ७०३-७१७) नामक ग्रन्थमा "अमर सिर्जनामा निबन्धकार सुधा त्रिपाठीको निबन्धकारिता" शीर्षकको समालोचनात्मक लेखमा अमर सिर्जना निबन्धको विश्लेषण गर्दै जीवनबोध, समाजबोध र इतिहासबोधका सन्दर्भबाट उक्त निबन्ध सङ्ग्रहको विश्लेषण गरेका छन् ।

जयदेव गौतमले 'गोरखापत्र' (२०६७, वैशाख ४ गते, पृ. 'ख') मा "अमर सिर्जना" शीर्षकमा त्रिपाठीलाई राजनीति, समाज, साहित्य आदिमा मात्र नभई हाम्रो प्रकृति र मानसिकतामा व्यङ्ग्य प्रहार गर्ने सफल निबन्धकारका रूपमा चिनाएका छन् ।

अस्ट्रेलियाका अधिकारवादी वेनले 'अन्नपूर्ण पोष्ट' (२०६७, पुस २४ गते, पृ. ७) मा "डा. विनायक सेन र जिराहा वर्तमान" शीर्षकको लेखमा त्रिपाठीलाई वर्तमानमा टेकेर माटो छोएर भविष्यको कल्पना गर्ने कविका रूपमा चिनाएका छन् ।

मोहन वैद्य 'किरण'ले 'जनएकता' (२०६७, पुस १२-१७ गते, पृ. ४) मा "नारीवादी कि मार्क्सवादी?" शीर्षकको लेखमा जिराहा वर्तमान कविताको विश्लेषण गर्ने क्रममा त्रिपाठीलाई नारी अस्मितालाई उजागर गर्ने राष्ट्रिय स्वाधीनता लगायत मुद्दाहरू उठाउने र अरूको आलोचनालाई राम्ररी पचाउन सक्ने कविका रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् ।

बिन्दा मैनालीले 'गरिमा' (वर्ष २९, अङ्क ३, २०६७ फाल्गुण, पृ. १३६) मा "जिराहा वर्तमान भित्रको अन्तर्वस्तु" शीर्षकको लेखमा **जिराहा वर्तमान**को विश्लेषण गर्दै त्रिपाठीलाई पञ्चायत कालदेखि गणतन्त्र घोषणासम्मको ३० वर्षको अवधिमा तत्कालीन समाज विरुद्ध, यथास्थितिवाद विरुद्ध कविता लेख्ने कविका रूपमा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

हेमनाथ पौडेलले **जिराहा वर्तमान** कविता सङ्ग्रह (२०६७) मा प्रकाशित "जिराहा वर्तमानका कवितामा प्रतिविम्बित यथार्थ" शीर्षकको भूमिकामा त्रिपाठीलाई प्रगतिवादी साहित्यिक फाँटमा पात्र होइन समग्र बौद्धिक, प्राज्ञिक एवं साहित्यिक जगतमै समकालीन पुस्ताकी सशक्त नारी प्रतिभाका रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् ।

जिराहा वर्तमान कविता सङ्ग्रहका प्रकाशकद्वय जिगीषा र जिजीविषा (वि.सं. २०६७) ले पनि सोही कृतिको भूमिकामा सुधा त्रिपाठी बहुमुखी प्रतिभाशाली व्यक्तित्व भएको चर्चा गर्दै त्रिपाठी विशिष्ट साहित्यकार मात्र नभई कर्तव्यनिष्ठ प्राध्यापक, सशक्त महिलावादी चिन्तक, सामाजिक परिवर्तनका लागि आन्दोलनकारी, घर गृहस्थी सञ्चालन गर्ने असल गृहिणीका साथै हरेक क्षेत्रमा सङ्घर्ष गर्ने सङ्घर्षशील नारी प्रतिभाका रूपमा चिनाएका छन् ।

वन्दना ढकालले 'नयाँ पत्रिका' (२०६८ साउन २१ गते, पृ. ५) मा "साहित्यका सन्दर्भमा नारीवादी विमर्श" शीर्षकको लेखमा **नारीवादको कठघरामा नेपाली साहित्य** कृतिको विश्लेषण गर्ने क्रममा त्रिपाठीलाई साहित्य लेखनमा महिलाको उपस्थिति कमजोर छैन भनेर प्रमाण पेश गर्ने समालोचकका रूपमा चिनाएकी छन् ।

रत्न प्रजापतिले 'स्पेसटाइम' (२०६८ मंसिर २३ गते, पृ. २) मा पुस्तक अन्तर्गत "सम्प्रेषणीय समालोचनात्मक कृति : **दृष्टिचौतारी**" शीर्षकको लेखमा **दृष्टिचौतारी**को सामान्य चर्चा गर्ने क्रममा त्रिपाठीलाई आख्यानान्तात्मक सम्प्रेषणीयता प्रस्तुत गर्न सफल समालोचकका रूपमा चिनाएका छन् ।

गीता त्रिपाठीले 'गोरखापत्र' (२०६८ मङ्सिर २४ गते, पृ. ख) मा प्रकाशित "नयाँ कृति" शीर्षकको लेखमा त्रिपाठीको **नारीवादको कठघरामा नेपाली साहित्य** कृतिको टिप्पणी गर्दै त्रिपाठीको व्यक्तित्व र कृतित्वका बारेमा चर्चा गर्ने क्रममा त्रिपाठीका समालोचनात्मक रचनाहरूले पुरुष आधिपत्यको विरोध र सामाजिक रूढ पद्धतिको पुनः संरचनाका लागि विद्रोह र क्रान्तिचेतनाको आवश्यकताका साथै नारी अस्तित्व र समानताको खोजी मूल प्रवृत्तिका रूपमा अधि सारेका कुरा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

ओनसरी घर्तीले 'अभ्युत्थान', (अङ्क २, २०६९ असोज, पृ. ५२-५५) मा 'महिलाका लागि गतिलो खुराक' शीर्षकको लेखमा चेलीबेटीका बैंगलै कुरा कृतिको विश्लेषण गर्ने क्रममा त्रिपाठीलाई अन्याय र अत्याचारका विरुद्ध सबैभन्दा धारिलो र धमाकेदार विचारको हतियार लिएर जीवन मरणको लडाइँ लडिरहने साहसी योद्धाका रूपमा प्रस्तुत गर्दै स्वतन्त्रता र समानतामा आधारित परिवर्तनकारी र प्रगतिवादी प्रखर नेपाली साहित्यकारका रूपमा चिनाएकी छन् ।

कल्पना भण्डारीले 'गोरखापत्र' (२०६९ असोज २७ गते, पृ. 'ख') मा प्रकाशित 'नयाँ कृति' अन्तर्गत "त्रिपाठीका तिन नयाँ पुस्तक" शीर्षकको लेखमा सुधा त्रिपाठीको व्यक्तित्व र कृतित्वको सामान्य परिचय दिँदै उनका कृतिमा उदारवादी, मार्क्सवादी, समाजवादी, मनोविश्लेषणात्मक, उत्तर संरचनावादी र उत्तर आधुनिक नारीवादका सिद्धान्तलाई अङ्ग्रेजीका मूल ग्रन्थकै अध्ययनका आधारमा प्रस्तुत गरिएको छ भन्ने विचार प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सीता पन्थीले 'कान्तिपुर कोसेली' (२०६९ कार्तिक १८ गते, पृ. 'च') मा प्रकाशित पुस्तक परिचय अन्तर्गत "नारीवादी लेखनको नमुना" शीर्षकको लेखमा सुधा त्रिपाठीको सामान्य परिचयका साथ त्रिपाठीका कृतिमा नारीवादी समालोचनाको सिद्धान्त मात्र समेटिएको छैन, तिनमा पाश्चात्य जगत् एवं नेपालको समेत नारी जागरणको इतिहासको खोजी गरी उक्त जागरण कसरी नारी आन्दोलनमा रूपान्तरित भयो अनि त्यसले कसरी विश्वव्यापी रूप ग्रहण गर्‍यो भन्ने कुराको मिहीन प्रस्तुति गर्दै त्रिपाठीको नारीवादी सौन्दर्य चिन्तन नेपाली भाषामा आएको नारीवादी सिद्धान्तको पहिलो पुस्तक हो भनी विश्लेषण गरेकी छन् ।

निर्मलले 'गोरखापत्र' (२०६९ चैत १० गते पृ. 'ख') मा सिर्जनवृत्तका परिधिमा गुणराज उपाध्याय शीर्षकको पुस्तक समीक्षामा त्रिपाठीलाई कवि गुणराजका आधारभूत कृतित्व स्वरूप महाकाव्यकारिताको मूल्याङ्कन गर्दै नेपाली महाकाव्य परम्परामा गुणराजको स्थान पहिल्याई गुणराजको साहित्य यात्रा एवं प्राप्तिको मूल्याङ्कन र निष्कर्ष दिन सफल समालोचकका रूपमा चिनाएका छन् र गुणराजका बारेमा जान्न चाहनेका लागि र नेपाली भाषा साहित्यका विद्यार्थी तथा अध्येताका लागि सङ्ग्रहणीय पुस्तक बनेको कुरा समेत उल्लेख गरेका छन् ।

राजाराम गौतमले 'कान्तिपुर' (२०७० साउन १९ गते, पृ. छ) मा "महिला प्रा.डा.का पीडा" शीर्षकको लेखमा त्रिपाठीलाई त्रिविकै इतिहासमा एउटा नयाँ रेकर्ड बनाउन सफल प्राध्यापकका रूपमा चिनाएका छन् ।

देविका राईले नेपाली नारीवादी समालोचना (२०७०, पृ. २५७) मा “अमर सिर्जना भित्रको अमर सिर्जना” शीर्षकको समालोचनात्मक लेखमा अमर सिर्जना कृतिको परिचय दिंदै यसभित्रको नारीवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् ।

भरत कुमार साउदले नेपाली नारीवादी समालोचना (२०७०, पृ. २९३-३२०) कृतिभित्र “सुधा त्रिपाठीका नारीवादी निबन्धहरू” शीर्षकको समालोचनात्मक लेखमा त्रिपाठीलाई लैङ्गिक विभेद, नारी उत्पीडन र सङ्घर्षका विभिन्न पक्षहरूको वकालत गर्ने समालोचकका रूपमा चिनाएका छन् ।

राजेन्द्र सुवेदी र डा. लक्ष्मण प्रसाद गौतमले रत्न बृहत् नेपाली समालोचना (२०६८ पृ. २०८) मा सुधा त्रिपाठीलाई नारीवादी र प्रगतिवादी कोणबाट कृतिलाई हेर्ने, नारी समालोचनाको ऐतिहासिक सर्वेक्षण गर्ने, नारी सृजना र कृतिमा प्रयुक्त नारी पात्रमा केन्द्रित भएर समालोचना गर्ने समालोचकका रूपमा चिनाएका छन् ।

नर्मदेश्वरी सत्यालको शब्दका चिमालहरू (२०७०, पृ. ८५-९६) मा “जीवनसूत्र र स्वप्नाभासभित्र पौडिँदा” शीर्षकको समालोचनात्मक लेखमा त्रिपाठीको सामान्य परिचय दिंदै उनका जीवनसूत्र र स्वप्नाभास निबन्ध सङ्ग्रहका सबै निबन्धले जीवनको सूत्र बताइरहेका र अझ समष्टिमा भन्नुपर्दा निबन्धकार सुधामा फटाहालाई गाल्ने र सत्यपात्रलाई पगाल्ने सीप सुरक्षित रहेको कुरा उल्लेख गरेकी छन् । उनले सुधालाई कुख्यातलाई मास्ने र विख्यातलाई पोस्ने काममा सधैं कलम चलाइरहन आग्रह समेत गरेकी छन् ।

१.५ अध्ययनको औचित्य

प्रस्तुत शोधपत्रको अध्ययनबाट साहित्यकार सुधा त्रिपाठीलाई नेपाली साहित्यमा चिनाउने प्रयास गरिएको छ । यसै क्रममा नेपाली साहित्यको विकासमा उनले दिएको योगदानलाई व्यवस्थित रूपले प्रस्तुत गर्ने प्रयत्न गरिएको छ । त्रिपाठीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वमा विस्तृत अध्ययन, विश्लेषण र मूल्याङ्कन गरिएकाले यिनका बारेमा अध्ययन तथा अनुसन्धान गर्न चाहने जोसुकैलाई पनि यसबाट वस्तुगत जानकारी उपलब्ध हुनेछ । त्यसैगरी उच्च माध्यमिक तहको अनिवार्य नेपाली पाठ्यक्रममा त्रिपाठीलाई निबन्धकारका रूपमा अध्ययन गर्ने विद्यार्थीहरूका लागि समेत प्रस्तुत अध्ययन उपयोगी हुनेछ । उनका बारेमा आजसम्म विस्तृत अध्ययन हुन नसकेको परिप्रेक्ष्यमा यस शोधकार्यको औचित्यलाई स्वतः स्थापित गर्दछ ।

१.६ क्षेत्र र सीमा

प्रस्तुत शोधपत्रमा त्रिपाठीको जीवनी र व्यक्तित्वका विविध पक्षको अध्ययन गरिएको छ । त्यस्तै उनका प्रकाशित महत्त्वपूर्ण पुस्तक कृतिहरूको परिचयात्मक र विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत गर्दै उनका सम्पादित कृतिहरूको पनि परिचय दिने काम भएको छ । यहाँ त्रिपाठीका फुटकर निबन्ध र समालोचना रचनाहरूको समेत कालक्रमिक सूचि दिएर तिनीहरूको पनि अध्ययन गरिएको छ । यसका साथै विभिन्न पुस्तकमा छापिएका भूमिका आदिको पनि चर्चा गरिएको छ । यसै क्रममा पत्रपत्रिकामा प्रकाशित लेख रचनाहरूलाई यहाँ समावेश गरिएको छ ।

१.७ शोधविधि

सामग्री सङ्कलन विधि

प्रस्तुत शोधपत्रको तयारीका लागि पुस्तकालयीय अध्ययनलाई सामग्री सङ्कलनको मूल आधार बनाइएको छ । यस क्रममा साहित्यकार सुधा त्रिपाठीका कृतिहरू तथा उनका बारेमा लेखिएका सूचनात्मक टिप्पणीहरूको अध्ययन गरिएको छ । त्रिपाठीको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्व पक्षको अध्ययन गर्न शोधनायकसँगको भेटवार्ताद्वारा आवश्यक सामग्री जुटाइएको छ । यसका अतिरिक्त उनका घर परिवारका सदस्य तथा समवर्ती साहित्यिक मित्रहरूसँग भेटघाट गरी प्रश्नोत्तर विधिद्वारा जानकारी लिइएको छ । त्यसैगरी त्रिपाठीका सिर्जनात्मक कृति तथा सम्पादित कृतिका बारेमा लेखिएका भूमिका तथा मन्तव्यलाई पनि सहायक सामग्रीका रूपमा प्रयोग गरिएको छ ।

विश्लेषण विधि

प्रस्तुत शोधपत्रको विश्लेषणको प्रमुख आधार जीवनीपरक र कृतिपरक समालोचनालाई आधार बनाइएको छ । यहाँ परम्परित, सैद्धान्तिक र व्यावहारिक समालोचना पद्धतिको समेत उपयोग गरी तथ्यपरक र वस्तुनिष्ठ तरिकाले अध्ययन गरिएको छ ।

१.८ शोधपत्रको रूपरेखा

प्रस्तुत शोधपत्रलाई छः परिच्छेदमा विभाजन गरी निम्न लिखित शीर्षकहरू राखिएका छन् :

१. पहिलो परिच्छेद - शोधपत्रको परिचय
२. दोस्रो परिच्छेद - सुधा त्रिपाठीको जीवनी
३. तेस्रो परिच्छेद - सुधा त्रिपाठीको व्यक्तित्व
४. चौथो परिच्छेद - सुधा त्रिपाठीको साहित्यिक यात्रा, चरण विभाजन र प्रवृत्ति
५. पाँचौँ परिच्छेद - सुधा त्रिपाठीको कृतित्वको अध्ययन
६. छैटौँ परिच्छेद - उपसंहार

उपर्युक्त छवटा परिच्छेदहरूलाई आवश्यकता अनुसार विभिन्न शीर्षक र उपशीर्षकहरूमा विभाजन गरिएको छ ।

जिगीषा

जिजीविषा

(तालिका नं. १)

(सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी)

सुधा त्रिपाठीको जीवनी र व्यक्तित्व निर्माणमा पिता जगन्नाथ शर्मा त्रिपाठी र माता भवानी त्रिपाठी (पन्त) को प्रभाव र प्रेरणा परेको छ। उनका पिता जगन्नाथ त्रिपाठी संस्कृत साहित्य, भाषा विज्ञान, अनुवादकला, ज्योतिष, दर्शनजस्ता विषयका ज्ञाता थिए भने कुशल प्राध्यापन कलाका धनी पनि थिए। पण्डित व्यक्तित्व समेत रहेका त्रिपाठीको मूल विशेषता स्वाभिमानी, दानशीलता, कर्मशीलता तथा असल गुरु व्यक्तित्वका रूपमा स्थापित थियो (त्रिपाठी सं., २०६९)।

सुधा त्रिपाठीकी आमा भवानीले औपचारिक शिक्षा प्राप्त गरेकी होइनन्। साक्षरतासम्म बनेकी उनी सङ्घर्षशील नारीका रूपमा स्थापित हुन पुगेकी छन्। १४ वर्षका उमेरमा विवाह गरेकी भवानी १० सन्तानकी आमा बनेकी छन्। साना साना लालाबाला च्यापेर कहिले दार्जिलिङ, कहिले काठमाडौं त कहिले गाउँमा एकलै बस्न बाध्य उनलाई पारिवारिक पृष्ठभूमिमा कर्तव्य परायण, स्नेहशील ममतामयी आमाका साथै असल गृहिणीका रूपमा चिन्न सकिन्छ। सुधा त्रिपाठीकै शब्दमा “सङ्घर्षशील नारीका रूपमा मैले मेरी आमालाई चिनेकी छु। वास्तवमा मेरा पिता, मेरा भाइबहिनीहरू र मैले आजसम्म आफ्नो जीवनमा जे जति प्रगति गरेका छौं त्यस सफलतामा आमाको महत्त्वपूर्ण योगदान रहेको छ।” भन्ने कुरा अभिव्यक्त भएको छ।

सुधा त्रिपाठीका दुई बहिनी र पाँच भाइहरू रहेकोमा बहिनीहरूमध्ये उज्ज्वलाको जन्मेको दश वर्षमा नै मृत्यु भएको थियो भने शकुन्तलाले एम.ए. सम्म अध्ययन गरेकी छन्। लगभग दुई दशक शिक्षण व्यवसायमा रहेकी उनी हाल पुस्तक व्यवसायमा संलग्न रहेकी छन्।

उनका भाइहरूमध्ये विश्वनाथ जेठा हुन् । उनले आइ.ए सम्मको अध्ययन गरेर उनी खेती किसानीमा नै आफ्नो जीवन निर्वाह गरिरहेका छन् । कुमार उनका माहिला भाइ हुन् । उनी एम.कम.उत्तीर्ण छन् । उनी पनि आफ्नो जीवन निर्वाहका लागि पुस्तक व्यवसायमा संलग्न छन् । अर्का साहिला भाइ डा.गणेशले भूगर्भ विषयमा विद्यावारिधि गरेका छन् तथा भूगर्भ तथा खानी विभागमा उपसचिव छन् । उनका काहिला भाइ डा. प्रशान्त मेडिकल विषयमा एम.डी. गर्दै छन् भने कान्छा भाइ निशान्त पनि मेडिकल विषयमा अमेरिकाको न्युयोर्कमा एम.डी. गरिरहेका छन् । निर्मला, सीता र कल्पना उनका बुहारीहरू हुन् भने दुई भाइको विवाह गर्न बाँकी नै रहेको छ (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

सुधा त्रिपाठीका श्रीमान् रमेश भट्टराई त्रि.वि. कीर्तिपुरमा सहप्राध्यापक छन् भने उनकी जेठी छोरी जिगीषा भट्टराई स्नातक र कान्छी छोरी जिजीविषा भट्टराई एघारमा अध्ययनरत छन् ।

२.२ जन्मस्थान, जन्ममिति र नाम

साहित्यकार सुधा त्रिपाठीको जन्म दार्जिलिङको मिरिक बस्तीमा वि.सं. २०१५ साल जेठ २८ गते मङ्गलबार भएको हो । उनको न्वारनको नाम थानेश्वरी हो भने राशि मीन हो ।

२.३ बाल्यकाल

सुधा त्रिपाठीको बाल्यकाल खासै सुखद् रूपमा बित्न सकेन । आफ्ना माता पितालाई आफ्नो बाल्यकालमा सँगै एकैसाथ नपाउँदा पनि उनको बाल्यकाल दुःखपूर्ण हुन गएको देखिन्छ । दार्जिलिङमा जन्मेकी त्रिपाठीले त्यहाँ आफ्नो बाल्यकालका चार वर्ष मात्र बताइन् । त्यसपछि उनी मामाघरमा दुई वर्षजति बसिन् । उनले पछि कक्षा आठसम्म आमाका साथमा आफ्नै पुख्यौली थलो दोलखाको सुनखानीमा नै अध्ययन गरिन् र केही समय त्यहीं बिताइन् । विद्यालय स्तरीय पढाइको बाँकी दुई अर्थात् कक्षा ९ र १० अध्ययनका सिलसिलामा उनी काठमाडौँ आइन् र पिताका साथ बिताइन् । यसरी कहिले आमाका साथमा र कहिले बुबाका साथमा र कहिले मामाघर, कहिले घर त कहिले डेरामा आफ्नो बाल्यकाल बिताएकी त्रिपाठी आर्थिक लगायत किशोरकालमा आमासँग रहन नपाउँदाका अनेकन् अप्ठेरासँग जुध्न बाध्य भएकी थिइन् जसका कारण पनि उनको बाल्यकाल खासै सुखद् हुन सकेन (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

२.४ शिक्षादीक्षा

२.४.१ अक्षरारम्भ र प्रारम्भिक शिक्षा

सुधा त्रिपाठीले तोतेबोली सिक्ने अवस्थामा पिता परदेशमा नै रहेकाले माताको न्यानो काखमा रहेर आमाबाट नै शिक्षाको आरम्भ गरेकी हुन् । उनी दार्जिलिङमा नै बस्दा विद्यालय त प्रवेश गरेकी हुन् तर त्यहाँ उनको शिक्षा सुरु नै भएन । पछि उनी आमासँग मामाघरमा आई दुई वर्ष बस्दा मामाघरमा नै कक्षा एक उत्तीर्ण गरेकी हुन् । वि.सं. २०२१ तिर कक्षा दुई प्रवेश गरेकी त्रिपाठीले दुई कक्षादेखि आठ कक्षासम्म उनकै पुख्र्यौली थलो दोलखाको सुनखानीमा रहेर शिक्षा आर्जन गरिन् । त्यतिखेरसम्म उनका पिता जगन्नाथ त्रिपाठी दार्जिलिङबाट पढाइ पुरा गरेर काठमाडौं आइसकेका थिए । उनी पनि पितासँगै बस्ने योजना बनाएर काठमाडौंस्थित ज्ञानेश्वर आइन् र मार्टियर्स मेमोरियल इङ्लिस स्कुलमा भर्ना भइन् । गाउँमा सरकारी स्कुलमा अध्ययन गरेकी त्रिपाठीले काठमाडौंको अङ्ग्रेजी माध्यमको बोर्डिङ स्कुलमा अरू विद्यार्थी सरह अङ्ग्रेजी विषय अध्ययन गर्न सकिनन् । नेपाली भाषाको मूल्याङ्कन नहुने र आफू अङ्ग्रेजी विषयमा कमजोर भएपछि उनलाई त्यहाँ पढ्न रुचि भएन र उनी महेन्द्र भवनमा कक्षा ९ मा भर्ना भइन् । त्यहाँबाट नै वि.सं २०३२ सालमा एस.एल.सी. तृतीय श्रेणीमा उत्तीर्ण गरिन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

२.४.२ महाविद्यालय तथा विश्व विद्यालय अध्ययन

शैक्षिक वातावरणमा हुर्किन सफल सुधा त्रिपाठीले आफ्नो पढाइलाई विद्यालय स्तरमै सीमित रहन दिइएनन् । उनी विद्यालय स्तरबाट पनि अगाडि बढ्दै गइन् । पद्मकन्या क्याम्पस बागबजारबाट नेपाली विषय लिई २०३५ सालमा आई.ए. र २०३७ सालमा बी.ए. पुरा गरिन् भने ३०३८ सालमा एम.ए. अध्ययनका लागि विश्व विद्यालय कीर्तिपुरमा भर्ना भइन् । २०४० सालमा कक्षामा सर्वोत्कृष्ट अङ्क हासिल गरी प्रथम श्रेणीमा एम.ए. उत्तीर्ण गरिन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

अध्ययनशील व्यक्तित्वकी धनी त्रिपाठी एम.ए. मा उत्कृष्ट नतिजा ल्याई उत्तीर्ण भएर पनि सन्तुष्ट हुन सकिनन् । त्यति बेलाको नेपाली समाजमा नारीलाई शिक्षा दिने असहज वातावरणलाई चिर्दै २०६७ सालमा औपचारिक शैक्षिक तहको सर्वोत्कृष्ट उपाधि विद्यावारिधि प्राप्त गर्न सफल

भइन् । आज उनलाई नेपाली विषयका लागि डाक्टर उपाधिले विभूषित गरिएको छ । उनी नेपाली समाजमा डा. सुधा त्रिपाठीका नामले परिचित छन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

२.४.३ विद्यार्थी जीवन र व्यक्तिगत सङ्घर्ष

मानव जीवन सङ्घर्षको पर्यायका रूपमा रहेको छ । त्यसमा पनि नेपाली समाजभित्र नारी भएर जन्मिएकी सुधा त्रिपाठीको जीवनलाई सङ्घर्षको ज्वलन्त नमुनाका रूपमा प्रस्तुत गर्न सकिन्छ । त्रिपाठी पितृसत्तात्मक रुढिवाद र अन्धविश्वासको घुम्टो ओढेर परम्परागत विवेकहीन मूल्य र मान्यता काखी च्यापी त्यसैका संरक्षणमा लागेको समाजका विरुद्ध सङ्घर्षशील रहेकी छन् । विवेकहीन र मूल्यहीन नियमका फलामे साङ्गलाभित्र बाँधिन पुगेकी नारीले आफ्नो हक, अधिकार र स्वतन्त्रताका लागि कस कसका विरुद्ध कति र कहिलेसम्म सङ्घर्ष गर्नुपर्ने हो भन्ने कुरा आफैँमा अनेकौँ प्रश्न बोकेर देखा परेको जटिल समस्या हो । यिनै समस्याको भारी बोकेर प्रतिकूल परिस्थितिका बिच पराधीनताका हजारौँ जङ्घार तर्न सक्ने दृढ शक्ति बोकेर आएकी त्रिपाठीको जीवन नै सङ्घर्ष सङ्घर्षको महासागर हुन पुगेको छ । उनका सङ्घर्षका विविध पाटाहरूलाई विभिन्न उपशीर्षकमा वर्गीकरण गरेर विश्लेषण गर्न सकिन्छ :

२.४.३.१ शैक्षिक सङ्घर्ष

नेपाली समाजमा पुरुषका अनुपातमा नारीले हरेक क्षेत्रमा बढी नै सङ्घर्ष गर्नुपर्ने परम्परा त्यतिबेलाको समयमा टड्कारो रूपमा देखा परेको थियो । २००७ सालबाट नेपालीका लागि शिक्षाको ढोका खुलेको भए पनि त्यसले गति नलिएको समयमा २०१५ सालमा छोरी भएर जन्मिएकी सुधा त्रिपाठीले शिक्षा आर्जन गर्ने वातावरण प्राप्त गर्नु भनेको उनका पिताले शिक्षा आर्जनका लागि गरेको शैक्षिक सङ्घर्षको प्रतिफल थियो । उनी अन्य परिवारमा जन्मेकी भए पनि सायद त्यसरी आफ्नो शिक्षालाई निरन्तरता दिन सक्दिन थिइन् होला । आजको वर्तमान परिवेशलाई हेर्दा अब्बै त ग्रामीण जनजीवन भोगेका छोरी, चेलीले निर्धक्क दिल फुकाएर पढ्ने अवसर प्राप्त गर्न सकेका छैनन् । निम्न मध्यम वर्गीय परिवारमा जन्मन पुगेकी त्रिपाठी त्यतिबेलाको निरङ्कुश तानाशाही पञ्चायती व्यवस्थाका समयमा गाउँमै बसेर अध्ययनलाई निरन्तरता दिनु चुनौतीकै विषय थियो ।

पुख्र्यौली घर एकातिर, जन्म अर्कातिर, न त व्यापार न त जागिर, जीविकोपार्जनको कुनै उपाय नअँगालेका पिता र औपचारिक रूपबाट पढ्ने अवसर प्राप्त गर्न नसकेकी माताकी पुत्रीका

रूपमा जन्मन पुगेकी त्रिपाठीको जन्म दार्जिलिङमा भए पनि बसाइ र अध्ययनका क्रममा कहिले काभ्रेको देउरालीस्थित मामाघर, कहिले दोलखा सुनखानीको पितृघर त कहिले काठमाडौंको डेरामा सरिरहनु पर्ने अवस्था पक्कै पनि सहज थिएन । उनले कक्षा एक मामाघरबाट पुरा गरे पनि कक्षा दुईदेखि कक्षा आठसम्म दोलखाबाट नै पुरा गरेकी थिइन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) । कक्षा पाँचमा पढ्दासम्म उनका पिता गाउँमा सँगै रहँदा उनलाई शिक्षा आर्जन गर्नमा कुनै समस्या आएन । कक्षा छमा पढ्दा उनका पिता गाउँ छोडी काठमाडौं आएपछि भने उनले गाउँमा विभिन्न समस्यासँग जुध्नुपयो । एकातिर बुबा नहुँदा कापी कलम किन्नेदेखि लिएर हरेक किसिमका आर्थिक समस्या थिए भने अर्कातिर आफ्ना कक्षाका सहपाठीहरूसँग उमेर नमिल्दा पनि उनलाई सानी देखेर सबैले हेप्ये । उनको पुस्तक—कापी च्यातिदिन्थे, कलम चोरी या फालिदिन्थे । शिक्षकलाई आफूमाथि भएको अत्याचार भन्न जान्थिन् तर उनीहरूले कुनै प्रतिक्रिया दिँदैनथे । त्यसले गर्दा उनीभित्र विद्रोहले जन्म लियो तर उनी दुःखी हुनु बाहेक अरू केही गर्न सकिदैनथिन् । चुपचाप सहेर अध्ययनलाई नै निरन्तरता दिइन् । फलस्वरूप कक्षा पाँचसम्म प्रथम हुँदै आएकी उनी कक्षा छमा पढ्दा (२०२६ सालमा) उनको प्रतिभा देखेर जिल्ला शिक्षा अधिकारीले उनलाई एक सय रूपैयाँ पुरस्कार स्वरूप दिएका थिए (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) । कक्षा सात र आठमा पढ्दा उनले आर्थिक र सामाजिक दुवै रूपबाट सङ्घर्ष गर्नुपरेको थियो भने विद्यालयमा सहपाठीहरूले दिएको उत्पीडनको फलस्वरूप उनी मानसिक रूपमा आहत बनेकी थिइन् । त्यस पश्चात् आन्तरिक विक्षोभका कारण उनको पढाइमा पनि शिथिलता देखा पर्न थाल्यो । कक्षा आठ पुरा भएपछि गाउँमा हाइस्कूल नहुँदा उनलाई पढाइमा समस्या सिर्जना भयो । धनीमानीका छोराछोरी पढ्नका लागि डेरा लिई सदरमुकाम बस्न थालेका थिए भने उनलाई आफू यसभन्दा माथि पढ्न पाउने हो वा होइन भन्ने मानसिक पीडाले पीडित बनाउँदै लगेको थियो । पिता जगन्नाथ त्रिपाठी शिक्षित भएका कारण नै आफू बेरोजगार भएकै अवस्थामा पनि उनलाई पढ्नका लागि काठमाडौं बोलाए ।

त्रिपाठी कक्षा ८ को पढाइपछि आमाको न्यानो काख छोडेर काठमाडौं आएकी थिइन् । सुनखानीको विद्यालयमा पढ्दाका उत्पीडनको कुण्ठा त उनीसँग जस्ताको तस्तै थियो नै । त्यसका अतिरिक्त काठमाडौं आएपछि उनी गाउँले केटी भएका कारणले सहरिया सहपाठीसँगका अप्ठेरा पनि उत्तिकै थपिएका थिए । यी सबै कुराको प्रभाव उनको पढाइमा परिरहेको थियो र प्रावि. तहसम्म उम्दा विद्यार्थी रहेकी उनी त्यसपछि भने नेपाली र संस्कृत बाहेकका विषयमा उम्दा विद्यार्थी बनिरहन सकिनन् तापनि उच्च शिक्षा प्राप्तिको स्वप्नमा भने उनी चुकेकी थिइन् । उनी त्यसका लागि हरतरहले समर्पित थिइन् । पिताका अभिभावकत्वमा डेरामा बस्दा घरायसी सम्पूर्ण

कार्यभारको जिम्मा लिएर नौ कक्षामा पढ्दापढ्दै आधा पढाइ सकेपछि उनी छात्रावासमा बस्न पुगिन् । किशोरावस्थामा प्रवेश गरेकी त्रिपाठीलाई पितासँग बस्ने वातावरण प्राकृतिक र मानसिक रूपबाट हेर्दा पक्कै पनि सहज थिएन । अन्तर्मुखी स्वभावकी त्रिपाठीले आफूमा देखिएका हरेक किसिमका शारीरिक वृद्धि, विकासका परिवर्तनमा आमाको साथ चाहेकी थिइन् तर त्यो उनले प्राप्त गर्न सकिनन् । शारीरिक परिवर्तनका कारणले मनभित्र देखा परेका हरेक किसिमका शङ्का, उपशङ्का, लाज र घृणा पालेर उनी एकलै पछि छात्रावासमा बस्न बाध्य भइन् ।

यसरी उनले छात्रावासमा नै रहेर एस.एल.सी. परीक्षा दिइन् । एस.एल.सी. परीक्षा दिएपछि भन् उनलाई थप समस्याले सताउन लागे । एकातिर एस.एल.सी. पछि आफू उच्च शिक्षा पढ्न पाउने या नपाउने चिन्ताले सताउँदै थियो भने अर्कातिर गाउँघरमा छिट्टै विवाह गरिदिने परम्परा अनुसार उनको पनि विवाहको चर्चा परिचर्चा चलिरहन्थ्यो । छोरीलाई पढाउनुपर्छ भन्ने मान्यता बोक्दै त्यस परम्परा विरुद्ध आमाबुबा नै सङ्घर्षरत रहेका हुनाले पनि उनी बी.ए. सम्मको पढाइलाई निरन्तरता दिन सफल भइन् । बल्लतल्ल दोधारमा रहेर बी.ए. सम्मको पढाइ त उनले पुरा गरिन् तर एम.ए पढ्ने समयमा पुनः उही समस्या आएर अगाडि तेर्सियो । पढाइमा अत्यन्त रुचि भएकी त्रिपाठीलाई एम.ए पढ्नका लागि आफैले खर्चको जोहो गर्ने विचार पनि नआएको होइन । त्यसका लागि उनले गाउँमै शिक्षण पेसा पनि अँगालिसकेकी थिइन् तर पढाउन सुरु गरेको १५ दिन नबित्दै एम.ए. मा अध्ययन गर्नका लागि बुबाले भर्ना गरिदिनुभयो भन्ने खबर पाउँदा उनमा खुसीको सीमा नै रहेन । यसरी हरेक कक्षा र हरेक तह पार गर्दाका क्षणमा उनलाई यसभन्दा माथि आफूले पढ्न पाउँछु वा पाउँदिन भन्ने एउटै समस्याले पिरोल्ने गथ्र्यो भने विवाहपछिको समयमा पनि पढाइलाई निरन्तरता दिन विभिन्न समस्या चुनौतीका रूपमा खडा थिए ।

सङ्घर्षशील नारी प्रतिभा त्रिपाठी जीवनमा चुनौती बनेर देखा परेका समस्यासित कहिल्यै डराइनन्, बरु यी समस्यालाई निर्धक्कसँग समाधान गर्दै अगाडि बढ्दै गइन् र यसबाट सफलता पनि प्राप्त गरिन् । जति पढ्दै जान्थिन् उति भन् भन् उनलाई पढाइप्रति रुचि जागदै जान्थ्यो मात्र होइन, सुनखानीमा पढ्दा साथीहरूबाट पाएको मानसिक उत्पीडनको प्रभाव पनि पातलिँदै थियो र पढाइमा पनि दिन परदिन प्रगति नै देखा पर्दै थियो । प्रत्येक अधिल्लो तहमा भन्दा पछिल्लो तहमा उनको पढाइ उम्दा बन्दै गएको थियो । प्रवेशिका तहमा तृतीय श्रेणीमा उत्तीर्ण भएकी उनले प्रमाणपत्र एवं स्नातक तहमा अत्यन्त थोरै अड्कले मात्र प्रथम श्रेणीमा टेक्न पाइन् भने स्नातकोत्तर तहमा त उनले नेपाली विषयमा सर्वोच्च अड्क हासिल गरिन् । त्यति मात्र होइन,

प्राध्यापक पदको प्रतिस्पर्धामा उनले त्रिभुवन विश्व विद्यालयकै इतिहासमा कसैले प्राप्त गर्न नसकेको अङ्क (२०० पूर्णाङ्कमा १९३.८) प्राप्त गरेर नयाँ कीर्तिमान समेत कायम गरिन् ।

स्नातकोत्तर उत्तीर्ण गरेपछि तुरुन्तै प्राध्यापन पेसा अँगालेकी त्रिपाठी त्यसको छ वर्षपछि मात्र वैवाहिक जीवनमा आबद्ध हुन पुगिन् । त्यस पश्चात् पारिवारिक जिम्मेवारी एकपछि अर्को गर्दै बढ्दै गए । त्यसपछि विद्यावारिधि गर्ने उनको अग्रिम धोको पनि समस्याकै रूपमा अगाडि तेर्सियो । एकातिर बालबच्चा स्याहारु पने पारिवारिक बन्धन थियो नै भने अर्कातिर प्राध्यापन पेसा अँगालेकी त्रिपाठीले जागिरको भूमिका पनि निर्वाह गर्नुथियो, साथसाथै आर्थिक सङ्घर्ष थियो तर पनि हरेक भूमिका र जिम्मेवारीलाई पूर्ण रूपबाट निर्वाह गर्दै उनले विद्यावारिधि गर्ने दृढ अठोट गरिन् तर यो अत्यधिक जिम्मेवारीयुक्त समय थियो । साहित्यिक-सामाजिक सङ्घ संस्थाप्रतिको दायित्व बढेको हुँदा त्यसका आयोजनामा हुने विभिन्न कार्यक्रममा उनी उपस्थित हुनुपर्ने, विभिन्न पत्रपत्रिकाहरूका लागि लेख लेखिदिनु पर्ने, प्राध्यापनका लागि बसोबास स्थलभन्दा निकै टाढाको विश्वविद्यालय पुग्नुपर्ने, बालबच्चादेखि घरायसी कामहरू भ्याउनुपर्ने जिम्मेवारी थियो । फेरि त्यसमा पनि आफूले विद्यावारिधि गर्न लागेको विषय नेपाली साहित्यका लागि बिल्कुलै कलम नचलेको विषय परेर पनि त्यसका लागि आवश्यक सामग्री नेपाली विषयमा नपाइने र शोधनिर्देशकको अङ्ग्रेजीको मूल ग्रन्थ नै हेर्नु भन्ने सल्लाह भएको हुँदा पश्चात्य साहित्यको कठिन भाषाभिन्न शब्द र वाक्य खोतल्दै अर्थ लगाउनका कठिनाइबाट मुक्ति पाउनका लागि पनि उनले यतातिर उठेका पाइलाहरूलाई बिचमै रोक्ने विचार गरिसकेकी थिइन् तर उनको मनले मानेन । बरु डेढ वर्षसम्म घरनजिकै डेरा लिएर बसिन्, विश्व विद्यालयले लिने अध्ययन बिदा लिइन् । घरायसी क्रियाकलापलाई केही छोट्याएर भए पनि उनले विद्यावारिधि भने पुरा गरेरै छाडिन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

२.४.३.२ पेसागत सङ्घर्ष

सुधा त्रिपाठीले एस.एल.सी. परीक्षा दिए लगत्तै गाउँमै गएर आफू पढेको पूर्व विद्यालयमा स्वयं सेवक भएर अध्यापन पेसा सुरु गरेकी थिइन् । त्यसपछि २०३७ सालतिर बी.ए. को परीक्षा सकेपछि पुनः गाउँमै बस्न गइन् । त्यस समयमा उनले खेतीपातीको काम गर्नुका साथै १५ दिनजति त्यसै विद्यालयमा पुनः शिक्षक भएर अध्यापन गरिन् । यसरी अध्यापनबाट नै आफ्नो पेसा सुरु गर्न पुगेकी त्रिपाठीले यस पेसालाई आफ्नो जीवन जिउने आधार बनाइन् । स्कुले जीवन पश्चात् लगत्तै अध्यापन पेसा अँगाले पनि मुख्य रूपमा भने नेपाली विषयमा स्नातकोत्तर तह अन्तर्गत दोस्रो वर्षमा अध्ययन गर्दा २०४० साल माघ महिनादेखि डिल्ली बजारमा रहेको कन्या क्याम्पसबाट आइ.ए. का

प्रथम र द्वितीय वर्षका विद्यार्थीहरूलाई एक वर्षसम्म पढाइ आफ्नो अध्यापन पेसालाई औपचारिक रूपबाट अँगालिन् । त्यसपछि २०४१ साल पुषबाट पद्मकन्या क्याम्पस बागबजारमा प्रमाणपत्र तहमा आंशिक प्राध्यापकका रूपमा पढाउन थालिन् । यतिबेलासम्म उनको एम.ए. पुरा भइसकेको थिएन । शोधपत्र सहित स्नातकोत्तर पुरा गरेपछि उनले वि. सं. २०४२ श्रावण महिनामा पद्मकन्या क्याम्पसबाट प्राध्यापन पेसामा अस्थायी नियुक्ति प्राप्त गरिन् भने भाद्र महिनादेखि कीर्तिपुर बहुमुखी क्याम्पस (त्रि.वि.) मा काजमा सरुवा भइन् । त्यही क्याम्पसमा २०४७ सालमा सहायक प्राध्यापक, २०५० सालमा उपप्राध्यापक, २०६६ सालमा सहप्राध्यापक र २०७० सालमा प्राध्यापक भएर हालसम्म पनि त्रिभुवन विश्व विद्यालय कीर्तिपुरमा नै कार्यरत छिन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

वि.सं. २०४० सालबाट नै औपचारिक रूपबाट प्राध्यापन पेसा अँगाल्न पुगेकी त्रिपाठीलाई त्यतिबेला जागिर पाउन आजको जस्तो प्रतिस्पर्धात्मक सङ्घर्ष गर्नुपर्ने स्थिति आएको थिएन । उनले सजिलैसँग आफ्नो योग्यता र अनुभवका आधारमा पदोन्नति प्राप्त गर्दै गएको थिइन् तर जागिर पाइसकेपछि २०५० सालमा आफ्नै एकजना सहकर्मी र विभागीय प्रमुखले त्रि.वि. पदाधिकारीलाई समेत प्रभावमा लिएर विभिन्न षड्यन्त्र रची आठ वर्षसम्म काम गरिरहेको क्याम्पसबाट सरुवा गरी भक्तपुर बहुमुखी क्याम्पसमा प्राध्यापन गर्न बाध्य पारियो । “त्यहाँ पढाउनुपूर्व नै विभागीय प्रमुख र आफूभन्दा जुनियर अस्थायी सहकर्मीले निराधार प्रतिशोधवश मैले खाइरहेको जागिर खोस्ने विचार गरी विभिन्न किसिमबाट अवरोध सिर्जना गरिरहेका थिए तर जति प्रयत्न गरे पनि उनीहरूले मेरो जागिर नै खोस्न त सकेनन् तर मलाई आफूले पढाइरहेको क्याम्पस छोड्न बाध्य गराई भक्तपुर बहुमुखी क्याम्पसमा सरुवा गराउन भने सफल भए ।” भन्ने विचार स्वयम् त्रिपाठीको रहेको छ ।

यसरी नारीलाई चुलोचौकोमै सीमित पारी आफू स्वतन्त्रसँग रमाउन चाहने पुरुषहरूले नारीले गरी खाएको देखी सहेनन् । नारीको प्रगतिमा पुरुषहरूलाई जलन र ईर्ष्या पैदा भयो जसको परिणाम स्वरूप उनलाई नारी भएका कारण आफूले खाईपाई आएको पेसा बचाउन पनि सङ्घर्ष गर्नुपरेको थियो तर उनी खराब पुरुषहरूको जालभेलबाट डराउने र पछि हट्ने नारी थिइनन् । त्यसैले सङ्घर्ष गरेर २०५२ सालमा प्रयत्नपूर्वक आफ्नो पूर्वस्थानमा फर्कन सफल भइन् । दुई वर्ष भक्तपुरमा प्राध्यापन गरे पनि त्यसपछि पुनः उनी कीर्तिपुर क्याम्पसमा नै स्थापित भइन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

२.४.३.३ साहित्यिक सङ्घर्ष

पितृसत्तात्मक समाजमा हुर्केका प्रत्येक नारीले समाजका हरेक क्षेत्रमा आफू स्थापित हुनका लागि कठोर सङ्घर्षका ढोकाहरू पार गर्दै अगाडि आउनु पर्ने हुन्छ । शैक्षिक क्षेत्रमा सङ्घर्ष गर्दै माथि उक्लिएपछि पनि स्वतन्त्र रूपबाट भावनात्मक विचारहरू पोख्न समेत उनीहरू वञ्चित रहेका हुन्छन् । कतिपय नारीहरू विवाहपछि साहित्यिक क्षेत्रबाट टाढा पुग्छन् भने कतिपय नारीहरू विवाहअघि नै साहित्यिक क्षेत्रबाट वञ्चित भई आफूना मनका भावनालाई भित्रभित्र गुम्ट्याई राख्न बाध्य हुने गरेका छन् तर पितृसत्तात्मक समाजभित्र जन्मन पुगेकी त्रिपाठीले शिक्षा आर्जनका क्रममा विभिन्न किसिमका सङ्घर्षबाट गुज्रनु परे पनि साहित्यिक क्षेत्रमा आउन न त विवाह अगाडि न त विवाह पछाडि अरू नारीले जसरी उनले घर परिवारबाट कुनै किसिमको सङ्घर्ष गर्नु परेन । **विद्वत्केशरी** उपाधिबाट विभूषित उनका साहित्यकार एवं प्राध्यापक पिता जगन्नाथ शर्मा त्रिपाठी र कवि, समालोचक र निबन्धकारका रूपमा प्रतिष्ठित उनका जीवनसाथी रमेश भट्टराई दुवै साहित्यिक पृष्ठभूमिबाट आएका व्यक्तित्व हुन् । उनीहरू दुवै साहित्यका विभिन्न कार्यक्रममा सहभागिता जनाउनुका साथै साहित्यका विभिन्न क्षेत्रमा कलम चलाउने भएका कारणले पनि उनलाई दुवैतिरबाट साहित्यका क्षेत्रमा आउन सहज वातावरण मिलेको देखिन्छ । त्यसैले पनि विद्यार्थी जीवनदेखि हालसम्म नै उनले साहित्यका विभिन्न विधामा रहेर साहित्यिक रचना गरी सम्मान र पुरस्कार प्राप्त गर्दै आएकी छन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

औपचारिक रूपमा २०३१ सालबाट नै साहित्य रचना गर्न सुरु गरेकी त्रिपाठीले २०३४ सालमा नै कविता प्रकाशन गरिसकेकी थिइन् । वि.सं. २०३७ तिर उनी गाउँमा बस्दा जब उनले मार्क्सवाद सम्बन्धी विभिन्न पुस्तकहरूको गहन अध्ययन गर्ने अवसर प्राप्त गरिन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) त्यसपछि उनको साहित्यप्रतिको भुकाउले मार्क्सवादी ऊर्जा पनि प्राप्त गर्दै गयो । उनले आफूले भोगेको वास्तविक जीवन र मार्क्सवादमा प्रस्तुत भएका मार्क्सवादी सिद्धान्तका धेरै पक्षहरू मिल्न पुगेपछि उनलाई यस वादप्रति आस्था र भुकाउ बढ्दै गयो । उनी यसै दृष्टिबिन्दुबाट प्रभावित भएर साहित्यका विभिन्न विधामा रचनाहरू प्रदान गर्दै गइन् ।

“आफूले वामपन्थी राजनीतिमा आस्था राखेदेखि नै यस सिद्धान्तमा रहेर साहित्य रचना गर्न थालेपछि आफूना साहित्यमाथि समाजको वक्रदृष्टि पर्न थालेको” तितो अनुभव त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् । देशमा पञ्चायती व्यवस्थाको वर्चस्व रहेको समयमा वामपन्थी विचारधारा राख्ने जो कोही व्यक्ति पनि समाज र देशकै दोषी ठहरिन्थ्यो । त्यसबाट जोगिएर हरेक स्रष्टाले साहित्यको

रचना गर्नुपर्ने बाध्यता रहेको थियो तर पञ्चायती व्यवस्था समाप्त भएपछि बहुदलीय व्यवस्थाको प्रादुर्भाव भए पनि समाजका हरेक क्षेत्रबाट साहित्यकार र त्यसमा पनि महिला साहित्यकारलाई हेर्ने दृष्टिकोण नै बेग्लै देखियो । त्यति हुँदाहुँदै पनि समालोचनात्मक लेखनमा महिला समालोचकको अभाव देखिएको अवस्थामा त्रिपाठीलाई गैरप्रगतिवादी संस्थाहरूबाट पनि समालोचना लेखिदिन एवं साहित्यिक कार्यक्रमहरूमा वक्ताका हैसियतले उपस्थित हुन आग्रह गरियो तर कुनै पनि काम लगाएपछि त्यसको प्रतिदान दिनुपर्छ भन्ने सोचाइ उनीहरूमा कहिल्यै आएन । अझ त्यसमा प्रगतिवादी साहित्यकारका जति स्तरीय लेख रचना भए पनि त्यस सम्बन्धी कुनै चर्चा परिचर्चा नगर्ने र तुरुन्तै छापी नदिने तर गैरवामपन्थी साहित्यकारका स्तरहीन रचना भए पनि प्रचार गर्ने र तुरुन्तै छापिने प्रवृत्तिका साथै पुरस्कार र मानसम्मानका क्रममा पनि लेखक वा समालोचनाको स्तरभन्दा पनि व्यक्ति र पार्टीका आधारमा प्रदान गरिने प्रवृत्तिप्रति साहित्यकार त्रिपाठी असन्तुष्ट छन् । त्यस्तै नेपाली साहित्यका फाँटमा प्रगतिवादी साहित्य र प्रगतिवादी साहित्यकारहरू सधैंभरि उपेक्षित र तिरस्कृत साहित्यकारभित्र परेको कुरा त्रिपाठीले अनुभव गरेकी छन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

अझ त्यसमा पनि एकातिर उनी आफू प्रगतिवादी साहित्यकार भएका नाताले र अर्कातिर नारीवादी साहित्यकार भएका नाताले दोहोरो उत्पीडनमा रहेको कुरा व्यक्त गरेकी छन् । उनका अनुसार “प्रगतिवादी साहित्यकार हुँदा गैरप्रगतिवादी साहित्यकारको मात्र उत्पीडन भोग्नुपर्थ्यो भने नारीवादी साहित्यकार हुँदा प्रगतिवादी साहित्यकार लगायत गैरप्रगतिवादी साहित्यकार र राजनीतिज्ञ व्यक्तित्वहरूको समेत उत्पीडन भोग्नु पर्ने बाध्यता छ । उनीहरू सबै साहित्यमा नारीवादी चिन्तन राख्नुलाई अपराधजस्तै मान्दछन् र सम्पूर्ण वर्गीय मुक्तिसँगै नारी मुक्ति, वर्ग सङ्घर्षसँगै नारीवादी सङ्घर्ष पनि पुरा हुने र त्यसका लागि छुट्टै सङ्घर्ष गरिरहनु अनावश्यक ठान्छन् । प्रगतिवादी स्रष्टाहरू नारीवादी चिन्तन अँगाल्नुलाई वैचारिक विचलन ठान्छन् ।” भन्ने धारणा व्यक्त गर्दै त्यसै कारणले पनि साहित्यको लेखन कर्म मेरा लागि बढी चुनौतीपूर्ण बन्न पुगेको छ र यही चुनौतीबाट नै मलाई साहित्य रचना गर्नका लागि ऊर्जा सङ्कलन गर्ने आधार प्राप्त भएको छ । यिनै चुनौतीहरूलाई आत्मसात् गर्दै अगाडि बढ्ने बानी परेका कारणले गर्दा पनि साहित्य लेखनबाट कहिल्यै विमुख हुनु परेको छैन, निरन्तर गति कायम रहेको छ ।” भन्ने चिन्तन पनि त्रिपाठीले आफ्ना साहित्यिक सङ्घर्षका क्रममा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

२.४.३.४ राजनीतिक सङ्घर्ष

साहित्यकार सुधा त्रिपाठीसँग अध्ययनमा निरन्तर रूपले लाग्ने बानी त थियो नै, त्यसबाहेक अन्य विभिन्न क्रियाकलापमा पनि उनको सहभागिता रहेको देखिन्छ । कक्षा छुट्टि नै विद्यार्थीहरूको हक र हितका लागि विद्यार्थीकै प्रतिनिधि भएर प्लेकार्ड सहित जुलुसमा अग्रसर रहेकी भए पनि पद्मकन्या क्याम्पस बागबजारमा बी.ए.मा अध्ययनरत रहँदासम्म राजनीतिका बारेमा खासै ज्ञान थिएन । २०३५।३६ सालमा भएको आन्दोलनमा राजनीतिक चासोभन्दा पनि साथीहरूको सङ्गतले उनी राजनीतिमा सहभागिता जनाउन पुगेकी थिइन् । त्यतिखेर न त उनमा राजनीतिक चेतना नै थियो न त राजनीतिक लगाव नै थियो । उनी साथीहरूको आग्रहका कारणले नै राजनीतिक आन्दोलनमा समावेश भएकी थिइन् । राजनीतिप्रतिको चेतना उनीभित्र नभए पनि विद्रोही भाव भने बाल्यकालदेखि नै उनीभित्र विद्यमान थियो । यही विद्रोही भाव र चेतनाले प्रकट हुनका लागि अवसर खोजिरहेको थियो तर पछि उनी राजनीतिक क्रियाकलापसँग नजिक हुँदै गएपछि उनीभित्रको विद्रोही भावनाले प्रकट हुने अवसर प्राप्त गर्‍यो । यस समयमा उनी साथीहरूका कारण ने.वि.सङ्घको निकट भएर आन्दोलनमा भाग लिन पुगेकी थिइन् भने बी.ए. पास भएर एम.ए. भर्ना हुनु अगाडिको लगभग १० महिनाको अवधिमा मार्क्सवादका विभिन्न पुस्तकहरूको गहन अध्ययन गर्ने मौका प्राप्त गरिन् । त्यसपछि भने उनी आफ्नो राजनीतिक चिन्तनलाई विल्कुलै परिवर्तन गर्न पुगिन् । आफ्नो जीवनका हरेक परिस्थिति र सङ्घर्षसँग मार्क्सवादी चिन्तनलाई तुलना गर्न पुगेकी त्रिपाठीले आफूले भोगेको सङ्घर्षपूर्ण जीवन सुहाउँदो राजनीतिका रूपमा मार्क्सवादी चिन्तनलाई प्राप्त गरिन् । त्यसपछि उनी वामपन्थी राजनीतिमा सक्रिय भएर लागिन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

सोही क्रममा २०४५।४६ सालको आन्दोलनमा पनि एकातिर साहित्यका लेखनका माध्यमबाट सक्रिय रहिन् भने अर्कातिर आन्दोलनमा सशरीर उपस्थितिका माध्यमबाट सक्रिय बनिन् । त्यसपछि प्रगतिशील प्राध्यापक सङ्गठनमा रही राजनीतिक क्रियाशीलता अँगालिन् । वि.सं. २०५२ मा देशमा जनयुद्ध प्रारम्भ भएपछि र त्यसका परिणामहरू विस्तारै देखिन थालेपछि त्यसप्रति कहिले आलोचना कहिले समर्थन जनाउन थालेकी थिइन् । २०५७ सालदेखि २०५९ सालसम्म देशको राजनीतिक गतिविधिमा आधारित भएर कान्तिपुर लगायत विभिन्न पत्रपत्रिकाहरूमा निरन्तर रूपले लेखहरू लेख्ने गरेकी थिइन् । उनका लेखनमा माओवादी पक्षका जनउपयोगी कामहरूको प्रशंसा गरेको देखेपछि एमालेका शीर्षस्थ नेताहरूले उनलाई ...जोगिएर लेख्नु है' भन्ने भाषा प्रयोग गरेपछि सङ्कटकाल चलिरहेको समयमा उनले एककासि राजनीतिक लेखन बन्द गरेकी थिइन् ।

त्रिपाठी प्रतिगमनकालीन राजनीतिक आन्दोलनमा प्रगतिशील लेखक सङ्घ, नागरिक समाज र प्राध्यापक सङ्गठनमा आवद्ध भएर सक्रिय भएकी थिइन् । यसै क्रममा पटक पटक पक्राउ परेकी थिइन् । त्यतिबेला पक्राउ पर्दा सोही दिन तुरुन्तै छुट्ने गर्थिन् तर पछि पक्राउ पर्दा उनी दुई हप्तासम्म थुनामा परिन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

यसरी पटक पटक पक्राउ खाएकी त्रिपाठी भूमिगत रूपमा रहेको माओवादी शान्ति वार्तामा आउने क्रममा प्राध्यापक, साहित्यकार, महिला अधिकारकर्मी र नागरिक समाजजस्ता विभिन्न भूमिकामा समेत सक्रिय रूपले अघि बढेकी थिइन् । त्रिपाठीले आफू २८ वर्षदेखि सक्रिय रही योगदान गरेको एमाले पार्टीले अपेक्षित राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूपान्तरण गर्न नसक्ने महसुस गरेपछि त्यस पार्टीलाई २०६५ सालमा त्याग गरी एमाओवादीप्रति समर्थन जनाउन थालेको कुरा समेत स्वयं त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छिन् ।

२.४.३.५ आर्थिक सङ्घर्ष

निम्न मध्यम वर्गीय किसान परिवारमा जन्मन पुगेकी सुधा त्रिपाठीको बाल्यकाल सङ्घर्षपूर्ण रहेको देखिन्छ । ठुलो परिवार, त्यसमा पनि आयआर्जन गर्ने बुबा मात्रै भएका कारण पनि उनले सधैं अभावग्रस्त जीवन बिताउन बाध्य हुनुपर्थो । उनी गाउँको विद्यालयमा पढ्दा न त कहिल्यै गोडामा जुत्ता चप्पल लगाउन पाउँथिन् न त गतिला लुगा नै उनका शरीरमा हुन्थे । आफूना खाली गोडा र सस्ता लुगा देखेर धनीमानीका परिवारबाट आएका साथीहरूले उनलाई हेला गर्थे, घृणा र उपहास गर्थे । अभावै अभावमा जीवन बिताउन बाध्य भएकी त्रिपाठी छ कक्षामा पढ्दा उनका पिता काठमाडौँमा बेरोजगार थिए । पिता बेरोजगार भएपछि उनले कक्षा छोडेर पढाइलाई निरन्तरता दिन र शुल्क तिर्न सकिनन् जसका कारण उनलाई विद्यालयबाट निष्काशित गर्ने अवस्था समेत सिर्जना हुन पुगेको थियो तर बुबाले आफूले पढाएको 'त्यस विद्यालयमा आफ्नो लिन बाँकी तलबबाट नै छोरीको फिस तिर्नु' भन्ने चिठी विद्यालयलाई पठाएपछि मात्रै पुनः उनले त्यस विद्यालयमा आफ्नो अध्ययनलाई निरन्तरता दिन पाएकी थिइन् । त्यस समयमा उनीसँग न त विद्यालयमा भर्ना गर्न पैसा थियो, न त आवश्यक किताब कापी किन्न नै पैसा थियो । अति नै आवश्यक पुस्तक किन्न समेत उनलाई ज्यादै कठिनाइ परेको थियो । उनी गाउँको विद्यालयबाट पढाइ पुरा गरेर काठमाडौँ पढ्न आउने बेलामा समेत पिता बेरोजगार नै रहेका कारण गाउँको बसाइमा मात्र नभई सहरको बसाइमा पनि आर्थिक कठिनाइ भोग्नु परेको बाध्यता त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छिन् ।

बहिनी उज्ज्वला एक्कासि बिरामी भएर २०२९ सालमा काठमाडौं आउँदा खर्चको अभावका कारण बुबाले उचित उपचारसम्म गराउन सक्नु भएन । बहिनी उपचार नपाएर अकालमा नै मर्न पुगिन् । अझ ऊ बितिसकेपछि उसको लास उठाउने समेत पैसा नभएपछि पैसा खोज्न आफूलाई नै चिष्टी बोकाएर पठाउनु भएको कुरा त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छिन् । घर परिवार यस्तो अभावग्रस्त परिस्थितिमा गुञ्जिरहेको अवस्थामा पनि काठमाडौंको राम्रो विद्यालयमा पढ्ने वातावरण त्रिपाठीले प्राप्त गरेकी थिइन् । क्याम्पस पढ्न सुरु गरेपछि पनि कहिले आफैले शुल्क तिरे र कहिले जेहेनदार छात्रवृत्ति प्राप्त गरेर एम.ए. सम्मको अध्ययन पुरा गरेकी उनले क्याम्पसको पढाइ अवधिभर आफूलाई कठिन लाग्ने अङ्ग्रेजी विषयको किताब मात्रै किनेकी थिइन् भने अन्य बाँकी विषयहरूका लागि कक्षामा नोट टिपेकै भरमा पढेर उत्तीर्ण गरेकी थिइन् । त्यसका अतिरिक्त पुस्तकालयबाट सहयोग लिने गरेको, नोट र खेसा गर्दा पनि दायाँबायाँ, तलमाथि कतै पनि ठाउँ खाली नराख्ने गरी लेखेको र कापीको अभाव भएको त्यस समयमा साहित्य लेख्दा खेर गएका कागजहरू बटुलेर लेख्ने बानी परेको कुरा त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छिन् । उनी अहिले पनि साहित्यको रचना गर्दा एकापट्टि प्रयोग गरिसकेको कागजको अर्कोपट्टि लेख्दा आफूलाई सहज लाग्ने गरेको अनुभव समेत स्वयं उनले व्यक्त गरेकी छिन् ।

अभावै अभावमा हुर्केको त्रिपाठीको जीवनमा विवाहपछि पनि आर्थिक सङ्घर्षले निरन्तरता पाइ नै रह्यो । यो आर्थिक सङ्घर्षमा भने उनीभित्र रहेको स्वाभिमानको महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेको छ । विवाहपछिका समयमा अधिकांश नारीहरू हेपिनुको मुख्य कारण श्रीमान्को पैतृक सम्पत्ति उपभोग गर्नुले नै हो भन्ने धारणा राख्ने त्रिपाठीले आफ्नो जीवनमा श्रीमान्को पैतृक सम्पत्तिको उपभोग कहिल्यै गरिनन् । जस्तोसुकै आर्थिक सङ्घर्ष गर्न तयार रहेकी उनले परिवारबाट हुन सक्ने आर्थिक अधीनस्थतालाई सहने हिम्मत जुटाउन सकिनन् । त्यसैले पनि श्रीमान् र आफ्ना हातमा स्नातकोत्तर तहका एक एकवटा प्रमाणपत्र मात्र हुँदा पनि पैतृक सम्पत्तिको एक रत्ति पनि लोभ गरिनन् । आफ्नो स्वाभिमान गुम्ने डरले बरु रातको १२/१ बजेसम्म विभिन्न काम गर्न तयार भइन् तर अरूका अगाडि कहिल्यै हात फैलाइनन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) । दुवैजनाको कर्मले खान लाउन ठिक्क पुग्ने अवस्थामा उनले घरमा काम गर्ने मान्छे राख्न सम्भव थिएन । उनी आफैले घरको सम्पूर्ण काम भ्याएर दिनभरि कलेजमा काम गर्दै राती अबेरसम्म बसेर एस.एल.सी. र आइ.ए., बी. ए.का कापीहरू काट्ने, प्रुफ हेर्ने गरेकी थिइन् भने उनका श्रीमान् पार्टटाइम काम गर्ने र ट्युसन पढाउने गर्थे । उनी अहिले यसरी दिन रात परिश्रम गरेर एक एक थोपा पसिनाको मूल्य सञ्चित गरेर जग्गा किनी घर बनाएर आनन्दसँग सुविधा सम्पन्न किसिमले बसेकी छिन् । सकेसम्म

पैसा बचत गर्दा तलबबाट आएको पैसाबाट घरखर्च कहिल्यै नचलाएको र अन्य कमाइबाट घर व्यवहार धानेको कुरा पनि उनले व्यक्त गरेकी छन् ।

आफू मरेर अरूलाई जीवन दिने, अरूलाई खुवाएर आफू अघाउने स्वाभिमानी नारीभिन्न सुधा त्रिपाठीलाई पनि राख्न सकिन्छ । अभावका कारण कहिलेकाहीं त उनका मनमा यसो कसैले खाना खान बोलाउँदा घरको एक छाक खाना भए पनि बच्यो भन्ने विचार आउँथ्यो । उनलाई आफ्नो अभावपूर्ण जीवनमा बिहान खाए, बेलुका के खाऊँ भन्ने स्थिति नै त देखा परेन तर कञ्जुस्याइँ भने गर्नुपर्थ्यो तर उनी कहिल्यै आर्थिक अभावबाट डराइनन् । हार मानेर कहिल्यै सङ्घर्षबाट पछि हटिनन् । सायद आफ्नो स्वाभिमानप्रति कहिल्यै शिर नभुकाउने, मिहिनेती र परिश्रमी माता पिताकी पुत्री भएका कारणले पनि होला जीवनमा देखा परेका भीषण सङ्घर्षसँग उनी कहिल्यै डराइनन् । उनी जुन काम गर्दा पनि मरिमेटेर गर्ने गर्थिन् । मन लगाएर कुनै पनि काम गर्ने बानी भएकाले पनि एकै बसाइमा समालोचना, नाटक लगायत अन्य विभिन्न लेखहरू पुरा गर्थिन् । शारीरिक रूपबाट अस्वस्थ रहँदा पनि आफ्नो मन आँटिलो पारेर हरेक कार्यमा अग्रसर हुने त्रिपाठी कसैको अपमान सहेर बस्न चाहँदैनन् । बरु जीवनमा जति धेरै दुःख सहन पनि तयार हुन्छिन् । उनलाई यस दुःखको भवसागरमा सधैं साथ दिने उनका जीवनसाथी रमेश भट्टराईप्रति गर्व गर्छिन् । अभै पनि उनी दुईवटी छोरीहरूलाई आत्मनिर्भर र आफूजस्तै स्वाभिमानी बनाउन सङ्घर्षशील रहेकी छन् । परिवारका लागि आफ्नो सम्पूर्ण जीवन समर्पण गर्ने त्रिपाठीले आफ्नो विद्यावारिधिको अध्ययनका क्रममा आफूले कमाएको तलब समेत आफ्ना लागि खर्च गरिनन् । त्यो तलब उनले सधैं घरपरिवारकै खर्चका लागि छुट्याएर राखिन् । सानातिना अतिरिक्त आमदानीका भरमा उनले विद्यावारिधिको खर्च जुटाइन् । सानातिना कुराले पनि आफ्नो स्वाभिमानमा धक्का लागेको सहन नसक्ने त्रिपाठी जीवनभर स्वाभिमानका लागि नै सङ्घर्षरत रहिन् । उनी जीवनमा जति सङ्घर्ष गर्नुपरे पनि दुःख गर्नुपरे पनि यस दुःख र सङ्घर्षबाट प्राप्त गरेको सफलताबाट आत्म सन्तुष्टि प्राप्त गर्छिन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

२.४.३.६ सांस्कृतिक सङ्घर्ष

परम्परागत मूल्य मान्यतालाई आँखा चिम्लेर अनुसरण गर्दै अगाडि बढेको पितृसत्तात्मक समाजमा जन्मिएकी सुधा त्रिपाठी समाजमा विद्यमान लैङ्गिक विभेदजन्य सांस्कृतिक पक्षका विरोधमा अगाडि बढेकी छन् । समाजमा जति पनि परम्परागत संस्कृति छन्, ती पुरुष पक्षीय रहेका छन् । धर्म र संस्कृतिले पुरुषलाई मालिक, परमेश्वर र ईश्वरका रूपमा परिचित गराएका छन् भने नारीलाई तिनै धर्म संस्कृतिले अस्तित्व विहीन पत्नी, शक्तिहीन दासी, परिचारिका र नोकर्नीका रूपमा परिचित गराएको छ, भन्ने विचार प्रस्तुत गर्न पुगेकी त्रिपाठीले नारी कहिल्यै पुरुषका स्थानमा पुग्न सकिदैन र पुग्न हुँदैन भन्ने सामाजिक संस्कृतिलाई चुनौती दिएर अगाडि बढेकी छन् । उनले अरू नारी वा अन्य व्यक्तिजस्तो धर्म र परम्पराका नाममा पुरुषले नारीमाथि गरेको शोषण र दमनको विरोध मात्रै गरेकी छैनन्, आफ्नो व्यवहारमा पनि उतारेकी छन् । उनी श्रीमान्लाई पति परमेश्वरका रूपमा पूजा र आराधना गर्दिनन् बरु जीवनसाथीका रूपमा सम्मान र माया गर्छिन् । सुधा यस्ता मूल्य मान्यतामा रूपान्तरण गर्दै यसमा आमूल परिवर्तन ल्याउने जीवनको मूल उद्देश्य बोकेर अगाडि बढिरहेकी छन् ।

त्रिपाठी समाजमा विद्यमान धार्मिक पक्ष पटककै रुचाउँदिनन् । उनका विचारमा धर्मले समाजमा लैङ्गिक विभेदजन्य संस्कृतिलाई संरक्षण दिने भएकाले र सामन्ती संस्कृतिलाई त्यही धर्मले थपेरहेकाले ती सन्दर्भसँग सम्बन्धित धार्मिक पक्षको विरोध गर्दै तिनलाई जरैदेखि उन्मूलन नगरेसम्म समाजमा जातीय विभेदजन्य संस्कृति समाप्त नहुने र समतामूलक समाजको निर्माण गर्न सकिँदैन भन्ने रहेको छ (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) । एकातिर पितृसत्तात्मक संस्कृतिको विरोध गर्ने र वैज्ञानिक जीवनशैली अनुसरण गर्दै जीवनका सम्पूर्ण क्रियाकलाप अगाडि बढाउने त्रिपाठी समाजमा विद्यमान कुराहरू वैज्ञानिक किसिमले पुष्टि भएमा मात्र स्वीकार गर्ने विचार व्यक्त गर्दछिन् । नयाँ संस्कृतिको स्थापनातर्फ क्रियाशील त्रिपाठी विवाहित महिलाहरूले विशेष गरेर रातो रङ मात्र लगाउनुपर्छ भन्ने मान्यताको विरोध गर्दै उनीहरूले आफूलाई मन परेका जुनसुकै रङ पनि लगाउन सक्छन् भन्ने विचार व्यक्त गर्दछिन् भने आफूलाई रङहरूमध्ये सेतो रङ मनपर्ने र त्यही रङ लगाउन विशेष मन पर्ने कुरा समेत व्यक्त गर्दछिन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

समाजमा रहेको सांस्कृतिक स्वतन्त्रता पुरुषलाई मात्र होइन महिलाहरूलाई पनि प्राप्त हुनुपर्छ भन्ने मान्यता अघि सार्ने त्रिपाठी त्यस्तो स्वतन्त्रता रुचाउँछिन् जहाँ सांस्कृतिक स्वतन्त्रताका नाममा कुनै किसिमको उच्छृङ्खलता भने नहोस् । उनी महिलालाई शरीरका मूल्यमा सीमित नराख्ने

किसिमको स्वतन्त्रता अनिवार्य भएको विचार व्यक्त गर्दछिन् । आफ्नो काम आफैँ गर्नुपर्छ भन्दै श्रमलाई अत्यधिक सम्मान गर्ने प्रवृत्ति भएकी मिहिनेती र परिश्रमी त्रिपाठी बढी सुविधाभोगी हुँदा र आर्थिक कारणले गर्दा महिलाहरू पुरुषका अधीनमा बस्नुपर्ने बाध्यता भएकाले सो अधीनबाट मुक्त हुन आफ्नो सामर्थ्यभिन्नको सुविधा मात्र उपभोग गरिनुपर्छ भन्दै समाजमा आर्थिक कारणबाट पुरुषको दासता महिलामाथि लादिएको स्वीकारोक्ति अगाडि सार्दछिन् । त्यसकारण सानो ठुलो जेजस्तो काम गरेर भए पनि महिला स्वयम् आत्मनिर्भर बन्नुपर्छ । महिला स्वयम् आत्मनिर्भर नभएका कारण पनि उनीहरूले पुरुषको शोषण, दमन र आफूमाथि हुने अत्याचारको विरोध गर्न नसकेका हुन् भन्ने विचार व्यक्त गरेकी छिन् भने महिलाहरू स्वाभिमानी भएर बाँच्नका लागि श्रीमान्को पैतृक सम्पत्तिको कहिल्यै पनि उपभोग गर्न नहुने, त्यसको उपभोग गरेर नै महिलाहरू पुरुषको दासी बनेका छिन् भन्ने त्रिपाठी आफ्नो स्वाभिमानका लागि आफू दश नङ्गा खियाउन र जति पनि दुःख कष्ट सहन तयार भएको तर श्रीमान्को पैतृक सम्पत्ति कहिल्यै पनि उपभोग नगरेको विचार व्यक्त गर्दछिन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

समाजमा प्रतिष्ठा कमाएका ठुला साहित्यकार, नेता बन्न खोज्ने र महान् व्यक्ति भनिन रुचाउने पुरुष तथा केही महिलामा पनि आफ्ना साहित्यिक रचनामा र नेताहरूका ओजस्वी र तेजपूर्ण भाषणमा समाज परिवर्तन सम्बन्धी जुन प्रतिबद्धता व्यक्त भएको हुन्छ त्यो प्रतिबद्धता उनीहरूले आफ्ना व्यवहारमा बिल्कुल नै लागू गरेका हुँदैनन् तर स्वाभिमानकी प्रतिमूर्ति त्रिपाठी आफूले जस्तो विचार अघि सार्छिन्, समाजमा जुन कुराको विरोध गर्छिन् र नारी हक र अधिकारका लागि आफ्ना साहित्यमा जसरी कलम चलाउँछिन् उनी आफ्नो व्यवहारमा पनि त्यही चिन्तन लागू गर्छिन् । यो नै उनी नारी हुनुको र विशिष्ट साहित्यकार हुनुको अलग र छुट्टै पहिचान हो ।

समाजमा एउटै पदमा कार्यरत महिलाका लागि 'तिमी' र पुरुषका लागि 'तपाईं' जस्ता सर्वनामका विभेदपूर्ण भाषिक प्रयोगको अन्त्य गर्दै महिला र पुरुषका लागि समान भाषाको प्रयोग भएको अपेक्षा गर्ने चिन्तन त्रिपाठीमा रहेको देखिन्छ र त्यसका लागि उनी सङ्घर्ष पनि गर्छिन् । प्रगतिशील प्राध्यापक सङ्गठनभिन्न पनि उनले सोही किसिमको सङ्घर्ष गर्नु परेको थियो । श्रमलाई जीवनको अभिन्न अङ्गका रूपमा स्वीकार गर्ने प्रवृत्ति भएकी त्रिपाठीले समयको वचत गर्न, त्यो समय सिर्जनात्मक कार्यमा लगाउन, सूचना सञ्जालसँग परिचित हुन र आफ्नो स्वास्थ्य प्रतिकूल भएका कारण घरमा केही सुविधाजनक सामग्रीहरूको प्रयोग गरेको कुरा समेत व्यक्त गरेकी छिन् ।

२.५ विवाह, दाम्पत्य जीवन र सन्तान

२.५.१ विवाह

सुधा त्रिपाठीको विवाह वि.सं. २०४६ साल मङ्सिर २८ गते रमेश प्रसाद भट्टराईसँग ३१ वर्षको उमेरमा भएको हो । रमेश भट्टराईसँग विवाह गर्नका लागि त्रिपाठीलाई साहित्यकार रोचक घिमिरे र चूडामणि गौतमले विवाहको प्रस्ताव राखेका थिए । त्यस समयमा रमेश भट्टराई अध्ययन सम्पन्न गरेर बसेका थिए भने त्रिपाठी त्रि.वि.कीर्तिपुरमा प्राध्यापनरत थिइन् । साहित्यतर्फ भुकाउ राख्ने दुवैको सामाजिक परम्परा अनुरूप जात, धर्म, राजनीतिक विचार र सिद्धान्त मिलेका कारण पनि उनीहरू लगायत परिवारको समझदारीमा रहेर आफ्नै गाउँ (दोलखा जिल्लाको सुनखानी) मा परम्परागत विधि अनुसार विवाह सम्पन्न भएको थियो (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

२.५.२. दाम्पत्य जीवन

पति र पत्नीको दाम्पत्य जीवन सुखमय हुनुमा दुवैको महत्वपूर्ण भूमिका रहेको हुन्छ । कुनै एकको सुखको अभावमा दाम्पत्य जीवन सफल हुन सक्दैन । वास्तवमा परम्परागत मूल्य र मान्यता प्राप्त पितृसत्तात्मक समाजमा हुकिदै आएका कारण समाजमा हरेक पक्षको स्वतन्त्रता पुरुषमा रहेको हुन्छ । त्यसैले पनि ऊ आफूलाई स्वयं भाग्यमानी सम्झन्छ । ऊ आफूमा प्राप्त अधिकार र स्वतन्त्रताको प्रयोग गर्दै आफ्नै इच्छा र चाहना अनुसार जीवन साथीका रूपमा भित्रिएकी नारीलाई दासीका रूपमा परिचालन गर्न पाएकामा गौरवान्वित ठान्छ । यसरी ऊ आफ्नो दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेको कल्पनामा डुब्दै भ्रमपूर्ण जीवन बाँचिरहेको हुन्छ अनि नारी जीवनसाथीका घरमा नभई पति परमेश्वरका घरमा जानु पहिले नै आफूभित्र रहेका स्वतन्त्र र स्वाभिमानपूर्ण जीवन बाँच्ने इच्छा र आकाङ्क्षालाई आफूभित्र नै दमन गरी श्रीमान्कै खुसी र सुखमा रमाउन पुग्छे र बारम्बार आँसुका घुट्टा पिएर बाँच्नु परे पनि आफूलाई संसारकै सबैभन्दा सुखी र भाग्यमानी नारीका रूपमा रहेको नाटक गर्छे ।

यसरी परम्परादेखि नै पति र पत्नीबिचको दाम्पत्य जीवन परम्परागत मूल्य र मान्यता बोकेको पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचनाभित्र पििल्सिएर भ्रमपूर्ण रूपमा बितिरहेको छ । उनीहरूबिच जीवन साथीका रूपमा रहने र गरिने समान व्यवहार नभई पीडक र पीडित रूपमा हुने व्यवहारबाट जीवन अगाडि बढिरहेको हुन्छ तर सुधा त्रिपाठी यस्तो विभेदपूर्ण दाम्पत्य जीवनलाई कहिल्यै आत्मसात् नगर्ने नारी परिन् । न त आफ्नो इच्छा र आकाङ्क्षालाई विवाहसँगै तिलाञ्जली

दिएर आफ्नो अधिकारलाई घुम्टोभिन्न लुकाएर पतिका घरमा भित्रिने नारी परिन् । उनी त पुरुष सरह आफ्नो इच्छा र चाहनालाई, आफ्नो अधिकार र स्वतन्त्रतालाई अनि स्वाभिमानलाई आत्मसात् गरेर अधि बढ्ने नारी परिन् । उनी विवाहअधि मात्र नभई विवाहपछि पनि आफ्नो हक र अधिकारका लागि लड्न सक्ने नारी परिन् । त्यसै भएर त उनले आफ्नो जीवनका हरेक क्षणमा सहयोग गर्ने रमेश भट्टराईजस्ता सहयोगी व्यक्तिलाई आफ्नो जीवनमा पति परमेश्वरका रूपमा नभई जीवन साथीका रूपमा स्वीकार गरिन् जसले उनका अधिकार र चाहनालाई कहिल्यै दबाएर राख्न चाहेनन् । वरु उनको इच्छा, आकाङ्क्षाको कदर गर्दै उनको स्वतन्त्रता र अधिकारको संरक्षण गरे । उनले अरू जसरी असल पति हुने र बन्ने ढोड गरेनन् । एउटा असल जीवन साथीले गर्नुपर्ने कर्तव्य गरेर देखाए । उनी अन्य पुरुष जसरी भाषण र पुस्तकमा नारी स्वतन्त्रता र आदर्शको वकालत गरी घरमा पत्नीलाई दासी बनाउने कुकार्य कहिल्यै गर्दैनन् । उनले नारीलाई कहिल्यै भोग्य वस्तुका रूपमा हेरेनन् । न त उनी कहिल्यै आफू पति परमेश्वर बन्न खोजे न त कहिल्यै परम्परागत पत्नीका रूपमा त्रिपाठीलाई सामन्ती बन्धनभिन्न जकडिदिए । यस्ता पुरुष, पति र त्यस्ता जीवनसाथी बनेर देखा परे जसका कारण त्रिपाठीले आफूभिन्न रहेको प्रतिभालाई शिक्षाका क्षेत्रमा, साहित्यका क्षेत्रमा प्रस्फुटन गर्दै आफ्नो जीवनलाई प्रगतिका हरेक क्षेत्रबाट उच्च स्थानमा पुऱ्याउन सफल भइन् । यसरी उनी नारीवादी चिन्तक बन्नुमा, साहित्यकारका रूपमा चिनिनुमा र जीवनलाई सफलताको उच्च शिखरमा पुऱ्याउनमा उनका जीवनसाथी रमेश भट्टराईको महत्त्वपूर्ण सहयोगी भूमिका रहेको छ ।

सुधाले पितृसत्तात्मक नेपाली समाजमा हुर्किएर पनि रमेशजस्ता अति सहयोगी जीवन साथी पाएकी छिन् । त्यसैले त उनी गर्वका साथ भन्छिन्, “महिला भएर पनि यस समाजभिन्न आफ्नो निर्णय गर्न पाउनु नै सबैभन्दा सुखको जीवन हो । अनि आफ्नो भावना र विचार मिल्ने जीवनसाथी पाउनु नै जीवनको सबैभन्दा ठुलो खुसी हो ।”

भौतिक दुःखलाई दुःख नमान्ने प्रवृत्ति बोकेर अगाडि बढेकी त्रिपाठी जीवनमा देखा परेका कुनै पनि भौतिक दुःखबाट आत्तिइनन् । उनलाई लाग्छ, सायद पुरुष जातिले नारी जातिको अपमान गर्नु र दासी बनाउनुको प्रमुख कारण भौतिक सम्पत्ति नै हो जुन सम्पत्तिका मालिक बनेर आफ्नो अधिकारको वर्चस्व राख्न खोज्ने पुरुषका दैलोमा दानका रूपमा नारी खाली हात लिएर प्रवेश गर्छे । सम्पत्तिका नाउँमा सीमित मूल्यहीन दाइजो रहेको हुन्छ । त्यसैले त ऊ प्रवेश गरेका दिनदेखि त्यस घरकी विना मूल्य र विना पारिश्रमिककी दासीका रूपमा, नोकर्नीका रूपमा नचाहेरै पनि स्थापित

हुन पुग्छे । नारीको त्यही विवशता र विडम्बना देखेर पनि त्रिपाठीले आफ्ना पतिका भागमा रहेको पैतृक सम्पत्तिलाई कहिल्यै पनि आफ्नो आवश्यकतामा परिचालन गरिनन् । बरु आफू भोकै बसिन्, अथक पसिना बगाइन् र नङ्गा खियाइन् । त्यसमा उनका जीवन साथी रमेशले पनि पूर्ण रूपमा उनलाई हरेक क्षेत्रबाट सहयोग गरे । फलस्वरूप उनीहरू आफैले पैतृक सम्पत्तिविना नै मिहिनेत र परिश्रमको, स्वाभिमान र प्रतिष्ठाको, सुख र शान्तिको आवास गृह निर्माण गरे जहाँ उनीहरू स्वतन्त्र र आनन्दसँग रमाएका छन् । त्यसैले त त्रिपाठी भन्छिन्, “स्वाभिमानको रक्षा नै हरेक नारीको चाहना हो, स्वाभिमान बेच्नु, कसैसँग हात फैलाउनु नै जीवनको सबैभन्दा ठुलो कमजोरी हो” (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

आत्मसन्तुष्टिको दुःखलाई सबैभन्दा ठुलो सुख मान्ने त्रिपाठी आफूले चाहेको जस्तो जीवन साथी पाएका कारण पनि आफू धेरै खुसी र सुखी भएको अनुभव व्यक्त गर्दछिन् । साथै आफ्नो दाम्पत्य जीवन सम्पूर्ण रूपले सुखद् भएको विचार पनि उनले प्रकट गरेकी छन् ।

२.५.३ सन्तान

पितृसत्तात्मक समाजमा जन्मेका हरेक नारी आफू पुरुषबाट नै शोषित पीडित भएको जान्दाजान्दै पनि छोराको चाहना राख्ने भूल गर्छिन् र छोराकै चाहनामा दर्जनौं छोरीहरूको जन्म दिन पुग्छन् । कतिपय बाबु आमा त आफू मरेपछि स्वर्ग जान पाइने स्वर्गको मूल द्वार खोल्ने नै छोरा हुन् भन्ने ठान्छन् । छोराहरूकै माध्यमबाट सम्पूर्ण पितृहरूको उद्धार हुन्छ भन्ने रूढिवादी र अन्धविश्वासयुक्त परम्परामा विश्वास गर्छन् । त्यसैले पनि छोराकै चाहनामा सन्तानको थुप्रो लगाई दिन्छन् तर सुधा त्रिपाठी ती आमामा पर्दिनन् जसले आफ्नै नारी जातलाई घृणा गरिरहेका छन् । उनी त यस्ती नारी हुन् जो जीवनमा कहिल्यै नारीलाई घृणा गर्दिनन् । दुई छोरीको जन्मपछि अन्य सन्तानको इच्छा र आकाङ्क्षामा पूर्ण विराम लगाउँछिन् । उनकै भनाइमा, “मेरो पहिलो सन्तान गर्भमा आएको महसुस गरेपछि मैले छोराको चाहना त कहिल्यै गरिनँ, केही गरी यो सन्तान छोरा नै भयो भने के म यसलाई छोरीलाई जत्तिकै माया गर्न सकौंली के त ? भन्ने खालका विचार पनि मनमा नआएका होइनन् । पछि म यति खुसी भएँ कि मैले आफ्नो चाहना अनुसार छोरी नै जन्म दिएँ” (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

यसरी छोरीलाई अथाह माया गर्ने र अति नै चाहने त्रिपाठीमा दोस्रो सन्तान पनि छोरी नै जन्मिए हुन्थ्यो भन्ने इच्छा थियो तर पनि त्यस समयमा भने छोराप्रति त्यति अनाशक्ति भएन जति पहिलो सन्तान गर्भमा रहेका बेलामा भएको थियो । यदि दोस्रो सन्तान छोरा नै जन्मे पनि आफू

एउटी आदर्श सासूका रूपमा समाजमा स्थापित हुने र नमुना सासू बनेर देखाउने धारणा आफ्ना मनमा उब्जेको कुरा व्यक्त गरेकी छन् तर उनको इच्छा र आकाङ्क्षा अनुसार दुवै सन्तान छोरी नै रहेका छन् र उनी ती सन्तान प्राप्तपछि आफ्नो मातृत्वको चाहना पूर्ण भएको स्विकारिन्छन् ।

२.६ बसोबास

सुधा त्रिपाठीको जन्म भारतको दार्जिलिङको मिरिक बस्तीमा भए पनि उनको स्थायी बसोबास नेपालमा नै रहेको छ । जन्म पश्चात् चार वर्षजति दार्जिलिङमा नै रहेकी त्रिपाठीले दुई वर्ष काभ्रे जिल्लामा अवस्थित मामाघरमा, छ वर्ष पुख्र्यौली घर दोलखास्थित सुनखानीमा र बाँकी सम्पूर्ण जीवन काठमाडौँमा बिताइरहेकी छन् । २०२८ सालदेखि २०५५ सालसम्म काठमाडौँस्थित डेरामा बसोबास गरेकी त्रिपाठी २०५५ पछि स्थायी बसोबास आफ्नै घर चावहिल ७ बुलबुलेमा गर्दै आएकी छन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

२.७ जीवन दर्शन र साहित्य सम्बन्धी दृष्टिकोण

मानव जीवनमा दर्शनले महत्त्वपूर्ण भूमिका खेलेको हुन्छ । दर्शन नै जीवनको महत्त्वपूर्ण पाटो हो जसले समाजका हरेक पक्षलाई नियालिरहेको हुन्छ । केटाकेटी बेलादेखि नै समाजमा भएका अन्याय र अत्याचार सहन नसक्ने विद्रोही तर अन्तर्मुखी स्वभाव भएकी त्रिपाठीले आफ्ना भावना र विचारहरूलाई मूक बनेर साहित्यभित्र पोखेकी छन् । ग्रामीण परिवेश त्यो पनि नारीले शिक्षा ग्रहण गर्ने संस्कार नै नबसेको समाजभित्र हुर्किएकी त्रिपाठीका स्कुलका अधिकांश सहपाठी साथीहरूको उमेर र उनको उमेरबिच एकदम ठुलो अन्तर रहेको थियो । उनीभन्दा उमेरमा उनीहरू धेरै ठुला थिए जसका कारण सबैले उनलाई हेप्ये, हियाउँथे र घृणा गर्थे भने अझ त्यसमाथि उनले गृहकार्य गरेका उनका कापीहरू समेत च्यातिदिन्थे । उनी बारम्बार आफ्ना गुरुहरूलाई यस्ता साथीहरूले गरेका दुष्कार्यको विवरण सुनाउँथिन् तर उनका कुराहरू कसैले चासो लिँदैनथे जसका कारण उनका मनमा विषादका रेखाहरू भरिन्थे । विद्रोही भावहरू उत्पन्न हुन्थे तर बाहिर पोखिने मौका पाउँदैनथे । ती मनभित्रै कुण्ठित भएर रहन्थे । यस्तो मानसिक समस्या लिएर ग्रामीण परिवेश छाडेर पढाइका सिलसिलामा उनी सहरिया परिवेशमा भिज्न आइन् तर यहाँ पनि उनी गाउँबाट आएकी हुनाले सहरिया साथीहरूले उनीप्रति हेर्ने दृष्टिकोण नै फरक राख्ये । उनलाई आफू साथीहरूबाट अपमान भएको महसुस हुन्थ्यो । यसबाट उनलाई धनी वर्गले हरेक ठाउँमा गरिब वर्गलाई अपमान गर्छन् भन्ने बोध हुँदै गयो भने अर्कातिर समाजमा नारीहरूलाई पुरुषहरूले हरेक क्षेत्रबाट शोषण र

अपमान गर्छन् भन्ने ज्ञान भयो जसका कारण उनमा मानसिक तनाव बढ्दै गयो । बाल्यावस्थादेखि नै विद्रोही भाव आइ.ए.,बी.ए पढ्दा बढी प्रखर भएर देखा पर्न थाल्यो । फलस्वरूप यसै भाव साहित्य सिर्जनामा प्रकट भएर देखियो ।

यसरी आफू बाँचेको परिवेश र आफूभित्र भित्रै गुम्सिएका भावनाहरूका कारण उनले निराशावादी साहित्यको सिर्जना गर्न पुगिन् । २०३५।३६ सालमा भएको विद्यार्थी आन्दोलनमा सहभागी हुनु नै उनका मनमा रहेका कुण्ठित भावहरूको अभिव्यक्तिगत माध्यम पनि थियो । २०३७ सालसम्म उनका साहित्यमा निराशावादी प्रवृत्ति चरम रूपमा देखा परेको पाइन्छ ।

२०३७ सालतिर बी.ए. को परीक्षापछि जब उनी आफ्नो गाउँ फर्किन् र केही समय गाउँमै बसिन्, त्यसबेला उनले मार्क्सवादका पुस्तकहरूको गहन अध्ययन गर्ने मौका प्राप्त गरिन् । त्यसबाट उनले मार्क्सवादको सिद्धान्तभित्र आफ्नो जीवन भेट्टाइन् । आफ्नो अवस्था देखिन् र यस्ता अवस्था सिर्जना हुनुको कारण बुझिन् । यसबाट जीवन भनेको निराश हुनुका लागि होइन उत्साहित हुनुका लागि हो र अरूलाई पनि उत्साही र जागरुक बनाउनका लागि हो भन्ने चिन्तन उनमा विकास भयो । यसै सिद्धान्तलाई आत्मसात् गर्दै उनी विस्तारै क्रियाशील हुँदै गइन् । यसपछि उनले आफ्ना साहित्यिक रचनाहरूमा जीवनवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत गर्न थालिन् ।

यसरी उनले मार्क्सवादी सिद्धान्तको अध्ययन पश्चात् नै आफू महिलाको सामाजिक अवस्थाको सही विश्लेषण गर्न र मुक्तिको मार्ग पहिल्याउन सफल भएको, आम दुःखी मान्छेप्रति आत्मीयता बढेको कुरा प्रस्तुत गरेकी छिन् । मार्क्सवादी दर्शनको अध्ययन अगाडि नै उनले आम महिलामा रहने गरेको धर्मभीरुताको परिचय प्राप्त गरिसकेकी थिइन् । जो धर्म कर्मप्रति निष्ठा राख्छ, पूजाआजामा आफ्नो जीवन अर्पण गर्छ त्यही व्यक्ति सबैभन्दा बढी दुःखी हुन्छ भन्ने अनुभव पनि उनले गर्न पुगिन् । उनले महिलाले आफ्नो धर्मभीरुताका कारणले समाजको विभेदपूर्ण अवस्थाको विश्लेषण र मूल्याङ्कन गर्न नसकेकाले नै उनीहरू पछि परेका हुन् भन्ने विचार समेत प्रस्तुत गरेकी छिन् । त्यसै गरी मार्क्सवादभित्र रहेको द्वन्द्वात्मक भौतिकवादको अध्ययन गरेपछि उनमा धर्मप्रति विस्तारै अनास्था बढ्दै गयो । ऐतिहासिक भौतिकवादले ईश्वर वा ब्रह्माले सृष्टि गरेको परम्परागत चिन्तनमा नयाँ दृष्टिकोण भित्र्यायो, परिवर्तनशील जीवन पद्धति प्रस्तुत गर्‍यो । यसबाट उनमा दुःखी, असहाय र उपेक्षित वर्गप्रति विशेष सहानुभूतिका साथै आत्मीयता बढ्दै गयो । आफू पनि महिला हुनुका नाताले परिवार र समाजमा भोगेको उपेक्षाका कारण उनका मनमा उब्जेका विद्रोही भाव नै साहित्यमा जीवनदृष्टि भएर देखा पर्‍यो । उनको निकटता मार्क्सवादी चिन्तनमाथि

आस्था राख्नेसंग विस्तारै बढ्दै गयो । वि.सं. २०३५ सालदेखि उनीभित्रको विद्रोही भावले साहित्यका विभिन्न माध्यमबाट प्रकट हुने अवस्था पाइसकेको थियो भने २०४६ सालको आन्दोलनले यस विद्रोही भावलाई पुष्टता दिने काम गर्‍यो (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

यसरी देशमा भएका विभिन्न राजनीतिक आन्दोलनमा सहभागिता जनाउँदै हिंडेकी त्रिपाठीलाई एम.ए. प्रथम वर्ष अध्ययन गर्दाको अवस्थामा अनेरास्ववियुको कार्यकर्ता बनी हिंडेका कारण उनीमाथि पोखरा काण्ड (नमितासुमिता काण्ड) दोहोर्‍याउने चेतावनी र धम्की समेत आएको थियो । त्यसैगरी वि.सं. २०४९/५० तिर नेपाली केन्द्रीय विभाग कीर्तिपुरमा कार्यरत रहँदा आफू महिला भएकै नाताले होला, उनले हरेक कार्यमा एकलो भएको, आफ्ना समकक्षी पुरुषले पाएको जिम्मेवारी नपाएको र हेपिएको महसुस गरेकी थिइन् र अझै पनि उनले सो भावनाबाट मुक्ति पाएकी छैनन् । २०४९÷५० सालताका आफू एकजना सहकर्मी एवं तत्कालीन विभागीय प्रमुखबाट उत्पीडित हुँदा सो परिस्थिति देखबुझेका त्यतिखेरका निवर्तमान विभागीय प्रमुख बाहेक सम्पूर्ण सहकर्मीबाट साथ सहयोग नपाउँदा आफू पूर्ण रूपमा एकलो भएको महसुस गर्न पुगेकी थिइन् । उनी त्यसरी एकलो भएपछि मात्र व्यक्ति सहकर्मीप्रतिको जिम्मेवारीबोधबाट मुक्त हुँदोरहेछ र उसले निडर भएर समाजमा सङ्घर्ष गर्न सक्ने रहेछ भन्ने गुरुमन्त्र आफूले सोही घटनाबाट प्राप्त गरेको कुरा बताउँछिन् । ‘माछा देखे दुलामा हात र सर्प देखे पाखामा हात’ गर्न सिपालु आफ्ना निकट भनिएका मानिस र समाजले आपत् परेका बेलामा साथ दिँदैन भन्ने कुराको समेत उनले अनुभव त्यसै बेला गरिन् । त्यसैकारण पनि परिआएका बखत साथ नदिने समाज एवं साथी/सहकर्मी कसैको मतलब नगरी आफू एकलै अगाडि बढ्नुपर्ने रहेछ भन्ने चिन्तन उनमा विकसित भएको देखिन्छ ।

यसरी त्रिपाठीले आफ्ना साहित्यमा परम्परादेखि नै उपेक्षित रहेका महिला समाजका हरेक ठाउँमा एकलै छिन् र उनीहरूले आफ्नो हक र अधिकारका लागि निडर भएर समाजमा सङ्घर्ष गर्नुपर्छ भन्ने सन्देश दिँदै आफूले भोगेका जीवनका सङ्घर्षका पानाहरू नै जीवन दर्शन खोज्ने प्रतिविम्ब हुन् भन्ने जीवन दर्शन प्रस्तुत गरी समाजमा हुने खाने वर्गभन्दा हुँदा खाने वर्गलाई उत्थान र सामाजिक रूपान्तरणका निमित्त अग्रसर गराउने दर्शन प्रस्तुत गरेकी छिन् । समाजमा निम्न वर्गका व्यक्तिहरू सचेत हुन सकून् र शोषणमुक्त समाजको सिर्जना हुन सकोस् भन्ने धारणा पनि उनका कृतिमा पाइन्छ । समाजमा पुरुषको शोषण र दमनमा पिल्सिएर बस्न बाध्य नारीहरूका मुक्तिका लागि नारी स्वयं ठोस अभियानमा जुट्नुपर्छ भन्ने विचार प्रस्तुत गर्दै त्रिपाठीले आफ्ना

कृतिका माध्यमबाट हाम्रा समाजका नारीहरूका यथार्थ पक्षलाई इमानदारीपूर्वक अधि सारेकी छन् । उनले आफ्ना कृतिमा समाजमा जबसम्म नारी र पुरुषको समान रूपमा हरेक कार्यमा समान रूपमा उपस्थिति रहँदैन तबसम्म स्वच्छ समाजको निर्माण हुँदैन भन्ने दृष्टिकोण समेत प्रस्तुत गरेकी छन्

(सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

२.८ रुचि, स्वभाव तथा शारीरिक व्यक्तित्व

सुधा त्रिपाठी विशिष्ट साहित्यकार हुन् । उनलाई साहित्यले नै जीवित तुल्याएको छ । निरन्तर साधना, त्याग र तपस्याविना पक्कै पनि उनी विशिष्ट साहित्यकार बन्न सकिनन् । त्यसैले उनको महत्त्वपूर्ण रुचि भनेको गहन अध्ययन र लेखन कार्य नै हो । नारी साहित्यकारहरूको साहित्य क्षेत्रबाट प्राप्त परिचय पर्याप्त छैन । उनीहरू आफ्नो घर व्यवहारबाट पूर्ण रूपले अलग रहेर साहित्यकार बन्न सक्दैनन् । त्यसै गरी त्रिपाठी पनि कथाकार, निबन्धकार, कवि र समालोचक मात्रै होइनन्, यसका सँगसँगै उनमा घर गृहस्थीका सम्पूर्ण भार पनि थपिएका छन् । उनी मिठो खाना बनाउनमा, खानमा र खुवाउनमा विशेष सोख राख्छन् । विभिन्न परिकारका भोजनहरू, त्यसमा पनि थरिथरिका सिसीमा सजाइएका अचार अत्यन्तै स्वादिलो मिठो बनाउनमा उनीभित्रको जाँगर नै रुचिपूर्ण रूपमा अगाडि सरेको देखिन्छ भने माछा, मासु, फलफुल र मिठाइ उनलाई असाध्यै मनपर्छ ।

पोसाकमा खासै रुचि नभए पनि उनी सधैं औपचारिक कार्यक्रमका साथै विश्व विद्यालयमा प्राध्यापन गर्न जाँदा नारीलाई अत्यन्त सुन्दर बनाउने पोसाक साडी र ब्लाउजमा सजिएकी हुन्छिन् भने अनौपचारिक रूपमा हिँड्दा, बजार जाँदा वा घरमा बस्दा उनलाई कुर्ता, सलवार र प्यान्टमा पनि देख्न सकिन्छ ।

सिन्दुर र पोतेलाई नारीको वैवाहिक जीवनको अस्तित्व नमान्ने, निर्भीक लेखक र स्वाभिमानी नारीका रूपमा परिचय पाइसकेकी त्रिपाठीले सादा जीवन र उच्च विचारलाई आत्मसात् गरेको देखिन्छ । अन्तर्मुखी स्वभाव भएकी त्रिपाठीमा आफूभन्दा ठूलालाई आदरभाव र आफूभन्दा सानालाई माया गर्ने स्वभाव रहेको छ । बानीमा सरलता र व्यवहारमा सहयोगीपन उनीभित्रका आन्तरिक गुण हुन् । कसैसँग हात फैलाएर भुक्त नचाहने त्रिपाठी एकान्तप्रिय छन् । प्राकृतिक

सुन्दरतामा रमाउन चाहने त्रिपाठी प्रकृतिकै काखमा पल्टिएर कल्पना र भावनाका विशाल नदीमा बग्दै नारी अस्मिता र स्वतन्त्रताको आवाज घन्काउँदै समाजमा लैङ्गिक समानता स्थापित गर्न चाहने अनि आफ्ना साहित्यभित्र नारी सङ्घर्ष र नारी मुक्तिका पक्षमा वकालत गर्ने उनको जीवनको महत्त्वपूर्ण रुचि रहेको छ । उनका रुचिपूर्ण भावहरू उनकै शब्दमा यसरी व्यक्त गर्न सकिन्छ :

आडम्बरका विरुद्ध लड्ने मेरो जीवनको अभियान नै बनिसकेको छ ।... आफूले हुन्छ भन्ने ठानेको तर अरूले हुँदैन भनेको कुरा गरेर देखाउन मलाई आनन्द आउँछ ।... तर यसरी झुलाउने र चाकरी गराउने प्रवृत्तिको भने मैले कहिल्यै समर्थन गरिँँ र आफूबाट अरूलाई यस्तो अवस्थाको सिर्जना कहिल्यै गराइँँ, रिसाए रिसाऊँँ, सक्ने नसक्ने कुरा सुरुमै प्रस्ट पारिदिने गरेकी छु । अझ सुरुमा सक्तिन भनेर पछि सहयोग गर्न सक्दा बढी मिठो लाग्छ (त्रिपाठी, २०६८ : ८२) ।

यसरी अध्ययनमा अत्यन्त रुचि राख्ने, प्रकृतिप्रेमी, बहुमुखी प्रतिभाकी धनी, एकान्तप्रिय त्रिपाठी स्वावलम्बी भएर बाँच्न चाहने स्वाभिमानी नारी हुन् ।

पचास वर्षसम्म निरोगी रहेकी त्रिपाठीका शरीरमा त्यसयता विभिन्न रोगले प्रवेश गरेका छन् । उनले आजीवन थायराइडजस्तो दीर्घ रोगको औषधि सेवन गरिरहनु पर्ने भएको छ । दोहोरो जीउडाल भएकी त्रिपाठीको पत्थरीको शल्यक्रिया गर्दा पित्तथैली समेत फ्याँकिइसकेको छ भने उनमा देखिएका मुटु सम्बन्धी समस्या र मेरुदण्ड खिइएका कारण शरीरमा उत्पन्न हुने विभिन्न समस्याहरूले बेलाबेलामा दुःख दिने गरेका छन् । बहुआयामिक जिम्मेवारी, समाजमा व्याप्त लैङ्गिक उत्पीडनसँगको निरन्तरको जुधाइ, आफू सक्रिय रहेका स्थानमा उम्दा बनिरहने आकाङ्क्षा, आर्थिक चापप्रतिचाप आदि कारणले उनले स्ट्रेसको औषधिको समेत नियमित सेवन गर्नुपर्ने बाध्यता रहेको छ (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) । लाम्चिलो सलक्क परेको अनुहार, सफा आँखा, पङ्क्ति मिलेका दाँतहरू, छोटोछोटो घाँटीसम्म आउने कालो कपालले उनमा अझ आकर्षण थपेका छन् । ५ फिट ३ इन्च उचाइका साथै रातो वर्णको अनुहार भएकी त्रिपाठी झट्ट हेर्दा गम्भीर प्रकृतिकी देखिन्छिन् ।

त्रिपाठीको स्वभाव अलिक भावुक, अन्तर्मुखी र कसैसँग नभुक्ने निर्भीक जोधाहा खालको रहेको देखिन्छ । शान्त र मुदुभाषी त्रिपाठी धनी र गरिबबिच भेदभाव राख्दैनन् । उनी सबैलाई समान व्यवहार गर्दछिन् । सधैं हँसिली र रसिली देखिने त्रिपाठी आदर्शलाई भन्दा यथार्थ र

वास्तविकतालाई बढी मन पराउँछिन् । पितृसत्तात्मक समाजको विरोध गर्ने त्रिपाठी पुरुषले नारीमाथि गर्ने अन्याय र अत्याचारको कडा विरोध गर्दै समतामूलक समाजको चाहना राख्छिन् । बोलीचालीका दृष्टिले उनी आवश्यक कुराकानी मात्र गर्न रुचाउँछिन् । मृदुभाषी सुधा त्रिपाठीको बाह्य रूपाकृतिलाई हेर्दा उनी सधैं गम्भीर र चिन्तनशील देखिन्छिन् । त्रिपाठीको बाल्यकालदेखि नै रहँदै आएको सरल र शान्त स्वभावमा अहिलेसम्म कुनै परिवर्तन आएको देखिँदैन ।

समाजमा नारी र पुरुषबिच गरिने भेदभाव र पुरुष प्रधान समाजमा नारीले भोग्नु परेका समस्या तथा कठिनाइले उनलाई सधैं घच्चच्याइ रहन्छ । पुरुष सरह आफूले आँटेको काम, अरूले गर्न सकिँदैन र गर्नुहुँदैन भनेको काम पुरा गरी छाड्ने उनको दृढ सङ्घर्षशील स्वभाव रहेको छ ।

यसरी सरल शान्त र दृढ सङ्घर्षशील स्वभावकी धनी त्रिपाठीले पितृसत्तात्मक समाजमा नारीहरुमाथी भएका र गरिएका अन्याय र अत्याचारको विरोध गर्दै विद्रोहको स्वर निकाली समतामूलक समाजको परिकल्पना गरेकी छिन् । यो नै उनको महत्त्वपूर्ण व्यक्तिगत पक्ष हो ।

२.९ साहित्यिक लेखनको प्रारम्भ र प्रभाव

साहित्यिक वातावरणभित्र जन्मन पुगेकी सुधा त्रिपाठीले साहित्य सिर्जना गर्न पनि घरबाट नै प्रेरणा र प्रभाव लिएकी छिन् । उनका पिता **विद्वत्केशरी** उपाधिबाट विभूषित जगन्नाथ शर्मा त्रिपाठी ज्ञानका अक्षय भण्डार नै थिए । बाल्यावस्थादेखि अध्ययनमा रुचि भएकी नारी प्रतिभा सुधा त्रिपाठी तिनै पिताबाट प्रेरणा र प्रभाव प्राप्त गरेर साहित्य सिर्जनाप्रति उन्मुख भएकी हुन् । उनी सानै बेलादेखि आफ्ना पिताले लेखेका विभिन्न साहित्य सम्बन्धी लेखहरू मन लगाएर पढ्ने गर्थिन्, घरमा पिताले राखेका साहित्यिक पत्र पत्रिकाहरू हेर्ने गर्थिन् । यसैबाट पनि उनको साहित्य सिर्जनाको जग बसेको देखिन्छ । आफ्ना पितालाई नै साहित्यको प्रभाव र प्रेरणाको स्रोत मान्ने त्रिपाठीले साहित्य सिर्जनाको परिवेशका रूपमा पितृसत्तात्मक समाजलाई लिएकी छिन् । पितृसत्तात्मक समाज जहाँ जन्मँदै पुरुष सर्वेसर्वा नायकका रूपमा स्थापित हुन पुगेको छ भने नारी जन्मँदै पशुतुल्य दासीका रूपमा स्थापित भएकी छ । नायकको रूप धारण गरेको पुरुषले नारीमाथि धर्मका नाममा, परम्पराका नाममा, सांस्कृतिक मूल्य र मान्यताका नाममा गर्ने गरेको अन्याय, अत्याचार र शोषण नै उनको साहित्य सिर्जनाको बीजभूमि हो । समाजका विधाताका रूपमा आफूलाई स्थापित गराउने पुरुषले बनाएको विभेदपूर्ण समाजमा देखिएका अन्याय र अत्याचारबाट नै अन्तर्मुखी स्वभाव भएकी बहुमुखी प्रतिभाकी धनी त्रिपाठीभित्र कुण्ठित रूपमा रहन गएको विद्रोही भावले साहित्यिक रूप

लिए प्रकट हुने अवसर प्राप्त गयो जहाँबाट अनगिन्ती कृतिहरू जन्मिए, विभिन्न साहित्यिक विधाहरू उत्पन्न भए ।

यसरी त्रिपाठीले साहित्य सिर्जनाको प्रेरणा र प्रभाव पिताबाट लिए पनि साहित्य जन्मने पृष्ठभूमि भनेको पितृसत्तात्मक समाज नै हो र यसै समाजमा छोरी अर्थात् नारी भएर जन्मिएकी त्रिपाठी आफू जन्मेको समाजभित्र देखिएका विकृति र विसङ्गतिलाई केलाउँदै नारी र पुरुषको सहकार्यबाट समतामूलक समाजको निर्माण गर्ने क्रममा नै उनी महान् स्रष्टाका रूपमा परिचित हुन पुगिन् । समाजभित्रकै सामाजिक, आर्थिक, प्राकृतिक र सांस्कृतिक विषयका माध्यमबाट साहित्यका विभिन्न विधाभित्र कथा, कविता नाटक, निबन्ध र समालोचना सिर्जना हुन पुगेका छन् । बाल्यकालदेखि नै साहित्यप्रति रुचि राख्ने त्रिपाठीले कक्षा १० मा अध्ययनरत रहँदा २०३१ सालतिर शिक्षा दिवसको अवसरमा 'शिक्षा दिवस' शीर्षकमा पहिलो कविता रचना गरी वाचन गरेकी थिइन् । त्यसपछि विभिन्न कार्यक्रमका लागि लेख र कविता रचना गर्दै आएकी त्रिपाठीको प्रज्ञा पत्रिकामा मेरा व्यथाहरूको गीत शीर्षक कविता सर्वप्रथम २०३४ सालमा प्रकाशित गरी औपचारिक रूपबाट (उनको) साहित्य यात्रा सुरु भएको पाइन्छ । २०३५ सालमा पहिलो विदीर्ण मातृहृदय शीर्षक कथा साप्ताहिक पत्रिकामा प्रकाशित भएको थियो । त्यसैगरी २०३४ सालमा पहिलो निबन्ध नेपाली भाषामा आजको परिप्रेक्ष्यमा रेडियो नेपालबाट प्रसारित, २०३६ सालमा समालोचना रेडियो नेपालबाट प्रसारित भएको थियो भने २०३८ सालमा नाटक लेखी आफैले अभिनय गरी निर्देशन समेत गरेकी थिइन् । यसरी कथा, कविता, नाटक, निबन्ध र समालोचना विभिन्न विधामा कलम चलाउन पुगेकी त्रिपाठीका प्रकाशित कृतिहरूलाई निम्नानुसार प्रस्तुत गर्न सकिन्छ :

२.९.१. प्रकाशित कृतिहरू

- । बादल, धर्ती र आस्थाहरू (निबन्ध सङ्ग्रह, २०५०)
- । जीवनसूत्र र स्वप्नाभास (निबन्ध सङ्ग्रह, २०५३)
- । सुट, टाई र सुँगुर (व्यङ्ग्य निबन्ध सङ्ग्रह, २०५९)
- । निःश्वासका गुजुल्टाहरू (नाटक सङ्ग्रह, २०५४)
- । दृष्टिचौतारी (समालोचना, २०५८)
- । भूपिका कवितामा व्यङ्ग्यालङ्कार चेतना (समालोचना, २०५८)
- । महिला स्रष्टा र नेपाली साहित्य (समालोचना, २०६२)

- । अनिवार्य नेपाली व्याकरण र रचना (पाठ्यपुस्तक, २०५३)
- । दोलखा दर्पण (दोलखा जिल्लाको इतिवृत्त, २०५१)
- । अमर सिर्जना (निबन्ध सङ्ग्रह, २०६५)
- । नारीवादका कठघरामा नेपाली साहित्य (समालोचना, २०६७)
- । जिराहा वर्तमान (कविता सङ्ग्रह, २०६७)
- । नेपाली उपन्यासमा नारीवाद (समालोचना, २०६८)
- । नारीवादी सौन्दर्य चिन्तन (समालोचना, २०६८)
- । चेलीबेटीका बेग्लै कुरा (निबन्ध सङ्ग्रह, २०६८)
- । सिर्जनवृत्तका परिधिमा गुणराज उपाध्याय (समालोचना, २०६९)
- । विद्वत्केशरी जगन्नाथ शर्मा त्रिपाठी : अनेक आयाम (२०६९)
- । नेपाली नारीवादी समालोचना (२०७०)

२.९.२. अनुसन्धान

बहुआयामिक व्यक्तित्वकी धनी सुधा त्रिपाठी साहित्यको सिर्जना गर्ने सिर्जनकर्ता मात्र होइनन् । उनी साहित्यको विधाभिन्न पसेर विभिन्न साहित्यकारका रचनाहरूलाई सैद्धान्तिक आधारबाट अनुसन्धान गर्ने अनुसन्धानकर्ता पनि हुन् । उनले साहित्यका विभिन्न विधाभिन्न आवद्ध रहेका कृतिकारका कृतिहरूको गहन रूपबाट अध्ययन अनुसन्धान गरेकी छन् जसलाई निम्नानुसार देखाउन सकिन्छ :

- । भूपिका कवितामा व्यङ्ग्य चेतना
- । भूपिका कवितामा अलङ्कार चेतना
- । महिला समालोचक र नेपाली समालोचना
- । आधुनिक नेपाली उपन्यासमा नारीवादी चेतना
- । मदनमणि दीक्षितका उपन्यासमा नारीवादी चेतना
- । लैनसिंह बाङ्देलका उपन्यासमा नारीवादी चेतना

२.९.३ अन्य साहित्यिक सक्रियता

सुधा त्रिपाठी साहित्यका विभिन्न विधामा सक्रिय रूपबाट कलम चलाउने विशिष्ट नारी प्रतिभा हुन् । उनले कथा, कविता, नाटक, निबन्ध र समालोचना आदि विधामा सशक्त रूपबाट कलम चलाएकी छन् । विभिन्न साहित्यिक कृतिहरूको भूमिका लेखेकी छन् । उनका वैचारिक लेखका रूपमा विभिन्न निबन्ध सङ्ग्रह प्रकाशित भएका र केही कृतिहरू अप्रकाशित अवस्थामा नै रहेका छन्, त्रिपाठीले कथा, कविता, निबन्ध र समालोचनात्मक आदि विधाहरूमा मात्र कलम चलाएकी छैनन् । उनी साहित्यका विभिन्न साहित्यिक क्रियाकलापमा पनि सक्रिय रूपमा सहभागी भएकी छन् । उनका साहित्यिक सक्रियतालाई निम्नानुसार देखाउन सकिन्छ :

- । विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमहरूमा कार्यपत्रको प्रस्तुति,
- । अन्य लेखकका कार्यपत्र एवम् पुस्तकहरूको समीक्षा,
- । विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमहरूको संयोजन,
- । साहित्यिक प्रशिक्षण आदि सन्दर्भमा विशेष सक्रियता,
- । लगभग छ दर्जनजति स्नातकोत्तर शोधपत्रको निर्देशन,
- । थुप्रै साहित्यिक पुस्तकहरूको भूमिका लेखन

२.१० विभिन्न सङ्घ संस्थामा आबद्धता

पितृसत्तात्मक समाजमा नारीलाई धार्मिक सिद्धान्तमा देवीका रूपमा पुजिन्छ, भने सामाजिक व्यवहारमा नारीलाई दासीका रूपमा सम्म पनि हेरिदैन । यस समाजले नारीलाई सधैं निरीह बेसहारा प्राणीका रूपमा मात्रै विश्लेषण गर्ने गरेको छ । नारी सधैं पुरुषकै पैतालामुनि थिचिएर रहेकी हुन्छे, ऊ कहिल्यै माथि उठ्न सकिदैन भन्ने समाजलाई सुधा त्रिपाठीले गतिलो पाठ पढाएकी छन् । उनी शिक्षित नारीका अनुपातमा मात्र नभई बौद्धिक पुरुषका अनुपातमा पनि हरेक क्षेत्रमा अगाडि बढेर सक्रिय रूपमा लागिपरेकी छन् । उनी कोठाभित्र बसेर साहित्य साधनामा मात्र तल्लीन छैनन् । उनी समाजमा स्थापित विभिन्न सामाजिक सङ्घ संस्थाहरूमा पनि आवद्ध भएकी छन् । उनी संलग्नता भएका सङ्घ संस्थाहरूलाई निम्नानुसार देखाउन सकिन्छ :

- । अभ्युत्थान महिला साहित्य प्रतिष्ठानकी अध्यक्ष,
- । घनश्याम ढकाल स्मृति प्रतिष्ठानकी उपाध्यक्ष,

- । प्रगतिशील लेखक सङ्घमा परिषद् सदस्य, केन्द्रीय सदस्य, उपाध्यक्ष र सल्लाहकार समेत रहेकी (२४ वर्षसम्मको संलग्नता),
- । युद्ध प्रसाद मिश्र स्मृति प्रतिष्ठान, साहित्य सदन नेपाल, प्रतिभा प्रवाह, सिस्नुपानी नेपाल, अस्मिता प्रकाशन गृह, राष्ट्रिय महिला आयोग आदिको सल्लाहकार,
- । अभ्युत्थान महिला साहित्य प्रतिष्ठान, साहित्य सदन नेपाल, सिस्नुपानी नेपाल र युद्धप्रसाद मिश्र स्मृति प्रतिष्ठानकी आजीवन सदस्य ।

२.११ पुरस्कार तथा सम्मान

सुधा त्रिपाठी सानै उमेरदेखि जुनसुकै काम गर्दा पनि लगनशीलतापूर्वक गर्ने, त्यसमा उच्च सफलता प्राप्त गर्न चाहने स्वाभिमानी नारी प्रतिभा हुन् । उनले विद्यार्थी जीवनमा भर्खरै पाइला टेकेर फड्को मार्दै गरेको समय अर्थात् प्राथमिक कक्षामा पढ्दा उनी सहपाठी साथीहरूभन्दा निकै सानी थिइन् । उमेरमा सबैभन्दा सानी तर पढाइमा सबैभन्दा उत्कृष्ट रहेका कारण कक्षा एकदेखि पाँचसम्म उनी प्रथम हुन सफल भएकी थिइन् । उनी छ कक्षाको विद्यार्थी भएका बेलामा विद्यालय निरीक्षणमा आएका जिल्ला शिक्षा अधिकारीले उनको अथक मिहिनेत, प्रतिभा र लगनशीलताबाट प्रभावित भई उनलाई पुरस्कार स्वरूप एक सय रूपैयाँ प्रदान गरेका थिए । त्रिपाठीले “आर्थिक अभाव र विपन्नताले गुञ्जिरहेका अवस्थामा प्राप्त यो सानो पुरस्कार पनि आफ्ना लागि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बनेको र सो पुरस्कारलाई आफूले जीवनमा कहिल्यै बिसर्ग नसकेको” स्मरण गरेकी छन् ।

यसरी बाल्यकालदेखि नै पुरस्कार प्राप्त गर्न सफल भएकी त्रिपाठीले विद्यार्थी जीवनभित्रै अनगिन्ती पुरस्कार र सम्मान प्राप्त गरेकी छन् । अरूले सम्भव नहुने देखेका काम सम्भव गरेरै छोड्ने दृढ प्रतिज्ञा बोकेकी त्रिपाठी हरेक क्षेत्रमा उत्कृष्ट घोषित हुँदै गइन् र आफूलाई मिहिनेत र परिश्रमको प्रतिफल स्वरूप सम्मान र पुरस्कारले विभूषित पाउँदै लगिन् । हालसम्म उनले आफ्ना जीवनमा साहित्य सेवा गरेवापत प्राप्त गरेका सम्मान पुरस्कारका साथै विद्यार्थी कालमा प्राप्त गरेका सम्मान र पुरस्कार निम्नानुसार रहेका छन् :

क) साहित्यिक जीवनमा प्राप्त गरेका पुरस्कार तथा सम्मान

- । अन्तर्राष्ट्रिय साहित्य समाज उत्कृष्ट पुस्तक पुरस्कार सन् २००३
- । पारिजात सृजन पुरस्कार, २०६१
- । प्रेस काउन्सिल साहित्यिक पत्रकारिता स्तम्भ(लेखन पुरस्कार, वि.सं. २०६१

- । युद्धप्रसाद मिश्र स्मृति पुरस्कार, २०६३
- । साहित्य सङ्गम मकवानपुरबाट सम्मानपत्र, २०६३
- । नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी एमाले दोलखाद्वारा सम्मानपत्र, २०६३
- । लोकतान्त्रिक स्रष्टा सम्मान, २०६४
- । थकाली सेवा समितिद्वारा भूपि जन्मजयन्तीमा प्रदान गरिएको सम्मानपत्र २०६८
- । श्रीकृष्ण त्रिपाठी सेवा समाजद्वारा प्रदान गरिएको सम्मानपत्र २०६८
- । सैनध्वज नन्द कुमारी विद्वद्वृत्ति २०६९
- । नेपाल विद्याभूषण क २०७०

ख) विद्यार्थी जीवनमा प्राप्त गरेका पुरस्कार तथा सम्मान

- । २०४० सालमा विश्व हिन्दु सङ्घद्वारा आयोजित अन्तर क्याम्पस धार्मिक निबन्ध प्रतियोगितामा प्रथम भई सुवर्ण पदक तथा रु. १०००।(नगद पुरस्कार प्राप्त
- । लियो क्लब अफ हिमालयाज, पाटनद्वारा आयोजित उपत्यका व्यापी निबन्ध प्रतियोगितामा तृतीय भई पुरस्कार स्वरूप सिल्ड प्राप्त, २०३७
- । साहित्यकार पहलमानसिंह स्वारको शतवार्षिकीका उपलक्ष्यमा आयोजित अधिराज्यव्यापी अन्तरक्याम्पस निबन्ध प्रतियोगितामा द्वितीय स्थान प्राप्त भई रु. ३००। पुरस्कार प्राप्त, २०३५
- । पद्मकन्या क्याम्पसद्वारा विद्यार्थी युनियनका तर्फबाट आयोजित कविता गोष्ठीमा प्रथम, २०३६
- । पद्मकन्या क्याम्पसद्वारा त्रिभुवन जयन्ती तथा प्रजातन्त्र दिवसका उपलक्ष्यमा आयोजित अन्तरसदन साहित्य गोष्ठीमा कवितातर्फ प्रथम, २०३५
- । पद्मकन्या क्याम्पसद्वारा आयोजित साहित्य गोष्ठीमा निबन्धतर्फ द्वितीय, २०३५
- । पद्मकन्या क्याम्पसद्वारा त्रिभुवन जयन्ती तथा प्रजातन्त्र दिवसका उपलक्ष्यमा आयोजित अन्तरसदन साहित्य गोष्ठीमा गद्यतर्फ प्रथम, २०३५
- । रत्न पुस्तकालयको अठारौं वार्षिकोत्सव तथा महाकवि देवकोटाको एकहत्तरौं जन्मजयन्तीका उपलक्ष्यमा आयोजित उपत्यकाव्यापी महाविद्यालय स्तरीय साहित्य प्रतियोगितामा सान्त्वना पुरस्कार, २०३६

- । पाटन संयुक्त क्याम्पसको आयोजनामा सम्पन्न उपत्यकाव्यापी निबन्ध प्रतियोगितामा सान्त्वना पुरस्कार, २०३६
- । साहित्यिक पत्रकार सङ्घद्वारा आयोजित अन्तर क्याम्पस कवितावाचन प्रतियोगितामा द्वितीय, २०३६
- । पद्मकन्या क्याम्पस, विद्यार्थी युनियनका तर्फबाट आयोजित कविता गोष्ठीमा प्रथम, २०३६
- । दीपिका पत्रिकाका तर्फबाट गरिएको कविता गोष्ठीमा सहभागिता, २०३७
- । वाल्मीकि क्याम्पस विद्यार्थी युनियनद्वारा आयोजित कविगोष्ठीमा सहभागिता, २०३७
- । कीर्तिपुर बहुमुखी क्याम्पस, विद्यार्थी युनियनद्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रममा प्रशंसापत्र, २०३९
- । रोनास्टद्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगितामा सान्त्वना पुरस्कार स्वरूप रु. १०००। प्राप्त ।

२.१२ भ्रमण

सुधा त्रिपाठीको जन्म भारतको दार्जिलिङमा भए पनि उनको कर्मभूमि नेपाल नै रहेको छ । साहित्यिक भ्रमणमा रुचि राख्ने त्रिपाठीले प्राध्यापन पेसामा संलग्न रहँदा र साहित्यिक गतिविधिमा भाग लिने क्रममा देश विदेशका विभिन्न ठाउँको भ्रमण गरेकी छन् । देशभित्रका ५०।५५ जिल्लाको भ्रमण गर्न पुगेकी त्रिपाठी देश बाहिरका चीन, हङकङ र भारतको असम प्रान्तसम्म पुगेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीका व्यक्तित्वका पाटाहरू

मानिस सामाजिक प्राणी हो । ऊ समाजविना बाँच्न सक्दैन । त्यसैले उसको बाँच्ने आधार भनेकै समाज हो र ऊ स्वतन्त्र भएर आफू जन्मेको समाजमा बाँच्न चाहन्छ । हाम्रो समाज र यसको सामाजिक संरचना नै निरङ्कुशतन्त्रका रूपमा निर्माण भएको छ, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र भएर बाँच्न पाएको छैन । एउटै समाजभित्र पनि मान्छे, मान्छेका बिच असमानताको पर्खाल उभिएको छ, धनी एवं गरिबबिचको सिमाना छुट्टिएको छ र जातीय छुवाछुतको रेखा कोरिएको छ । एउटै कोखबाट जन्मेका सन्तानमा पनि कोही मालिक भएर समाजमा सत्ता सञ्चालन गर्छन् भने कोही दास भएर तिनै मालिकहरूकै सेवामा आफ्नो सम्पूर्ण जीवन व्यतित गर्छन् । यस्तो पितृसत्तात्मक संरचनाभित्र रहेको निम्न मध्यम वर्गीय परिवारमा पिता एकजनाको, त्यसमा पनि बलियो कमाई नहुँदा आर्थिक सङ्घर्ष गर्नु परिरहेको थियो भने अर्कातिर पितृसत्तात्मक समाजभित्र स्थापित परम्परागत मूल्य र मान्यता लादिएको परिवेशमा छोरी भएर जन्मिएकी त्रिपाठीले आफ्नो (महिलाको) खोसिएको अधिकार प्राप्त गर्न भीषण चुनौतीको सामना गरेकी छन् ।

निडर र स्वाभिमानकी प्रतिमूर्ति त्रिपाठी यी दुवै सङ्घर्षमा निरन्तर जुधिरहिन् । उनले पितृसत्तात्मक समाजले निर्माण गरेको अन्धविश्वास, कुरीति र परम्परागत मूल्य र मान्यतालाई पटककै रुचाइनन् । त्यसैले विद्रोही भएर यही कुप्रथाको विरोध गर्दै सङ्घर्षको मैदानमा खडा भइन् र आफ्नो कलमलाई सामाजिक बन्धन परिवर्तन गर्ने सङ्घर्षको बलियो हतियार बनाइन् । नारी भएर नारीकै समस्याभित्र रहेर सङ्घर्ष गर्दै आएकी त्रिपाठीका जीवनका समग्र आयामहरू यिनै नारी सङ्घर्षका प्रतिफल भएर आएका छन् । नारी, पुरुष दुवैको सहकार्यबाट समतामूलक समाजको निर्माण चाहने त्रिपाठी परम्परागत मूल्य र मान्यताका नाममा पुरुषले नारीप्रति प्रदर्शन गरेको निरङ्कुशताको विरोधी भएर देखिएकी छन् । उनीभित्र देखिएका यिनै विद्रोही भाव नै कतै उनका कवितामा पोखिएका छन्, कतै कथामा कोरिएका छन्, कतै निबन्ध भएर बाँधिएका छन्, कतै अभिनयात्मक रूपबाट नाटकमा देखिएका छन् भने कतै आलोचनात्मक रूपबाट समालोचनामा छरिएका छन् ।

यसरी उनीभित्र आन्तरिक रूपमा रहेका विद्रोही भावभित्र नै उनका जीवनका पाटाहरू कोरिएका छन् जसका कारण उनी समष्टिगत रूपबाट साहित्यकार बन्न पुगेकी छन् । उनी

समभावपूर्ण समाज निर्माणको आवाज उठाउँदै समाजसेवी बन्न पुगेकी छन् भने जीवनका लागि अति आवश्यक रूपमा रहेका स्वतन्त्रता र समानताका पाठहरू सिकाउँदा सिकाउँदै कुशल प्राध्यापक बन्न पुगेकी छन् । यसरी यिनै विभिन्न पक्षहरूको विश्लेषण गर्दै सुधा त्रिपाठीको समग्र व्यक्तिगत जीवनका पाटाहरूलाई तल विभिन्न शीर्षकमा प्रस्तुत गरिएको छ :

३.१. साहित्यकार व्यक्तित्व

बहुमुखी प्रतिभाकी धनी सुधा त्रिपाठीको साहित्यिक व्यक्तित्व अन्य व्यक्तित्वका तुलनामा अधिक महत्त्वपूर्ण देखिन्छ । साहित्यका विधागत रचना कथा, कविता, नाटक, निबन्ध र समालोचनामा यिनको साहित्यिक व्यक्तित्व बिस्तारित भएको छ । नेपाली साहित्यका क्षेत्रमा परिचित सुधा त्रिपाठीका साहित्यिक व्यक्तित्वलाई स्पष्ट व्यक्तित्वका साथै द्रष्टा व्यक्तित्वका रूपमा पनि लिन सकिन्छ । त्रिपाठीले हालसम्म आधा दर्जन निबन्ध सङ्ग्रह, आधा दर्जनभन्दा बढी नै समालोचना ग्रन्थ, एउटा कविता सङ्ग्रह, एउटा नाटक सङ्ग्रहका साथै केही अनुसन्धान ग्रन्थका साथै केही सम्पादन गरिएका ग्रन्थहरू पनि प्रकाशित गरेकी छन् । सुधा त्रिपाठीका डेढ दर्जनभन्दा बढी कृतिहरू प्रकाशित भइसकेका छन् भने आधा दर्जनभन्दा बढी कृतिहरू प्रकाशनोन्मुख अवस्थामा रहेका छन् । उनले हालसम्म दुई दर्जनभन्दा बढी कृतिहरू लेखिसकेकी छन् । विभिन्न पत्र पत्रिकामा फुटकर रूपमा उनका विभिन्न वैचारिक लेखहरू प्रकाशित भएका छन् भने थुप्रै लेखहरू रेडियो नेपालबाट पनि प्रसारित भएका छन् (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

यसरी नेपाली साहित्यका विविध विधामा कलम चलाउने सुधा त्रिपाठीको साहित्यिक व्यक्तित्वका पाटाहरू मध्ये निबन्धकार र समालोचक व्यक्तित्व सर्वाधिक उपलब्धिपूर्ण सावित भए पनि साहित्यका अन्य पाटाहरूमा कवि, नाटककार, कथाकार, अनुसन्धानकर्ताका साथै सम्पादक व्यक्तित्वलाई पनि उनको साहित्यिक जीवनबाट अलग राख्न नसकिने भएकाले क्रमशः निबन्धकार व्यक्तित्व, समालोचक व्यक्तित्व, कवि व्यक्तित्व, नाटककार व्यक्तित्व, कथाकार व्यक्तित्व, अनुसन्धाता व्यक्तित्व र सम्पादक व्यक्तित्वका रूपमा अध्ययन गर्नु सान्दर्भिक हुन्छ ।

३.१.१ निबन्धकार व्यक्तित्व

नेपाली साहित्यमा कान्छो विधाका रूपमा रहेको निबन्ध विधामा सुधा त्रिपाठीको स्थान महत्त्वपूर्ण रहेको देखिन्छ । २०३४ सालबाट निबन्ध विधामा कलम चलाउन सफल भएकी त्रिपाठीको

“नेपाली भाषा आजको परिप्रेक्ष्यमा” शीर्षकको निबन्ध सर्वप्रथम रेडियो नेपालबाट २०३४ सालमा प्रसारित भएको थियो । यसै निबन्धको रचनाबाट उनले आफ्नो निबन्ध यात्रा सुरु गरेकी हुन् ।

पितृसत्तात्मक समाजमा हुर्किएकी त्रिपाठीले त्यस समाजमा नारीले भोग्नु परेको पीडा र बाध्यतालाई यथार्थ रूपमा निबन्धका माध्यमबाट प्रस्तुत गरेकी छन् भने समाजका परम्परागत संस्कार र कुरीतिका साथै पुरुषले नारीलाई हेर्ने दृष्टिकोण अनि नारी आफै अनावश्यक भ्रमेलाबाट बाहिर आउन नसकेका विभिन्न परिस्थिति र कमजोरीलाई आफ्ना निबन्धमा स्पष्ट रूपमा व्यक्त गरेकी छन् । निबन्धका कतिपय ठाउँमा यथार्थभित्रै पनि उनले व्यङ्ग्यात्मक भावहरू प्रस्तुत गरेकी छन् । तिन दशकभन्दा लामो समय निबन्ध विधाका क्षेत्रमा व्यतित गरिसकेकी त्रिपाठीका हालसम्म पाँचवटा निबन्ध सङ्ग्रहहरू प्रकाशित भइसकेका छन् भने केही निबन्ध सङ्ग्रह अझै प्रकाशित हुन बाँकी नै रहेका छन् । उनका प्रकाशित निबन्धहरूलाई निम्नानुसार देखाउन सकिन्छ :

१. बादल, धर्ती र आस्थाहरू (निबन्ध सङ्ग्रह, २०५०)

२. जीवनसूत्र र स्वप्नाभास (निबन्ध सङ्ग्रह, २०५३)

३. सुट, टाई र सुँगुर (व्यङ्ग्य निबन्ध सङ्ग्रह, २०५९)

४. अमर सिर्जना (निबन्ध सङ्ग्रह, २०६५)

५. चेलीबेटीका बेग्लै कुरा (निबन्ध सङ्ग्रह, २०६८)

उनका अप्रकाशित निबन्धका रूपमा एक वैचारिक निबन्ध सङ्ग्रह रहेको छ । यसरी निबन्धका फाँटमा आफ्नो साहित्यिक स्थानलाई बलियो पार्न सफल त्रिपाठीको साहित्यिक जीवनलाई यस क्षेत्रको महत्त्वपूर्ण पक्षका रूपमा विश्लेषण गर्न सकिन्छ ।

३.१.२ समालोचक व्यक्तित्व

सर्वप्रथम मनोरमा पत्रिकामा समालोचना छपाएर समालोचना लेखनतर्फ प्रवृत्त भएकी सुधा त्रिपाठीका २०३६-३७ सालतिर रेडियो नेपालको ‘साहित्य संसार’ बाट पनि केही सङ्क्षिप्त समालोचनाहरू प्रसारित भएका थिए । त्रिपाठीका कथन अनुसार “समालोचना लेखनको प्रारम्भ अरूले समालोचना लेखेको देखेर स्वेच्छाले गरेको भए तापनि यसतर्फ सक्रियता भने पेसागत आवश्यकता एवम् पत्रपत्रिकाको अनुरोधद्वारा बढेको हो” (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

समालोचना लेखनका लागि प्रायः सबै प्रमुख विधामाथि उत्तिकै चाख राख्ने त्रिपाठी साहित्यका विविध प्रवृत्तिमाथि कलम चलाए पनि उनको विशेष जोड भने नारीवादी प्रवृत्तिमाथि रहेको छ । महिला लेखनको इतिहास, साहित्यमा महिला चित्रणको स्वरूप एवं महिला स्रष्टाको लेखनको अध्ययन उनका विशेष रुचिका क्षेत्र हुन् । समालोचनाका क्षेत्रमा साहित्यिक सफलता हासिल गर्न पुगेकी सुधा त्रिपाठीका प्रारम्भमा प्रकाशित फुटकर समालोचना यस प्रकार रहेका छन् :

क. सुलोचना महाकाव्यको सामाजिक पक्ष

ख. सुलोचना महाकाव्यको प्रकृति-प्रेम

ग. ओथेलो र विष्णुमायाको तुलनात्मक अध्ययन

यसैगरी उनका कृतिका रूपमा प्रकाशित समालोचनाहरू निम्न प्रकार रहेका छन् :

१. दृष्टिचौतारी (२०५८)
२. भूपिका कवितामा व्यङ्ग्यालङ्कार चेतना, २०५८
३. महिला समालोचक र नेपाली समालोचना (२०६२)
४. नारीवादका कठघरामा नेपाली साहित्य (२०६७)
५. नारीवादी सौन्दर्य चिन्तन (२०६८)
६. नेपाली उपन्यासमा नारीवाद (२०६८)
७. नेपाली नारीवादी समालोचना (२०६९)

यसरी रेडियो नेपालतिर एक दर्जनजति र पत्रपत्रिकातिर पाँच दर्जनजति गरी लगभग छ दर्जनजति समालोचना प्रकाशित गराएकी त्रिपाठीले साहित्यका क्षेत्रमा समालोचना मार्फत विशिष्ट योगदान पुऱ्याएकी छन् ।

३.१.३ कवि व्यक्तित्व

कविता विधाबाट आफ्नो साहित्य यात्रा प्रारम्भ गरेकी सुधा त्रिपाठीको जीवनमा कविता विधाको ऐतिहासिक महत्त्व रहेको पाइन्छ । २०३१ सालतिर कक्षा १० मा पढ्दा देखि नै 'शिक्षा

दिवस' शीर्षकको कविता लेखेकी त्रिपाठीको २०३४ सालमा "मेरा व्यथाहरूको गीत" शीर्षक कविता सर्वप्रथम प्रज्ञा पत्रिकामा प्रकाशित गरी औपचारिक रूपबाट साहित्ययात्रा सुरु भएको हो । उनका २०३६ सालदेखि २०६५ सालसम्मका ३५ वटा फुटकर कविताहरू जिराहा वर्तमान नामक कृतिमा सङ्कलित भई २०६७ सालमा कविता सङ्ग्रहका रूपमा प्रकाशित भएका छन् । यस सङ्ग्रहमा सङ्कलित पैतिसवटा कविताहरूमध्ये अधिकांश कविताहरू समकालीन राष्ट्रिय जीवन सन्दर्भका सेरोफेरोसँग नै सम्बद्ध रहेका छन् भने कतिपय चाहिँ कविको अन्तर्वैयक्तिक भावुकता र दृष्टिप्रक्षेपण प्रकट भएका कविताहरू पनि छन् । हाल उनका दुईवटा कविता सङ्ग्रह प्रकाशित हुन बाँकी (पौडेल, पृ. 'ग') रहेको कुरा उल्लेख भएको छ ।

यसरी सुधा त्रिपाठीले आफूलाई कवि व्यक्तित्वका रूपमा परिचित गराएकी छन् । स्तरीयताका दृष्टिले नेपाली भाषामा लेखिएका उनका कतिपय कविताहरू विद्रोही भावभित्र नै मिठो सङ्गीत, श्रुतिमधुर, सरल र राष्ट्रिय जीवनको यथार्थ अभिव्यक्ति दिन सफल भएका छन् । २०३१ सालदेखि आजसम्म अविच्छिन्न रूपमा कविता लेखनमा सक्रिय सुधा त्रिपाठीका कवितात्मक रचनाहरूको समष्टि नै उनको कवि व्यक्तित्वको मूर्त रूप हो । यसबाट कविता क्षेत्रमा पनि यिनको छुट्टै व्यक्तित्व निर्माण भएको पाइन्छ ।

३.१.४ नाटककार व्यक्तित्व

साहित्यका क्षेत्रमा लागेका हरेक व्यक्तिले आफ्ना मनका भावना र विचारलाई प्रकट गर्ने माध्यमका रूपमा साहित्यलाई रोजेका हुन्छन् । उनीहरूले साहित्यका विभिन्न विधाका माध्यमबाट आफूमा अन्तर्निहित भावनालाई प्रस्तुत गरेका हुन्छन् । सुधा त्रिपाठी पनि तिनै साहित्यकार मध्येकी एक विशिष्ट प्रतिभा हुन् जसले आफ्ना मनभित्रका भाव वा विचारलाई साहित्यका विभिन्न विधा निबन्ध, कविता, कथा र नाटकका माध्यमबाट समाजमा प्रस्तुत गरेकी छन् । उनी उत्कृष्ट निबन्धकार, समालोचक र कवि मात्र नभई सफल नाटककार पनि हुन् । उनले स्नातकोत्तर अध्ययनका क्रममा सर्वप्रथम २०३८ सालतिर नाटकको रचना गरी निर्देशन सहित अभिनय पनि आफैले गरेकी थिइन् । आफ्नै गाउँमा सामन्त र शोषकले सिधासादा व्यक्तिमाथि गरेको अन्याय र अत्याचारका विरोधमा देखाइएको उक्त नाटक उनलाई नाट्य क्षेत्रमा प्रवेश गर्ने बीज भूमिका रूपमा देखा परेको पाइन्छ ।

यसरी विद्यार्थी जीवनदेखि नै नाटक विधामा प्रवेश गरेकी त्रिपाठीको २०५४ सालमा निःश्वासका गुजुल्टाहरू (नाटक सङ्ग्रह, २०५४) प्रकाशित भएको छ भने विभिन्न पत्रपत्रिकाहरूमा

केही फुटकर नाटकहरू छरिएर रहेका छन् । सातवटा नाटक सङ्कलन गरी एउटा नाटक सङ्ग्रह प्रकाशित गर्न सफल साहित्यकार सुधा त्रिपाठीलाई नाटककार व्यक्तित्वका रूपमा पनि मूल्याङ्कन गर्न सकिन्छ ।

३.१.५ कथाकार व्यक्तित्व

सुधा त्रिपाठीका साहित्यिक व्यक्तित्वका पाटाहरूलाई विश्लेषण गर्ने क्रममा उनलाई कथाकार व्यक्तित्वका रूपमा पनि चिनाउन सकिन्छ । उनी निबन्धकार, समालोचक, कवि र नाटककार मात्र नभई कथाकार पनि हुन् । २०३५ सालमा “विदीर्ण मातृहृदय” शीर्षकको कथा साप्ताहिक पत्रिकामा छपाई आफ्नो कथायात्रा सुरु गरेकी त्रिपाठीका अन्य थुप्रै कथाहरू विभिन्न पत्र पत्रिकामा प्रकाशित भएका छन् । फुटकर कथाहरू सङ्कलन गरी कथा सङ्ग्रहको स्वरूप निर्माण गरे पनि हालसम्म कथाहरूको सङ्ग्रह भने प्रकाशित भएको छैन । प्रकाशनोन्मुख अवस्थामा रहेको एक कथा सङ्ग्रहका साथै अर्को बाल कथा सङ्ग्रह पनि प्रकाशनोन्मुख अवस्थामा नै रहेको छ (सुधा त्रिपाठीबाट प्राप्त जानकारी) ।

यसरी विभिन्न पत्र पत्रिकामा प्रकाशित फुटकर कथा र बाल साहित्यका क्षेत्रमा पनि कलम चलाउने त्रिपाठीलाई बाल कथाका माध्यमबाट पनि कथाकार व्यक्तित्वका रूपमा समेत अधि सार्न सकिन्छ ।

३.१.६ अनुसन्धाता व्यक्तित्व

सुधा त्रिपाठीका साहित्यिक पाटाहरूको चर्चा गर्दा उनको साहित्यिक अनुसन्धाता व्यक्तित्वलाई बिर्सन सकिंदैन । साहित्यका क्षेत्रमा अनवरत रूपमा कार्यरत रहेकी सुधा त्रिपाठी कहिले सिर्जनात्मक रचनाहरू कोर्दै साहित्यको भण्डार भर्न पुगेकी छन् भने कहिले साहित्यिक विषयमा समालोचना गर्दै साहित्यिक कृतिभित्रका गुण र दोषलाई नियाल्न पुगेकी छन् । यसरी सिर्जनकर्ता र समालोचक मात्रै भएर पनि उनी साहित्यका क्षेत्रमा सन्तुष्ट हुन सकिनन् र साहित्यकै क्षेत्रमा खोजमूलक अनुसन्धान गर्नमा पनि उनी तल्लीन भइन् । उनले साहित्यका विभिन्न विधागत क्षेत्रमा रहेर कविताभित्रका व्यङ्ग्य चेतना, अलङ्कार चेतना खोतल्ने काम गरेकी छन् । त्यसैगरी आधुनिक नेपाली उपन्यास र यसै विधाभित्रका विभिन्न उपन्यासगत स्रष्टाका विभिन्न उपन्यासमा नारीवादी चेतनाको गहन अनुसन्धान गर्ने महत्त्वपूर्ण कार्य गरेकी छन् । सोही क्रममा उनी

आधुनिक नेपाली उपन्यासमा नारीवादी चेतना शीर्षकमा विद्यावारिधि समेत पुरा गरी अनुसन्धानका क्षेत्रबाट डाक्टरको उपाधि समेत प्राप्त गर्न सफल भएकी छन् ।

सो क्रममा प्रकाशित भएका अनुसन्धानका विषयहरू निम्नानुसार रहेका छन् :

१. भूपिका कवितामा व्यङ्ग्य चेतना
२. भूपिका कवितामा अलङ्कार चेतना
३. महिला समालोचक र नेपाली समालोचना
४. आधुनिक नेपाली उपन्यासमा नारीवादी चेतना
५. मदनमणि दीक्षितका उपन्यासमा नारीवादी चेतना
६. लैनसिंह बाङ्देलका उपन्यासमा नारीवादी चेतना

उपर्युक्त बाहेक त्रिपाठीका अनुसन्धानात्मक कृतिमा नेपाली उपन्यासमा नारीवाद (२०६८) रहेको छ । यस कृतिभित्र आधुनिक कालमा उपलब्ध भएसम्मका नेपाली उपन्यासहरूको व्यापक अध्ययन गरी तीमध्ये कम्तिमा मध्यम स्तरसम्मका नारीकेन्द्री र नारी समस्याकेन्द्री उपन्यास चयन गरी तिनको सर्वेक्षण गरिएको छ । त्यसरी चयन गरिएका उपन्यासमध्ये नारीवादी कोणबाट सशक्त ठहरिएका जम्मा छवटा उपन्यासको विश्लेषण गरिएको छ । यसरी विश्लेषित हुने मध्येमा रूपमती, स्वास्नीमान्छे, शान्ति, अनुराधा, तिन घुम्ती र अनिंदो पहाडसँगै उपन्यास परेका छन् । यस पुस्तकमा उपर्युक्त उपन्यासको विश्लेषण गरिसकेपछि तिनमा भेटिएको नारीवादी चेतना खुट्याउने काम समेत गरिएको छ ।

३.१.७ सम्पादक व्यक्तित्व

पुस्तकाकार कृतिका सम्पादकका रूपमा

सुधा त्रिपाठीको साहित्यिक परिचयका क्रममा सम्पादक व्यक्तित्वले पनि महत्त्वपूर्ण भूमिका खेलेको देखिन्छ । उनले नेपाली साहित्यका विधाभित्र रहेर वर्षौंदेखि साहित्यिक क्षेत्रमा कलम चलाएर साहित्यका क्षेत्रमा योगदान दिएर पनि गुमनाम रहेका, साहित्यका क्षेत्रभित्रै हराएका विभिन्न साहित्यिक व्यक्तित्वको जीवनीको सम्पादन गर्नुका साथै तिनै साहित्यकारहरूका छरिएर रहेका

विभिन्न लेख रचनाहरूको सङ्कलन गरी कृतिको सम्पादन समेत गर्ने गरेकी छन् । उनले सम्पादन गरेका कृतिहरूलाई निम्नानुसार प्रस्तुत गर्न सकिन्छ :

१. दोलखा दर्पण (२०५१)
२. महिला समालोचक र नेपाली समालोचना (२०६२)
३. विद्वत्केशरी जगन्नाथ शर्मा त्रिपाठी : अनेक आयाम (२०६९)
४. नेपाली नारीवादी समालोचना (२०७०)

पत्रपत्रिकाका सम्पादकका रूपमा

१. अस्मिता मासिक पत्रिका
२. पौरख मासिक पत्रिका
३. गन्तव्य सामयिक सङ्कलन
४. अभ्युत्थान सामयिक सङ्कलन
५. प्रलेस सामयिक प्रकाशन

३.२ शिक्षक तथा प्राध्यापक व्यक्तित्व

जीवनको आधाभन्दा बढी समय प्राध्यापन पेसामा बिताउन पुगेकी सुधा त्रिपाठीका व्यक्तित्वका पाटाहरूमध्ये प्राध्यापन पेसा पनि जीवनको महत्त्वपूर्ण पाटो हो । स्कुले जीवन (२०३१ साल) देखि नै शिक्षण पेसा अँगालेकी त्रिपाठी हालसम्म पनि यही पेसामा कार्यरत छन् । विद्यार्थी छँदा शिक्षकको कार्यभार सम्हालेकी त्रिपाठीले २०४० सालतिर कन्या क्याम्पसमा आइ.ए. प्रथम र द्वितीय वर्षका विद्यार्थीहरूलाई पढाएकी थिइन् । एम.ए. को शोधपत्रको तयारीका क्रममा उनले २०४१ सालमा पद्मकन्या क्याम्पसमा नौ महिना प्राध्यापन गरिन् । शोधपत्र पश्चात् २०४२ सालमा पद्मकन्या क्याम्पसमा अस्थायी नियुक्ति प्राप्त गरेकी त्रिपाठीले २०४२ साल भाद्रदेखि कीर्तिपुर बहुमुखी क्याम्पसमा काजमा अध्यापन कार्य सुरु गरिन् र त्यही क्याम्पस (हालको त्रिभुवन विश्व विद्यालय क्याम्पस, त्रि.वि.कीर्तिपुर) मा २०४७ सालमा स्थायी सहायक प्राध्यापक, २०५० सालमा उपप्राध्यापक, २०६६ सालमा सहप्राध्यापक र हाल २०७० सालमा प्राध्यापक भएर ३० वर्ष

लामो प्राध्यापन पेसा अँगाली कुशल प्राध्यापकको व्यक्तित्व निर्माण गरेकी छन् । उनले वि.सं. २०४० देखि नै नेपाली विषयको प्राध्यापनको जिम्मेवारी बोकी एक कुशल र प्रभावशाली व्यक्तित्वका रूपमा पनि आफूलाई परिचित गराएकी छन् । यसरी यति लामो जीवनलाई शिक्षण पेसामा संलग्न गराई पदीय दायित्वप्रति सचेत नारी व्यक्तित्वका रूपमा त्रिपाठी स्थापित भएकी छन् ।

कसैसँग नभुक्ने स्वाभिमानी नारी व्यक्तित्व र अलिक कडा स्वभावकी हुँदा उनी आफू चाकडी र चाप्लुसीबाट सधैं टाढा रहने गर्दछिन् । सधैं हाँसिरहने हाँसिलो र सहयोगी स्वभाव भएका कारण उनी असल प्राध्यापक हुन् । जीवनको लामो समय शिक्षण पेसामा जीवन बिताएकी सुधा त्रिपाठीले आफूलाई कुशल प्राध्यापक व्यक्तित्वका रूपमा चिनाएकी छन् ।

वास्तवमा सुधा त्रिपाठीको गहन अध्ययन, प्राध्यापन कुशलता र लामो अनुभवले पनि उनको शिक्षक व्यक्तित्व माझिदै र खारिदै गएको पाइन्छ । साथै उनको शैक्षिक परिवेश अझ परिष्कृत र गहन रहेको सन्दर्भ पनि यहाँ उल्लेखनीय रहेको छ ।

३.३. समाजसेवी व्यक्तित्व

सुधा त्रिपाठी एक समाजसेवी व्यक्तित्व पनि हुन् । उनले आफूलाई समाजका विभिन्न कार्यमा क्रियाशील तुल्याउँदै आएकी छन् । उनका विचारमा हाम्रो समाज पितृसत्तात्मक मूल्य र मान्यतामा आधारित छ, जसका कारण नारीहरूले पुरुषको दमन र उत्पीडनमा जीवन निर्वाह गर्नुपर्छ । जबसम्म समाजमा नारी र पुरुषको समान हैसियत र पहिचानको विकास हुँदैन तबसम्म एउटा समुन्नत समाजको कल्पनासम्म गर्न सकिँदैन । त्यसैले उनको दृष्टिकोण पुरुषहरूलाई मात्र नभई नारीहरूलाई पनि समाजका हरेक क्षेत्रमा सहभागी गराउनुपर्छ भन्ने रहेको छ । त्यसैले उनले यसै विचारलाई समेट्दै विभिन्न लेख र रचना सिर्जना गर्दै आएकी छन् । यसै विचारलाई निरन्तरता दिने र सिर्जनाका माध्यमबाट महिलाका आवाज समेटिनुपर्छ भन्ने उद्देश्य बोकेर **अभ्युत्थान महिला साहित्य प्रतिष्ठान**की संस्थापक अध्यक्ष भएर समाज सेवाको बाटोमा अग्रसर रहेकी छन् ।

त्यस्तै वर्गीय पक्षधरताको वकालत गर्दै समाजमा जहिले पनि हुनेखाने वर्गले हुँदा खाने वर्गलाई हरेक क्षेत्रमा शोषण र दमन गरिरहेको विचार प्रस्तुत गर्ने त्रिपाठी **प्रगतिशील लेखक सङ्घ नेपाल**की पूर्व उपाध्यक्ष भएकी हुन् भने **घनश्याम ढकाल स्मृति प्रतिष्ठान**की वर्तमान उपाध्यक्ष हुन् । त्यसैगरी **बालतृणा** पत्रिका, **अखिल नेपाल लेखक सङ्घ**, **प्रगतिशील लेखक सङ्घ नेपाल**, **प्रतिभा**

प्रवाह, साहित्य सदन नेपाल, सिस्नुपानी नेपाल, युद्ध प्रसाद मिश्र स्मृति प्रतिष्ठान, राष्ट्रिय महिला आयोग आदि विभिन्न सङ्घ संस्थाका सल्लाहकार भएका सन्दर्भले पनि उनी समाजसेवाको बाटोमा लागेको कुरा स्पष्ट हुन्छ । त्यसैगरी अभ्युत्थान महिला साहित्य प्रतिष्ठान, साहित्य सदन नेपाल, सिस्नुपानी नेपाल, युद्ध प्रसाद मिश्र स्मृति प्रतिष्ठानजस्ता संस्थाहरूमा त्रिपाठी आजीवन सदस्यका रूपमा रहेकी छन् ।

सधैंभरि स्वस्थ एवं समुन्नत समाजको परिकल्पना गर्ने र त्यसका लागि आफ्ना तर्फबाट पूर्ण सहयोग गर्न तत्पर त्रिपाठी समाजमा व्याप्त अन्याय, अत्याचार, घुसखोरी, भ्रष्टाचार, चाकडी चाप्लुसीजस्ता कुरालाई देखी नै सहन्नन् । उनको यस्तो स्वभाव र प्रवृत्ति बुभेका मानिसहरू सहयोगका अपेक्षाले उनका निकट आउने गर्छन् र उनी पनि आफ्नो व्यक्तिगत फाइदा बेफाइदा केही नहेरी त्यस्ता व्यक्तिलाई आँखा चिम्लेर सघाउने गर्छिन् । यस क्रममा उनले धेरै पटक धेरैथरि समस्याको सामना पनि गर्नु परेको छ । उदाहरणका रूपमा साभा प्रकाशनको सन्दर्भलाई अघि सार्न सकिन्छ । त्यस संस्थाका तत्कालीन अध्यक्ष एवं महाप्रबन्धक (हाल अख्तियारद्वारा निलम्बित) ममता भा तथा त्यहाँका निर्वाचित सञ्चालक हरिगोविन्द लुइँटेल, अनिल पौडेल र नयनराज पाण्डे समेतको मिलेमतोमा सो संस्था धराशायी बन्दै गएकामा दुःखी भएका कर्मचारीले सो सम्बन्धमा कलम चलाई साभा प्रकाशन बचाउनका लागि अग्रसर हुन गरेको आग्रह स्वीकार गरी लेख लेख्दा 'गुन गर्दो हलो कपाल छेडिमाग्दो' भने भैं उनले मुद्दामामिलाको चक्रव्युहमा फस्न बाध्य हुनु परेको छ ।

यसरी साहित्यका विभिन्न विधामा कलम चलाउन सफल त्रिपाठीले साहित्यका माध्यमबाट त समाज सेवा गरेकी नै छन् । त्यसका अतिरिक्त अन्य विभिन्न सङ्घ संस्थामा आवद्ध रहेर तथा आफू आवद्ध नरहेका स्थानमा देखिएका विकृति एवं विसङ्गतिका बारेमा लेखिदिएर र बोलिदिएर समाजसेवाको बाटोलाई निरन्तरता दिएकी छन् जसका कारण उनका व्यक्तित्वका पाटाहरूको चर्चा गर्दा समाजसेवी व्यक्तित्वको पाटालाई पनि उनको जीवनबाट अलग पार्न सकिदैन ।

३.४ अन्य साहित्यिक सक्रियता

सुधा त्रिपाठी सिर्जनशील व्यक्तित्व हुन् । उनी साहित्य सिर्जनाका हरेक विधामा क्रियाशील भएर लागिपरेकी छन् । निबन्ध, समालोचना, कविता, कथा, नाटक आदि विधामा कलम चलाउनु उनको साहित्यिक जीवनको महत्त्वपूर्ण पाटो हो । यसका अतिरिक्त पनि उनी अन्य साहित्यका

क्षेत्रमा पनि सक्रिय रूपमा अधि बढेकी छन् । विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमहरूमा कार्यपत्र प्रस्तुतिमा उनको महत्त्वपूर्ण भूमिका रहन गएको देखिन्छ । अन्य लेखकका कार्यपत्र एवम् पुस्तकहरूको समीक्षा गर्ने त्रिपाठीले विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमहरूको संयोजन समेत गरेकी छन् । साहित्यिक प्रशिक्षण आदि सन्दर्भमा विशेष सक्रियता रहने सुधा त्रिपाठीले लगभग छ दर्जनजति स्नातकोत्तर शोधपत्रको निर्देशन गरेकी छन् भने थुप्रै साहित्यिक पुस्तकहरूको भूमिका लेखनमा पनि सक्रिय भएर लागिपरेकी छन् । यसरी साहित्यका विशिष्ट विधामा सक्रिय हुनका साथै साहित्यका अन्य विभिन्न क्रियाकलापमा पनि सक्रिय भएर लाग्नु सुधा त्रिपाठीको जीवनको महत्त्वपूर्ण पक्ष हो ।

सुधा त्रिपाठीको साहित्यिक यात्रा, चरण विभाजन र प्रवृत्ति

४.१ जीवनी, व्यक्तित्व र साहित्यिक लेखनका बिच अन्तर्सम्बन्ध

सुधा त्रिपाठीको ५५ वर्षे जीवनयात्रालाई हेर्दा उनको जीवनचक्र विभिन्न परिवेशबाट गुज्रेको देखिन्छ । घरमा पारिवारिक सङ्ख्या धेरै भएको र आफ्नो पैतृक सम्पत्ति पनि नलिएका पिता एकजना मात्र आयआर्जन गर्ने व्यक्ति भएकाले उनले बाल्यकालदेखि नै विभिन्न किसिमको सङ्घर्ष गर्दै आउनु परेको थियो । पितृसत्तात्मक समाजमा छोरीप्रति राख्ने सामाजिक दृष्टिकोण फरक भएका कारण पनि उनले अध्ययनका क्रममा विभिन्न समस्याहरूसँग जुध्दै अघि बढ्नु परेको थियो । आफ्ना पिताले पुख्र्यौली सम्पत्ति नलिएको र पिता एकजनाको मात्र कमाइका कारण उनले बाल्यकालदेखि नै आर्थिक अभावभित्र छटपटिनु पर्ने बाध्यता थियो । त्रिपाठी आफू छोरी भएर जन्मिएको आभास हुँदा वा नहुँदै आफ्ना घरमा, नातागोतामा, छरछिमेक र टोलमा पुरुषले नारीलाई गर्ने व्यवहार देख्दै र अनुभव गर्दै आएकी थिइन् । स्कूल पढ्दादेखि नै आफ्नो आर्थिक अवस्था कमजोर हुँदा आफू आफ्ना साथीभाइबाट तिरस्कृत र अपमानित हुनुपरेको कुरा उनको कलिलो दिमागबाट हट्न सकेको थिएन । यिनै घटनाहरू यिनका जीवनका वास्तविक घटना थिए । सुनेका, देखेका र अनुभव गरेका घटनाहरू जीवनका वास्तविकता थिए । यिनै घटनाहरूबाट पीडित त्रिपाठीले प्रत्यक्ष रूपबाट विद्रोह गरेर अगाडि बढ्न सकिनन् । यिनै घटनाहरूबाट स्वयं भित्रभित्रै जलिरहिन । अन्तर्मुखी स्वभाव भएकी त्रिपाठीको यिनै घटनाहरूले उकुसमुकुस भएको मनको विस्फोटन भई साहित्यिक रूप लियो । यसैबाट उनी साहित्यकार बनिन् । उनका जीवनका यिनै वास्तविक घटना, पितृसत्तात्मक समाजमा नारीले भोगेको यथार्थ घटना उनका साहित्यिक सिर्जनाका उत्प्रेरक एवं विषयवस्तु भएर पोखिए र समालोचनामा पनि समेटिए ।

यसरी उनको साहित्यको विकास हुनुमा उनका पिता जगन्नाथ शर्मा त्रिपाठीको साहित्यिक प्रेरणा र उनी हुर्केको समाजभित्रका सामाजिक, सांस्कृतिक र आर्थिक परिवेश महत्त्वपूर्ण कारक तत्वका रूपमा देखा परेका छन् भने यसलाई मलजल गर्ने काम उनीभित्र भएको अथक परिश्रम, लगनशीलता र प्रतिभाले नै निर्वाह गर्दै आएका छन् । यिनै लगनशीलता र प्रतिभाको उपजका रूपमा उनको जीवन र उनले भोगेका तथा देखेका नारी पीडा नै साहित्य भएर देखियो । त्यसैले उनको जीवनसँग साहित्यको महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध रहेको देखिन्छ ।

सुधा त्रिपाठी एक कुशल शिक्षक र समाजसेवी नारी हुन् । यस बाहेक उनले आजसम्म निबन्ध, समालोचना, कविता, नाटक गरी डेढ दर्जनभन्दा बढी कृतिहरू प्रकाशित गराइसकेकी छन् भने कथा सङ्ग्रह लगायत आधा दर्जनभन्दा बढी कृतिहरू प्रकाशनोन्मुख अवस्थामा रहेका छन् । यसका साथै उनले अन्य विभिन्न लेख, संस्मरण, समीक्षा र भूमिकाहरू लेखेर एक सिर्जनशील नारी साहित्यकारका रूपमा पनि आफ्नो व्यक्तित्व निर्माण गरेकी छन् । उनका मौलिक सिर्जनाहरू सहज, सरल तथा मिठासपूर्ण अभिव्यक्तिका साथै सामाजिक यथार्थतालाई विभिन्न उखान, टुक्का, अलङ्कार, विम्ब र प्रतीकका माध्यमबाट कतै व्यञ्जनात्मक प्रस्तुति र कतै अभीधात्मक प्रस्तुतिका कारण उनको साहित्यले उचाइ प्राप्त गर्न सफल भएको छ । व्यञ्जनात्मक, अभीधात्मक र व्यङ्ग्यात्मक प्रस्तुति नै उनका साहित्यगत विशेषता हुन् । लगनशीलता, दृढता र विद्यार्थी अवस्थादेखि नै साहित्यप्रतिको सचेत भावनाले अभिप्रेरित साहित्यिक व्यक्तित्व मध्येमा पनि उनको निबन्धकार व्यक्तित्व बढी उज्ज्वल देखिएको छ । निबन्धकार व्यक्तित्वलाई मार्ग निर्देशन गर्नमा भने अन्य व्यक्तित्वको भूमिका पनि महत्त्वपूर्ण रहेको छ ।

दुई सन्तानकी आमाका रूपमा तिनको लालनपालन, शिक्षा-दीक्षा र आजीविकाका क्रममा आफ्नो लामो जागिरे जीवनका कारणबाट उनले साहित्यिक व्यक्तित्व निर्माणमा प्रशस्त सङ्घर्ष गर्नुपरेको देखिन्छ । नेपाली विषयकी प्राध्यापक त्रिपाठीले सामाजिक र मानवीय न्यायका पक्षमा वकालत गर्दै नारीमाथिको अन्याय, अत्याचार, शोषण, दमन र भेदभाव, मनभित्रका छटपटी, उकुसमुकुस, आन्तरिक चेतनाको प्रवाह आदिजस्ता प्रवृत्ति र अन्ध परम्परा विरुद्ध साहित्यका साथै विभिन्न सङ्घ संस्थाका माध्यमबाट आवाज उठाउँदै आएकी सुधा त्रिपाठी वर्तमान नेपाली समाजकी सफल र स्वाभिमानी नारी साहित्यकार हुन् । सुधा त्रिपाठीले जीवनका ५५ वसन्त पार गर्दा नगर्दै आजसम्म आइपुग्दा आफ्ना जीवन भोगाइका तथा व्यक्तित्वका अनेक पाटाहरूको निर्माण गरेकी छन् । यीमध्ये पनि साहित्यकार व्यक्तित्व अन्य व्यक्तित्वका तुलनामा बढी टड्कारो भएर देखा पर्दै आएको छ । साहित्य सिर्जनामा आफ्ना जीवन भोगाइका क्रममा देखेका, सुनेका, भोगेका यथार्थ घटनाहरूलाई अमूर्त र यथार्थको अनुपम मेल गराई स्पष्ट, सरल र सहज शैलीमा अभिव्यक्त गरी आफ्नो निजत्व समेत कायम गर्न सफल भएकी स्रष्टा त्रिपाठीले साहित्य सिर्जनामै चार दशकभन्दा बढी समय बिताइसकेकी छन् र अद्यापि उनी साधनाशील र सृजनारत देखिन्छिन् । यसरी परिश्रमी/मेहेनती सुधा त्रिपाठीको जीवनी र साहित्य सिर्जनाका बिचमा एक अर्काको प्रभाव र अन्तः सम्बन्ध स्पष्ट रूपमा परिलक्षित भएको देखिन्छ ।

परम्परागत सामाजिक पद्धतिका विरुद्ध युगीन परिवर्तनकी संवाहक बनेर देखा परेकी सुधा त्रिपाठी विद्यार्थी कालदेखि नै साहित्यिक क्षेत्रमा प्रवेश गरेकी हुन् । निबन्ध विधामा सर्वाधिक ख्याति प्राप्त गर्न सफल त्रिपाठीको साहित्यिक यात्राको प्रारम्भ भने कविता विधाबाट नै भएको देखिन्छ । बहुमुखी प्रतिभाकी धनी त्रिपाठीले निबन्ध, समालोचना, कविता, नाटक र कथा विधामा कलम चलाएकी छिन् भने उनको सम्पादनका क्षेत्रमा पनि महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेको देखिन्छ । कविता विधाबाट आफ्नो साहित्यिक यात्राको औपचारिक घोषणा गरेकी त्रिपाठीले साहित्यका क्षेत्रमा निबन्ध र समालोचनाबाट नै विशेष रूपमा आफ्नो प्रभाव जमाउन पुगेको देखिन्छ । फुटकर रचनाका माध्यमबाट लेखनका हिसाबले २०३१ सालदेखि र प्रकाशनका माध्यमले २०३४ सालदेखि नै नेपाली साहित्यमा प्रवेश गरेकी हुन् भने २०५० सालमा आएर मात्रै उनको पहिलो पुस्तकाकार कृतिको प्रकाशन भयो । पहिलो प्रकाशित पुस्तकका रूपमा **बादल, धर्ती र आस्थाहरू** नामक निबन्ध सङ्ग्रह (२०५०) रहेको देखिन्छ । यिनका हालसम्म पाँचवटा निबन्ध सङ्ग्रह, छवटा समालोचना, एउटा कविता सङ्ग्रह, एउटा नाटकका साथै केही सम्पादित ग्रन्थहरू र केही अनुसन्धानमूलक ग्रन्थहरू गरी जम्मा १७ वटा कृतिहरू प्रकाशित भएका छन् ।

आफ्नो जीवन यात्राका क्रममा भोगेका तिता-मिठा अनुभव एवम् दुःख सुखका क्षणहरूलाई लेखनका माध्यमबाट अभिव्यक्त गर्ने गरेकी त्रिपाठी नेपाली साहित्यका क्षेत्रमा निबन्धकार, कवि, समालोचक, नाटककार र कथाकार व्यक्तित्वका रूपमा स्थापित हुन पुगेकी छिन् । वस्तुतः साहित्य साधनामा लामो समय यात्रा पार गरिसकेकी त्रिपाठीका साहित्यका प्रवृत्तिगत घुम्ती वा मोडहरूको निर्योर्ल, सीमाङ्कन, विश्लेषण र विवेचना गर्नका लागि नै उनको साहित्यिक यात्राको चरण विभाजनको आधार र औचित्यको अध्ययन गर्न आवश्यक देखिन्छ ।

४.२ चरण विभाजनको औचित्य र आधार

साहित्यकारको साहित्य यात्रामा विभिन्न मोडहरू आउँछन् । यस्ता मोड वा घुम्तीहरूले नै स्रष्टाका सिर्जनात्मक प्रवृत्तिमा परिवर्तन गर्न सक्छन् । ती मोडहरू कसरी र कुन ठाउँमा परिवर्तन भएका छन् भनी तिनलाई छुट्याएर वर्गीकरण गरी प्रत्येक मोडले आधारभूत कारणहरूसँग विभिन्न समयमा लेखिएका कृतिहरूको अन्तः सम्बन्ध केलाएर साहित्यको मूल्याङ्कन गर्न सकिन्छ ।

त्यसैगरी साहित्यकारका साहित्यिक यात्रामा फरक मोडहरू देखिनुमा पनि विभिन्न कारणहरू हुन सक्छन् । यसमा साहित्यकार हुर्केको समाज र त्यसभित्र विद्यमान सामाजिक, सांस्कृतिक,

आर्थिक, शैक्षिक र राजनीतिक वातावरणभित्रको जीवन भोगाइले महत्त्वपूर्ण भूमिका खेलेको हुन्छ । साहित्यिक यात्रामा प्रायः सबै साहित्यकारका साहित्य रचना गर्ने प्रारम्भिक अवस्था र प्रौढ अवस्थाका साहित्यिक दृष्टिकोणमा परिवर्तन आयो भने उनीहरूका साहित्यिक कृतिहरूको विश्लेषण गर्न चरण विभाजनको आवश्यकता पर्दछ । साहित्यकारको समग्र साहित्यिक यात्राको अध्ययन गर्न चरण विभाजनले सजिलो पार्दछ । यसैगरी कृतिहरूको परिमाण तिनको प्रकाशन, समय, गुणस्तर परिवर्तन, साहित्यिक धारणागत प्रवृत्तिको अन्तः विकास आदि आधारमा समेत चरण विभाजन गर्न सकिन्छ । यिनै आधारबाट साहित्यकार सुधा त्रिपाठीका लगभग चार दशक समय खर्चिएर रचना गरिएका विभिन्न विधागत कृतिहरूको विवेचना, विश्लेषणका साथै सीमाङ्कन गरी चरण विभाजन गरिएको छ :

४.२.१ चरण विभाजन

सुधा त्रिपाठीको लेखनको प्रारम्भ तथा विकासका आधारमा उनको लेखन यात्रालाई निम्न लिखित तिन चरणमा बाँडी अध्ययन गरिएको छ :

१. पहिलो चरण : वि.सं. २०३१ देखि वि.सं. २०४९ सम्म,
२. दोस्रो चरण : वि.सं. २०५० देखि वि.सं. २०६४ सम्म,
३. तेस्रो चरण : वि.सं. २०६५ देखि हालसम्म ।

४.२.१.२ पहिलो चरण (वि.सं. २०३४-२०४९)

‘मेरा व्यथाहरूको गीत’ शीर्षकको पहिलो कविता वि.सं. २०३४ मा प्रज्ञा पत्रिकामा प्रकाशन गरी साहित्यका क्षेत्रमा प्रवेश गरेकी त्रिपाठीको यो चरण सिकारू अवस्थाको समय हो । यस चरणमा उनले प्रशस्तै फुटकर कविता, निबन्धको सिर्जना गरेकी छन् भने अन्य समालोचना, नाटक र कथा विधाको श्रीगणेश गर्न पनि सफल भएकी छन् । करिब तिन दर्जनभन्दा बढी फुटकर रचनाहरू देखा परेको यस चरणमा कुनै पनि पुस्तकाकार कृतिको प्रकाशन भने हुन सकेको पाइँदैन ।

मूलतः त्रिपाठीका फुटकर कविताहरू समकालीन राष्ट्रिय जीवन सन्दर्भको सेरोफेरोसँग नै सम्बद्ध रहेका छन् भने कतिपय कविताहरूमा समकालीन, समयुगीन राष्ट्रिय राजनीतिक, सामाजिक सन्दर्भ र स्थितिबोधको प्रस्तुति भएको पाइन्छ । क्रान्तिकारी चेतना, विद्रोही भावभित्र अन्तर्वैयक्तिक

भावुकता र दृष्टि प्रक्षेपण हुनु उनका कवितागत विशेषता रहेको पाइन्छ । यस चरणमा रचना गरिएका विभिन्न फुटकर कविताहरूमा 'मन लागेको छ' (२०३९) 'जोडी आँखा' (२०३७), सगरमाथा (२०३७), 'बहिनीलाई सन्देश' (२०३८), 'मेरा लागि नेपाल' (२०३८), 'रातो रगतको आहाल' (२०३८), 'रातो रगतको चिहानमाथि सेतो फुल फुल्नेछ' (२०३८), 'मलाई जन्माईदेऊ' (२०३९), 'मन दुःखेको दुःख्यै छ' (२०४०), 'युद्ध आमाहरूको' (२०४५), 'कालीमाटी' (२०४६), 'म बीज हूँ असिनाको' (२०४६) आदि रहेका छन् । हाल यी कविताहरू **जिराहा वर्तमान कविता सङ्ग्रह** (२०६७) मा सङ्कलित रहेका छन् ।

फुटकर क्रममा भने **बादल धर्ती र आस्थाहरू** निबन्ध सङ्ग्रहमा सङ्कलित रचनाहरू यात्रा संस्मरणमा आधारित निबन्धहरू रहेका छन् । यिनले विशेष गरेर काठमाडौँ बाहिरका र खासगरी साहित्यिक विशेष आयोजना स्थलप्रति लक्षित ती यात्रालाई नै आफ्नो निबन्धको विषयवस्तु बनाएकी छन् जसमा निबन्ध लेखक स्वयं पनि सहभागी रहेकी छन् । यहाँ उनी आफ्नै प्रथम पुरुष दृष्टिबिन्दुबाट यात्राकालका सहभागी र यात्रायान एवं लक्षित यात्रास्थल र त्यहाँका कार्यक्रम एवं प्रत्यावर्तनक्रमकी पर्यवेक्षक त छँदैछिन् । तिनका अतिरिक्त यी निबन्धको मुख्य चुरो (विषय) चाहिँ उनका आफ्नै मनोगत अन्तर्यात्राका भाव, चिन्तनका ज्वारमार्फत जीवनको र जगतको उन्मुक्त कवितापरक अन्तः मीमांसा गर्नु नै मुख्य रूपमा देखा परेको छ (त्रिपाठी, २०५० : भूमिका) । यस सङ्ग्रहमा सङ्कलित फुटकर निबन्धहरूमा 'मेरो मनको गोरखा' (२०४५) 'अनाम सहरको एक साँझ' (२०४५), 'अतिथि क्षण र म' (२०४६), 'बादल, धर्ती र आस्थाहरू' (२०४६), 'तानसेनको भरी र कैदी संस्मरण' (२०४६) मधुपर्क मासिक पत्रिकामा प्रकाशित भएका रचनाहरू हुन् भने गरिमा मासिक पत्रिकामा प्रकाशित 'जीवन कविता जीवन' (२०४५), मिर्मिरे पत्रिकामा प्रकाशित 'यात्रा सपनादेखि इलामसम्म' (२०४६) नियोजन पत्रिकामा प्रकाशित 'यात्रा सुपारीका बोटसम्म' (२०४६) निबन्धहरू विभिन्न पत्रपत्रिकामा प्रकाशित भएका छन् भने 'वनभोज/जिन्दगी' (२०४६), शीर्षकका निबन्ध भने कुनै पत्रिकामा प्रकाशित भएको देखिँदैन ।

यसैगरी अन्य फुटकर निबन्धात्मक रचनाहरूमा २०४५ सालभित्र रचित 'मेरो गाउँ निसास्सिदै छ', 'म चोर हूँ', 'ती अड्कल, ती सर र यी दाजु' र 'म फुल लिएर आउँछु' चारवटा निबन्धहरू **जीवनसूत्र र स्वप्नाभास** (२०५३) निबन्ध सङ्ग्रहमा सङ्कलित छन् । यी निबन्धहरूमा उनी स्वयं पात्र भएर शैशवमा खेलेको धर्ती, जन्मभूमिको काख तथा मातृवत्सल हृदयका उमङ्ग,

पीडा, बहलाई अभिव्यक्ति दिएकी छन् भने हाम्रो पितृसत्तात्मक समाजमा सानैदेखि शोषणको जरा गाडिएको देखाउँदै चेलीका मर्म एवं प्रकृति र जीवन जगत्का कथा व्यथा खोल्दै सांस्कृतिक परिवर्तनको आवश्यकता पुरा गर्नुपर्ने मार्मिक सन्देश तिनमा आएको देखिन्छ ।

यसरी यस चरणका फुटकर रचनाहरूमा राष्ट्रियता, युगीन परिवेश, सामाजिक, सांस्कृतिक र राजनीतिक विषयवस्तुहरूलाई प्रस्तुत गर्दै निजात्मक भाव, यात्रा संस्मरणात्मक कथ्यलाई स्वप्निल, भावुक र अन्तर्बौद्धिक तथा विद्रोही र व्यङ्ग्यात्मक मुक्त अन्तरविचरणका ललित नमुना हुन पुगेका छन् (त्रिपाठी, २०५० : भूमिका) । यिनै प्रवृत्तिहरू यस चरणका प्रवृत्तिगत वैशिष्ट्यका रूपमा देखिएका छन् ।

४.२.१.२ दोस्रो चरण : वि.सं. २०५०- वि.सं. २०६४

सुधा त्रिपाठीको साहित्यिक यात्राको दोस्रो चरण : वि.सं. २०४९ देखि २०६४ सम्मलाई मान्न सकिन्छ । यस चरणमा त्रिपाठी पहिलो चरणमा भन्दा भिन्न रूपमा प्रस्तुत भएकी छन् । पहिलो चरणमा उनले फुटकर रचनाहरू मात्रै प्रकाशन गरेकी थिइन् भने यस चरणमा आएर पुस्तकाकार कृतिहरू नै प्रकाशन गर्न सफल भएकी छन् । यस चरणमा उनले बादल, धर्ती र आस्थाहरू (२०५०), जीवनसूत्र र स्वप्नाभास (२०५३) शीर्षकका दुईवटा निबन्ध सङ्ग्रह र सुट, टाई र सुँगुर (२०५९) व्यङ्ग्य निबन्ध सङ्ग्रह प्रकाशित गरेकी छन् । त्यसैगरी समालोचनाका क्षेत्रमा दृष्टिचौतारी (२०५८), भूपिका कवितामा व्यङ्ग्यालङ्कार चेतना (२०५८), महिला समालोचक र नेपाली समालोचना (२०५२) आदि समालोचनात्मक कृतिहरू प्रकाशित भएका छन् । नाटकका क्षेत्रमा निःश्वासका गुजुल्टाहरू नाटक सङ्ग्रह (२०५४), अनिवार्य नेपाली व्याकरण र रचना पाठ्यपुस्तक (२०५८), दोलखा जिल्लाको इतिवृत्त प्रस्तुत भएको दोलखा दर्पण ग्रन्थ (२०५९) गरी एक दर्जनजति कृतिहरू प्रकाशित हुनुलाई नै दोस्रो चरणको महत्त्वपूर्ण उपलब्धिका रूपमा लिन सकिन्छ ।

सर्वाधिक कृति प्रकाशित हुन पुगेको यस चरणका कृतिगत विशेषतालाई समग्र रूपमा औल्याउँदा बादल, धर्ती र आस्थाहरू (त्रिपाठी, २०५० : भूमिका) निबन्ध सङ्ग्रहमा जम्मा १२ वटा निबन्धहरू सङ्कलित छन् र ती निबन्धहरू यात्रा संस्मरणमा आधारित रहेका छन् । लेखक स्वयं काठमाडौँबाट साहित्यिक कार्यक्रमका लागि देशका विभिन्न भागमा पुगेकी र त्यहाँका सामाजिक, आर्थिक र सांस्कृतिक पक्षलाई आफूले नजिकबाट नियाल्न पाएको तथ्यलाई प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यसैगरी जीवनसूत्र र स्वप्नाभास निबन्ध सङ्ग्रहभित्र पनि १२ वटै निबन्धहरू सङ्कलित छन् । यस

निबन्ध सङ्ग्रहमा निबन्धकारले पितृसत्तात्मक समाजले छोरीलाई हेर्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत गर्दै आफ्नो जन्मभूमिलाई अगाध स्नेह गर्दै त्यस ठाउँमा सधैंका लागि बस्न नपाए पनि त्यसलाई हृदयबाट एक क्षणका लागि पनि टाढा राख्न नसकेको देशभक्तिपूर्ण भावका साथै प्राकृतिक सौन्दर्यको उत्कृष्ट वर्णन गरेकी छन् । **सुट, टाई र सुँगुर** व्यङ्ग्य निबन्ध सङ्ग्रहभित्र २० वटा व्यङ्ग्य निबन्धहरू सङ्कलित रहेका छन् । जसमा सामाजिक, आर्थिक र राजनीतिक व्यङ्ग्यहरू प्रस्तुत भएका छन् । देशमा गणतन्त्रका नाममा देखा परेको घुसखोरी र गरिबी उन्मूलनका नाममा गोठाला भएका, कुपोषण लागेका, जङ्गली सभ्यता सिकेका नेताहरूको बाहुल्य रहेको छ । यिनै भ्रष्टाचारी नेताहरूले देशलाई उठ्नै नसक्ने गरी थड्थिलो पारेर आफूले मात्रै डकारेका छन् । भोका र नाङ्गा जनता भन् भन् नाङ्गिदै छन् । वर्ग विषमताको खाडल भन्भन् फराकिलो बन्दै छ भन्ने देशको वास्तविक र जल्दोबल्दो यथार्थ समस्यालाई यस निबन्धमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

समालोचनाका क्षेत्रमा पनि यस चरणमा त्रिपाठीको विशिष्ट स्थान कायम हुन पुगेको देखिन्छ । उनको **महिला समालोचक र नेपाली समालोचना** नामक कृतिमा वि.सं. २०२० देखि २०५९ सालसम्मको ६० वर्षको समयावधिमा नेपालभित्र बसेर कलम चलाई रहेका २५ जना महिला समालोचक र तिनका समालोचनालाई प्रस्तुत गरिएको छ । उनको यसै चरणमा समालोचनात्मक कृति **भूपिका कवितामा व्यङ्ग्यालङ्कार चेतना** अनुसन्धानमूलक स्वरूपमा प्रस्तुत भएको छ जसमा मूल सामग्रीलाई चार अध्यायमा बाँडेर प्रस्तुत गरिएको छ । शोधपरक समालोचनात्मक कृतिमा भूपिका काव्य प्रवृत्तिबारे सामान्य र कवितामा पाइने व्यङ्ग्य एवम् अलङ्कारहरूबारे विशेष चर्चा गरिएको छ ।

दोस्रो चरणमा पुस्तकाकार रूपमा नाटक सङ्ग्रह पनि प्रकाशित भएको छ । यस चरणमा देखा परेको **निःश्वासका गुजुल्टाहरू** नामक नाटक सङ्ग्रहमा ७ वटा नाटकहरू सङ्कलित छन् । ती नाटकहरूमा त्रिपाठीले पारिवारिक विखण्डनको मूल कारण महिलाहरू मात्रै नभई यसमा पुरुषहरूको पनि यसमा महत्त्वपूर्ण हात रहेको हुन्छ र उनका नाटकमा देखिएका पात्रहरूको मुख्य चाहना भनेको पारिवारिक विखण्डन होइन । त्रिपाठीले त्यसका लागि महिला र पुरुषबिच कामको उचित बाँडफाँड हुनुपर्छ भन्न अभिव्यक्ति दिएकी छन् । उनले मूल रूपमा पुरुषले आफूलाई सुधार्नु पर्छ, अन्यथा पारिवारिक विखण्डन रोकिन सक्दैन भन्ने विचार प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यसैगरी **अनिवार्य नेपाली व्याकरण र रचनाजस्तो** पाठ्य पुस्तकका साथै

दोलखा जिल्लाको वर्णन गरी सम्पादन गरिएको कृति **दोलखा दर्पण** समेत यसै चरणमा प्रकाशित भएको पाइन्छ ।

यसरी करिब डेढ दशक लामो समयावधिभित्र रहेको यस चरणमा उनका निबन्ध, समालोचना, नाटक, अनुसन्धानमूलक कृतिका साथै सम्पादित कृति र पाठ्य पुस्तक समेत गरी एक दर्जन पुस्तकहरू प्रकाशित हुनुले उनको साहित्यिक यात्राको पहिलो चरणभन्दा दोस्रो चरण उपलब्धिपूर्ण भएको देखिन्छ । यस चरणमा प्रगतिवादी चिन्तन स्पष्ट रूपमा व्यक्त हुनुका अतिरिक्त नारीवादी विद्रोही स्वरका साथै प्राकृतिक भावनात्मक पक्ष समेत प्रबल रूपमा प्रस्तुत भएको देखिन्छ ।

४.२.१.३ तेस्रो चरण : वि.सं. २०६५ हालसम्म

साहित्यकार त्रिपाठी पहिलो चरणमा कविता, कथा, निबन्ध, समालोचना र नाटक विधाका फुटकर रचनामा बढी प्रवृत्त भएको देखिन्छ भने दोस्रो चरणमा आइपुग्दा कविता र कथा विधा बाहेकका अन्य विधाका निबन्ध, समालोचना, नाटक अनुसन्धानमूलक सामग्रीका साथै सम्पादन गरिएका कृतिहरू प्रकाशित भएको पाइन्छ । उनी यस चरणमा फुटकर कविता र कथा आदि विधालाई निरन्तरता दिँदै विशेष रूपमा निबन्ध र समालोचना विधामा नै केन्द्रित भएकी छन् । तेस्रो चरणमा आइपुग्दा भने दोस्रो चरणकै निबन्ध, समालोचना र अनुसन्धानतिर अभि बढी खारिँदै अगाडि बढेकी छन् । कविता विधाबाट साहित्य यात्रा प्रारम्भ गरेकी त्रिपाठीले यस चरणमा आइपुग्दा पहिलो, दोस्रो र तेस्रो चरणमा रचना गरिएका फुटकर कविताहरूलाई सङ्कलन गरी कविता सङ्ग्रहका रूपमा प्रकाशित गरेकी छन् । यस चरणमा त्रिपाठीका सङ्ख्यात्मक रूपबाट भन्दा पनि गुणात्मक दृष्टिबाट उत्कृष्ट रचनाहरू प्रकाशित भएका छन् । यस चरणमा उनमा अन्य चरणमा भन्दा वैचारिक स्पष्टता प्रखर हुँदै गएर समालोचना र निबन्ध दुवै विधामा प्रगतिवादी दृष्टिकोण स्पष्ट रूपमा प्रकट भएको देखिन्छ भने नारीवादी चिन्तनमा सैद्धान्तिक रूपबाट मार्क्सवादी चिन्तन समेत विकसित भएको देखिन्छ । यस चरणमा निबन्धका क्षेत्रमा **अमर सिर्जना** (२०६५) र **चेलीबेटीका बेग्लै कुरा** (२०६८) रहेका छन् भने नारीवादका कठघरामा **नेपाली साहित्य** (२०६७), **नेपाली उपन्यासमा नारीवाद** (२०६८) र **सिर्जनवृत्तका परिधिमा गुणराज उपाध्याय** (२०६९) अनुसन्धानमूलक कृतिहरू रहेका छन् । **विद्वत्केशरी जगन्नाथ शर्मा त्रिपाठी : अनेक आयाम** (२०६९) र **नेपाली नारीवादी समालोचना** (२०७०) सम्पादित कृतिहरू हुन् । यसै चरणमा ३५ वटा फुटकर

कविता सङ्कलन गरी तयार पारिएको जिराहा वर्तमान (२०६७) कविता सङ्ग्रह पनि प्रकाशित भएको छ ।

यसरी निबन्ध, समालोचना, कविता, अनुसन्धानमूलक रचनाका साथै सम्पादित कृतिहरू प्रकाशित गरेर तेस्रो चरणलाई पनि साहित्यिक क्षेत्रमा उर्वर कालखण्डका रूपमा विकसित गरेकी छन् । यस चरणमा प्रकाशित निबन्ध सङ्ग्रहमध्ये चेलीबेटीका बेग्लै कुरा (८ मार्च २०१२) निबन्ध सङ्ग्रहमा जम्मा ३२ वटा रचनाहरू समेटिएका छन् । यी ३२ वटा निबन्धहरूमध्ये धेरै त 'कान्तिपुर' दैनिकमा र केही भने 'गरिमा', 'मूल्याङ्कन', 'स्पेसटाइम' आदि पत्रिकामा प्रकाशित भएका हुन् । कुनै पनि पत्रिकामा प्रकाशित नभएका केही निबन्धहरू पनि यस सङ्ग्रहमा सङ्कलन गरिएका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रह भित्रका निबन्धहरूमा पितृसत्तात्मक समाजमा विद्यमान परम्परागत सांस्कृतिक, धार्मिक मूल्य र मान्यताका आडमा पुरुषले नारीप्रति गर्ने अन्याय, अत्याचार र शोषण आदिमाथि टिप्पणी गर्दै यी अनावश्यक मूल्य र मान्यताहरू समय अनुसार परिवर्तन गर्दै लगिनु पर्ने धारणा समेत प्रस्तुत गरेकी छन् । यस भित्रका निबन्धहरूमा कतिपय परम्पराहरू शिक्षित वर्गभित्र समेटिएका नारीहरू स्वयंका कमी कमजोरीबाट समेत निरन्तर चलिरहेका छन् भन्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत भएको पाइन्छ ।

अमर सिर्जना (२०६५) निबन्ध सङ्ग्रह १० वटा निबन्धहरूको सँगालो हो जसमा दोस्रो चरणमा लेखिएका १० वटा फुटकर निबन्धहरू समेटिएका छन् । नारी पक्षधरता अन्तर्गर्भित प्रगतिवादी चेतना बोकेका प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धहरूमा त्रिपाठीले सामाजिक, राजनीतिक, वैयक्तिक जीवन र कहीं कतै ऐतिहासिक पक्षसँग सम्बन्धित भएर देखा परेका विषयवस्तुलाई आफ्नै वैयक्तिक भावनात्मक अनुभूतिसँग अन्तर्मन्थन गरेर कलात्मक रूपमा प्रस्तुत गरेकी छन् । स्वयं त्रिपाठीका व्यक्तिगत घटनाभित्र समेटिएर आएका हरेक सन्दर्भहरू उनका निजी घटना भए पनि पाठकहरू यी घटनाभित्र स्वयंलाई सामान्यीकरण गर्न पुग्नु नै यस निबन्ध सङ्ग्रहको महत्त्वपूर्ण पक्ष हो ।

उक्त चरणमा समालोचनाका क्षेत्रमा देखा परेको नारीवादको कठघरामा नेपाली साहित्य (२०६७) नारीवादी समालोचनाभित्र पर्ने उत्कृष्ट समालोचनात्मक कृति हो । यसमा विविध समालोचकीय धारबाट अवलोकन गरिएका तेह्रवटा रचनाहरू समाविष्ट छन् । मूलतः साहित्यको लैङ्गिक विश्लेषणको प्रतिनिधित्व गर्ने प्रस्तुत कृतिमा विशेषतः उपन्यास, महाकाव्य र फुटकर कवितामाथि दृष्टिको गहनतामा पुगेर नारीका अभिव्यक्तिलाई गुणदोषका आधारमा विश्लेषण र

विवेचना गरिएको छ । स्रष्टा एवं सिर्जनामा महिलामाथि सबै प्रकारका भेदभाव, यातना, शोषण तथा महिलाका सकारात्मक पक्षहरूको विवेचना र विश्लेषणका दृष्टिले सबै समालोचना गहकिला र यथार्थपरक छन् । प्रकाशकिय, नारीवादको कठघरा (२०६७) यसैगरी अर्को **नारीवादी सौन्दर्य चिन्तन** (८ मार्च, २०१२) त्रिपाठीको अर्को महत्त्वपूर्ण समालोचनात्मक ग्रन्थ हो । यसमा वाङ्मय जगतमा पाश्चात्य वा खासगरी युरोप अमेरिकाली समाजमा आएको नरनारी समानता र नारीको आधारभूत अधिकारको स्वीकृति एवं नारीमुक्तिका सामाजिक, राजनीतिक र आर्थिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक र सिर्जनात्मक प्राज्ञिक प्रक्रियाको वर्णन र विवेचना गरिएको छ (त्रिपाठी, २०६८ : पृ. १-२) ।

सोही चरणमा प्रकाशित अर्को कृति **जिराहा वर्तमान** (२०६७) कविता सङ्ग्रह हो । यसमा ३५ वटा कविताहरूको सङ्कलन गरिएको छ । ती सङ्कलित कविताहरूमध्ये अधिकांश कविता पहिलो चरणमा, केही कविता दोस्रो चरणमा र केही थोरै कविता तेस्रो चरणमा लेखिएका छन् । विशेष गरी यस सङ्ग्रहभित्रका कविता वैचारिक, भावगत एवं विषयवस्तुका दृष्टिले प्रगतिशील र प्रगतिवादी धाराभित्रका सिर्जना हुन् । यिनमा वर्गीय दृष्टि, वर्गीय पक्षधरता र तदनुकूलको प्रस्तुति र चित्रण पनि छ । समकालीन समयुगीन जीवनका कुरूप यथार्थलाई कथ्य विषय बनाई तिनप्रति आलोचना भाव राख्दै परिवर्तनको अपेक्षा गरिएकाले यी कविताहरू समाजवादी-यथार्थवादी रचना पद्धति नजिक छन् । यद्यपि यी कवितामा रुमानी भावचेतनाको अभिव्यक्ति पनि छ (पौडेल, २०६७ : पृ. छ) ।

सुधा त्रिपाठीको तेस्रो चरणमा नै प्रकाशित अनुसन्धानमूलक कृतिहरू मध्ये **सिर्जनवृत्तका परिधिमा गुणराज उपाध्याय** (२०६९) विशिष्ट कृति रहेको पाइन्छ । यसमा गुणराज उपाध्यायको जीवन वृत्तान्तसँगै उनको साहित्यिक यात्राभित्रका प्रथम, द्वितीय र तृतीय चरणमा उनले रचना गरेका कृतिहरूको विवेचना र विश्लेषण गरिएको छ । आठौँ परिच्छेदसम्म रहेको यस अनुसन्धानात्मक कृतिमा उपाध्यायको जीवन व्यक्तित्वका विभिन्न पाटाहरूका साथै कृतित्वका विभिन्न पक्षको विश्लेषण गरिएको छ । त्यसैगरी त्रिपाठीको अर्को अनुसन्धानात्मक कृतिभित्र **नेपाली उपन्यासमा नारीवाद** (८ मार्च, २०१२) रहेको छ । यो उनको विद्यावारिधि उपाधि प्राप्तिका लागि तयार पारिएको शोधग्रन्थ हो र यो ग्रन्थ १० परिच्छेदमा संरचित छ । यस ग्रन्थको पहिलो परिच्छेदमा नारी समस्यापरक नेपाली उपन्यासहरूको सर्वेक्षण, दोस्रो परिच्छेदमा नारीवादी उपन्यास विश्लेषणका सैद्धान्तिक पर्याधार र ढाँचा तथा प्रतिमानहरूको उल्लेख गरिएको छ, भने तेस्रो

परिच्छेददेखि आठौं परिच्छेदसम्मका छवटा परिच्छेदहरूमा रूपमती (१९९१), स्वास्नीमान्छे (२०११), शान्ति (२०१५), अनुराधा (२०१८), तिन घुम्ती (२०२५) र अनिंदो पहाडसँगै (२०३९) नेपाली उपन्यासहरूको नारीवादी प्रवृत्तिको र सशक्त नेपाली नारीपात्रको वैयक्तिक, दाम्पत्यगत, पारिवारिक र सामाजिक/आर्थिक एवं सांस्कृतिक अवस्थिति र परिवेशको प्रायः पीडामूलक र अंशतः विद्रोहशील अनि अधिकतर दुःखान्तीय नेपाली सामाजिक नियतिको चिरफार गरिएको छ (त्रिपाठी, २०६८ : भूमिका) ।

उक्त चरणमा त्रिपाठीले सम्पादन गरेका कृतिहरूमध्ये विद्वत्केशरी जगन्नाथ त्रिपाठी : एक आयाम (२०६०) कृति महत्त्वपूर्ण रहेको छ । यस कृतिमा सुधा त्रिपाठीका आदरणीय पिता जगन्नाथ शर्मा त्रिपाठीका जीवनगत बृहत् आयामहरूलाई प्रस्तुत गरिएको छ । प्रस्तुत ग्रन्थमा विद्वत्केशरी जगन्नाथ शर्मा त्रिपाठी राष्ट्रिय अभिनन्दन समारोह विशेष कार्यक्रमको फलक प्रस्तुत गर्नुका साथै त्रिपाठीका जीवन सन्दर्भगत केही तस्वीर र उनका बारेमा जीवनगत विभिन्न आयामहरूबारे लेखिएका १०३ जना लेखकहरूका लेखहरू सङ्कलित छन् । त्यस्तै सम्पादित कृतिहरू मध्येकै अर्को महत्त्वपूर्ण कृति नेपाली नारीवादी समालोचना (२०७०) मा प्रमुख रूपमा विशुद्ध नारीवादी सोच एवं पद्धतिमा लेखिएका समालोचना र केही नारी हस्ताक्षरले उन्मुक्त विषयमा लेखेका समालोचनात्मक लेखहरू सङ्गृहीत छन् (उप्रेती, २०७० : प्रकाशकीय) ।

यसरी २०३४ सालदेखि औपचारिक रूपमा कविता विधाबाट सार्वजनिक साहित्ययात्रा सुरु गरेकी त्रिपाठीको लगभग चार दशक साहित्य साधनामा नै व्यतित भएको पाइन्छ । कथा, कविता, निबन्ध, नाटक र समालोचना लगायत साहित्यका विविध विधाका साहित्यिक कृतिहरू रचना गर्नुका साथै अनुसन्धान र सम्पादनका क्षेत्रमा समेत त्रिपाठीको महत्त्वपूर्ण योगदान रहेको देखिन्छ । मूलतः त्रिपाठीका साहित्यका समग्र पाठाहरूलाई तिन चरणमा वर्गीकरण गरी अध्ययन गरिएको छ । ती चरणमध्ये प्रथम चरण आभ्यासिक चरण भएकाले यस चरणमा त्रिपाठीले आफूलाई फुटकर रचना प्रकाशित गर्नमा मात्रै सीमित राखेकी छन् भने द्वितीय र तृतीय चरणमा लेखन कला क्रमशः विकसित हुँदै, खारिँदै परिपाकका अवस्थामा पुगेको र कृति प्रकाशन पनि सङ्ख्यात्मक रूपमा अधिक रहेको देखिन्छ । त्रिपाठी साहित्यका क्षेत्रमा स्रष्टाका रूपमा मात्र नभई द्रष्टा, अनुसन्धानकर्ता र सम्पादक व्यक्तित्वका रूपमा समेत आफूलाई परिचित गराउन सफल भएकी छन् । सामाजिक यथार्थभिन्न पनि पितृसत्तात्मक समाजको परम्परागत मूल्य र मान्यतालाई पटकै नरुचाउने

त्रिपाठीको समग्र लेखनमा यिनै विभेदपूर्ण मूल्य र मान्यताप्रतिको विरोध र विद्रोह स्पष्ट रूपमा देखा परेको छ । मार्क्सवादी चिन्तनलाई आत्मसात् गर्दै वर्गीय संरचनाभिन्न रहेको नारीवादलाई उजागर गर्नु र साहित्यका विभिन्न विधाका माध्यमबाट नारीको उत्थान र विकासमा क्रियाशील भएर अगाडि बढ्नु उनको जीवनको महत्त्वपूर्ण अभीष्ट रहेको छ । यसैगरी देशमा विद्यमान सामाजिक, सांस्कृतिक र राजनीतिक अराजकताप्रति व्यङ्ग्य, विद्रोहका साथै प्रगतिवादी चिन्तनमा रहेर नारीवादी स्वरलाई स्पष्ट रूपमा अगाडि बढाउनु नै उनको समग्र साहित्यिक प्रवृत्ति हुन आएको देखिन्छ ।

सुधा त्रिपाठीका कृतित्वको अध्ययन र विश्लेषण

५.१ सुधा त्रिपाठीका निबन्धहरूको विश्लेषण

५.१.१. 'बादल, धर्ती र आस्थाहरू' निबन्ध सङ्ग्रहको विश्लेषण

सुधा त्रिपाठीको बादल, धर्ती र आस्थाहरू पहिलो निबन्ध सङ्ग्रह हो । २०५० सालमा जिगीषा प्रकाशनबाट प्रकाशित भएको यस निबन्ध सङ्ग्रहमा १२ वटा निबन्धहरू सङ्ग्रहित छन् । विभिन्न पत्रपत्रिकाहरूमध्ये 'मधुपर्क' मासिक पत्रिकामा प्रकाशित निबन्धहरू 'मेरो मनको गोरखा' (२०४५), 'अनाम सहरको एक साँझ' (२०४५), 'अतिथि क्षण र म' (२०४६) रहेका छन् । गरिमा पत्रिकामा प्रकाशित निबन्ध 'कविता/जीवन/कविता' (२०४५), 'मिर्मिरे' पत्रिकामा प्रकाशित निबन्ध 'यात्रा सपनादेखि इलामसम्म' (२०४६), 'नियोजन' पत्रिकामा प्रकाशित निबन्ध 'यात्रा : सुपारीका बोटसम्म' (२०४६), 'समकालीन' पत्रिकामा प्रकाशित 'एक रातको कुरो हो' (२०५०) रहेका छन् भने बाँकी तिनवटा निबन्धहरू 'वनभोज/जिन्दगी' (२०४६), 'अँधेरी रात, लाटोकोसेरो र म' (२०५०) र 'मनको क्यानभासमा एउटा अर्को चित्र' (२०५०) कुनै पनि पत्रिकामा प्रकाशित नभई सिधै यसै सङ्ग्रहमा प्रकाशित भएका निबन्धहरू हुन् । बादल, धर्ती र आस्थाहरू निबन्ध यसै सङ्ग्रहभित्र सङ्कलित निबन्धका नामबाट नामकरण हुन पुगेको पहिलो यात्रा संस्मरणात्मक निबन्ध सङ्ग्रह हो । यस निबन्ध सङ्ग्रहको समग्र अध्ययन निबन्धका तत्त्व विषयवस्तु, भाषा, शैलीशिल्प र सन्देशका आधारमा निम्न रूपमा गरिएको छ :

५.१.१.१ विषयवस्तु

बादल, धर्ती र आस्थाहरू निबन्ध सङ्ग्रहभित्र प्राकृतिक, सांस्कृतिक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक र ऐतिहासिक विविध विषयवस्तु समेटिएका छन् । यात्रा संस्मरणात्मक रूपमा प्रस्तुत भएको त्रिपाठीको यस सङ्ग्रहभित्र प्राकृतिक विषयवस्तु नै मुख्य रूपमा रहेको छ भने अन्य सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक र ऐतिहासिक विषयवस्तु पनि प्रसङ्गवस विभिन्न ठाउँमा आएका छन् जसलाई निम्न अनुसार प्रस्तुत गरिएको छ :

क) प्राकृतिक

उक्त निबन्ध सङ्ग्रहभित्र त्रिपाठीले राजधानी काठमाडौँदेखि पश्चिमका गोरखा र पाल्पा तानसेनका साथै पूर्वका काभ्रे बनेपा, भूपा, इलाम र कतै कतै दार्जिलिङ-मिरिकसम्म विभिन्न ठाउँका मनोरम प्राकृतिक दृश्यहरूलाई प्राकृतिक विषयवस्तुका रूपमा प्रस्तुत गरेकी छन् । उनका प्राकृतिक विषयवस्तु प्रयोग भएका निबन्धहरूमा 'मेरो मनको गोरखा', 'सपनादेखि इलामसम्म', 'यात्रा सुपारीका बोटसम्म', 'बादल, धर्ती र आस्थाहरू' रहेका छन् । प्रकृति वर्णनको मनोहारितालाई उनले निबन्धमा सुन्दर रूपमा प्रस्तुत गरेकी छन् । निबन्धकार लेखिछन् : "कतै पहेँलपुर भएर धानका बाला झुलिरहेका छन्, कतै ब्याडभरि बिउ हरिमल्लै छन्, कतै भर्खरै रोपारहरूको जुहारीले खेतका गरा तथा कान्नाहरूमा बैँस पलाइरहेछ । समा राखेका ठाउँबाट बुलबुल गर्दै पानी एउटा कान्नाबाट अर्को खेतका गरामा खसिरहेछ । "हिलामा अभ्यस्त मेरा साथीहरूले मलाई निथुकै रुझाइदिन्छन् । हिलोको थुप्रो नै ल्याएर निहुरिएर रोप्दै गरेकी मेरो ढाडमा लिपिदिन्छन्, म खिलखिलाएर हाँसिदिन्छु ।" (पृ. १/२) यसरी प्राकृतिक दृश्यहरूको अवलोकन गर्दै यात्राका क्रममा एउटै समयमा देखिएका प्राकृतिक विविधताको वर्णन गर्दै खेतीपाती, रोपार/बाउसे आदिका क्रियाकलाप हेरेर मख्व पर्न पुगेकी त्रिपाठीले आफूलाई पनि आफ्नो रोपारे जीवनको विगत क्षणमा अवतरण गराएकी छन् ।

उनी अगाडि लेखिछन् : "डाँडाबाट सूर्यले टाउको लुकाइसकेको थियो र पूर्वपट्टिका डाँडाहरूमा घामको ज्योतिले पहिला त पेटारे बाघको झुन्डको दिलायो । त्यसको लगत्तैपछि बादलका छिद्रहरूबाट छिरेर आएको सूर्यको सन्ध्याकालीन रातो किरण भुइँभरि हत्याको विभत्स रगत पोतिएभँ लाग्यो" (पृ.२) । यहाँ सन्ध्याकालीन समयको वर्णन गर्ने क्रममा विभिन्न प्राकृतिक दृश्यहरूलाई विषयवस्तुका रूपमा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

ख) सामाजिक

समाजमा भएका र घटित भएका विभिन्न सामाजिक सन्दर्भलाई टपक्क टिपेर आफ्ना निबन्धहरूमा विषयवस्तु बनाई प्रस्तुत गर्नु त्रिपाठीका निबन्धगत विशेषता हुन् । उनका यस सङ्ग्रहभित्रका 'अनाम सहरको एक साँझ', 'मेरो मनको गोरखा', 'वनभोज जिन्दगी', अतिथि क्षण र म 'तानसेन, झरी र कैदी संस्मरण', 'मनको क्यानभासमा अर्को एउटा चित्र' निबन्धहरूमा सामाजिक विषयवस्तु आएका छन् । जस्तै : "हेर छोरा आफ्नै नितान्त आफ्नै मात्र हुने त उसको

बोली नफुटुन्जेल हो, उसका खुट्टा दरा नहुन्जेल हो र अझ साँच्चै भन्ने हो भने त उसको मुस्कान बन्धकमा नपरिन्जेल हो । तिमि दुःख नमान, हामी छिमेकीलाई हेरेर चित्त बुझाउँला ।” (पृ. ५३)

हरेक बाबुआमा आफ्ना सन्तानलाई सधैं आफ्नै वरिपरि आफ्नै छायाँमा राख्न चाहन्छन् तर उनीहरू आफ्नो स्वार्थ सिद्ध भएपछि थाहै नपाई आमाबाबुबाट धेरै टाढा भइसकेका हुन्छन् र हरेक आमाबाबुको व्यथा एउटै हो । आफ्ना सन्तान नितान्त आफ्नै हुने भनेको उनीहरूको बाल्यावस्थाका क्षणमा मात्रै हो भन्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत प्रसङ्गमा त्रिपाठीले यसरी व्यक्त गरेकी छन् : *जात मात्र उच्च भएर के गर्छ र ? मन र कर्म पनि त त्यस्तै हुन सक्नु पर्‍यो* (पृ.७६) । यहाँ सामाजिक परम्परामा विद्यमान जातपातभिन्न चलेको ठुलो जात र सानो जातभन्दा पनि उसको मन र कर्म ठुलो वा सानो हुन्छ भन्ने भाव त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् ।

ग) सांस्कृतिक

प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहभित्र रहेको ‘मेरो मनको गोरखा’, ‘मनको क्यानभासमा एउटा अर्को चित्र’, ‘एक रातको कुरो हो’ आदि निबन्धहरूमा सांस्कृतिक विषयवस्तुलाई प्रस्तुत गरिएको छ । सांस्कृतिक विषयवस्तुको चित्रण उनले यसरी गरेकी छन् :

म अहिले जुन परिवेशमा छु त्यस परिवेशमा सर्वत्र राई संस्कृति व्याप्त थियो र त्यस संस्कृतिमा म फाल्नु जोकर भइरहेथेँ । वासिङ (जाँड) राईहरूका निम्ति हाम्रो पञ्चामृत सरह नै थियो र सुँगुर र राँगाको मासु हाम्रो कुलदेवताको प्रसाद भैं पवित्र र प्रिय थियो । खसीको मासु त अपवित्र अरे उनीहरूका निम्ति, छुनु नै नहुने; हाम्रा लागि सुँगुर जतिकै (पृ. ७५) ।

यहाँ राई संस्कृतिको परिचय दिँदै हरेक जातिका मानिसहरूको संस्कृति आआफ्नै किसिमको हुन्छ, एउटै वस्तु पनि कुनै संस्कृतिका लागि छुनै नहुने अपवित्र हुन्छ भने त्यही वस्तु अर्को संस्कृतिका लागि पवित्र र प्रिय हुन पुग्छ भन्ने सांस्कृतिक विविधतालाई त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

घ) राजनीतिक

प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका ‘मेरो मनको गोरखा’, ‘एक रातको कुरो हो’, ‘अतिथि क्षण र म’, ‘अँधेरी रात, लाटोकोसेरो र म’ आदि निबन्धहरूमा राजनीतिक विषयवस्तु आएका छन् । राजनीतिक विषयवस्तुको चित्रण गर्दै त्रिपाठी लेखिन्छन् :

एकपेट भात र एक आइ कपासका लागि जिन्दगीका सम्पूर्ण ऊर्जाहरूको अमानवीय लिलाम गर्न बाध्य हुनुपर्ने ती भुप्राहरूमा यो राजनीतिको के सार्थकता छ र ? तर हाम्रा राजनीतिज्ञहरू भोट बाहेक अरु कुनै कुरा पनि देख्न र सोच्न समेत सक्दैनन् । यसरी भुप्राहरू भोटका लागि बलात्कृत हुँदै गइरहेछन्, राजनीतिज्ञहरू तिनका टाउकामा टेकेर कुर्सीमा पुगेपछि तिनैलाई लात्तीले हानेर अभावको भीरबाट गुड्क्याई दिँदा रहेछन्

(पृ. २८) ।

कुर्सीका लोभमा परी भोट मागेर आफ्नो स्वार्थ पुरा गर्न गाउँका भुप्रा भुप्रामा पुग्ने भ्रष्ट नेताहरू कुर्सी प्राप्त गरेपछि कहिल्यै गाउँ नफर्कने घीनलाग्दो प्रवृत्तिगत राजनीतिक यथार्थलाई त्रिपाठीले यसरी व्यक्त गरेकी छन् :

“देश भाषणमा मात्र जागिरहेछ, व्यवहारमा भने कुम्भकर्ण निद्रामा निदाएको छ । त्यो ठिटो घरको गरिबीका कारण होटेलका जुठा भाँडाहरूमा आफ्नो जिन्दगीको आयतन नापिरहेछ । यसरी देशको यो होनहार भविष्य चुसेर मिल्काएका हड्डीका टुक्रा भैं अपहेलित, उपेक्षित रछानमा मिल्किरहेको छ” (पृ. ३) ।

भाषणमा मात्रै उठ्ने, व्यवहारमा भने कुम्भकर्ण भैं निदाएको देशको अराजकतापूर्ण राज्य व्यवस्था, विसङ्गतिपूर्ण राजनीतिक परिवेशबाट उत्पन्न भएको सामाजिक गरिबी र त्यसले निम्त्याएको अत्यासपूर्ण बाल्य जीवनको दुःखद क्षणलाई प्रस्तुत गर्दै देशको राजनीतिक अवस्थाको कमजोरीपन र फितलो राज्य व्यवस्थाले धनी वर्गमा कुनै प्रभाव नपारे पनि गरिबहरूका लागि त्यो अभिशाप भएर देखा परेको र देशका प्रतिभाहरू होटलका जुठा भाँडा र जुठ्यानमा बन्धक बस्न बाध्य यथार्थ स्थितिको वर्णन गरेकी छन् ।

ड) ऐतिहासिक

बादल, धर्ती र आस्थाहरू निबन्ध सङ्ग्रहभित्र रहेका ‘मेरो मनको गोरखा’, अँधेरी रात, लाटोकोसेरो र म’ आदि निबन्धहरूमा ऐतिहासिक विषयवस्तु प्रस्तुत भएको छ । ऐतिहासिक सन्दर्भलाई प्रस्तुत गर्दै निबन्धकार लेखिछन् :

‘लाग्यो गोरखा फेरि इतिहास भएर विउँभरहेछ । खुँडा र खुकुरीका चम्चमाहट र गोरखकालीको जयघोषमा पृथ्वी नारायण शाह एक चोटि फेरि मभित्र चल्मलाएका छन् । स्वयं पनि अठारौं शताब्दीतिरै पुगेजस्तो लाग्यो” ‘मेरो मनको गोरखा’, (पृ. ४) ।

यहाँ पृथ्वी नारायण शाहले नेपालको एकीकरण गर्दाको समयको चित्रण गरिएको छ, जसको खुँडा र खुकुरीका चम्चमाहटका कारण आज पनि नेपाल स्वतन्त्र भएर बाँचिरहेछ, वीर गोरखाली भएर विश्वमा परिचित भइरहेछ, भन्ने भाव प्रस्तुत भएको छ। नेपालको स्वावलम्बीपन र स्वाभिमान उच्च रहेको छ।

सायद अब दासढुङ्गा आउंदैछ । कल्पनाले मात्रै पनि आड ढक्क फुलेर आउंदैछ । मलाई पुरा विश्वास छ, यहाँनिर मेरो बस पक्कै खस्दैन किनभने त्यस ठाउँबाट जो पायो उसले खस्न हुँदैन । सायद खस्नुपर्ने भन्ने निर्णय हुन नसकेर होला, त्यसपछि आजसम्म त्यहाँबाट कोही खसेको पनि छैन । ... यसैले पहिलो पालामा मदन-आश्रित परे (पृ. ७०) ।

यस अभिव्यक्तिमा तत्कालीन एकीकृत मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टीका नेताद्वय मदन भण्डारी र जीवराज आश्रितको जीप दुर्घटनामा परी दासढुङ्गामा असामयिक निधन भएको ऐतिहासिक दुर्घटनाको स्मरण गर्दै आजसम्म त्यस ठाउँमा अन्य कुनै पनि दुर्घटना नभएको हुनाले नियोजित र षड्यन्त्रपूर्ण ढङ्गबाट त्यो दुर्घटना गराइएको हुन सक्ने विचार त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन्।

यसरी निबन्धका हरेक प्रसङ्ग र सन्दर्भभित्र जीवन जगत्, प्रकृति, देश, समाज, राजनीतिक परिवेश, ऐतिहासिक सन्दर्भ र सामाजिक घटनाहरूलाई विषयवस्तुका रूपमा समेट्दै यात्राका क्रममा देखेका र स्वयं अनुभव गरेका परिवेशगत चित्रणका साथै त्यहाँका मानिसहरूको आत्मीयता, आतिथ्य सत्कार र त्यहाँको साहित्यिक व्यक्तित्वभित्र आएको रौनकमा देशको यथास्थितिप्रतिको विद्रोह र नयाँ नेपालको परिकल्पनाका साथै देश बनाउन चाहनेले साँचो हृदयले प्रयत्न गरेमा अवश्य सफल हुन सक्छ भन्ने सन्देश समेत त्रिपाठीका निबन्ध सङ्ग्रहमा विषयवस्तु भित्र समेटिएर आएको पाइन्छ।

५.१.१.२ भाषा

सुधा त्रिपाठीका निबन्धको भाषा सरल र प्रभावकारी छ। छोटोछोटा वाक्य एवं कवितात्मक अभिव्यक्तिका कारण त्रिपाठीका निबन्धगत भाषा रसिलो भएको पाइन्छ। उनका निबन्ध सङ्ग्रहमा वासिङ्ग, आपा, दिकुजस्ता राई भाषाका, निनी-नेवारी भाषाको र नेमप्लेट अङ्ग्रेजी भाषाका शब्दहरूको प्रयोग भएको देख्न सकिन्छ। त्यसै गरी खुरूखुरू, टुलुटुलु, सरसर, भल्याँस्स, सिमसिम आदि अनुकरणात्मक शब्दको पनि प्रयोग भएको पाइन्छ।

सुधा त्रिपाठीका निबन्धको भाषा कवितात्मक छ। उनी प्रकृतिको मानवीकरणमा रुचि राख्छिन् र सामान्य विषयलाई पनि मानवीकरण गर्दै प्रस्तुत गर्दछिन्। उनी लेख्छिन् : *प्रत्येक बिहान*

चियाका कपहरूमा मुस्कुराउँदै भेट्न आउने इलाम आज मेरै अगाडि मुस्कुराइरहेछ, म इलामकै छातीभरि नाचदै मुस्कुराइरहेछु” (पृ. ३२) । ‘वनभोज/जिन्दगी’ निबन्धभित्र दोहोरी गीतका रूपमा गीति भाषाको प्रयोग भएको पाइन्छ । जस्तै : विदा हुने भैगयो बेला, फेरि भेट होला कि नहोला । विदा हुने भैगयो बेला माया भए जरुरै भेट होला (पृ. २२) ।

प्रस्तुत सङ्ग्रहभित्र रहेको ‘बादल, धर्ती र आस्थाहरू’ शीर्षकको निबन्धमा हिन्दी काव्यात्मक भाषाको प्रयोग पनि पाइन्छ । उनी लेख्छन् :

जब दर्द नहीं था सिनेमें

तब खाक मजा था जिनेमें

अब के सायद हम भी रोए

सावनकी महीनेमें (पृ. ५२) ।

प्रस्तुत सङ्ग्रहभित्रका ‘कविता/जीवन/कविता’, ‘अनाम सहरको एक साँभ’, ‘यात्रा : सपनादेखि इलामसम्म’, ‘मनको क्यानभासमा एउटा अर्को चित्र’ आदि निबन्धहरूमा पनि कवितात्मक भाषाको प्रयोग देख्न सकिन्छ । जस्तै :

सङ्घर्ष गति हो जीवनको

यसको मार्गमा चढाने पहाड नउभियोस्

सुस्केरा सङ्गीत हो जीवनको

यसको झङ्कारमा सितारको तार नचुँडियोस्

‘यात्रा : सपनादेखि इलामसम्म’, (पृ. ३६)

उक्त सङ्ग्रहभित्र संवादात्मक र तुलनात्मक भाषाको प्रयोग पनि देख्न सकिन्छ । उनको भाषाको यस रूपलाई उदाहरणका रूपमा तल प्रस्तुत गरिएको छ । संवादात्मक भाषा—आमाले आँखाभरि स्नेह सोहोरेर भन्नुभयो, लौ छोरी कहाँ हराएको ? भात सेलायो आमा ! यहाँ तरकारी हुँदैन ? आ नानी । हामी त किसान भन्नु मात्रै हो (पृ. ७८) । तुलनात्मक भाषा— मलाई सादा पानजस्तो जिन्दगी मन पर्दैन, सादा पानजस्तो बालक मन पर्दैन, जर्दा पानजस्तो बालक मन पर्छ

(पृ. १६/१७) । यस सङ्ग्रहभित्र विभिन्न ठाउँमा उखान टुक्काको पनि प्रयोग भएको पाइन्छ । जस्तै :
गयो इलाम, खायो सिलाम, हिंङ्ने बेलामा गुण्टा लिलाम (पृ. ३८) ।

यसरी प्रशस्तै विचलनयुक्त आलङ्कारिक भाषाभित्र सरल सहज र स्वाभाविक भाषाको प्रयोग गर्नुका साथै उखान टुक्का, गीति भाषा, कवितात्मक काव्यभाषा, तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दको प्रयोग गरी निबन्धलाई सरस बनाउनु त्रिपाठीको निबन्धगत भाषिक विशेषता हो ।

५.१.१.३ शैलीशिल्प

बादल, धर्ती र आस्थाहरू निबन्ध सङ्ग्रह आत्मपरक शैलीमा लेखिएको यात्रा संस्मरणात्मक निबन्ध हो । स्वयं निबन्धकार त्रिपाठीले देखेका, सुनेका, भोगेका र अनुभव गरेका घटनासँग सम्बन्धित विषयवस्तु भएकाले यस निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकार त्रिपाठीको निजीपन भेट्न सकिन्छ । त्यसैले यो निबन्ध सङ्ग्रह निजात्मक गद्य शैलीमा प्रस्तुत गरिएको महत्त्वपूर्ण निबन्ध सङ्ग्रह हो । म, हामीजस्ता प्रथम पुरुषवाची सर्वनामको प्रयोग गरिएको निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका निबन्धका भाषामा मानवीकरण गरिएको आलङ्कारिक शैली प्रयोग गरिएको छ जसका कारण निबन्धगत भाषिक शैलीशिल्प अत्यधिक प्रभावकारी बन्न पुगेको देखिन्छ । जस्तै :

बादलका बुर्का ओढेर आँखा मात्र पिल्किक्क पल्टाइरहेको सूर्यलाई देखा मलाई मुस्लिम महिलाहरूको सम्झना आयो । त्यति मात्र होइन अनुहारमा मुखुण्डो भिरेर व्यभिचारलाई छोप्न पल्केका कैयन् नेपाली कुपुरुषहरूको पनि सम्झना आयो (पृ. ४७) ।

प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका 'कविता/जीवन/कविता', 'अनाम सहरको एक साँभ', 'यात्रा : सपनादेखि इलामसम्म', 'मनको क्यानभासमा एउटा अर्को चित्र' आदि निबन्धमा पर्याप्त मात्रामा काव्यात्मक पद्य शैलीको प्रयोग भएको पाइन्छ । जस्तै :

शब्द सङ्गीतमा ब्युँझी सिर्जना के रमाउँछ

स्रष्टाको सपना बोकी नौलो बिहान आउँछ

धर्ती आकाश ढाकेर आकाङ्क्षा परिपूर्ण भो

आज हाँसिरहेको छ काभ्रेको काव्यभूमि यो (पृ. ११) ।

उक्त निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका 'वनभोज/जिन्दगी', 'यात्रा : सपनादेखि इलामसम्म' र 'बादल, धर्ती र आस्थाहरू' आदि निबन्धहरूमा गीति शैलीको प्रयोग पनि देख्न सकिन्छ । जस्तै :

अल्झेछ क्यारे पछ्यौरी तिम्रो चियाको बुट्टामा

बल्झेछ क्यारे सुनको काँडा कलिलो खुट्टामा (पृ. ३२) ।

यस निबन्ध सङ्ग्रहभित्र विभिन्न विम्ब र प्रतीकको प्रयोग पनि देख्न सकिन्छ । प्राकृतिक विम्ब प्रयोग भएको एउटा उदाहरण यहाँ प्रस्तुत गर्न सकिन्छ । जस्तै : *गोरखाका ओठ ओठमा फूल मुस्कुराइरहेको देखें, फूलका ओठ-ओठमा गोरखा मुस्कुराइरहेको देखें* (पृ. ३) ।

यसरी बादल, धर्ती र आस्थाहरू निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा विचलनयुक्त भाषिक शैली, गीति शैली, कवितात्मक शैलीका माध्यमबाट शैलीशिल्पमा सरलता, सहजता र स्वाभाविकता आएको छ । यसरी निजात्मक गद्य शैलीका माध्यमबाट आलङ्कारिकता पस्कनु त्रिपाठीको निबन्धको शैलीगत विशेषता हो ।

५.१.१.४ सन्देश

यात्रा संस्मरणात्मक रूपमा देखा परेको यस निबन्ध सङ्ग्रहमा निबन्धकार त्रिपाठीले स्वयं देशका विभिन्न ठाउँमा साहित्यिक कार्यक्रममा भाग लिन जाने क्रममा प्राप्त गरेका अनुभवहरूलाई प्रस्तुत गरेकी छन् । प्रजातन्त्र प्राप्तिअघि र प्रजातन्त्र प्राप्तिपछि देशमा देखिएको राजनीतिक अस्थिरता र यसले निम्त्याएको गरिबी, प्रजातन्त्रपछि पनि षड्यन्त्रपूर्ण राजनीतिका कारण जिउ, धनको असुरक्षा, भ्रष्ट नेताहरूका नीति नियमभित्र जकडिएको देशको अवस्था, राजनीतिका नाममा देशका महत्त्वपूर्ण भागहरू गुम्दै जाने परिस्थिति, राजनीतिक परिवर्तनका लागि गर्नु परेको सङ्घर्ष र सहिदहरूको बलिदानको मूल्य नबुझेका नेताहरूको यथास्थितिलाई छर्लङ्ग्याउँदै नेताहरूले चाहेमा देशले तुरुन्तै नयाँ मुहार फेर्न सक्ने सम्भावनाको प्रस्तुति यस निबन्ध सङ्ग्रहको महत्त्वपूर्ण उद्देश्यका रूपमा देखा परेको पाइन्छ ।

वि.सं. २०४५ सालमा लेखिएका कतिपय निबन्धमा राजनीतिक विषयको पनि प्रस्तुति भएको छ । पञ्चायत कालमा राज्य व्यवस्थाले धनी वर्गलाई कुनै प्रभाव नपारे पनि गरिब वर्गहरू भन् भन् गरिबीको दलदलमा भासिँदै गएको अवस्थाको प्रस्तुति यस समयका निबन्धहरूमा आएका छन् भने प्रजातन्त्र प्राप्तिपछि पनि देशमा कुनै किसिमको नयाँ परिवर्तन हुन नसकेको, भ्रष्ट

नेताहरूका षड्यन्त्रपूर्ण राज्य सञ्चालनबाट जिउ धनको समेत सुरक्षा हुन नसकेको, गरिबीले आक्रान्त भुप्राहरूमा प्रजातन्त्रको उज्यालो कहिल्यै पुग्न नसकेको यथास्थिति प्रस्तुतिका साथै असभ्य मान्छे सभ्यताको नाटक गरेर अधि बढे पनि अन्ततः तिनको नियति जङ्गलमै पुग्ने हुन्छ भन्नेजस्ता कुरा पनि आएका छन् । यी निबन्धमा मान्छेले चाहेर पनि प्रजातन्त्रमा बाँच्न नजानेको तिखो व्यङ्ग्य पनि प्रस्तुत भएको छ ।

यसरी यात्रा संस्मरणकै माध्यमबाट देशमा विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक आदि विषयवस्तुलाई टपक्क टिपेर त्यसमा देखिएको विकृति विसङ्गतिप्रति विद्रोह गर्दै नयाँ नेपालको कामना गर्नु र प्राकृतिक सौन्दर्यको महासागरभित्र आफूलाई डुबाएर त्यसको कलात्मक प्रस्तुति गर्नु नै यस निबन्ध सङ्ग्रहको महत्त्वपूर्ण उद्देश्य रहेको देखिन्छ ।

५.१.२. 'जीवनसूत्र र स्वप्नाभास' निबन्ध सङ्ग्रहको विश्लेषण

सुधा त्रिपाठीको **जीवनसूत्र र स्वप्नाभास** दोस्रो निबन्ध सङ्ग्रह हो । २०५३ सालमा प्रकाशित हुन पुगेको उक्त निबन्ध सङ्ग्रहमा १२ वटा निबन्धहरू सङ्ग्रहित छन् । विभिन्न पत्रपत्रिकाहरूमध्ये **रूपरेखा** मासिक पत्रिकामा 'मेरो गाउँ निसास्सिदै छ' (२०५४), **मधुपर्क** मासिक पत्रिकामा 'म चोर हुँ' (२०४५), 'म फूल लिएर आउनेछु' (२०४५), 'स्वप्नफूल र आस्थाहरू' (२०५१), **कृष्णप्रसाद पराजुली** : आस्थाका आयाममा 'ती अङ्कल, ती सर र यी दाजु' (२०४५), **ज्ञानगुनका कुरा** (भारती खरेल विशेषाङ्क) मा 'छहरा छुट्यो, लेखनी बस्यो, बोल्न नै सकिन', **अरूणा लामा** : कथा र व्यथामा 'सलाम, तिम्रा व्यथाहरूलाई सलाम' (२०५०) र **रेडियो नेपाल**बाट प्रसारित 'मेरी बुलबुल र म' (२०५३) आदि रहेका छन् । 'लेखिन नसकेको एउटा यात्रा-निबन्ध (२०५२), 'यात्रासूत्र र स्वप्नाभास' (२०५३), 'सुनखानी ! तिम्रा सम्झनामा' (२०५३), 'बादल, भरी र फूल' (२०५३) निबन्धहरू कुनै पनि पत्रिकामा प्रकाशित नभई यसै सङ्ग्रहमा सङ्कलन गरिएका निबन्धहरू हुन् ।

यसरी विभिन्न पत्रिका र विशेषाङ्कमा छरिएका धेरै निबन्धहरू र कुनै पनि पत्रिका वा विशेषाङ्कमा प्रवेश नगरी सिधै निबन्ध सङ्ग्रहमा सङ्ग्रहित हुन पुगेका निबन्धहरूको सँगालोका रूपमा **जीवनसूत्र र स्वप्नाभास** निबन्ध सङ्ग्रह प्रकाशित हुन पुगेको देखिन्छ । यस निबन्ध सङ्ग्रहको अध्ययन निबन्धका तथ्य विषयवस्तु, भाषाशैली शिल्प र सन्देशका आधारमा गरिएको छ ।

५.१.२.१ विषयवस्तु

सुधा त्रिपाठीको **जीवनसूत्र** र **स्वप्नाभास** निबन्ध सङ्ग्रहित निबन्धहरू धेरैजसोमा प्राकृतिक विषयवस्तु र केही निबन्धहरूमा सामाजिक र सांस्कृतिक बाल मनोविज्ञानमा आधारित विषयवस्तु देखिएका छन् भने केही निबन्धहरू साहित्यिक स्रष्टासँग सम्बन्धित विषयवस्तुहरू पनि देखिएका छन् । यहाँ देशप्रेमी, मातृप्रेमी भाव पनि प्रस्तुत गरिएको छ ।

क) प्राकृतिक

यात्रा संस्मरणका क्रममा, अतीतका विभिन्न संस्मरणका क्रममा विभिन्न ठाउँका भ्रमणका सिलसिलामा देखिएका डाँडा-पाखा, खोला-नाला, हिमाल-पहाड, वन-जङ्गल, नदी-नाला, बोट-विरुवा, फूल-बगैचा आदि दृश्यहरू निबन्धहरूमा प्राकृतिक विषयवस्तु भएर आएका छन् । प्राकृतिक विषयवस्तु प्रयोग भएका निबन्धहरूमा 'म चोर हुँ', 'म फूल लिएर आउनेछु', 'स्वप्नफूल र आस्थाहरू', 'यात्रासूत्र र स्वप्नाभास', 'सुनखानी ! तिम्रा सम्भनामा' र 'बादल, भरी र फूल' रहेका छन् । यसलाई तल निम्नानुसार प्रस्तुत गरिएको छ :

म त निस्तब्ध रातको गाढा कालिमारूपी आँखाका स्मृतिरूपी परेलाहरू भ्रमभ्रम पाउँ सधैं हेर्ने गर्छु सैलुङ, हनुमन्ते, सुरुङ्गे, सुस्पा, पवटी, दोलखाका डाँडाहरू र सहरी सभ्यताको गर्मीले पोलेको मनलाई थपक्क लगेर राखिदिन्छु गौरीशङ्करका थाप्लामा (पृ. ४७) ।

दोलखाली प्राकृतिक सौन्दर्यको अथाह सागरभित्र डुबुल्की माउँ जन्मन पुगेकी सुधाले मरुभूमिरूपी काठमाडौँमा आफ्नो जीवन गुजार्नु पर्दाको उकुसमुकुस र छटपटीलाई प्रस्तुत गर्दै आफू काठमाडौँ बसे पनि दोलखाका प्राकृतिक सौन्दर्यले भरिपूर्ण गौरीशङ्कर, सैलुङ, हनुमन्ते, सुरुङ्गे, सुस्पा, पवटी र दोलखाका डाँडाहरूलाई नै बारम्बार सम्झिरहने, कल्पिरहने र सपनामा देखिरहने कारणले गर्दा उनको पोलेको मनलाई शान्ति मिल्ने भाव यहाँ प्रस्तुत गरेकी छन् ।

ख) सामाजिक

पितृसत्तात्मक समाजमा देखिएका लैङ्गिक विभेदजन्य घटनाहरू र समाजका विविध सन्दर्भहरू सामाजिक विषयवस्तुसँग गाँसिएर आएका छन् । उनका यस सङ्ग्रहका 'मेरो गाउँ निस्सासिदै छ', 'मेरी बुलबुल र म', 'छहरा छुट्यो, लेखनी बस्यो बोल्न नै सकिन', 'सुनखानी ! तिम्रा

सम्भनामा' आदि निबन्धहरूमा सामाजिक विषयवस्तुको प्रस्तुति भएको छ । नेपाली समाजको सामाजिक अवस्थाप्रति व्यङ्ग्य गर्दै निबन्धकारले लेखेकी छन् : *हाम्रो समाजका धर्म, नीति, कानून सबै मिलेर हाम्रो ओठ अँट्याई यसरी नै बोल्ने स्वतन्त्रता र अधिकार प्रदान गरेर हाम्रो असमर्थतामा अडहास गरिरहेछन्* (पृ. १) ।

उपर्युक्त उदाहरणमा निबन्धकार त्रिपाठीले पितृसत्तात्मक समाजमा आधिपत्य जमाएर बसेका अधिनायकका रूपमा चिनिन खोज्ने पुरुषप्रति विद्रोही भाव प्रकट गर्दै त्यसै समाजमा हुर्केका हरेक नारीले स्वतन्त्रताका नाममा भोगेका आत्मिक पीडा र वेदनालाई प्रस्तुत गरेकी छन् । त्रिपाठीका सामाजिक विषयवस्तुका निबन्धमा नारीवादी चेतना तीव्र रूपमा व्यक्त भएको छ । त्यही आधारमा उनले समाजमा जुन किसिमबाट नारी स्वतन्त्रता दिइएको छ, त्यो नाम मात्रको स्वतन्त्रता हो भन्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् । जुन स्वतन्त्रतामा नारीलाई मुख थुनेर बोल्न लगाइन्छ, खुट्टा बाँधेर हिड्न लगाइन्छ, कलम खोसेर लेख्न लगाइन्छ भन्ने सामाजिक परम्परागत मूल्य र मान्यताका साथै लैङ्गिक विभेदजन्य सही पहिचानलाई त्रिपाठीले प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा व्यक्त गरेकी छन् ।

ग) सांस्कृतिक

सामाजिक संरचनाभित्र परम्परागत मूल्य र मान्यतासँगै देखिएका सांस्कृतिक विषयवस्तुहरू त्रिपाठीका निबन्धहरूमा समेटिएका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका 'मेरो गाउँ निसास्सिदै छ', 'छहरा छुट्यो, लेखनी बस्यो, बोल्न नै सकिन', निबन्धहरूमा सांस्कृतिक विषयवस्तु प्रस्तुत भएका छन् । नेपाली सांस्कृतिक सन्दर्भको चित्रण गर्दै उनी लेखिछन् : *ती टपरी गाँसिरहेका हातमा केवल यन्त्र व्याप्त छ, जीवनको कुनै चेष्टा नै छैन । सिङ्गो परिवेशमा मूर्च्छा व्याप्त भएको छ । ए मृत्यु ! तँ किन यति क्रूर र अप्रिय हुन गइस् हँ ? तँ क्रूर छस् सायद यसैले अप्रिय पनि छस्* (पृ. २१) ।

उक्त निबन्धमा हिन्दु सांस्कृतिक परम्परा अनुसार घरमा मृत्यु हुँदा गरिने कर्मकाण्ड प्रस्तुत गर्दै यस समयमा मृत्यु भएको घरमा गएर टोल र छरछिमेकका आइमाईहरू यस दुःखद क्षणमा मूक-जड भएर पुराण सुन्ने, टपरी गाँस्ने, बत्ती कात्ने आदि सन्दर्भका माध्यमबाट हिन्दु सांस्कृतिक मूल्य र मान्यता प्रस्तुत गरिएको छ । त्यसैगरी प्रत्येकका घरमा मृत्यु विभत्स र कठोर बनेर आउने शाश्वत सत्यलाई पनि त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

यसरी उनका निबन्धका सांस्कृतिक विषय पनि नारीका कोणबाट नै आएका छन् । परम्परागत सांस्कृतिक मूल्य र धार्मिक मान्यताका कारण नारीमाथि भएको सांस्कृतिक उत्पीडनको चित्रण यी निबन्धहरूमा भएको छ ।

घ) बाल मनोविज्ञान

सुधा त्रिपाठीले बालमनोविज्ञानलाई पनि यस निबन्ध सङ्ग्रहभित्र प्रस्तुत गरेकी छन् । के सोध्दा के उत्तर आउँछ ? र कस्ता-कस्ता प्रश्नहरूका उत्तरहरू सजिलै प्राप्त गर्न सकिन्छ भन्ने ज्ञान नभएका अबोध बाल बालिकाहरूले उत्तर दिन नसकिने प्रश्न सोधेर हैरान बनाउँछन् भन्ने चिन्तन त्यस विषयवस्तुमा आधारित निबन्धहरूमा प्रस्तुत गरेकी छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका 'मेरो गाउँ निसास्सिदै छ,' 'मेरी बुलबुल र म', 'यात्रासूत्र र स्वप्नाभास' निबन्धहरूमा बाल मनोवैज्ञानिक विषयवस्तुको चित्रण पाइन्छ । अथाह बाल जिज्ञासाहरू हुने बालबालिकाका मनोवैज्ञानिक सन्दर्भको चित्रण गर्दै उनी लेखिछन् :

कालो पत्र गर्नलाई बाटामा ओछ्याएको रोडालाई देखाएर मेरी छोरी सोध्छे, "आमा, यो हुइला किन रोपेको ? हुइला कसले रोप्छ ? यो कहिले फल्छ ?" उसले सरलता, सहजता र निश्छलतापूर्वक सोधेको प्रश्नले म अवाक् बन्दछु (पृ. ५४) ।

बालबालिकामा उत्पन्न हुने बाल मनोवैज्ञानिक पक्षको चित्रण उपर्युक्त उद्धरणमा भएको छ । बाल मनोविज्ञानसँग उनका निबन्धमा सहर र गाउँका बालबालिकाहरूको भिन्न मनोवैज्ञानिक पक्षको चित्रण पनि पाइन्छ । बालबालिकालाई मातृहृदयसँग जोड्दै आमा र छोराछोरी तथा छोराछोरीको मनोविज्ञानमा आमाको भूमिकाको पहिचान गर्ने काम समेत उनका निबन्धमा भएको छ । यसै काममा उनले बालबालिकाको जिज्ञासा र प्रश्नात्मक स्वभावको विश्लेषण पनि गरेकी छन् ।

ड) साहित्यिक स्रष्टासँग सम्बन्धित

सुधा त्रिपाठी आफ्नो यस निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा कतै साहित्यिक कार्यक्रममा भाग लिन देश विदेश घुम्ने क्रममा षड्यन्त्रपूर्वक गरिएको छनौटप्रति रुष्ट भएकी छन् भने कतै पुरस्कार वितरण सम्बन्धी योग्यता र क्षमताभन्दा पनि ओहोदा र मानसम्मान चाकडी चाप्लुसीभित्र गरिने साहित्यिक पुरस्कारको बाँडफाँडप्रति तिक्तता पनि प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यसै गरी साहित्य साधना गर्दागर्दै दिवङ्गत हुन पुगेका साहित्यकार भारती खरेल र गायिका अरूणा लामाका संस्मरण

सम्बन्धी विषयहरू आएका छन् । यस्ता साहित्यिक पक्षहरू प्रस्तुत भएका निबन्धहरूमा 'ती अङ्कल, ती सर र यी दाजु', 'छहरा छुट्यो, लेखनी बस्यो, बोल्न नै सकिन', 'सलाम, तिम्रा व्यथाहरूलाई सलाम', 'बादल, भरी र आस्थाहरू' र 'स्वप्नफूल र आस्थाहरू' रहेका छन् । 'सलाम तिम्रा व्यथाहरूलाई सलाम' निबन्धमा निबन्धकार लेखिछन् :

अरूणा दिदी, तिम्रीलाई तिम्रा व्यथाहरूले जीवन दिएका छन्, संसार दिएका छन् र दिएका छन् युग युगसम्म रहने कीर्तिमय जीवनको एकमुष्ट उज्यालो, यसैले सलाम, अरूणा दिदी तिम्रा व्यथाहरूलाई सलाम ... तिम्रो अधुरो प्रेमलाई पनि सलाम (पृ. २७) ।

हरेक स्रष्टामा, साहित्यकार, कलाकार या गायक, गायिका- उनीहरूले रचना गरेको साहित्यमा होस्, उनीहरूका वास्तविक जीवनको दुःख र सुखका प्रतिबिम्ब भल्किएको हुन्छ भन्ने मान्यता निबन्धकार त्रिपाठीको छ । अरूणा लामासँगको जीवन सन्दर्भको चर्चा गर्ने क्रममा त्रिपाठीका जीवनमा आएका दुखद् घटनाहरू पोखिएर आएका छन् भन्ने मान्यता प्रस्तुत गर्दै यी मान्यता विकास भएका छन् र तिनै कारुणिक र मार्मिक गीतका माध्यमबाट उनका रचनाहरूले युगौंयुगको प्रतिनिधित्व गरेका छन् भन्ने विचार त्रिपाठीले आफ्ना निबन्धमा व्यक्त गरेकी छन् । यसरी नै उनले नेपाली साहित्यका सर्जक कृष्ण प्रसाद पराजुली र भारती खरेलको संस्मरणलाई व्यक्त गरेकी छन् भने साहित्यिक जीवन क्रममा प्राप्त पुरस्कार तथा साहित्यकारका रूपमा भोगेका पीडा र व्यथालाई निबन्ध कलामा ढालेर प्रस्तुत गरेकी छन् ।

यसरी प्राकृतिक विविधताभिन्न रहेर एकातिर उनले प्राकृतिक सौन्दर्यलाई आफ्ना निबन्धगत विषयवस्तु बनाएकी छन् भने अर्कातिर पितृसत्तात्मक समाजमा पुरुषलाई जन्मदैं प्राप्त भएको अधिनायकत्व र नारीलाई दिएको परतन्त्रता र दासीपनजस्ता परम्परागत समाजका कुसंस्कार पनि उनका निबन्धका सामाजिक विषयवस्तु भएर आएका छन् । उनका निबन्धभिन्न बाल मनोविज्ञान र साहित्यिक क्रियाकलाप पनि विषयवस्तुभिन्नै समेटिएका छन् । वास्तवमा भन्नुपर्दा प्राकृतिक, सामाजिक, बालमनोवैज्ञानिक र साहित्यिक विषयवस्तु नै यस सङ्ग्रहमा मुख्य विषयका रूपमा रहेका छन् ।

५.१.२.२ भाषा

जीवनसूत्र र स्वप्नाभास निबन्ध सङ्ग्रह भित्रका निबन्धहरूमा गद्यात्मक भाषाभित्र नै कलात्मक र रागात्मक भाषाको प्रयोग भएको पाइन्छ । यस सङ्ग्रहभित्र सङ्गृहीत निबन्धहरू मध्येमा 'मेरो गाउँ निसास्सिदै छ', 'सुनखानी ! तिम्रा सम्भनामा', 'मेरी बुलबुल र म' निबन्धहरूमा शीर्षक चयनमा नै मानवीकरण गरी आलङ्कारिक भाषाको प्रयोग भएको देख्न सकिन्छ । निबन्धकार त्रिपाठीले आफ्ना निबन्धहरूमा सरल, सहज र छोटो वाक्य गठनभित्र काव्यात्मक आलङ्कारिक भाषा भित्र्याएकी छन् ।

निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका सबै निबन्धहरूमा भाषामा मानवीकरणको प्रशस्त प्रयोग भएको पाइन्छ । भाषामा मानवीकरण गरी कलात्मकता प्रदान गर्नु त्रिपाठीको भाषिक विशेषता हो । विभिन्न सन्दर्भको मानवीकरण गर्दै उनी लेखिन्छन् :

मेरा चाहनाहरू कलमको सुख्खा भएको नीबमा मरुभूमि बाँचिरहेछन् । कागजको बलौटे भूमिमा अक्षरहरू अङ्कुरित हुनै सकेका छैनन् । मैले आज अक्षरहरू जन्माउनै सकिन, शब्दहरू हुर्काउनै सकिन (पृ. ३९) ।

'मेरो गाउँ निसास्सिदै छ', 'छहरा छुट्यो, लेखनी बस्यो बोल्न नै सकिन', 'सलाम, तिम्रा व्यथाहरूलाई सलाम', निबन्धहरूभित्र गीतिभाषाको प्रयोग भएको देख्न सकिन्छ । जस्तै:

तिम्रो त्यो हँसिलो मुहारको

भ्रमको जब आउँदा

यी आँखा मेरा टोलाउन थाल्छन्

तिम्रो तस्वीरले चित्त बुझाउँदा (पृ. २३) ।

'ती अङ्गल, ती सर र यी दाजु', 'छहरा छुट्यो, लेखनी बस्यो, बोल्न नै सकिन', निबन्धहरूमा कवितात्मक भाषाको प्रयोग भएको पाइन्छ । जस्तै :

वासन्ती याममा गाऊँ जस्तो गीत सधैंभरी

भेट सुन्दर यो लाग्यो फूलैफूल भएसरी

छैन केही दिउँ के खै ? छाती किन्तु विशाल छ

यही छातीको मीठो स्नेह सम्भीदेऊ कमाल छ (पृ. १२) ।

‘मेरो गाउँ निस्सासिदै छ’ निबन्धभित्र ‘बाबुको घुँडो चुसेर’ (पृ. १), ‘जहाँ जाऊ आरी, कर्कलाको घारी, (पृ. ३) र भाग्यमा घाम लागिहाल्छ कि ! (पृ. ३) जस्ता मर्मस्पर्शी उखान टुक्काको प्रयोग भएको पाइन्छ ।

प्रस्तुत सङ्ग्रहभित्रका ‘लेखिन नसकेको एउटा यात्रा निबन्ध’ मा दुर्योधनको महत्वाकाङ्क्षा, शकुनिका कपट (पृ. ३७) जस्ता विभिन्न पौराणिक मिथकीय भाषिक बिम्बको प्रयोग भएको पाइन्छ भने ‘मेरो गाउँ निसासिदै छ’ निबन्धभित्र ‘यता फक्किनु भन्या’, ‘कलाउनु भन्या’, ‘बेछली कलाउनु’ (पृ. १) जस्ता बालबोलीका शब्दहरूको प्रयोगबाट पनि भाषामा स्वाभाविकता र सहजता प्रकट भएको छ ।

यसरी उखानटुक्काको प्रयोग गरी भाषामा मौलिकता प्रदान गर्दै छोटोछोटा वाक्य गठनभित्र पद विचलन र भाषामा मानवीकरण गरी विभिन्न बिम्ब, प्रतीकको प्रयोगबाट भाषामा आलङ्कारिकता थप्नु, गीति भाषाको प्रयोगभित्र पनि सरल, सहज र स्वाभाविक भाषाको प्रयोग गर्नु प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहभित्र त्रिपाठीले प्रयोग गरेका महत्त्वपूर्ण भाषिक विशेषता हुन् ।

५.१.२.३ शैली शिल्प

प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहको भाषाशैली सरल र सहज छ । छोटोछोटा वाक्य गठनयुक्त गद्य शैलीभित्र साङ्गीतिक तरङ्ग उठाउने किसिमको शैली त्रिपाठीले यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा प्रयोग गरेकी छन् । कवितात्मक गद्य शैलीको प्रयोग उनका यस सङ्ग्रहमा भएको देख्न सकिन्छ । उनका यस सङ्ग्रहभित्रका ‘मेरी बलबुल र म’ ‘मेरो गाउँ निसासिदै छ’, ‘म चोर हुँ’, ‘म फूल लिएर आउनेछु’ निबन्धहरूका शीर्षकबाट नै निबन्धकारको निजीपन भल्किन्छ । बाँकी अन्य निबन्धहरूमा पनि निबन्धकार स्वयंको उपस्थितिमा निबन्धको सेरोफेरो घुमेको हुनाले यस निबन्ध सङ्ग्रहलाई निजात्मक/आत्मपरक शैलीमा प्रस्तुत गरिएको महत्त्वपूर्ण सङ्ग्रहका रूपमा लिन सकिन्छ ।

प्रस्तुत सङ्ग्रहका सबै निबन्धहरूमा त्रिपाठीले भाषिक विचलन र भाषाको प्रस्तुतिमा मानवीकरण गरिएका आलङ्कारिक शैलीको प्रयोग भेट्न सकिन्छ जसलाई निम्न शीर्षकमा प्रस्तुत

गर्न सकिन्छ । भाषिक विचलनयुक्त आलङ्कारिक शैली : यहाँ लेखेर पो के हुन्छ र, अनमोल भावनाको सस्तो लिलामी सिवाय ।... बादल होइनन् मेरा भावहरू (पृ. ३९) ।

सुनखानीको मानवीकरण गरिएको शैली :

प्रिय सुनखानी ! तिम्रा अरू छोराछोरीको खबर के छ ? तिनीहरू तिम्रो वक्षस्थलको ताताले नपुगेर सिम्साँभैदेखि बोटलभिन्नको सिरकमा लपेटिएर हिँड्छन् अरे । तिम्रा छोरीहरू आफ्नै दाजुभाइ देख्दा पनि बाघ नै देखे भैं तर्सै रूँदै तिम्रा खोकिलामा टाउको लुकाउन आउँछन् अरे (पृ. १६) ।

त्यसैगरी 'मेरो गाउँ निसास्सिदै छ' निबन्धभिन्न बालबालिकाहरूले बोल्ने बालबोलीमा कलाउनु, बेछली कलाउनु (पृ. १) जस्ता शब्दहरू र ग्रामीण युवतीहरूले मेलापात, घाँस दाउरा गर्दा गाउने गीतहरूमा पानी पच्यो खोइ पच्यो असिना, भाइको विहा खोइ मलाई दक्षिणा (पृ. २) मा मौलिक गीति शैलीको प्रयोग भएको छ ।

उक्त सङ्ग्रहका 'छहरा छुट्यो, लेखनी बस्यो, बोल्न नै सकिन', 'ती अङ्गल, ती सर र यी दाजु' आदि निबन्धहरूमा कवितात्मक भाषिक शैलीको प्रयोग भएको छ । जस्तै :

छहरा छुट्यो, लेखनी बस्यो बोल्न नै सकिन

मनको कुरा मनमै रच्यो पोख्न नै भ्याइन ।

भेटुँला भन्थेँ बोलुँला भन्थेँ भावना अल्भियो

देखुँला भन्थेँ हाँसुला भन्थेँ व्यथा पो बल्भियो ॥ (पृ. २१)

'आन्तरिक अनुभूतिका सुदूर आभास', 'एक अँजुली सेता फूल' 'एक थाल मनको हरियाली', 'काठमाडौँको हुङ्ग्यान छातीमा' (पृ. १६), 'जिन्दगी हतारको दोस्रो नाम हो', 'जुनको दुधिलो आभासँगै', 'भोकरूपी गाइने आन्द्रारूपी तारहरूमा सारङ्गीको धुन निकालिरहेथ्यो', 'सहरको अलकत्रे कडा बाटोरूपी छातीबाट' जस्ता विभिन्न रूपमा आएका बहुल विम्ब र उक्तिका आलङ्कारिक विधानमा त्रिपाठीको सिर्जना चमत्कृत हुनुका साथै केही उखानटुक्का, मीठा नाटकीय संवाद आदिले पनि निबन्धभिन्नका कथ्यलाई मधुर र सौन्दर्यशक्ति बनाएका छन् ।

यसरी यस निबन्ध सङ्ग्रहमा पाइने रूपशैलीका यी विविधताभिन्न देखिएका भाषिक विचलन, मानवीकरण, ठाउँ ठाउँमा आएका लोकगीत एवं विविध शैलीशिल्प, विम्ब, प्रतीकका माध्यमबाट निबन्धमा सरल, सहज र स्वाभाविकता भेट्न सकिन्छ । यसरी निजात्मक गद्य शैलीका माध्यमबाट आलङ्कारिकता पस्कनु उनको निबन्धगत विशेषता हो ।

५.१.२.४ सन्देश

जीवनसूत्र र स्वप्नाभास निबन्ध सङ्ग्रहभिन्न निबन्धकार त्रिपाठीले पितृसत्तात्मक समाजमा छोरी भएर जन्मनुको पीडालाई प्रस्ट रूपमा उजागर गर्दै कुनै पनि समाजको संरचना नारी र पुरुषको सहयोगबाट नै निर्माण भएको हुनाले समाजमा दुवैको समान सहभागिता आवश्यक छ, त्यसैले दुवैले समाजभिन्न रहेर स्वतन्त्रत रूपबाट आफ्नो हक र अधिकारको उपभोग गर्न पाउनुपर्छ, लैङ्गिक विभेद रहित समाजको निर्माण गर्नुपर्छ भन्ने मुख्य उद्देश्य यस सङ्ग्रहभिन्न आएको छ ।

त्यसैगरी जीवनभरको मिहिनेत, परिश्रमको अथक प्रयासबाट देशको साहित्य भण्डारलाई समृद्ध तुल्याउने साहित्यिक स्रष्टा र प्रतिभाप्रति देशले गर्नुपर्ने कर्तव्यको बोध गराउँदै भौतिक शरीर विलीन हुन पुगे पनि उनीहरूका अमर सिर्जनाले उनीहरूलाई बचाइ रहेको छ भन्ने सन्देश पनि दिएकी छन् । बाल जिज्ञासाका समाधानमा देखिने अप्ठ्यारोपन, आफ्ना सन्ततिबाट विछोडिंदाको पीडाका साथ मातृवात्सल्यको छटपटी, शिक्षा र साहित्यसँग सम्बन्धित पवित्र ठाउँमा पनि धृतराष्ट्र, शकुनि र दुर्योधनजस्ता व्यक्तिहरूको जालभेल र षड्यन्त्रबाट गरिखाने व्यक्तिलाई पर्ने आघात, राष्ट्रियता, देशप्रेम, जन्मभूमि र मातृभूमि प्रतिको अगाध स्नेह, मातृवात्सल्यको अमर प्रेमका साथै आफूले देखेका भोगेका सामाजिक विकृति-विसङ्गति र यात्राकै क्रममा प्राकृतिक सौन्दर्यपानबाट प्राप्त मिठो अनुभूतिलाई उजागर गरी निबन्धमा कलात्मक रूपबाट पस्कनु यस सङ्ग्रहका महत्त्वपूर्ण उद्देश्यहरू रहेका छन् । यसरी पितृसत्तात्मक समाजको विरोध गर्दै नारी अस्तित्व र समानताको खोजी गर्नुका साथै सामाजिक परिवर्तन नै यस निबन्ध सङ्ग्रहको महत्त्वपूर्ण सन्देश रहन गएको छ ।

५.१.३ 'सुट, टाई र सुँगुर' निबन्ध सङ्ग्रहको विश्लेषण

सुधा त्रिपाठीको सुट, टाई र सुँगुर पहिलो व्यङ्ग्य निबन्ध सङ्ग्रह हो । दोस्रो चरणको मध्यतिर २०५९ सालमा प्रकाशित हुन पुगेको उक्त निबन्ध सङ्ग्रहमा २० वटा शीर्षकका निबन्धहरू सङ्गृहीत छन् । २०५९ सालमा सो निबन्ध सङ्ग्रह कृतिका रूपमा प्रकाशित भए पनि २०५७/५८

सालमा रचना गरिएका सबै निबन्धहरू यस सङ्ग्रहमा सङ्कलित छन् । २०५७ सालमा प्रकाशित १५ वटा निबन्धहरूमा 'सुन्ला तेरो बाजेले !' 'आउनुहोस् कमरेडहरू बदाम खाऔं', 'जडौरी जिन्दगी', 'डुबाउनुहोस्, निचोर्नोस् र सुकाउनुहोस्', 'चित्त दुखेको कुरा नभन्दिस्', 'सुट, टाई र सुँगुर', 'एउटा भोज तपाईंलाई पर्नि', 'पिताश्रीलाई साधुवाद', 'भोलि उज्यालो त होस्', 'प्रजातन्त्रको सङ्कट', 'हजुरलाई कहिल्यै केही नहोस्', रहेका छन् भने 'चालिस वर्षे जोवनलाई सलाम', 'उत्खनन', 'भुक्ने बोका', 'गोपीकृष्ण भन्' र 'उभिरहेँ' २०५८ सालको पुस महिनामा सातवटा, माघ महिनामा पाँचवटा र फागुन महिनामा तिनवटा गरी जम्मा १५वटा निबन्ध लेखुलाई त्रिपाठीभित्र रहेको अद्वितीय प्रतिभाकै प्रतिफलका रूपमा लिन सकिन्छ जसलाई स्पष्ट पाउँ त्रिपाठीले भूमिकामा लेखेकी छन् :

यस सङ्ग्रहमा समाविष्ट निबन्धहरूमध्ये अधिकांश कान्तिपुर दैनिकमा प्रकाशित भएका छन् । केही निबन्ध 'एक्काईसौं शताब्दी', 'मधुपर्क', 'स्पेसटाइम', 'हिमालय टाइम्स', 'सञ्चार', 'भुँडीपुराण', 'सिस्नुपानी' मा प्रकाशित भएका हुन् (त्रिपाठी : भूमिका) ।

सुधा त्रिपाठीको थोरै समयमा लेखिएका धेरै व्यङ्ग्य निबन्धहरूको संगालो सुट, टाई र सुँगुर व्यङ्ग्य निबन्ध सङ्ग्रह यसै सङ्ग्रहभित्र सङ्कलित निबन्धको नामबाट नामकरण गरिएको निबन्ध सङ्ग्रह हो । यस व्यङ्ग्य निबन्ध सङ्ग्रहको अध्ययन विषयवस्तु, भाषा, शैलीशिल्प र सन्देशजस्ता निबन्धगत तत्वका आधारमा तल प्रस्तुत गरिएको छ :

५.१.३.१ विषयवस्तु

सुधा त्रिपाठीले सुट, टाई र सुँगुर व्यङ्ग्य निबन्ध सङ्ग्रहमा नेपालको राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक र साहित्यिक विषयवस्तुमाथि व्यङ्ग्य गरेकी छन् । विशेषतः प्रजातन्त्र प्राप्तिपछि देशमा विद्यमान राजनीतिक विकृति र त्यसबाट देशले भोग्नु परेको क्षति, सम्पूर्ण जनताले पाएका दुःख र समस्यालाई व्यङ्ग्यात्मक रूपमा प्रस्तुत भएको यस निबन्ध सङ्ग्रहमा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक विषयवस्तु देखिए पनि ती सबैलाई राजनीतिक विकृतिले प्रभावित पारेका छन् । त्यसैले यस सङ्ग्रहका सबै निबन्धहरूमा राजनीतिक विषयवस्तुलाई मूल विषय बनाएर प्रस्तुत गरिएको छ ।

क) राजनीतिक

सामाजिक विषयवस्तुहरूमा आबद्ध भएर लेखिएको यस निबन्ध सङ्ग्रहको महत्त्वपूर्ण विषयवस्तुका रूपमा विकृतिपूर्ण राजनीतिक विषय समेटिएको छ । यस निबन्ध सङ्ग्रहका 'सुन्ला तेरो बाजेले', 'आउनोस् कमरेडहरू बदाम खाऔं', 'डुबाउनुहोस्, निचोर्नोस् र सुकाउनोस्', 'एउटा भोज तपाईंलाई', 'भोलि उज्यालो त होस्', 'मस्यौरा आतङ्क', 'कस्तो लाग्छ डाक्टर साहेब तपाईंलाई ?' 'प्रजातन्त्रको सङ्कट', 'हजुरलाई कहिल्यै केही नहोस्', 'चालिसबसें जोवनलाई सलाम', 'उत्खनन' निबन्धहरूमा समकालीन नेपाली राजनीतिप्रति व्यङ्ग्य गर्दै निबन्धकार लेख्छन् :

वास्तवमा प्रजातन्त्र भनेको गरिबकै व्यवस्था रहेछ । प्रजातन्त्र अधिका एक छाक राम्ररी जुटाउन नसक्नेहरू अहिले आलिसान भवन, पजेरो, थुप्रै चलअचल सम्पत्तिका मालिक भइसके । हिजो 'बाऊ खेत जोत्न गा'छ' भन्ने छोरा आज 'बुवा बाहिर सवारी होइबक्स्या छ' भन्ने भइसक्यो । हिजो एउटा जडाउरी पेन्ट भेट्दा मक्ख पर्ने नेता आज सिङ्गै नेपाललाई 'निजीकरण' गर्न सक्ता पनि सन्तोष नमान्ला जस्तो भइसक्यो (पृ. ३४) ।

प्रजातन्त्रलाई गरिबहरूको शासन भनिए पनि जनताले कुनै पनि किसिमको सुख सुविधा भोग्न पाएका छैनन् । प्रजातन्त्र नेताहरूकै घर आँगनमा आएको छ । प्रजातन्त्र अधिका भैंसी गोठाला, एक गाँस खान नपुग्ने नेताहरू आज पजेरोमा गुडिरहेका छन्, आलिसान भवनमा राज गरिरहेका छन् । प्रजातन्त्रको परिवर्तन भनेकै नेताहरूको जनजीवनमा परिवर्तन हुनु हो । जडौरी पेन्ट पाउँदै खुसी हुने स्थिति भएका नेताहरू प्रजातन्त्र प्राप्त पछि पुरै नेपाल निजीकरण गरी सक्दा पनि चित्त बुझाउन नसकेका भ्रष्ट नेताहरूको खराब प्रवृत्तिप्रति व्यङ्ग्य गरिएको छ तर जनताले भने प्रजातन्त्र भनेको के हो भन्ने कुरा समेत आभास प्राप्त गर्न नसकेको यथार्थता प्रस्तुत गरिएको छ । प्रजातन्त्रप्रतिको उपेक्षालाई व्यङ्ग्य गर्दै निबन्धकार लेख्छन् :

*यहाँ हेर् त यी : प्रजातन्त्रका औंलाहरू मेरा पोल्तामा छन् । ऊ : त्यो चिल्लो गाडी छ नि !
त्यहाँ बस्ने भुसतिघेको खल्लीमा छ प्रजातन्त्र । ऊ त्यो आलिसान भवनमा छ प्रजातन्त्र ।
तस्कर डाकाले ओढिराखेको रामनामीभित्र छ प्रजातन्त्र । खुब प्रजातन्त्र खोज्ने भएकी ! (पृ.
५५) ।*

त्रिपाठीले प्रजातन्त्र भनेको नेताहरूका चिल्ला गाडीहरूमा, आलिसान भवनहरूमा र त्यहाँ बस्ने भुसतिघेका खल्लीभित्र भएको व्यङ्ग्य गर्दै तस्करी गर्ने तस्कर र डाकाहरूको रामनामीभित्र

प्रजातन्त्र भएको विचार प्रस्तुत गरेकी छन् । गरिब र सर्वसाधारण निमुखा जनता कसैले पनि प्रजातन्त्रको नयाँ परिवर्तन भएको अनुभव प्राप्त गर्न सकेका छैनन् । उनीहरूका लागि प्रजातन्त्र भनेको कुन चराको नाम हो ? भन्ने व्यङ्ग्यात्मक विचार समेत त्रिपाठीको रहेको छ । यसरी नेपालको राजनीतिक माध्यमबाट प्रजातन्त्रको उपेक्षा, नेतृत्वको विचलन र पथभ्रष्ट प्रवृत्तिप्रति व्यङ्ग्य गरिएको छ ।

ख) सामाजिक

समाजमा घटित विभिन्न सामाजिक सन्दर्भलाई टिपेर व्यङ्ग्यात्मक रूपमा प्रस्तुत गर्नु त्रिपाठीको यस व्यङ्ग्य निबन्ध सङ्ग्रहको महत्त्वपूर्ण विशेषता हो । यस निबन्ध सङ्ग्रहका 'सुन्ला तेरो बाजेले !' 'डुबाउनुहोस्, निचोर्नुस् र सुकाउनुस्', 'चित्त दुखेको कुरो नभन्दिस्', 'सुट, टाई र सुँगुर', 'जडौरी जिन्दगी', 'पिताश्रीलाई साधुवाद', 'एउटा भोज तपाईंलाई पनि', 'प्रजातन्त्रको सङ्कट', 'उत्खनन' शीर्षकका निबन्धमा सामाजिक विषयवस्तुहरूलाई व्यङ्ग्यात्मक रूपमा यसरी प्रस्तुत गरिएको छ :

सुविधा सम्पन्नताले सभ्यता उम्रन्छ कि उम्रदैन भनेर जाँची हेर्नका लागि !सुँगुरको यो जोडी यसै कोठामा जन्मे हुर्केका हुन् । मैले यिनलाई सुँगुरको समाजसँग सम्पर्क राख्न दिएकी छैन । 'तैपनि ट्वाइलेटमा के के बदमासी गरेर आउँछन् । स्वर्ग जान्छस् भन्दा त्यहाँ के के जाति खान पाईदैन होला, होस् जान्न भन्ने जात त पच्यो (पृ. ३०/३१) ।

त्रिपाठीका दृष्टिमा सुविधा सम्पन्न कोठामा राखिदिए पनि सुँगुरको व्यवहारमा परिवर्तन हुँदैन । मिठो मिठो खान दिए पनि जसरी सुँगुरहरू फोहोर कुरा नै खोज्न जान्छ, फोहोर कुरामा नै बस्न रुचाउँछ, त्यसैगरी असभ्य मानवलाई जति सभ्य र असल पाठ पढाए पनि उसले आफ्नो परम्परागत संस्कारमा कहिल्यै परिवर्तन गर्न जानेन भन्ने मान्यता उनको छ । विश्व एक्काइसौं शताब्दीमा पाइलो टेकेको धेरै समय भइसकदा पनि यहाँका मानव जातिमा एकरत्ति पनि असर नपरेको कुरा त्रिपाठीले आफ्नो निबन्धमा प्रस्तुत गरेकी छन् । यी विषयलाई उनले नेपाली समाजप्रति सामाजिक व्यङ्ग्य गर्दै प्रस्तुत गरेकी छन् ।

ग) साहित्यक

साहित्य सम्बन्धी विषयवस्तुलाई व्यङ्ग्यात्मक रूपमा प्रस्तुत गर्न त्रिपाठीका यस निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका 'आउनोस् कमरेडहरू बदाम खाऔं', 'भैसीको मम र साहित्य' शीर्षकका निबन्ध सफल भएका छन् । उनी लेख्छन् :

हाम्रा लागि त भैसीको मासु त बासी भएपछि गनाउँछ, लेख रचना जतिसुकै बासी भए पनि गनाउँदा पनि गनाउँदैन र भिँगा भुसुना पनि भन्कदैन । गनाएर र कुहिएर जाने भैसीको मासु पैसा हालेर किन्नुपर्छ तर कहिल्यै बासी नहुने, नकुहिने साहित्य सितैमा पाइन्छ । एकचोटि बटुलेको लेखरचना बढी भयो भने अर्को अङ्कलाई राखे पनि भै हाल्यो, डिप फ्रिजमा राख्नुपर्ने होइन क्यार ! (पृ. १७/१८) ।

यहाँ साहित्य रचनाजस्तो पवित्र कार्यलाई भैसीको मासुसँग तुलना गर्दै साहित्यलाई ममभन्दा पनि सस्तो ठानिएको कुरालाई निबन्धकार त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् । साहित्यकारका साहित्यभन्दा पनि भैसीको मम महँगो छ । उक्त निबन्धमा कुहिएर, गनाएर फाल्नुपर्ने भैसीको मासुलाई पैसा हालेर किन्नुपर्ने तर कहिल्यै नगनाउने र नसङ्गे र डिप फ्रिजमा समेत राख्नु नपर्ने साहित्य चाहिँ लेखकले सितैमा उपलब्ध गराउँदै आउनु परेको कुरालाई व्यङ्ग्यात्मक रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

घ) आर्थिक

प्रस्तुत सङ्ग्रहका 'डुबाउनोस्, निचोर्नोस् र सुकाउनोस्', 'डुबाउनुस्, निचोर्नुस् र सुकाउनुस्', 'चित्त दुखेको कुरा नभन्दिएस', 'एउटा भोज तपाईंलाई पनि', 'पिताश्रीलाई साधुवाद', 'कस्तो लाग्छ डाक्टर साहेब तपाईंलाई ?', 'प्रजातन्त्रको सङ्कट', 'उत्खनन' आदि निबन्धहरूमा आर्थिक विषयवस्तुलाई व्यङ्ग्यात्मक रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ : *होइन यी ठेकेदार साहेब गनाउन पनि थोरै गनाएका छन् र ! हाम्रो देशलाई प्रदूषित तुल्याउने अधिकार कसले दियो हँ यिनलाई ? (पृ. २२) ।*

यहाँ धेरै खाँदा अपच भएजस्तै ठेकेदारले पनि धेरै खाएकाले अपच भएर गनाएका होलान् भन्ने मान्यता उनको छ । नेताहरू यति धेरै गनाएका छन् कि तिनले पुरै देशलाई प्रदूषित पारेका छन् । जति खाए पनि नअघाउने, जति पाए पनि तृष्णा र अतृप्ति नमेटिने ठेकेदार नामका असन्तुष्ट प्राणीले पुरै देशलाई दुर्गन्धित पारेका कुरालाई व्यङ्ग्यात्मक रूपमा प्रस्तुत गर्दै नेपाली समाजको आर्थिक पक्षको चित्रण उनका यी व्यङ्ग्य निबन्धमा पाइन्छ ।

ड) सांस्कृतिक

त्रिपाठीले प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहभित्र रहेका निबन्धहरूमा सांस्कृतिक विषयवस्तुलाई पनि व्यङ्ग्यात्मक रूपमा प्रस्तुत गरेकी छन् । यस निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका 'भुक्ने बोका', 'डुबाउनुोस्, निचोर्नुोस् र सुकाउनुोस्', 'पिताश्रीलाई साधुवाद', 'चित्त दुखेको कुरा नभन्दिस्' निबन्धहरूमा सांस्कृतिक विषयवस्तु व्यङ्ग्यात्मक रूपमा प्रस्तुत भएको देखिन्छ । उदाहरणका लागि प्रस्तुत छ उद्धरण :

अर्काको दुःख देख्न नसक्ने हाम्रो संस्कृतिले चाहिँ ती कर्मचारीलाई थोरै भए पनि राहत दिएको छ । कहिलेकाहीं त संस्कृतिले पनि मान्छेलाई बचाउँदो रहेछ । यसो केही काम लिएर सरकारी कार्यालयमा गयो । विचरा महँगी पीडित कर्मचारीहरू मुखमा आहारा च्यापेर टोड्कामा फर्केको माऊलाई बचेराले हेरेभैँ मुर्दा अनुहार लगाएर टुलुटुलु अनुहारमा हेरी बस्छन् । आफ्नो कमलो मन, अर्को खल्लीमा फेरि अलिकति ट्याक्सी खर्च हालिदियो । यति भएपछि महँगी पीडित कर्मचारीका मुर्दा अनुहारमा बल्ल जीवनको रङ्ग खेल्न थाल्छ । फाइल सक्रियताका साथ यताउता हुन थाल्छन् (पृ. ३७-३८) ।

यहाँ महँगीका नाममा घुस लिएर कार्यालयको काम सम्पन्न गर्ने कर्मचारीप्रति व्यङ्ग्य गरिएको छ । विनाघुस काम नगर्ने सरकारी तलब खाएर बसेका कर्मचारीहरू जसरी टोड्कामा बचेरारू आहार खोज्न गएको माऊ कहिले आउला र आहार खान पाऊँला भनी मुख बाएर बस्छन् त्यसैगरी आशे मुख लिएर कार्यालयको काम ठप्प गरी बसेका हुन्छन् । जब घुसले उनीहरूको खल्ली भरिँदै जन्छ, तब मात्र उनीहरू फाइल पल्टाउन थाल्छन् । हाम्रो सेवाका लागि टन्न सरकारी तलब खाएर बसेका कर्मचारीहरू हामीले नै घुस नदिईकन कुनै पनि काम गर्न मान्दैनन् भन्ने विचार प्रकट गर्दै घुस दिने र घुस लिने नेपालीहरूको खराब प्रवृत्तिप्रति त्रिपाठीले व्यङ्ग्य भाव प्रस्तुत गरेकी छन् । घुस लिने प्रवृत्ति भने कर्मचारीहरूको परम्परागत संस्कृति नै बनिसकेको कुराप्रति यहाँ व्यङ्ग्य गरिएको छ ।

सुट, टाई र सुँगुर व्यङ्ग्य निबन्ध सङ्ग्रहमा राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक विषयवस्तु व्यङ्ग्यात्मक रूपबाट प्रस्तुत भएको पाइन्छ । भ्रष्ट नेताहरूले राजनीतिलाई कमाइ खाने पेसा र प्रजातन्त्रलाई ठगी खाने भाँडो बनाएका छन् जसका कारण समाजमा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक र साहित्यिक क्षेत्रमा विभिन्न समस्या देखिएका छन् । नेताकै खराब

प्रवृत्तिका कारण देश गरिबीको दलदलमा फस्न पुगेको छ । त्रिपाठी भ्रष्टाचार र घुसतन्त्रले देशमा अराजक स्थितिको सिर्जना भएको कुरालाई व्यङ्ग्यात्मक रूपमा प्रस्तुत गर्न सफल भएकी छन् ।

५.१.३.२ भाषा

सुधा त्रिपाठीले यस निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा अत्यन्त प्राञ्जल भाषाको प्रयोग गरेकी छन् । ग्रामीण बोलीचालीका भाषामा प्रयोग हुने ठेट नेपाली शब्दहरूको प्रयोग उनको निबन्धगत भाषिक विशेषता रहेको देखिन्छ । उनले यस सङ्ग्रहका निबन्धहरूमा निबन्ध सङ्ग्रहका 'जडौरी जिन्दगी', 'सुट, टाई र सुँगुर', 'मस्यौरा आतङ्क' निबन्धहरूको शीर्षक चयनमा भाषामा मानवीकरण गरिएको पाइन्छ ।

भाषाका स्वरूप लेख्यबाट कथ्यस्तरमा पुऱ्याउनाले मात्र हास्यव्यङ्ग्यको स्तर उठ्न सक्छ भन्ने मान्यता अधिकांशतः यस सङ्ग्रहका निबन्धभित्र नदेखिए तापनि केही निबन्धमा भने त्यस्तो भाषाको पनि प्रयोग भएको देखिन्छ । जस्तो : यस निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका 'चित्त दुखेको कुरा नभन्दिस्' निबन्धमा- 'तँ पागल भइस् कि क्या हो ?', 'थुइक्क मोरा ! सरम छाडा बजिया'; 'सुन्ला तेरो बाजेले' निबन्धमा- 'नकरा अलच्छिना ! सुन्ला तेरो बाजेले !', 'ला, यो एक बोटल तन्का' (पृ. ३), त्यसैगरी 'असत्ती', 'पाजी' जस्ता निम्न स्तरका शब्द र पदावलीका साथै वाक्य गठनले पढे लेखेर पनि असभ्य रहेका मानिसको असभ्य बोलीचालीलाई सहज र स्वाभाविक किसिमले प्रस्तुत गर्न सकेको देखिन्छ ।

'सुन्ला तेरो बाजेले', 'चित्त दुखेको कुरा नभन्दिस्', 'गोपीकृष्ण भन्' निबन्ध शीर्षकभित्र अनादरवाची शब्दको प्रयोग भएको देखिन्छ भने 'हजुरलाई कहिल्यै केही नहोस्', अति उच्च, 'आउनोस्, कमरेडहरू बदाम खाऔं', 'डुबाउनोस्, निचोर्नोस् र सुकाउनोस्', 'एउटा भोज तपाईंलाई पनि', 'कस्तो लाग्छ डाक्टरसाहेब तपाईंलाई ?' निबन्धहरूको शीर्षकमा नै उच्च आदरवाची शब्दको प्रयोग भएको पाइन्छ । त्यस्तै नेता हजुर, हजुर यस कुराको चिन्ता ठ्याम्मै नलिस्योस् स्वयं निबन्धकारकै सेरोफेरोबाट निबन्ध प्रस्तुत भएकाले यसलाई निजात्मक शैलीका रूपमा राख्न सकिन्छ । जस्तो : आदरणीय कमरेडहरू मलाई तपाईंहरूसँग बसेर घाम ताप्दै बदाम खान रहर लागेको छ (पृ. ४), सुन्नसम्म चाहिँ मेरो कथाव्यथा दुवैथरिले सुनिदिनु होला (पृ. ९) । होइन ए काका, कुरो त गहिरै गछौं ए गाँठे !, साँच्ची र काइँला (पृ. ४०) जस्ता उनका ठेट ग्रामीण जनजीवनका बोलीमा शैलीगत सरलता र मिठास भेट्न सकिन्छ ।

प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहभित्र रहेको निबन्ध 'चित्त दुखेको कुरो नभन्दिस्' मा 'जुँगा चल्यो, कुरा बुभ्यो' (पृ. २७), 'भालुको मन खन्युमाथि', 'जहाँ नपहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि', (पृ. ४८) जस्ता उखान टुक्काको पनि प्रयोग भएको पाइन्छ । त्यस्तै देशको चिन्ता गर्ने ठेक्का लिएकाहरू कोही सत्तामा, कोही प्रतिपक्षमा पार तापेर सुखको घाँस उग्राई राखेका छन् (पृ. २) मा भाषामा मानवको पशुत्वकरण गरिएको छ । त्यस्तै भाषिक विचलनयुक्त वाक्य गठनले पनि भाषिक शैलीमा आलङ्कारिकता आएको कुरालाई निम्नलिखित उद्धरणले पुष्टि गर्दछ :

मैले पनि त्यही सफा टेम्पोमा सुनेको नि ! मलाई मात्र तिनका नभएका कुरा गर्न के खाँचो र ! माओवादीमा पनि तिनै गरिबका छोराछोरी त लाग्या छन् रे नि । अनि ती पुलिसले चाहिँ माओवादी भनेर तिनै गरिबका छोराछोरीको खेदो गर्ने हो त ? देश बिगानेहरू कुन-कुन दुलामा लुकेर बसेका छन्, मर्ने त सधैं उही गरिबै मात्रै (पृ. २) ।

ए ! हवलदारसाहेब त मेचमै भुसुकै निदाउनु पो भएछ (पृ. ५८) जस्तो संवादात्मक नाटकीय शैलीका साथै नेपालका प्रधानमन्त्री असाध्यै चलाक हुनुहुँदो रहेछ । जे जे छ त्यो ल्याउँछु भन्नुहुँदो रहेछ र जे जे छैन त्यो उन्मूलन गर्छु भन्नुहुँदो रहेछ (पृ. ३४) जस्तो हास्यव्यङ्ग्यात्मक शैलीलाई निबन्ध सङ्ग्रहको विशेषताकै रूपमा भेट्न सकिन्छ ।

यसरी ग्रामीण ठेट भाषा शैलीभित्र विचलनयुक्त भाषिक विशेषताका साथै भाषामा मानवीकरणपशुत्वकरण भएकाले आलङ्कारिक शैलीको प्रयोग भेटिन्छ भने खाली मेरो पिर सुन्दिस्स्योस्, त्यति निगाह भए पुग्छ, (पृ. ६०) जस्ता अति उच्च वाक्य गठन र डाक्टर साहेब, हवलदार साहेब, नेता हजुरजस्ता व्यङ्ग्यात्मक आशयका आदरार्थी शब्दको प्रयोग पनि यस सङ्ग्रहका निबन्धहरूमा प्राप्त गर्न सकिन्छ ।

'लाइट माइन्डेट' (पृ. ५९), 'आर.एन.ए.सी.' (पृ. २२), बफ, मटन, चिकेन, मम (पृ. १६) जस्ता आगन्तुक शब्दका साथै गड्याङ्गुडुडु, भिलिक्क, सुटुक्क, मन्याक्-मन्याक्, हस्याङ्ग-फस्याङ्गजस्ता अनुकरणात्मक शब्दको प्रयोगबाट पनि भाषामा रोचकता बढेको देख्न सकिन्छ ।

'सुन्ला तेरो बाजेले' निबन्धमा 'उडी छुनु चन्द्र एक' (पृ. १), 'चित्त दुखेको कुरा नभन्दिस्' निबन्धमा 'जुँगा चल्यो कुरो बुभ्यो' (पृ. २७) जस्ता उखान टुक्काको प्रयोग भएको पाइन्छ ।

धत्तेरिका ! कहाँ गुनिलो, इमानदार कुकुर ! कहाँ बैगुनी बेइमान बोको (पृ. ७०) आदि थुप्रै विष्मयादी बोधक चिन्हको प्रयोगका साथै संवादात्मक भाषाको प्रयोग भएको पनि देख्न सकिन्छ ।

यसरी उखान टुक्काको प्रयोग, अनुकरणात्मक शब्द, आगन्तुक र ग्रामीण ठेट नेपाली शब्दको प्रयोगका साथै भाषामा मानवीकरण/पशुत्वकरण र भाषिक विचलनयुक्त वाक्यले निबन्ध सङ्ग्रहका भाषामा मिठास भित्रिएको देखिन्छ । सरल, सहज र स्वाभाविक भाषाको प्रयोग हुनु यस निबन्ध सङ्ग्रहको महत्त्वपूर्ण भाषिक विशेषता रहेको देखिन्छ ।

५.१.३.३ शैली

सुट, टाई र सुँगुर व्यङ्ग्य निबन्ध सङ्ग्रहभित्र रहेका निबन्धहरूमा प्रथम पुरुष शैलीको प्रयोग भएको देखिन्छ । यस निबन्ध सङ्ग्रहमा तँ, तेरा, तपाईं, ऊ, कहाँजस्ता द्वितीय र तृतीय पुरुष सर्वनामहरूको प्रशस्त प्रयोग भए पनि म र हामीभित्रकै केन्द्रबिन्दुबाट निबन्धगत कथ्य अगाडि बढेको छ । त्यसमा पनि सो प्रयोगले निबन्धभित्रको भाषामा सरलता, सहजता र स्वाभाविकता भेट्न सकिन्छ । निबन्ध सङ्ग्रहमा आत्मपरक/निजात्मक शैलीका माध्यमबाट समाजका हरेक विकृति प्रस्तुत गर्नु उनको हास्यव्यङ्ग्यात्मक विशेषता हो । त्यसैगरी त्रिपाठी देशमा विद्यमान राजनीतिक अस्थिरता र नेताका कुकृत्यबाट आक्रोशित भएकीले आक्रामक शैली पनि निबन्ध सङ्ग्रहको ठाउँ ठाउँमा प्रयोग भएको देख्न सकिन्छ ।

५.१.३.४ सन्देश

सुट, टाई र सुँगुर व्यङ्ग्य निबन्ध सङ्ग्रहको सिर्जना गर्नु निबन्धकार त्रिपाठीको आफ्नै उद्देश्य रहेको छ । यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा देशमा राजनीतिक अस्थिरता बढेका हुनाले यसमा देखिएका विकृति, विसङ्गतिहरू मौलाउँदै गएका छन् जसका कारण राजनीतिक संस्कृतिमा देखिएको विकराल जटिलताका कारण देशले भोग्नु परेको दुर्गतिलाई हास्यव्यङ्ग्यका माध्यमबाट प्रस्तुत गरेकी छन् । प्रजातन्त्र प्राप्तपछि जनताले प्राप्त गर्नुपर्ने हक र अधिकार नेताका हातमा बन्धक भइरहेको छ । स्वतन्त्रताका नाममा प्रजातन्त्र सङ्कटमा परिरहेको छ । देशमा अराजकता, विकृति, भ्रष्टाचार बढिरहेको छ । वर्गीय आर्थिक असमानताको खाडल फराकिलो हुँदै गइरहेको छ । जनता हरेक पक्षबाट शोषित पीडित भइरहेका छन् । उनका व्यङ्ग्यमा आधुनिक नारीका पीडाहरू समेत मुखरित भएका छन् । त्रिपाठीले मानव जीवनका व्यक्तिगत पीडालाई सामान्यीकरण गर्दै देशमा प्रजातन्त्रका नाममा देखिएको नातावाद, कृपावादका साथै छाडावादबाट मौलाएको

भ्रष्टाचारबाट विदेशीले समेत यसको फाइदा उठाएका छन् भन्ने यथार्थ पक्षलाई हास्यव्यङ्ग्यात्मक शैलीमा प्रस्तुत गरेकी छन् । सुट, टाई लगाउँदैमा आधुनिक भईखाएका पाखण्डी पुरुषहरू सभ्य मानव बन्न सक्दैनन् । उनीहरू आफ्नै असभ्य र जङ्गली व्यवहारबाट सुँगुरकै स्तरमा झर्न पुगेका छन् भन्ने व्यङ्ग्य समेत यस निबन्ध सङ्ग्रहमा आएको छ ।

यसरी समाजका हरेक सङ्ग्रहमा देखिएका विकृति, विसङ्गति, अराजकता, छाडापन र भ्रष्टाचारले देशमा सङ्कटग्रस्त अवस्थाको सिर्जना भइरहेको छ । यसका कारण मानवीय संवेदना क्षीण बन्दै गएको छ । संवेदनात्मक मूल्यहरू ह्रास बन्दै गएको वर्तमान समय नितान्त क्रूर र जड बन्दै गएको छ । मान्छेका धार्मिक र सांस्कृतिक संवेदना मृत्युन्मुख बन्दै गएका छन् । सामाजिक र नैतिक मर्यादाहरू जड बनिसकेका छन् । समग्र मान्छे संवेदनाबाट टाडा पुगिसकेको हालको वातावरण मूल्यहीनताको प्रदूषणबाट ग्रस्त बनेको (सुवेदी, २०५९ : भूमिका) समाजको अवस्थालाई हास्यव्यङ्ग्यका माध्यमबाट प्रस्तुत गर्नु त्रिपाठीको महत्त्वपूर्ण विशेषता रहेको पाइन्छ ।

५.१.४ 'अमर सिर्जना' निबन्ध सङ्ग्रहको विश्लेषण

निबन्धकार सुधा त्रिपाठीको प्रकाशनका हिसाबले हेर्दा अमर सिर्जना चौथो निबन्ध सङ्ग्रह हो । तेस्रो चरणको प्रारम्भ २०६५ सालमा साभा प्रकाशनबाट प्रकाशित सोही सङ्ग्रहबाट भएको छ । उक्त निबन्ध सङ्ग्रहमा १० वटा शीर्षकका निबन्धहरू सङ्गृहीत छन् । यस सङ्ग्रहमा सङ्कलित निबन्धहरू २०५७ सालदेखि २०६२ सालसम्म विभिन्न पत्र पत्रिकामा प्रकाशित रहेका छन् । वि.सं. २०५७ मा प्रकाशित निबन्धहरूमा 'अमर सिर्जना' र 'अमर कविता' रहेका छन् । वि.सं. २०५८ मा प्रकाशित निबन्धहरूमा 'पुरानो घाउ र नयाँ वेदना', 'भाले खन्यु र महापुरस्कार', 'बुद्ध लजाएको दिन', 'क्याक्टस, रेविजग्रस्त प्रजातन्त्र र महाभीर', 'जिगीषा र जिजीविषा' आदि रहेका छन् । २०६१ सालमा प्रकाशित निबन्ध 'मिथक भइछु म त' र २०६२ सालमा 'एक मुठी माटो चोरेर भाग्नेलाई' निबन्धहरू यस सङ्ग्रहमा प्रकाशित भएका छन् ।

यसरी विभिन्न समयमा प्रकाशित निबन्धहरूमध्येको 'अमर सिर्जना' निबन्धकै शीर्षकबाट यस सङ्ग्रहको नामकरण गरिएको छ । यस निबन्ध सङ्ग्रहको विश्लेषण निबन्धमा रहेका विभिन्न निबन्धगत तत्त्वहरू (विषयवस्तु, भाषा, शैलीशिल्प र सन्देश) का आधारमा गरिएको छ ।

५.१.४.१ विषयवस्तु

सुधा त्रिपाठीले 'अमर सिर्जना' निबन्ध सङ्ग्रहभित्र सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक र देशभक्तिपूर्ण भावले भरिएका विषयवस्तुहरू प्रस्तुत गरेकी छन् । यिनै विषयवस्तुहरूलाई तल निम्नानुसार उदाहरण दिएर प्रस्तुत गरिएको छ :

क) सामाजिक

अमर सिर्जना निबन्ध सङ्ग्रहभित्र सामाजिक विषयभित्र पितृसत्तात्मक समाजले नारीप्रति गरेको शोषण, अन्याय र अत्याचारप्रतिको विद्रोह, समाजमा विद्यमान वर्गीय असमानता, सामन्तवाद विरुद्धको आक्रमण आदि विषयहरू समेटिएर आएका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका 'अमर सिर्जना', 'अमर कविता', 'मेरी जिजीविषा', 'पुरानो घाउ र नयाँ वेदना', 'भाले खन्यु र महापुरस्कार', 'क्याक्टस, रेविजग्रस्त प्रजातन्त्र र महाभीर', 'म त मिथक भइछु' र 'एक मुठी माटो चोरेर भाग्नेलाई' निबन्धहरूमा सामाजिक विषयवस्तु प्रस्तुत भएका छन् । सामाजिक सन्दर्भलाई प्रस्तुत गर्दै निबन्धकार लेखिन्छन् :

*सबैलाई यस्तै पीडा हुन्छ त ?, म भन्छु, पीडा त सबैलाई उस्तै त हो नि ! ऊ अझ थप्छे,
यस्तै पीडा हुन्छ भने महिलाहरू किन जन्माउँछन् त थुप्रै सन्तान ?, मेरो मुखबाट एउटा
विस्फोटक वस्तु पड्किए भैं निस्कन्छ जवाफ, प्रसवपीडा नभोग्नेका हातमा प्रजनन
अधिकार सीमित भएपछि यस्तै त हुन्छ नि ! (पृ. ५) ।*

प्रस्तुत पङ्क्तिमा म पात्रका रूपमा स्वयं निबन्धकार त्रिपाठी उपस्थित भएकी छन् भने ऊ पात्रका रूपमा उनले आफ्नै बहिनीलाई उपस्थित गराएर त्रिपाठीले संसारमा कीरा जन्मेसरी जन्मेका हरेक मान्छेको जन्ममा नारीहरूले भोग्ने प्रसव पीडालाई सामान्यीकरण गरेकी छन् । यहाँ प्रसव पीडाबाट मृत्युका मुखमा पुग्न बाध्य भएका समग्र नारीहरूको चित्रण गरिएको छ । पितृसत्तात्मक समाजमा मानव सिर्जनाका क्रममा नारीहरूले भोग्नुपर्ने असह्य पीडा र वेदनाको व्याख्या गर्न सम्भव छैन । यस्तो असह्य पीडा हुँदाहुँदै पनि उनीहरू बाध्यतावश बच्चा जन्माउने मेसिनका रूपमा स्थापित हुन पुगेका छन् । उनका निबन्धमा पितृसत्तात्मक समाजभित्र नारीहरू छोराको चाहना हुँदा बसेनी बच्चा जन्माउन बाध्य हुन्छन् भन्ने परम्परालाई प्रस्तुत गरी नेपाली नारीको सामाजिक समस्याको चित्रण भएको छ । उनीहरूको यस पीडालाई बुझ्न कसैले प्रयत्न गरेको छैन । नारीहरूको पीडा अनुभव गर्न त के हेर्नसम्म नपाउने गरी सामाजिक व्यवस्था मिलाइएका कारण

पुरुषहरूकै हातमा प्रजनन क्षमता सीमित रहेको सन्दर्भ वर्णन गर्दै नारीहरूले नचाहँदा नचाहँदै पनि दर्जनौँ सन्तान जन्माउन बाध्य हुनु परेको विवशतालाई यहाँ सामाजिक विषयवस्तुका रूपमा प्रस्तुत गरिएको पाइन्छ ।

ख) सांस्कृतिक

पितृसत्तात्मक समाजले अँगालेको परम्परागत मूल्य र मान्यताभिन्न स्थापित विभिन्न सांस्कृतिक पक्षहरूलाई त्रिपाठीले यस सङ्ग्रहमा विषयवस्तुका रूपमा प्रस्तुत गरेकी छन् । यस निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका 'अमर सिर्जना', 'मेरी जिजीविषा', 'पुरानो घाउ नयाँ वेदना', 'भाले खन्यु र महापुरस्कार', 'एक मुठी माटो चोरेर भाग्नेलाई' निबन्धहरूमा सांस्कृतिक विषयवस्तु प्रस्तुत भएको पाइन्छ । नेपाली लिङ्गीय संस्कृतिको चित्रण गर्दै निबन्धकार त्रिपाठी लेखिछन् : *धिक्कार छ त्यो मस्तिष्कलाई जसले सृष्टिकर्ता ब्रम्हा भनेर एउटा पुरुष स्वरूपको कल्पना गर्‍यो । अनि अचम्म लाग्छ त्यो महामाताको अस्तित्व कसरी विस्मृत बन्न पुग्यो भनेर !* (पृ. ७) ।

पितृसत्तात्मक मूल्य र मान्यताभिन्न विद्यमान सामाजिक संरचनामा नारीलाई एकातिर पन्छ्याएर पुरुषलाई सर्वेसर्वा शक्तिका रूपमा स्थापित गर्ने र अर्कै ईश्वरका रूपमा पूजा गर्ने परम्परा लामो समयदेखि नै चलि आएको पाइन्छ । अर्कै हिन्दु संस्कृति र परम्परा अनुसार सम्पूर्ण प्राणीको सृष्टिकर्ताका रूपमा बालाई अधि सारिएको छ । यसै अनुरूप सृष्टिकर्ता ब्राका रूपमा पुरुषलाई अधि सारिएको छ । यही परम्परागत मूल्य र मान्यताभिन्न जकडिएको संस्कृति समाजमा जरो गाडेर बसेको छ । असह्य वेदना खपेर प्रत्यक्ष रूपमा नै आफ्नो कोखबाट शिशु जन्माउने अभिभारा बोकेर प्राणीको जननीकर्ता, महामाताका रूपमा नारी रहँदा रहँदै पनि कुन मस्तिष्कको कल्पनाले पुरुषलाई सृष्टिकर्ताका रूपमा स्थापित गर्‍यो र के आधारमा सृष्टि स्वरूपा नारीको अस्तित्वलाई कसरी विलीन बनायो भन्ने आश्चर्यजनक जिज्ञासालाई त्रिपाठीले यहाँ प्रस्तुत गरेकी छन् ।

ग) राजनीतिक

मार्क्सवादी नारीवादकी पक्षधर त्रिपाठीले यस अमर सिर्जना निबन्ध सङ्ग्रहमा देशमा विद्यमान राजनीतिक अस्थिरताका कारण उत्पन्न समस्या, राष्ट्रिय तथा वैयक्तिक जीवनमा परेको सङ्कट लगायत राजनीतिक हत्या, राष्ट्रव्यापी द्वन्द्व, युद्ध र अशान्तिबाट उत्पन्न भएको सङ्कटग्रस्त जीवनको अवस्थालाई निबन्धकार त्रिपाठीले राजनीतिक विषयवस्तु बनाएर प्रस्तुत गरेकी छन् । यस

निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका 'अमर कविता', 'मेरी जिजीविषा', 'क्याक्टस, रेविजग्रस्त प्रजातन्त्र र महाभीर', 'मिथक भइछु म त' शीर्षकका निबन्धहरूमा राजनीतिक विषयवस्तु आएको देखिन्छ । राजनीतिक विषयवस्तुको चित्रण गर्दै त्रिपाठी लेखिन्छन् :

आजको नेपालको प्रजातन्त्र सत्तामा पुग्नेका लागि, कुर्सीमा ढसमस्स हुनेका लागि रेविजको कीटाणु बनेको छ । सबै रोगबाट जोगाउनु पर्ने भनेको नेपालमा यही एउटा प्रजातन्त्र थियो, त्यही नै सर्वप्रथम रोगग्रस्त बनिदियो । यदि यसो होइन भने मन्त्री आदि कुर्सीधारीहरूका मुखबाट यसरी च्याल चुहिराखेको किन त ? रेविजग्रस्त यो च्यालको कीटाणुको सङ्क्रमण नभएको ठाउँ कुन छ त ? हो आज नेपाल रेविजग्रस्त छ (पृ. ४५) ।

लामो जनसङ्घर्षपछि प्राप्त प्रजातन्त्रको संरक्षण र संवर्द्धन गरी शक्तिशाली र निरोगी बनाउनुपर्ने धारणा राख्ने त्रिपाठीले यहाँ प्रजातन्त्रलाई रेविज रोगले ग्रस्त पारेको चिन्ता प्रकट गरेकी छिन् । रेविज रोग लागेपछि कुकुरका मुखबाट च्याल चुहिए भैं प्रजातन्त्र प्राप्तिपछि देश विकासको प्रतिवद्धता बोकेर कुर्सीमा बसेका मन्त्रीदेखि हरेक ओहोदामा पुगेका कर्मचारीका मुखबाट पनि च्याल सिवाय केही चुहिएको पाइँदैन भन्दै प्रजातन्त्रको घातक बनेर देशमा भ्रष्टाचार र घुसतन्त्र मौलाएको छ । यसले देशलाई नै रोगग्रस्त र कमजोर बनाएको यथार्थलाई व्यङ्ग्यात्मक रूपबाट प्रस्तुत गरिएका यस सङ्ग्रहमा सांस्कृतिक सन्दर्भ प्रस्तुत भएको छ ।

घ) ऐतिहासिक

प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा ऐतिहासिक विषयवस्तु प्रस्तुत भएको देखिन्छ । यस सङ्ग्रहभित्रका 'अमर सिर्जना', 'अमर कविता', 'मेरी जिजीविषा', 'बुद्ध लजाएको दिन' निबन्धहरूमा ऐतिहासिक विषयवस्तु आएको पाइन्छ । ऐतिहासिक पक्षको चित्रण गर्दै उनी लेखिन्छन् :

मेरा आँखा अगाडि मायादेवी आफ्नो सानो बुद्धलाई अँगालोमा च्यापेर उपस्थित भएकी थिई । त्यहाँ उलिया नभका खोकिलामा सानो लेनिन, मेडम लटेसियाका खोकिलामा नेपोलियन बोनापार्ट, आविया फ्राङ्गलिनका खोकिलामा बेन्जामिन फ्राङ्गलिन, मेरी वासिङ्गटनका खोकिलामा जर्ज वासिङ्गटन लपक्क टाँसिएर सुतिरहेथे । ऊ त्यस कक्षभित्र पस्दा एउटी महिला थिई तर त्यहाँबाट निस्कँदा

धरित्री, जननी, दयार्द्रहृदया, त्रिभुवन श्रेष्ठा, निर्दोषा, सर्वदुःखहा, क्षमा, धृति, शिवा आदि बनेकी छ (पृष्ठ ८) ।

यहाँ नारीलाई सन्तान नजन्माउँदासम्म सामान्य महिलाका रूपमा हेर्ने त्रिपाठी सन्तान प्राप्तिपछिकी आमालाई धरणी, धात्री अर्थात् जगतमाताका रूपमा मूल्याङ्कन गर्न पुगेकी छन् । उनका विचारमा जननीकै त्याग र तपस्यामा सृष्टि अडेको छ । एउटी नारी जसले इतिहास रचेकी छ, विश्व हल्लाएकी छ, शान्तिका प्रतिमूर्ति बुद्ध जन्माएकी छ । इतिहासका महापुरुष बुद्ध, लेनिन, नेपोलियन बोनापार्ट, बेन्जामिन, जर्ज वासिङ्गटन आदिका प्रसिद्धिमा मातृत्वको नै महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेको हुन्छ । हरेक मातृत्वका खोकिलामा यिनै विश्व पुरुष महामानव हुकिरहेको कल्पना त्रिपाठीले आफ्नी बहिनीका खोकिलामा हाँसिरहेको नवजात शिशुलाई हेरेर गरिरहेकी छन् । त्रिपाठी त्यही शिशुमा बुद्ध, लेनिन, नेपोलियन बोनापार्ट आदि विश्व प्रसिद्ध महापुरुषको प्रतिरूप देखिरहेकी छन् । उनले नारीलाई इतिहासको निर्माणकर्ता वीर पुरुषकी जननीका रूपमा स्विकार्दै एउटी आमालाई इतिहास रचयिता, त्रिभुवन श्रेष्ठा, निर्दोष, सर्वदुःखहा, क्षमा, धृति र शिवा बुद्ध, लेनिन, बोनापार्ट आदि इतिहास पुरुष तिनै मातृशक्तिका वात्सल्यका परिणति हुन् जसका आधारमा इतिहास निर्माण भएको छ भन्ने भाव प्रस्तुत गरेकी छन् ।

ड) दार्शनिक

जीवन र मृत्युसँग सम्बन्धित दर्शनका विभिन्न दार्शनिक पक्षहरू यस सङ्ग्रहभित्र विभिन्न ठाउँमा विषयवस्तुका रूपमा आएका छन् । दार्शनिक विषयवस्तु लिएर देखा परेकी त्रिपाठीले यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरू 'अमरसिर्जना', 'मेरी जिजीविषा', 'पुरानो घाउ र नयाँ वेदना', 'भाले खन्यु र महापुरस्कार', 'जिगीषा र जिजीविषा', 'बुद्ध लजाएको दिन' शीर्षकका निबन्धहरूमा दार्शनिक विषयवस्तु भित्र्याएकी छन् । दार्शनिक सन्दर्भको चर्चा गर्दै उनी लेखिछन् :

भन्न त मान्छेहरू सानै कुरामा सुखी वा दुःखी हुनु राम्रो होइन भन्छन् तर भिजाउन त मानिसलाई एकै लोटा पानीले पनि आच्छु नै भन्नुपर्ने गरी भिजाउन सक्छ, एकै भिल्को आगोले पनि आत्था नै भन्नु पर्ने गरी पोल्न सक्छ । त्यस्तोमा आच्छु र आत्था नभन्ने त मुर्दा नै भइहाल्यो नि, कहाँ पाउनु जीवन त्यहाँ ! (पृ. २३) ।

निबन्धकार सुधा त्रिपाठीले यहाँ आगो र पानीलाई जीवनका सुखद् र दुःखद् पक्षसँग तुलना गरेकी छन् । जसरी आगोको सानो भिल्को भए पनि मान्छेलाई आत्था नै भन्ने गरी पोल्छ, त्यस्तै एकै लोटा पानी नै भए पनि आच्छु नै भन्ने गरी भिजाउँछ । त्यसरी नै मान्छेका जीवनमा सानो वा ठुलो जस्तोसुकै दुःख होस् वा सुख होस् मान्छेलाई प्रभाव पारिहाल्छ । आगोले पोल्दा आत्था नै

नभन्ने, पानीले भिजाउँदा आच्छु नै नभन्ने वा दुःख र सुख केहीले पनि प्रभाव नपार्ने मान्छे त मान्छे नै हुँदैन । ऊ त आत्मा नभएको मुर्दा सरी नै हुन्छ । त्यसैले कुनै पनि दुःख सानो वा ठूलो भन्ने हुँदैन, दुःखले सबैलाई दुःखी नै बनाउँछ, भन्ने जीवनका सुखदुःख सम्बन्धी दार्शनिक धारणालाई त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

च) आर्थिक

सुधा त्रिपाठीको अमर सिर्जना निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका 'अमर कविता', 'पुरानो घाउ र नयाँ वेदना', 'क्याक्टस, रेविजग्रस्त प्रजातन्त्र र महाभीर' आदि निबन्धहरूमा आर्थिक विषयवस्तु आएको देखिन्छ :

नेपालीका जीवनमा जतासुकै जहिलेसुकै पहिरो लडेको लडेकै छ । कसले सक्ला र यी पहिराहरू पन्छाएर जीवनको बाटो खोल्न ? कृष्ण भीरको पहिरो त के हो र ! लड्दै गर्छ, पन्छाउँदै गयो । त्यो त वर्षामा मात्र लड्ने पहिरो हो । नेपालीका जीवनमा त हिउँद वर्षा जहिलेसुकै पहिरो लडेको लडै छ (पृ. ४४) ।

यहाँ बाँच्नका लागि सधैं सङ्घर्षमा जुटिरहेका नेपालीहरूका अभाव र सङ्कटलाई आत्मसात् गर्दै सहानुभूति प्रकट गर्न पुगेकी त्रिपाठीले कृष्ण भीरको प्राकृतिक प्रकोपलाई उल्लेख गर्दै यसभन्दा डरलाग्दो र दुःखद् पहिरोका रूपमा आम नेपाली जनजीवनको आर्थिक समस्या रहेको कुरा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

छ) साहित्यिक

प्रस्तुत सङ्ग्रहभित्र रहेका 'अमर सिर्जना', 'भाले खन्यु र महापुरस्कार', 'क्याक्टस, रेविजग्रस्त प्रजातन्त्र र महाभीर' शीर्षकका निबन्धहरूमा साहित्यिक विषयवस्तुको प्रस्तुति भएको छ । यस सन्दर्भमा त्रिपाठी लेखिन्छन् :

मेरा माया पाउनेमा मेरा सन्तानको र लेखनको सेखासेख पर्छ । कहिले नानीहरू भोकाइरहेका हुन्छन् तर मचाहिं लेखिराखेकी हुन्छु । कहिले मनमस्तिष्कमा लेखनका सामग्रीहरू अटेसमटेस भएर पड्किन खोजिराखेका हुन्छन् म ज्वरग्रस्त सन्तानका निधारमा पानीपट्टी लगाइ राखेकी हुन्छु । सन्तानलाई समय दिइराखेका बेला लेखनको माया र निरासो लाग्छ, लेखनलाई समय दिइराखेका बेला सन्तानको माया र निरासो लाग्छ (पृ. २७/२८) ।

यहाँ निबन्धकार सुधा त्रिपाठी स्वयंका अभिव्यक्ति प्रस्तुत भए पनि उनले नारी लेखकले भेल्नुपर्ने सामाजिक र पारिवारिक बाध्यतालाई सामान्यीकरण गरेर समग्र नारी साहित्यकारका समस्यालाई प्रस्तुत गरेकी छन् । आफ्ना सन्तानलाई जत्तिकै लेखनलाई पनि माया गर्ने त्रिपाठी दुवैलाई बराबर समय दिन चाहन्छिन् तर उनलाई आफूले चाहेजस्तो पर्याप्त समय प्राप्त छैन । साहित्य सिर्जना भनेको फुर्सदको समयमा अर्थात् जुनबेला भन्यो त्यही बेला लेख्न नसकिने कुरा भएकाले पनि यो समस्या देखिएको छ । अझ उनी पितृसत्तात्मक समाजकी नारी लेखक भएका नाताले गृहस्थीको सम्पूर्ण कार्यभार सम्हाल्नु पर्ने अवस्था रहेको छ । त्यसकारण पनि उनी स्वतन्त्र भएर आफूले चाहेका बेलामा आफ्नो लेखन कार्य पुरा गर्न नसकेको चिन्ता व्यक्त गरेकी छन् । उनका मनभित्र अटेसमटेस भएर भावहरू तरङ्गित हुँदा ज्वरग्रस्त सन्तानका निधारमा पानीपट्टी लगाइरहनु पर्ने विवशता सिर्जना भएको कुरा प्रस्तुत गरेकी छन् । साहित्यलाई बिर्सेर घर परिवारलाई खुसी पार्नु भन्दा साहित्य लेखनको माया र निरासो लाग्छ, घरपरिवारलाई भुलेर साहित्य साधनामा समय व्यतित गरौं भने घरपरिवारको माया र निरासो लाग्छ, भन्ने भाव प्रस्तुत गर्दै कुनै पनि पक्षलाई आफ्नो जीवनबाट अलग पार्न नसक्ने चिन्तन समेत त्रिपाठीको रहेको देखिन्छ ।

ज) देशभक्ति

राष्ट्रिय प्रेम, देशभक्तिपूर्ण भाव समेटिएका विषयवस्तु पनि यस सङ्ग्रहभित्रका 'अमर कविता', 'भाले खन्यु र महापुरस्कार', 'बुद्ध लजाएको दिन', 'क्याक्टस रेविजग्रस्त प्रजातन्त्र र महाभीर', 'मिथक भइछु म त', 'एक मुट्टी माटो चोरेर भाग्नेलाई', निबन्धहरूमा आएको देखिन्छ :

एउटा गरिब मुलुकले कति गरेर शिक्षित जनशक्ति तयार गर्छ तर गोडा लागेपछि त्यो भने स्वदेशको नागरिकता नै त्यागेर हिँड्छ भने यस देशको उन्नति कहिले होला ? अलि पहिले शिक्षित युवाहरू राजधानी भित्रिएपछि गाउँ फर्कदैन थिए र गाउँ टुहुरो हुन्थ्यो । अहिले त्यसरी नै सिङ्गै देश टुहुरो हुन थालेको छ । त्यसरी जानेको स्वाभिमानको स्थिति के होला ? (पृ. ७४) ।

यहाँ एउटा गरिब मुलुकका शिक्षित जनशक्ति जो गोडा नलाग्नुजेल आफ्नै देशमा लुटुपुटु गरी दुःख दिने र गोडा लागेपछि आफ्नो देशमा बस्नु त परै जाओस् आफ्नो देशको नागरिकता समेत त्यागेर विदेशिने निष्ठुर नेपालीहरूको यथार्थताप्रति निबन्धकार त्रिपाठीले चिन्ता व्यक्त गरेकी छन् । वास्तवमा शिक्षा आर्जन गरी आफू सक्षम भएपछि आफ्नै देशको माटोमा मिहिनेत र परिश्रम गरी पसिना बगाउनु पर्ने जनशक्तिले चटकक मातृभूमिलाई छोडेर विदेशिदा देशको अवस्था के होला

? देश कसरी उन्नतिपथमा लम्किन सक्छ ? विकासका पूर्वाधारहरू कसरी खडा हुन सक्छन् ? र नेपाली हुनुको स्वाभिमानले समेत विदेसिनेलाई धिक्काउँछ भन्ने भाव प्रस्तुत गरेकी छन् ।

यसरी त्रिपाठीको 'अमर सिर्जना' निबन्ध सङ्ग्रहमा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, दार्शनिक, ऐतिहासिकका साथै देशभक्तिपूर्ण भावले भरिएका विषयवस्तुहरू समेत समेटिएको पाइन्छ ।

५.१.४.२ भाषा

सुधा त्रिपाठीको अमर सिर्जना निबन्ध सङ्ग्रहमा सरल, सहज र प्राञ्जल भाषाको प्रयोग भएको पाइन्छ । उनका निबन्ध सङ्ग्रहमा तरुल, भ्याकुर, साग, सिस्नुजस्ता मौलिक शब्दका साथै रिक्सा, शल्यक्रिया, डाक्टर, बोर्डिङ, स्ट्रेचर, सिस्टर आदि आगन्तुक शब्दको पनि प्रयोग भएको देख्न सकिन्छ ।

उक्त सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा यही अतृप्तिको नाम नै जीवन रहेछ सायद ! (पृ. २८), समयको एउटा लामो अन्तरालरूपी जङ्गल फाँडेर म यात्रारत बनेकी छु यसपटक (पृ. ४४) जस्ता विचलनयुक्त भाषाको प्रयोग भएको देख्न सकिन्छ । म काठमाडौँबाट पहिरो लडेको राजनीतिक आस्था र पहिरोमुनि चेपिएको मानवीय संवेदना र जीविकाको पहिरोले थिचिएको उकुसमुकुसिएको लेखकीय स्वप्न र चाहनालाई बोकेर स्थान परिवर्तनले मलमपट्टि गर्छ कि ... (पृ. ४४) । निबन्धभित्र मानवीकरण भएका प्रशस्त वाक्य गठनले पनि भाषामा आलङ्कारिकता थपेको पाइन्छ ।

त्यसै गरी 'जानु नपर्ने गाउँको सोध्नु नपर्ने बाटो', (पृ. ३७) र 'जहाँ जाऊ आरी कर्कलाको घारी' (पृ. ४४) जस्ता उखान टुक्काको प्रयोग भएका कारण निबन्धहरूको भाषिक प्रस्तुतिमा सहजता र स्वाभाविकता भेट्न सकिन्छ ।

प्रस्तुत सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमध्ये 'एक मुठी माटो चोरेर भाग्नेलाई' निबन्धभित्र—

रोदीको मादल होइन यो देश, बजुन्जेल बजायो, बज्ज छाडेपछि फालिदियो गर्नलाई,
मदारीको बाँदर होइन यो देश, नाचन सक्नुजेल नचायो, नसकेपछि स्यालको आहारा बन्न
छाडिदिनलाई । वरु मदारीले बाँदरको माया गर्ला तर ... आदिजस्ता काव्यात्मक गद्य भाषाको

प्रयोगले भाषिक प्रस्तुतिमा सौन्दर्य बढाएको पाइन्छ । निबन्धमा नाटकीय संवादात्मक भाषाको प्रयोग पनि भएको देखिन्छ । जस्तो :

म सोध्छु, पढेर तिमी के बन्ध्यौ छोरी ? उसको स्पष्ट उत्तर आउँछ, डाक्टर बन्नु । म जिस्कन्छु फेरि, डाक्टर बनेर के गछ्यौं नि ? उसले सहज भावले जवाफ दिन्छे, धेरै पैसा कमाउँछु र झोलाभरि चकलेट किन्छु (पृ. १६) ।

त्यसैगरी यस निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा कानन पुत्रपुत्री, विलोचन पुत्र, दुर्योधन, कौरव पाण्डव, अन्धो धृतराष्ट्र, प्रमिथस आदि ऐतिहासिक र पौराणिक मिथकीय विम्बहरूको प्रयोग पनि प्रशस्तै भेट्न सकिन्छ ।

यसरी अमर सिर्जना निबन्ध सङ्ग्रहभित्रको भाषामा सहजता र सरलता भेट्न सकिन्छ । छोटोछोटा वाक्य गठन र प्रशस्त उखान टुक्काको प्रयोगबाट भाषामा मौलिकता र स्वाभाविकता प्राप्त गर्न सकिन्छ । ठाउँ ठाउँमा प्रयोग भएका व्याख्यात्मक भाषा, भाषिक विचलन, प्रकृतिको मानवीकरण एवं पाशवीकरणयुक्त भाषा प्रयोगका कारण निबन्धगत भाषामा भाषिक सौन्दर्य र आलङ्कारिकता भेट्न सकिन्छ । यो नै अमर सिर्जना निबन्ध सङ्ग्रहको प्रमुख भाषिक विशेषता हो । यसरी यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा प्रकृति, जीवन र इतिहासबाट विभिन्न विम्ब, प्रतीकहरूको प्रयोगले भाषामा कलात्मकता थपिएको पाइन्छ ।

५.१.४.३ शैली शिल्प

सुधा त्रिपाठीको अमर सिर्जना निबन्ध सङ्ग्रह निजात्मक यात्रागत-स्मृतिगत सौन्दर्य प्रस्तुत भएको महत्त्वपूर्ण निबन्ध सङ्ग्रह हो । यस सङ्ग्रहभित्र सङ्गृहीत निबन्धहरूमा आत्मगत भाव गाम्भीर्य र वैचारिक चिन्तनको बेजोड प्रस्तुति पाइन्छ । स्वयं निबन्धकार त्रिपाठीले देखेका, सुनेका, अनुभव गरेका घटनासँग सम्बन्धित विषयवस्तु भएकाले पनि यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा त्रिपाठीको निजीपन भेट्न सकिन्छ । यही निजीपनबाट सिर्जना हुन पुगेको यस सङ्ग्रहलाई निजात्मक/आत्मपरक गद्य शैलीमा लेखिएको उत्कृष्ट निबन्ध सङ्ग्रहका रूपमा लिन सकिन्छ । म, हामीजस्ता प्रथम पुरुषवाची सर्वनामको प्रयोग गरिएको यस सङ्ग्रहका निबन्धहरूको भाषामा भाषिक विचलनयुक्त आलङ्कारिक शैलीको प्रयोग गरिएको छ, जसका कारण भाषिक शैलीशिल्प अत्यधिक प्रभावकारी बन्न पुगेको पाइन्छ । जस्तै :

आफ्नो धर्तीलाई उसको सुवासैले चिन्छु म । आज यस धर्तीबाट त अर्कै अपरिचित गन्ध पो आइरहेछ; खोई मेरो सुवास ? खोई त्यो आकाश ? खोई मेरो धर्ती ? ए काननपुत्रपुत्रीहरू हो ! कहाँ हाल्यौ, कहाँ फाल्यौ तिमीहरूले सगरमाथाको त्यस देशलाई ? सगरमाथाको त्यस उचाइलाई ? (पृ. १३) ।

उक्त निबन्ध सङ्ग्रहभित्रका भाषामा मानवीकरणको प्रयोग पनि भेट्न सकिन्छ । जस्तै :
पराईपराई जस्तो लाग्न थालिसकेको यसै धर्तीमा मैले अब अलिकति उज्यालाको खेती सुरु गर्नु छ, एक अँगालो दियालो एकैचोटि बालेर यस धर्तीभरिको दुर्गन्ध सफा गर्नु छ, यो अस्तव्यस्त आकाशलाई व्यवस्थित गर्नु छ (पृ. १४) ।

काव्यात्मक गद्य शैलीको प्रबलता देखिने हुनाले यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूको भाषा लालित्यपूर्ण बन्न पुगेको देखिन्छ । जस्तै :

न त भोकमा एक पोल्टो भुटेको मकै हुन सक्ने, न त प्यासमा एक अँजुली चिसो पानी नै हुन सक्ने, न त जाडोमा एक आड उपर्ना नै हुन सक्ने, न त बिरामी हुँदा एक पसर औषधि नै बन्न सक्ने (पृ. २७) ।

भोलामा खाजा सामल बोकेर तिन दिनको पैदल बाटो हिँडेर काठमाडौँबाट दसैंमा सुनखानी गएको सम्झन्छु (पृ. ७६) जस्ता अतीतको स्मरण गरी कथ्यलाई मूर्त बनाउँदा आत्मसंस्मरणात्मक शैलीको प्रयोग भएको देखिन्छ । प्राकृतिक सौन्दर्यको वर्णन गर्दा वर्णनात्मक शैलीको प्रयोग भएको पाइन्छ । जस्तो :

गौरी शङ्करको सूर्योदय, शैलुङको सूर्यास्त, हनुमन्ते डाँडामा बिस्तारै ओर्लने साँभ, मानेभट्टेली डाँडाको बिहानको मिरमिरे उज्यालो, मानिसहरूको कालीनागस्थानको बाक्लो चल्मलाहट (पृ. ७०) ।

व्यङ्ग्यात्मक शैलीको उदाहरण यस प्रकारको छ :

नजिस्क्याए ड्राइभरले खाल्डामा हाल्दै, नजिस्क्याए विषालु जीवले टोक्दै, नजिस्क्याए बाँदरले पनि चिथोर्दै, नजिस्क्याए प्रकृतिले पनि पहिरो लडाउँदै तर देशको चालकमा यो गुण भेटिँदैन । उसलाई त देशरूपी बस र जनतारूपी यात्रुलाई खाल्डामा हाल्न जिस्क्याइरहनु पर्दैन (पृ. ४५) ।

यसरी सरल सहज र आत्मपरक शैलीमा प्रस्तुत भएको यस निबन्ध सङ्ग्रहमा देखिएको भाषिक विचलन, मानवीकरण, ठाउँठाउँमा आएका मौलिक उखान टुक्का, काव्यात्मक सौन्दर्यले भरिएका छोटोछोटा वाक्य गठनका साथै प्रकृतिका प्रशस्त विम्ब र प्रतीकको प्रयोगबाट आलङ्कारिक शैलीको निर्माण भएको देखिन्छ । त्यस्तै यस सङ्ग्रहमा देखा परेका संवादात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली र व्यङ्ग्यात्मक शैलीको विशिष्टता पनि यस सङ्ग्रहमा प्राप्त गर्न सकिन्छ ।

५.१.४.४ सन्देश

अमर सिर्जना निबन्ध सङ्ग्रह मार्क्सवादी नारीवादी र प्रगतिवादको वैचारिक पक्षधरता लिएर देखा परेको महत्त्वपूर्ण निबन्ध सङ्ग्रह हो । यसमा भावुकता र मानवीय करुणा एवं नारी संवेदनशीलतालाई विशेष जोड दिँदै आफ्ना विचार र भावनालाई समसामयिक सन्दर्भबाट प्रस्तुत गर्नु निबन्धकार त्रिपाठीको निबन्धगत प्रवृत्ति रहेको पाइन्छ । पितृसत्तात्मक समाजले नारीमाथि गरेको अन्याय, अत्याचार र त्यसबाट प्राप्त पीडानुभूति यस निबन्ध सङ्ग्रहभित्र देखा परेका छन् । नारीको न्यून मूल्याङ्कन गर्ने पितृसत्तात्मक समाजको आलोचना गर्न पुगेकी त्रिपाठीले समानता र सम्मानमा आधारित समाज व्यवस्थाको वकालत गर्दै नारीहरूको उचित र उच्च मूल्याङ्कन हुनुपर्ने कुरामा विशेष जोड दिएकी छन् ।

उक्त निबन्ध सङ्ग्रहभित्र समाजमा विद्यमान र विस्तारित वर्गीय असमानता, लिङ्गीय विभेद र अन्य शोषणका विरुद्ध विद्रोह, असन्तुष्टि र असहमति जनाउँदै यथास्थितिबाट समाजलाई प्रगतिवादी दिशातर्फ मोड्नु पर्ने सन्देश अमर सिर्जना निबन्ध सङ्ग्रहका माध्यमबाट गरिएको छ । यसरी देशप्रेम, राष्ट्रियता, जातीय स्वाभिमान, समानुपातिक अवसर र न्यायपूर्ण जीवनको कामना गर्दै मातृशक्तिबाट नै मानव इतिहास सिर्जना हुन्छ, सिर्जनशक्ति नारीलाई नै मानव सृष्टिको मूल आधार मान्न सकिन्छ भन्ने चिन्तन बोकेका निबन्धहरूले प्रकृति, जीवन र कर्तव्यको प्रस्तुति दिएका छन् । संसारको सर्वोत्कृष्ट काव्य सिर्जना गर्ने मान्छे हो, केवल मान्छे हो भनेर मानव जातिलाई उपस्थित गराएकी त्रिपाठीले मान्छेका सकारात्मक र नकारात्मक दुवै पक्षलाई यस सङ्ग्रहमा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

५.१.५ 'चेलीबेटीका बेग्लै कुरा' निबन्ध सङ्ग्रहको विश्लेषण

चेलीबेटीका बेग्लै कुरा सुधा त्रिपाठीका निबन्ध यात्राको पाँचौं कृति हो । नेपाली समाजका रूपमा रहेको लैङ्गिक विभेदलाई मूल समस्या बनाएर लेखिएका यस सङ्ग्रहका निबन्धहरू

समसामयिक विषयमा आधारित छन् । यस सङ्ग्रहका निबन्धहरू मूलतः महिला र राजनीति, महिला उत्पीडनका सामाजिक सांस्कृतिक सन्दर्भ, पितृसत्ता र महिला तथा महिलाका समस्यासँग सम्बन्धित छन् । वि.सं. २०५४ सालदेखि २०६८ सालसम्म विभिन्न पत्र पत्रिकामा प्रकाशित २६ वटा निबन्धहरूलाई एकत्र गरी प्रस्तुत सङ्ग्रहको प्रकाशन भएको छ ।

प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहका 'राजनीतिक चेपागाँडाहरू', 'राजनीतिका लागि महिला कि महिलाका लागि राजनीति?', 'प्रजातन्त्रको मुखण्डो र महिला विधेयक', 'विकासमा महिला सहभागिता', 'वार्ताटोली र महिला प्रतिनिधित्व', 'शान्ता दिदी पनि कम्युनिस्ट?', 'संविधान सभा र महिला' जस्ता निबन्धहरू महिला र राजनीति विषयक छन् । 'लैङ्गिक असमानताको पर्व तीज', 'तीजको अर्थ र महिला मुक्ति', 'दसैं महिलाको रमाइलो होइन', 'यस्तो असहिष्णुता कहिलेसम्म?', 'महिला र धर्म भीरुता', 'श्रीमान्/श्रीमती/सुश्री', 'तीज : पितृसत्ताको औपनिवेशिकता', 'सन्दर्भ तीजको : दृष्टिकोण वर्तमानको', 'महिलाको घाटाको चाड दसैं' जस्ता निबन्धहरू सामाजिक सांस्कृतिक सन्दर्भका कारण महिलाले भोगनुपर्ने उत्पीडन र विभेदका विषयमा आधारित छन् । 'यस्तो असहिष्णुता कहिलेसम्म?', 'सतीत्वको ठेकेदारी र श्रीषा', 'सौन्दर्य प्रतियोगितामा झल्किएको विराट कुरूपता', 'पुरुषलाई माया देशको छ कि पितृसत्ताको?' जस्ता निबन्धहरूले नेपाली समाजमा विद्यमान पितृसत्ताका कारण महिलामाथि भएको हिंसा र अधीनताको चित्रण गरेका छन् ।

'सोभा नारीका बाङ्गा कविता' र 'बहसोन्मुख बन्दैछ नेपाली नारीवाद' तथा 'निम्न मध्यम वर्गीय शिक्षित कामकाजी महिलाका चुनौती र हाँकहरू' निबन्धमा साहित्य र नारी चिन्तनका सन्दर्भ प्रस्तुत भएका छन् । 'त्रुटिपूर्ण विज्ञापनको त्रुटिपूर्ण प्रशंसा' मा नेपाली विज्ञापनको भाषाको सन्दर्भ उठाइएको छ । 'श्लील नग्नताका पक्षमा' निबन्धमा नग्नता र यसका सीमाका बारेमा चर्चा गरिएको छ । यस बाहेक अन्य छवटा निबन्ध पनि महिला समस्याकै केन्द्रमा प्रस्तुत भएका छन् ।

सुधा त्रिपाठीको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धहरू पत्र पत्रिकामा प्रकाशित निबन्धहरू हुन् । समसामयिक विषयलाई टिपेर लेखिएका यी निबन्धहरूमा समसामयिक सन्दर्भ प्रस्तुत भए पनि यिनको महत्त्व समसामयिकतामा मात्र सीमित छैन । २०४७ सालको राजनीतिक परिवर्तन र त्यस परिवर्तनबाट पनि प्राप्त हुन नसकेको नारी समानताका सन्दर्भमा यी निबन्ध नेपाली समाजको लैङ्गिक विभेद, उत्पीडन र राजनीतिमा महिलामाथि भएको अवमूल्यन तथा सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टिले महिलामाथि हुने विभेद, महिला हिंसा र अधीनता तथा पितृसत्ताका कारण महिला र पुरुषका बारेको असमान धारणाको उद्घाटन गर्न सफल देखिन्छन् ।

त्रिपाठीले यस सङ्ग्रहका माध्यमबाट राजनीति नै महिला मुक्ति र स्वतन्त्रताको केन्द्रीय विषय भएको सत्य प्रस्तुत गरेकी छन् । राजनीति र सत्ताकै कारण मूलतः महिलाहरू पछि पारिएका र त्यसकै कारण पितृसत्ता प्रबल बन्दै समाजमा महिला हिंसा, आपराधीकरण, अधीनता र उत्पीडन बढ्दै गएको कुरालाई उनले यस सङ्ग्रहका निबन्धमा प्रस्तुत गरेकी छन् । राजनीतिक पार्टी र तिनका भ्रातृ सङ्गठनमा महिलामाथि हुने विभेद, नारी अधिकारका लागि महिलाले गर्नुपर्ने सङ्घर्ष तथा नारी पक्षीय विचारधाराको निर्माणका लागि त्रिपाठी सचेत छन् र उनले यस सङ्ग्रहका निबन्धमा त्यही विचारधारालाई प्रस्तुत गरेकी छन् । नारी मुक्तिका लागि नारी स्वयम् अधि बढ्नु पर्ने सन्देश प्रस्तुत गरेकी त्रिपाठी यस सङ्ग्रहका निबन्धमा स्वाभिमानी नारीका रूपमा उभिँदै पितृसत्ताका त्रुटिपूर्ण सम्बन्धप्रति कटाक्ष गर्न र नारी पक्षीय चेतनाको निर्माण गर्न सफल देखिएकी छन् ।

५.१.६ निष्कर्ष

यसरी २०३४ सालबाट निबन्ध विधामा कलम चलाइरहेकी त्रिपाठीका पाँचवटा निबन्ध सङ्ग्रह प्रकाशित भइसकेका छन् । सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, साहित्यिक विषयवस्तुलाई आफ्ना निबन्धगत विषयवस्तु बनाउन पुगेकी त्रिपाठीले **बादल, धर्ती र आस्थाहरू** निबन्ध सङ्ग्रहमा विशेष गरी प्राकृतिक विषयवस्तुलाई यात्रा संस्मरणात्मक रूपमा प्रस्तुत गरेकी छन् । प्रकृतिलाई नै मुख्य विषयवस्तु बनाएको **जीवनसूत्र र स्वप्नाभास** निबन्ध सङ्ग्रहमा साहित्यिक स्रष्टाहरूमा सम्झना र श्रद्धाभाव लगायत बालमनोविज्ञानलाई पनि निबन्धको विषयवस्तु बनाएकी छन् । व्यङ्ग्यात्मक रूपबाट देशमा विद्यमान राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक विषयवस्तु प्रस्तुत गरिएको पहिलो व्यङ्ग्य निबन्धका रूपमा **सुट, टाई र सुँगुर** निबन्ध सङ्ग्रह प्रस्तुत भएको छ । **चेलीबेटीका बेग्लै कुरा** नारीवादी दृष्टिकोणबाट प्रस्तुत भएको निबन्ध सङ्ग्रहमा त्रिपाठीले पितृसत्तात्मक समाजमा विद्यमान धार्मिक परम्परा र सांस्कृतिक मूल्यमान्यताले नारीप्रति गरेको अन्याय र अत्याचारलाई प्रस्तुत गर्दै यसप्रति नारीहरूलाई सचेत रहन समेत आग्रह गरेकी छन् ।

अमर सिर्जना निबन्ध सङ्ग्रहमा पितृसत्तात्मक समाजको विरोध गर्दै नारी अस्तित्व र समानताको खोजी गर्नु, सामाजिक परिवर्तनको चाहना राख्नु, समाजमा विद्यमान विस्तारित वर्गीय असमानता, लिङ्गीय विभेद र अन्य शोषणका विरुद्ध विद्रोह, असन्तुष्टि र असहमति जनाउँदै

यथास्थितिबाट समाजलाई प्रगतिवादतर्फ मोड्नु र मातृत्वको उच्च मूल्यलाई स्थापित गर्नु उनका निबन्धगत वैशिष्ट्य हुन् ।

५.२ सुधा त्रिपाठीका समालोचनाहरूको विश्लेषण

५.२.१ 'दृष्टिचौतारी' समालोचनाको विश्लेषण

सुधा त्रिपाठीका प्रकाशित कृतिमध्ये **दृष्टिचौतारी** समालोचना चौथो कृतिका रूपमा रहेको छ, भने पहिलो समालोचनात्मक ग्रन्थका रूपमा प्रकाशित यस कृतिको छुट्टै ऐतिहासिक मूल्य रहेको देखिन्छ । वि.सं. २०५८ मा साभा प्रकाशनबाट प्रकाशित यस सङ्ग्रहभित्र सत्रवटा छुट्टाछुट्टै शीर्षकका समालोचनात्मक लेखहरू सङ्गृहीत छन् । २०३९ देखि २०५८ सालसम्म लगभग २० वर्षको लामो समयावधिमा लेखिएका यस सङ्ग्रहभित्रका लेखहरू 'उन्नयन', 'अस्मिता', 'प्रलेस', 'मिमिरे' र 'मधुपर्क' आदि विभिन्न पत्रिकामा प्रकाशित भएका छन् ।

'उन्नयन' पत्रिकाका छुट्टाछुट्टै अङ्कमा प्रकाशित विभिन्न लेखहरूमा "व्यञ्जनावृत्तिका सन्दर्भमा भूपिको 'हामी' कविता" (अङ्क ४, २०४६), "कथाकार भवानी भिक्षु र उनका नारीपात्र" (अङ्क १०, २०४९), "चारित्रिक कसीमा एकादेशकी महारानी" (अङ्क १३, २०५०), "दीक्षितको जेण्डा र जेण्डाको सारङ्गी" (अङ्क १६, २०५१) रहेका छन् । 'अस्मिता' पत्रिकाका विभिन्न अङ्कमा प्रकाशित लेखहरूमा "नेपाली साहित्याकासमा नारी" (अङ्क १९, २०५०), "भानुभक्तको नारीविद्वेष" (अङ्क २५, २०५१), "नेपाली साहित्यमा नारीको अधकल्चो छवि" (२०५१, साउन) रहेका छन् । त्यसैगरी "पहलमान सिंहको साहित्यिक व्यक्तित्व र देन", (पहलमान सिंह स्वार स्मृति ग्रन्थ : २०३९), रेडियो नेपालबाट प्रसारित "उच्छ्वासका घेराभित्रका कवि एवं निबन्धकार कृष्ण प्रसाद काफ्ले", 'रत्नश्री' पत्रिकामा प्रकाशित "समका कठपुतली नायिकाहरू", प्रलेस (अङ्क ५, २०५३ साल) मा प्रकाशित "बेलायत यात्रा: निबन्धमा थप पाइलो", (नेपाली साहित्य बाटिका २०५२) सालमा " 'माग्नेको गीत' भित्र समयको पीडा", 'मिमिरे' पत्रिका (पूर्णाङ्क १२२, २०५२) मा "बहुलाकाजी साँच्चै बहुला हो त ?" 'मधुपर्क' पत्रिका र नारी साहित्य प्रतिष्ठानद्वारा आयोजित गोष्ठीमा प्रस्तुत कार्यपत्र (२०५७, वैशाख ३०) "महिला कथाकार र महिला" रहेका छन् । "नाटककार तिवारी र उनका नारी पात्र" शीर्षकको समालोचना यस सङ्ग्रहमा मात्र सङ्कलित रहेका छन् ।

यसरी विभिन्न समय र पत्रपत्रिकामा प्रकाशित समालोचनात्मक लेखहरूलाई समेटी यस समालोचनात्मक सङ्ग्रहको विश्लेषण गर्ने क्रममा प्रत्येक शीर्षकभित्र रहेर सामान्य चर्चा मात्र गरिएको छ ।

सुधा त्रिपाठीको **दृष्टिचौतारी** समालोचनाभित्र पहिलो शीर्षकका रूपमा रहेको “पहलमान सिंहको साहित्यिक व्यक्तित्व र देन” जीवनीपरक समालोचना पद्धतिमा आधारित समालोचनात्मक लेख हो । यस समालोचनाभित्र त्रिपाठीले पहलमान सिंहको जीवनी र व्यक्तित्वमा आधारित सामाजिक, साहित्यिक र आध्यात्मिक पक्षको चर्चा नगरेसम्म उनको साहित्यिक पक्ष अधुरै रहने विचार प्रस्तुत गर्दै सिंहको अद्वितीय देनका रूपमा **अटल बहादुर** नाटक प्रकाशनमा आएको र यस नाट्यकृतिमा सामान्य प्रभाव सेक्सपियरको **ह्याम्लेट**को भए तापनि बन्धनमा पूरै मौलिक थियो भन्ने धारणा राखी उनलाई आधुनिक कालका नाट्य प्रवर्तकका रूपमा लिन सकिने दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् ।

समाजमा नारीको महत्त्व बुझेका स्वर आदर्शवादी, समाज सुधारक एवं आध्यात्मिक साहित्यकारका रूपमा रहेको प्रस्ट पाउँदा त्रिपाठीले धेरै समय मातृभूमिबाट विमुख हुन पुगेका पहलमान सिंह नाम अनुसारको काम गर्ने सफल व्यक्तित्वका साथै देशप्रेमी, राष्ट्रप्रेमी कविका रूपमा समेत उनलाई चिनाएकी छन् । यसका साथै स्वरले यस्ता देन नेपाली समाज र साहित्यलाई दिए र त्यो कीर्तिस्तम्भ खडा गरेर गए जसलाई कुनै स्थान र कुनै कालको आन्दोलनले समेत खतम गर्न सक्तैन (त्रिपाठी, २०५८ : ८) भन्ने दृष्टिकोण त्रिपाठीले यस जीवनीपरक समालोचनामा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्यसैगरी त्रिपाठीको “व्यञ्जनावृत्तिका सन्दर्भमा भूपिका ‘हामी’ कवितामा पाइने व्यङ्ग्य दृष्टि” कृतिपरक समालोचना पद्धतिमा आधारित दोस्रो समालोचना हो । यस समालोचनाभित्र व्यङ्ग्यको परम्परागत स्वरूप, व्यञ्जनाको व्युत्पत्ति र अर्थ, व्यङ्ग्यको प्रयोगको स्थिति, क्षेत्र र उद्देश्य, भूपिका कवितामा व्यङ्ग्य र निष्कर्षजस्ता शीर्षकहरू रहेका छन् । **नयाँ भ्याउरे** र **निर्भर** कविता सङ्ग्रह लेखिसकेका भूपिका **घुम्ने मेचमाथि अन्धो मान्छे** कविता सङ्ग्रह उनको कवितायात्राको महत्तम उपलब्धिका रूपमा रहेको स्विकार्दै त्रिपाठीले यस सङ्ग्रहभित्र रहेको ‘हामी’ कवितालाई समालोचनाको मुख्य विषय बनाई यस सिङ्गो कविताभित्र प्रयुक्त ‘हामी’ (विशेषतः नेपाली जनता) को भाव उजिल्याउन, ‘हामी’ को स्थिति झल्काउन र यथार्थ स्थितिको बोधका साथ तीखो व्यङ्ग्य प्रहार गर्न विविध पाँचवटा प्रतीकहरूको प्रयोग भएको विचार प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले यस कविताका छ प्रकरणमध्ये पाँच प्रकरणमा छुट्टाछुट्टै रूपक अलङ्कार आएकाेले अलङ्कार प्रयोगका दृष्टिले पनि सफल कविता मान्नुपर्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत गर्दै यसमा प्रस्तुत भएका अलङ्कारलाई व्यङ्ग्य अलङ्कारका रूपमा पनि चित्रण गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले भूपिलाई विभिन्न प्रतीकका माध्यमबाट सामाजिक बेथितिप्रति व्यङ्ग्य प्रस्तुत गर्ने कविका रूपमा चिनाउँदै भूपिका कवितामा प्रयोग भएका विभिन्न प्रतीकका माध्यमबाट 'हामी' (जनता) हरेक ठाउँमा बुद्धि र विवेकले च्युत भएका छौं, हाम्रो सम्पूर्ण जिन्दगानी अस्तित्वहीनता, क्षुद्रता, निर्जीवता, बुद्धूपना र दासत्वमै बितिरहेको छ भन्ने भाव प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै हामी केवल पानीका थोपा हौं जहाँ आफ्नो कुनै अस्तित्व छैन, हामी केवल लिलिपुटका मानव हौं जहाँ हाम्रो अस्तित्व अरूबाटै सञ्चालित भएको छ, हामी मात्र द्रोणाचार्यका चेला हौं जहाँ हामीले आफ्नै बुद्धि र विवेकबाट आफ्नो कर्तव्य पुरा गर्न सक्दैनौं र हामी मात्र पाइताला हौं जहाँ परिश्रम र मिहिनेत गछौं तर यसको मिठो फल चाख्न पाउँदैनौं भन्ने व्यङ्ग्य भाव प्रस्तुत भएको कुरा त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् ।

त्रिपाठीको "उच्छ्वासका घेराभित्रका कवि एवं निबन्धकार कृष्ण प्रसाद काफ्ले" जीवनीपरक समालोचना पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । कविता र निबन्ध विधामा कलम चलाउने साहित्यकार कृष्ण प्रसाद काफ्लेलाई समालोचक त्रिपाठीले राष्ट्रिय एवं सामाजिक परिवेशहरूमा विविध समस्याहरूसँग जुध्दै र जीवनयापनका कटु अनुभूतिहरूलाई हृदय छियाछिया हुन्जेलसम्म पनि हृदयपटमै टाँसी त्यसैबाट निस्केका उच्छ्वासहरूलाई पुस्तकाकार रूपमा पाठकसामु राख्ने एक साहित्यसेवीका (त्रिपाठी, २०५८ : ५१) रूपमा चिनाएकी छन् ।

अभावपूर्ण जिन्दगी बाँचेका साहित्यकार काफ्लेलाई जीवनका हरेक दुःख सुखबाट नै साहित्यको सिर्जना गर्ने साहित्यकारका रूपमा चिनाउँदै उनले आफूले भोगेका दुःख सुखका सबै कथा व्यथालाई आफ्ना निबन्धमा राखेको कुरा त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् र उनका कविता पढिसक्दा देशका बारेमा एकदम नै असचेत व्यक्ति पनि चिउँडामा हात राखेर विगत, वर्तमान र भविष्यत्का बारेमा सोच्न पुग्दछ (त्रिपाठी, २०५८ : २४/२५) भन्ने विचार समेत त्रिपाठीले प्रस्तुत समालोचनामा व्यक्त गरेकी छन् । यसका साथै काफ्लेमा राजनीतिक नेता बनेर देश सपार्ने लोभ नभई साहित्यिक ऋषि बनेर असात्त्विक आचरणहरूलाई औंला ठड्याउने प्यास अवश्य थियो र उनी (त्रिपाठी, २०५८ : २५) दृढ व्यक्तित्वका व्यक्ति थिए भन्ने स्पष्ट विचार त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् ।

त्यसैगरी त्रिपाठीको “समका कठपुतली नायिकाहरू” कृतिपरक पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । त्रिपाठीले नाट्य विधाका पर्यायवाचीका रूपमा देखिने समका महत्त्वपूर्ण नाटकमध्ये मुकुन्द-इन्दिरा, म, मुटुको व्यथा र अन्धवेग नाटकभित्रका प्रमुख नारी पात्र क्रमशः इन्दिरा, प्रभा, कपिला र पम्फालाई आफ्नो समालोचनाको प्रमुख विषयवस्तुका रूपमा छनोट गरेकी छन् । अन्धवेगकी पम्फा बाहेक अन्य नाटकका नारी चरित्रलाई समले यति धेरै सम्मान र आदर दिएका छन् कि उनीहरूका चारित्रिक कमजोरीलाई शालिग्रामले सुन लुकाए भैं लुकाइदिएका छन् भन्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत गर्दै त्रिपाठीले पूर्व र पश्चिम दुवै बुझेका सचेत नाटककार समले आदर्श र कर्तव्यको खोल ओढाएर अस्तित्व विहीन र कठपुतली नायिकाको प्रस्तुति गरेकाले उनका नाटक लैङ्गिक सन्दर्भमा यथास्थितिबाट माथि उठ्न नसकेको चिन्ता प्रकट गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले रिमालको **मसान** नाटककी नायिकामा देखिएको आँट र आत्मविश्वास समका नारीपात्रमा देखिने हो भने समका नाटकको मूल्य अर्कै हुने थियो भन्ने धारणा राख्दै नारी बालककालमा पिताका वशमा, यौवनकालमा पतिका वशमा र वृद्धावस्थामा पुत्रका वशमा रहनुपर्छ भन्ने पूर्वीय नीतिशास्त्रको आदर्शबाट सम अलिकति पनि विमुख हुन नसकेको दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यस्तै समको नारीपरक दृष्टिकोणको आलोचना गर्दै मुर्दा बाँचेर जोगिएको पारिवारिक विखण्डनको कुनै मूल्य हुँदैन भन्ने अभिव्यक्ति दिएकी छन् । साहित्यले एउटा व्यक्तिको सुधारसम्ममा सीमित नरही सके विश्वकै, नसके राष्ट्रको हितलाई ध्यान राख्नुपर्नेमा समका नायिकाहरूले नायकको बाहेक कसैको जीवन सपार्न नसकेको चिन्ता प्रस्तुत गर्दै यदि समका नायिकामा अस्तित्वचेत भएको भए पुरा नारीवर्गको समेत उत्थान र कल्याण हुन सक्ने थियो भन्ने दृष्टिकोण त्रिपाठीले राखेकी छन् ।

त्रिपाठीले समका नारी पात्र इन्दिरा, प्रभा, कपिला र पम्फालाई कठपुतली नायिकाका रूपमा मूल्याङ्कन गर्दै तिनमा कुनै जीवन नभएको ढलौटे मूर्तिका रूपमा चित्रण गरी सम सचेत लेखक भएर समाज सापेक्ष पात्रभन्दा पनि मानवीय अस्तित्व सचेत पात्रको सिर्जना गरी एउटा सचेत पथप्रदर्शकका रूपमा आफूलाई उभ्याउन सक्नुपर्नेमा त्यसो गर्न नसक्दा उनका नाटकको स्तर जति माथि पुग्नुपर्ने हो त्यति माथि पुग्न नसकेको दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् ।

समालोचक सुधा त्रिपाठीको “कथाकार भवानी भिक्षु र उनका नारीपात्र” कृतिपरक समालोचना पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यस समालोचनाभित्र त्रिपाठीको भवानी भिक्षुका गुणकेशरी, मैयाँसाहेब र आवर्त गरी तिनवटा कथा सङ्ग्रहलाई आफ्नो समालोचनाको विषय

बनाएकी छन् । यौनेतर मनोविश्लेषण मूल प्रवृत्ति बोकेर रतिरागकेन्द्री मनोविज्ञानलाई जीवनको अभीष्ट बनाई कथाका क्षेत्रमा अधि बढेका भिक्षु यिनै प्रवृत्तिमा रहेर आफ्ना कथामा मनस्थितिको केसाकेसालाई साह्रै सूक्ष्म रूपले केलाउँदै उनीहरूको अवस्थाप्रति सहानुभूति पोख्न पुगे पनि नारीको महिमालाई स्थापित गर्ने हेतुले भने उनले कुनै पनि कथा सिर्जना नगरेको धारणा त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

आफ्नो दाम्पत्य जीवनका सुखबाट टाढा रहेका भिक्षुको नारीकै सेरोफेरोमा रहेर नारी पात्रलाई प्रमुख भूमिकाका रूपमा आफ्ना कथामा उपस्थित गराए पनि प्रमुख पात्रले समाजमा नयाँ परिवर्तनको शङ्कघोष गर्नुपर्ने कुरा त कहाँ हो कहाँ ? उनीहरूलाई त केवल रतिरागको साधन र पुरुषकै वासनाका खेलौना मात्र बनाएका छन् । उनले नारी पात्रप्रति कुनै न्याय गर्न सकेका छैनन् र नारीहरू न्यायको अधिकारिणी हुन्छन् भन्ने कुरा समेत बुझ्न नसकेको दृष्टिकोण त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै त्रिपाठीले नारीका पक्षमा उभिएर सचेत लेखकले यदि नारीको मनोविश्लेषणात्मक कथा लेख्ने हो भने उसले रतिराग होइन नारीको स्वअस्मिता रक्षाका लागि गरिएका सङ्घर्षका कथा लेख्नुपर्छ (त्रिपाठी, २०५८ : ४२) भन्ने सन्देश समेत प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीको “नेपाली साहित्यकाशमा नारी” ऐतिहासिक पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यस समालोचनामा त्रिपाठीले नेपाली साहित्यका क्षेत्रमा देखा परेका कविता, कथा, उपन्यास, नाटक/एकाङ्की, निबन्ध/नियात्रा र समालोचनाजस्ता विभिन्न विधा समेटि प्रत्येक विधाको पृष्ठभूमि कालदेखि आजको वर्तमान समयसम्मको अवधिभित्र देखा परेका नारी स्रष्टाहरूको योगदान र उपलब्धिलाई समावेश गरेकी छन् ।

त्रिपाठीको विधागत पृथकताका आधारमा नारी स्रष्टा खोजविन गर्दा सबैभन्दा उर्वर विधा कविता, त्यसपछि कथा र केही आशाप्रद भविष्य उपन्यास विधाले बोकेको तथ्य अधि सादै नाटक, निबन्ध र समालोचना विधामा नारी हस्ताक्षरको उपस्थिति शून्यप्रायः रहेको बताएकी छन् । त्रिपाठीले समग्र साहित्ययात्रामा पारिजातलाई नै नारी स्रष्टाहरूको शिरोमणिका रूपमा मूल्याङ्कन गर्दै मदन पुरस्कार प्राप्त गरेर उनले जुन गौरव नारी स्रष्टालाई प्रदान गरेकी छन् त्यसलाई कहिल्यै भुल्न नसकिने विचार समेत प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै पुरुषका तुलनामा नारी लेखक न्यून रहनुमा पितृसत्तात्मक समाजमा विद्यमान सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक, आर्थिक क्रियाकलापमा ऊ पराधीन रहनुलाई नै मूल कारण ठानेकी छन् । पुरुष जति स्वतन्त्र छन् त्यति स्वतन्त्रता महिलाले पाएका छैनन् । उनीहरूले पनि समान अवसर पाएमा जुनसुकै क्षेत्रमा पनि

अगाडि बढ्न सक्नेछन् र मात्रै पुरुष बराबर उनीहरूको तुलना गर्न सम्भव छ, नत्र भने पुरुषका तुलनामा महिलाको तुलना गर्न उचित नहुने धारणा समेत त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको “बेलायत यात्रा : निबन्धमा थप पाइलो” शीर्षकको समालोचना कृतिपरक पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यस समालोचनामा त्रिपाठीले सुनील पौड्यालको **बेलायत यात्रा : कल्पना र यथार्थ** यात्रा संस्मरणात्मक निबन्धलाई आफ्नो समालोचनाको केन्द्रबिन्दुमा राखेर चर्चा गर्ने क्रममा यात्रा त जीवनमा सबैले गरेकै हुन्छन् तर त्यस यात्रालाई सार्वजनिक बनाउने र जीवन्त राख्ने काम भने थोरैबाट मात्र भएको पाइने धारणा राख्दै एउटै यात्रालाई दुईजना लेखकले आफ्ना लेखनमा उतार्दा ती दुवै लेखन प्रस्तुतीकरणका भिन्नताले पृथक् महत्त्वका सावित हुन पुग्दछन् भन्ने दृष्टिकोण राखेकी छन् ।

वैज्ञानिक उन्नति र प्रगतिमा बेलायत धेरै अघि बढे पनि, टाढा बसेर हेर्दा जति सुन्दर र सम्पन्न भएको कल्पना गरे पनि यथार्थतामा हेर्दा त्यहाँको वास्तविकता अलि अर्कै भएको उल्लेख गर्दै त्यहाँ बसोबास गर्ने मानव जीवनका अनेक कुरूपता, कुण्ठा, नैराश्य र पीडाका भावहरू सुनीलका आँखाबाट छिप्न नसकेको यथार्थलाई त्रिपाठीले यस समालोचनामा प्रस्तुत गरेकी छन् । निबन्धकार सुनील बेलायत बस्दा आफ्नो देश र आफन्त मात्र सम्झिएका छैनन्, उनले त्यहाँको सामाजिक परिवेश, बेलायतले गरेको उन्नतिको चरम विकासभित्र यत्र भैं सञ्चालित मानव जीवन, नारी अस्मितामाथि खेलवाड र त्यसले समाजमा ल्याएको विकराल रूपलाई प्रस्तुत गरेका छन् भन्दै हरेक मान्छेले जति नै उन्नति र प्रगति गरे पनि, देश जति नै सम्पन्न र विकसित भए पनि त्यहाँका जनताले जीवनको अन्तिम अवस्थामा मानवीय संवेदनाले भरिएको मिठो बोली, आफन्तको माया र आत्मीयताको आवश्यक भएको महसुस गरे पनि उनीहरू बिल्कुलै त्यसबाट धेरै टाढा रहेको र त्यसै पीडामा आहत बनेका वास्तविक जीवनलाई निबन्धकारले उपन्यासको काल्पनिक पात्रका रूपमा मूल्याङ्कन गरेको कुरा त्रिपाठीले यस समालोचनामा प्रस्तुत गरेकी छन् । साथै सुनीलको प्रस्तुत यात्रा संस्मरणात्मक लेख दस्तावेजका रूपमा मात्र नरही भाषा र भावको प्रस्तुतिका कारण पूर्वाद्धभन्दा उत्तराद्धमा लागेपछि आकर्षक र स्वादिलो बन्दै गएको र सिर्जनशील कार्यलाई निरन्तरता दिएमा सुनील राम्रा निबन्धकार समेत बन्न सक्ने दृष्टिकोण त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीको “चारित्रिक कसीमा एकादेशकी महारानी” कृतिपरक समालोचना पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यस समालोचनामा त्रिपाठीले केशवराज पिंडालीको प्रथम औपन्यासिक कृतिलाई केन्द्रबिन्दुमा राखेर यस समालोचनाभित्र आमुख, पृष्ठभूमि, चरित्र चित्रणको विविध पक्ष, चरित्रको वर्गीकरण, केही चारित्रिक वैशिष्ट्य, केही उल्लेखनीय पात्र र चरित्रको परिचयका क्रममा विभिन्न शीर्षक उपशीर्षक राखी चर्चा परिचर्चा गरेकी छन् । हास्यव्यङ्ग्यात्मक निबन्धमा कलम चलाउने पिंडालीको अर्को सफल विधा उपन्यास रहेको जानकारी दिँदै त्रिपाठीले घटनाप्रधान उपन्यासका रूपमा रहेको यस उपन्यासमा राणाहरूको चित्रण गरी ऐतिहासिक विषयवस्तुलाई कलात्मक भङ्गिमामा सजाएको अर्थात् खानेपानी संस्थानले पाइप विछ्याएजस्तो संरचनाभित्र उपन्यासको कथानक अगाडि बढेको विचार प्रस्तुत गरेकी छन् ।

उपन्यासको विश्लेषण गर्ने क्रममा उपन्यासमा मूल रूपमा चार प्रकारका चारित्रिक वैशिष्ट्यहरू उल्लेख गर्दै त्रिपाठीले २००७ पूर्वको नेपालको राजनीतिक कुशासन तथा त्यसद्वारा ग्रस्त सामाजिक सन्दर्भमा चित्रित चरित्रहरू प्रायः प्रतिनिधिमूलक नै रहेका र यिनै पात्रका माध्यमबाट दरबारी दुष्कर्मका संवाहक राणा र यौन कर्मतर्फको अभिलिप्सा तथा शोषण, भग्न पत्नीत्व एवं मातृत्व र कुशासनले थिल्थिलिएको नारी अस्मिता नै उपन्यासकारले प्रस्तुत गरेका चारित्रिक वैशिष्ट्यभित्र अटाएका छन् र त्यसैका सेरोफेरोको उपन्यासको संरचना भएको दृष्टिकोण व्यक्त गरेकी छन् ।

दरबारका बारेमा ‘जाने दरबार नजाने तरवार’ भन्ने प्रचलित लोकोक्ति उल्लेख गर्दै सज्जन र स्वाभिमानी व्यक्ति यसबाट सधैं टाढा रहनुपर्ने सन्देश दिने क्रममा त्रिपाठीले दरबारभित्र हुने षड्यन्त्र, हत्या, हिंसा, बलात्कार, कुचक्र, नृशंसताजस्ता कुरा आफ्ना चरित्रमा उनेर उपन्यासका माध्यमबाट दरबारभित्र जीवन बिताउन बाध्य नारीहरू कति धेरै पुरुषबाट शोषित र पीडित भएका छन्, उनीहरूको मातृत्व र पत्नीत्वको गौरव कसरी प्रवाहित भएका छन् भन्ने वास्तविकतालाई काल्पनिक जलप लगाएर उपन्यास प्रस्तुत गर्न सफल भएका छन् भन्ने अभिव्यक्ति त्रिपाठीले दिएकी छन् ।

त्रिपाठीको “भानुभक्तको नारी विद्वेष” शीर्षकको समालोचना कृतिपरक समालोचना पद्धतिमा आधारित छ । यस समालोचनाभित्र त्रिपाठीले भानुभक्तद्वारा नेपाली साहित्यमा चित्रित नारीहरूको छविलाई केलाउने प्रयास गरेकी छन् । त्रिपाठीले एउटा आदर्श समाजको परिकल्पना गरेर रामायणजस्तो आदर्श कृतिको रचना गरेका, शक्ति पूजाका धार्मिक परम्पराभित्र हुर्केका र आदिकवि

पदबाट विभूषित हुन पुगेका भानुभक्तले मातृभाषाको सम्मान स्वरूप अमूल्य कृति दिए पनि आमा जातलाई भने पटकै सम्मान गर्न नजानेको दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यसैगरी नारीलाई केवल कठपुतलीका रूपमा स्विकार्दै उसैलाई पुरुष जातिको सम्पूर्ण फसादको जड मान्ने भानुभक्तको गद्य कविता हेर्दा उनी संसारका विविध माया मोहबाट माथि उठेका ठूला सन्यासी र त्यागी भएको भ्रम पाठकमा परे पनि यो एउटा भ्रम मात्रै हो भन्दै अरूलाई यस्ता अर्ती उपदेश दिंदा आफू ठुलो भइने भ्रम परेकाले मात्रै उनले यस्ता काव्य रचना गरेका हुन्, नत्र भने उनी विषय वासनामा चुर्लुम्म डुबेका गृहस्थी नै हुन् भन्ने चिन्तन त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् ।

त्यसैगरी सामन्तकालीन संस्कारको प्रतिष्ठाका रूपमा रहेको **वधुशिक्षा** पुरुषका हैकम र मनपरीतन्त्रलाई प्रोत्साहन दिंदै नारीलाई सधैं दासत्वले थिचिराख्ने जुक्ति र बुद्धिको क्षेप्यास्त्रका रूपमा आजको एक्काइसौं शताब्दीमा समेत नेपाली समाजमा अद्यावधिक रूपमा रहेको दृष्टिकोण प्रस्तुत गर्दै भानुभक्तको **प्रश्नोत्तरमाला**ले हाम्रा समाजमा नारी सम्बन्धी जति पनि कुधारणाहरू फैलाएको छ, त्यसका निम्ति भानुभक्त नै जिम्मेवार भएको कुरा व्यक्त गर्दै यदि शङ्कराचार्यका संस्कृत श्लोकलाई संस्कृतमा नै रहन दिएको भए त्यसको यो विकृतिको असर नेपाली समाजमा पर्ने थिएन र नेपाली नारीले यति धेरै अपमानित र तिरस्कृत हुनुपर्ने पनि थिएन भन्ने दृष्टिकोण त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

यसरी भानुभक्तको **वधुशिक्षा** र **प्रश्नोत्तरमाला**मा नारी दर्शनका छुट्टाछुट्टै शीर्षकमा रहेर सुधा त्रिपाठीले नारीलाई तल्लो स्तरबाट हेर्ने भानुभक्तको जुन आदर्श समाज थियो त्यस समाजलाई भ्रष्ट समाजका रूपमा चिनाउँदै धार्मिक आस्था र परम्पराका नाममा नारीलाई दासीका रूपमा स्विकार्ने हिन्दु परम्पराप्रति घृणा व्यक्त गरेकी छन् । आदिकविको उच्च ओहोदामा पुगेका भानुभक्त आफूले त नारीलाई कहिल्यै आदर र सम्मान गर्न जानेनन् मात्र होइन अरूलाई समेत सही रूपबाट शिक्षा दिन सकेनन् भन्ने चिन्ता व्यक्त गरेकी त्रिपाठीले पुरुषलाई ईश्वरका रूपमा परिचित गराउँदै नारीलाई सधैं दासीका रूपमा रहनुपर्ने बाध्यता र पुरुषकै गोडा पखालेको पानीले आफूलाई चोखो राख्नुपर्ने विवशताजस्ता घृणित, भ्रष्ट र विवेकहीन शिक्षा दिएर भ्रष्ट समाजको सृजना गर्न पुगेका भानुभक्तका रचनालाई नारीको स्वतन्त्रतालाई थिचिराख्ने क्षेप्यास्त्रका रूपमा मूल्याङ्कन गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको “नेपाली साहित्यमा नारीको अधकल्चो छवि” ऐतिहासिक पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यस समालोचनामा वि.सं. १८२५ देखि हालसम्मको समयावधिमा नेपाली

साहित्यमा महिलाहरूको सन्दर्भ कसरी प्रस्तुत भएको छ भन्ने तथ्य विश्लेषण गर्ने क्रममा 'प्रारम्भिक काल: नारी परम्परागत जिम्मेवारी मात्र,' 'मध्यकाल : नारी मनोरञ्जनका साधन,' 'आधुनिक काल (पूर्व सन्ध्या) : नारी नैतिकता र आदर्शभिन्न कैद,' 'आधुनिक काल : वर्तमान र निकट वर्तमान' जस्ता चारवटा शीर्षकको छनोट गरेकी छन् ।

सर्वप्रथम महिलाका विषयमा चासो देखाई **वधुशिक्षा**को रचना गरेर नारीका निम्ति कठोर बन्धनको आज्ञा दिदै स्वतस्फूर्त संलग्न हुनु भनेको नैतिकता विहीन हुनु हो भन्ने चेतना बोकेका प्राथमिक कालका कवि भानुभक्तदेखि हिन्दु धर्मका आराध्य देव मानिएका कृष्णले १०८ वटी गोपिनी नचाएर नारी अस्मिताको हनन गरेको, तत्कालीन कविहरूले माध्यमिक कालीन पद्य साहित्यमा नारीहरूको नङ्देखि केशसम्मको सौन्दर्य, हाउभाउ कटाक्ष आदिको वर्णन गरी पुरुषहरूका मनोरञ्जनभन्दा पर गएर उनीहरूको अस्तित्वको मूल्याङ्कन गर्न नसकेको र समाजमा विद्यमान बहुविवाह र रखौटी राख्ने घृणित चलनलाई टेवा दिई लगभग तिन दशक लामो अवधिसम्म अपमानजन्य रूपमा चित्रित भएको अश्लील परम्पराको चरम रूप **सूक्तिसिन्धु** (१९७४) कविता सङ्ग्रहमा आएर देखा परेको कुरा व्यक्त गर्दै त्यस पछिका सदस्यहरू मात्र क्रमशः शृङ्गार कालीन वैचारिक मरुभूमिबाट स्वस्थ जीवनको गोरेटोतर्फ उन्मुख भएको विचार त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

मार्क्सवादी साहित्य लेखनमा २०३५-३९ यता नारीवादी सोचाइ र नारी स्थितिको परिवर्तनको कामना सहित नारीप्रति सम्मानको भाव व्यक्त गर्ने प्रगतिवादी साहित्यकारहरूले नारीको आजको उत्पीडित अवस्थामा नयाँ परिवर्तन हुनका लागि मानव मुक्तिका साथ नारीमुक्ति पनि सम्भव भएको र यस मुक्तिका लागि नारीहरू पनि अन्य उत्पीडित वर्गका साथ एक जुट भएर सङ्घर्षमा लीन हुनुपर्ने चिन्तन आफ्ना साहित्यमा देखाए पनि उनीहरू आफ्नो व्यवहारमा भने तुरुन्तै परिवर्तन हुन नचाहने स्रष्टाका रूपमा रहेको कुरा त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् । यसका साथै अस्तित्व सचेत रूपमा नारी पात्रको निर्माण हुनु भनेको नारी दोस्रो दर्जाको नागरिकबाट क्रमशः पहिलो दर्जाको नागरिक हुनुतर्फ अग्रसर हुनु, पुरुषको मात्र एकलौटी ठानिएको 'मान्छे' को उपाधि विभाजित हुन लाग्नु, पुरुषको छायाँभन्दा पर रहेको नारीको नितान्त आफ्नो जिन्दगीको पत्तो लाग्नु हो । त्यसैले साहित्यमा अस्तित्व सचेत नारीपात्रको सिर्जना गर्दै जानु नारीवर्ग र समाजको कल्याणका लागि आवश्यक कुरा हो र यो दायित्व नारी र पुरुष दुवैको हो (पृ. १०३) भन्ने चिन्तन त्रिपाठीले आफ्नो यस समालोचनामा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको “माग्नेको गीत” भित्र समयको पीडा” कृतिपरक समालोचना पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । परिष्कारवादको छाया बोकेर कवितामा यात्रा प्रारम्भ गरेका र स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तिका सहप्रवर्तकका रूपमा परिचित कवि सिद्धिचरण श्रेष्ठको स्रष्टा जीवनको प्रारम्भ र अन्त्य समेत कविता विधाबाट भएको जानकारी दिएकी त्रिपाठीले प्रगतिवादी धारामा बहँदै जाँदा कविका काव्य जीवनमा देखा परेको उत्कृष्ट कविता ‘माग्नेको गीत’ लाई आफ्नो अध्ययनको केन्द्रबिन्दु बनाएकी छन् । जसमा आमुख, पृष्ठभूमि, कविताको भाव वा कथ्य, कविताको परिवेश, कविताको सन्दर्भ, माग्नेको तात्पर्य, अलङ्करण, व्यङ्ग्य प्रतीक र तिनको अर्थ र निष्कर्ष आदि शीर्षकहरू समेत समेटेकी छन् ।

त्रिपाठीले ‘माग्नेको गीत’ कविताको कथ्यका रूपमा एउटा निरीह माग्नेको जीवनका कारुणिकता र त्यसको अश्रुपूरित अभिव्यक्तिलाई माग्नेले मध्यरातमा गीतका माध्यमबाट व्यक्त गरे पनि उसको पीडाको रोदन सिङ्गे युगको बेथिति भएको र यसले मानवताको तिरस्कार गर्दै हुँदा पूज्य निस्कनेप्रति तिखो व्यङ्ग्य भाव प्रस्तुत गरेको चिन्तन त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् । त्यसैगरी कविले माग्नेले जीवनको तात्पर्यका रूपमा अभाव, पीडा, व्यथा, सङ्घर्ष, रोग, भोक, ताप, तिरस्कार, अपहेलना सहेर विसङ्गतिपूर्ण जीवन बाँच्यो बाध्य माग्नेको जीवनलाई जीवनहीन हुँदाका रूपमा तुलना गर्दै ऊ जीवन लिएर न त मानव जीवनबिच फुल्न नै सक्छ, न त उफ्रन नै सक्छ, ऊ त केवल जीवनहीन शून्यता लिएर बाँचिरहेको छ भन्ने भाव त्रिपाठीले यस कविताका माध्यमबाट पहिल्याएकी छन् ।

यथार्थवादी कोणबाट वस्तुविम्ब ग्रहण गरी स्वच्छन्दतावादी मानव चेतले सिँगार्दै मानवताको पुनः स्थापनाका निम्ति आह्वानका स्वरहरू गुञ्जाउन पुगेका कवि श्रेष्ठले विविध विम्ब र प्रतीकको प्रयोगले यस कवितालाई अद्वितीय बनाएका छन् । भन्दै त्रिपाठीले माग्नेले आफ्ना जीवनका बारेमा अनेकन् सपना देखेको थियो भन्ने कुरालाई समेत विम्बका रूपमा प्रस्तुत गर्न सफल कविले आँखालाई ‘गमला’ को, निद्रालाई ‘लहरा’ को, सपनालाई ‘फुल’ को, माग्नेको जीवनलाई ‘पर्वत’ को, उसको गीतलाई ‘छहारा’को र समयको फैलावटलाई ‘आँचल’को विम्ब प्रस्तुत गरेका छन् । भने प्रतीकका रूपमा ‘कुकुर’ र ‘पशुपति जानेहरू’ लाई समेटेका छन् । भन्ने तथ्य कवितागत अध्ययनका सन्दर्भमा प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै त्रिपाठीले स्वच्छन्दतावादी एवं प्रगतिवादी धाराका महत्त्वपूर्ण कविताका रूपमा ‘माग्नेको गीत’ लाई चिनाएकी छन् ।

समालोचक सुधा त्रिपाठीको “नाटककार भिमनिधि तिवारी र उनका नारीपात्र” कृतिपरक समालोचना पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । त्रिपाठीले यस समालोचनामा तिवारीका सामाजिक विषयवस्तुमा आधारित सहनशीला सुशीला, विवाह, पुतली, किसान र काशीवास नाटकमा प्रयोग भएका नारी पात्र र उनीहरूको अवस्थालाई अध्ययनको विषयवस्तु बनाएकी छन् । तिवारीका प्रस्तुत नाटकहरूमा प्रयोग भएका सुशीला, अलैंची, ठुलनानी, मनोरमा र पुतली आदि सबै नारी पात्रको पीडाका पछाडि विवाह नै महत्त्वपूर्ण कारक रहेको तथ्यतर्फ सङ्केत गर्दै त्रिपाठीले विवाह नारीका निमित्त एक ढङ्गको बन्धन र अभिशाप नै हो तर तिवारीले यस तथ्यलाई यसै किसिमले स्वीकारी विवाहित नारीका जीवनमा या त श्रीमान् हुने व्यक्तिको व्यक्तिगत प्रवृत्तिले या अनमेल विवाहका कारणले यस्तो स्थिति सिर्जना हुन्छ, भन्ने धारणा व्यक्त गरेको कुरा यस समालोचनामा उल्लेख गरेकी छन् । त्यसैगरी नाटकमा सत् पात्रको अनावश्यक मृत्युमा कारुणिक अन्त्य देखाई असत पात्रप्रति बेहद घृणा उब्जाउने मनसाय लुकेको भए पनि नाटककार त्यसमा सफल हुन सकेका छैनन् भन्दै सत पात्रको मृत्यु र असत पात्रको सफल पारिवारिक जीवन प्रस्तुत गरी पाठक वा दर्शकका मनमा कारुणिकता जगाउन र असत पात्रप्रति घृणा जगाउन खोजेर आदर्श समाजको निर्माण गर्नुका सट्टा त्यसका असरले समाजको एउटा पाटो नै रूग्ण बन्न पुगेको कुरालाई समेत त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

पितृसत्तात्मक समाजमा लोग्नेमान्छे भनेको लोग्नेमान्छे नै हो जसका विवाहका निमित्त योग्यता परीक्षण रूप र उमेरका हिसाबले गरिंदैन किनभने यस समाजमा पुरुष कहिल्यै बूढो हुने ठानिंदैन । त्यस्तै अपराध पुरुषको होस् वा समाजको होस्, त्यसको मूल परिणाम बेहोर्नेमा नारी नै पर्दछे, त्यसको छिटछिट्टी प्रभाव मात्र पुरुषले भोग्नुपर्छ, भन्ने मान्यता तिवारीका नाटकको मात्र नभई पितृसत्तात्मक समाजकै यथार्थ हो भन्दै त्रिपाठीले पुरुषकेन्द्री सामाजिक संरचनाको फलस्वरूप आफ्ना रूपले पुरुषलाई रिभाउन नसक्नु र पुरुषका रूपले आफू रिभिन नसक्नुमा पनि नारीकै दोष मानिन्छ, भन्ने तथ्यलाई दृष्टान्त सहित प्रस्तुत गरेकी छन् ।

नाटककार तिवारीले आफ्ना नाटकमा प्रयोग भएका नारी पात्रलाई भकाभक मारेर दुःखान्तको मार्मिकता सिर्जना भएको ठानेका छन् । मर्नुमा नै उनले जीवनको सबैभन्दा ठुलो दुःखान्त देखेका छन् तर समस्या लिपिएको जीवनको मृत्युभन्दा समस्या लिपिएका जीवनको दुःखान्तको मार्मिकता बढी हुन्छ, भन्ने कुरा तिवारीले महसुस गर्न नसकेको चिन्ता व्यक्त गर्दै पीडा सहन नसकी बाँच्नुमा नै जीवनको यथार्थता भल्कन्छ, तर यस्तो जीवनलाई तिवारीका पात्रले वरण

गर्न नसक्दा उनका नाटकीय प्रस्तुति द्वन्द्वहीन बन्न पुगेका छन् र एक चिम्टी करुणा प्राप्त गर्न नारीले जीवनको उत्सर्ग गर्नु आफैमा पलायन र हार हो । वास्तवमा यति सस्तो मृत्यु प्रदान गरेर तिवारीबाट असचेत रूपमा नै नारी जीवनको अवमूल्यन हुन गएको र यसको क्षतिपूर्ति नाट्य सम्राट् कहलिएका समका नाटकबाट समेत हुन नसकी एकैचोटि रिमालका नाटकमा पुगेर भएको (पृ. १२०-१२१) छ भन्ने पुष्टि त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले सम र तिवारी दुवैले आफ्ना नाटकमा पुरुष पात्रलाई ईश्वरकै रूपमा चित्रण त गर्छन् तर तिनमा चारित्रिक उदात्तता पनि उत्तिकै अपरिहार्य हुन्छ भन्ने कुराको ख्याल राख्दैनन् किनभने नाटककार स्वयं पुरुष नै थिए जो आदर्श रामको नभएर कृष्णको चरित्र पुज्दछन् तर नारीका आदर्शका रूपमा भने सीतालाई उभ्याउँछन् जसको प्रतिच्छविभित्र इन्दिरा, सुशीला र मनोरमालाई खोज्छन् भन्दै यस्ता पतिका पत्नीहरूलाई आदर्शको जामा पहिच्याई पितृसत्तात्मक अहंभन्दा माथि उठ्न नसकेको कमजोरी सम र तिवारी दुवैमा पाइने दृष्टिकोण समेत त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् । यसका साथै तिवारीका सबैजसो नाटकमा पुरुष नै छन् जसले नारीका जीवनमा अशान्तिको तुषारापात गराउँदै मृत्युरूपी हिमपातले पुरिदिएका छन् । वास्तवमा परिवार र समाज भनेको पनि पुरुषकै हो किनभने कतै पनि नारीको बोली बिकदैन भन्ने धारणा राख्दै त्रिपाठीले तिवारीका सबै नारी पात्र सबै ढङ्गले कमजोर मात्र नभई यी नारीहरू तत्कालीन नेपाली समाजका छाया मात्र हुन् जसको कुनै अर्थयुक्त जीवन छैन । आफूले चिनेका केटीका फोटो खिचेर राखेजत्तिका मात्र छन् तिवारीका सम्पूर्ण पात्र (त्रिपाठी, २०५८ : १२३) । त्रिपाठीले यिनका नारी पात्रमा कुनै नौलो प्रस्तुति पाइँदैन जसले रिमालका हेलेन र गङ्गाले भैँ समाजलाई एउटा नवीन दिशा निर्देश गर्न सकून् भन्ने दृष्टिकोण व्यक्त गर्दै तिवारीका नारी पात्र पनि स्वचालित नभई परचालित कठपुतली मात्रै हुन् भन्ने विचार समेत यस समालोचनामा व्यक्त गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको “दीक्षितको जेण्डा र जेण्डाको सारङ्गी” कृतिपरक समालोचना पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यसमा त्रिपाठीले पृष्ठभूमि, जेण्डाको कथानकीय परिधि, फोटोग्राफी कलाको नमुना, जेण्डाको पागलपनको तात्पर्य, जेण्डा र गुलाबको सम्बन्धको अर्थ र निष्कर्षजस्ता शीर्षकभित्र रहेर ‘जेण्डा’ शीर्षक कथाको अध्ययन गरेकी छन् । मनोविश्लेषणात्मक रूपमा रहेको प्रस्तुत कथा चित्रहरूको सङ्ग्रह जो जसलाई पढ्दा हामीलाई समयक्रम नमिलाई राखिएका तस्बिरहरूको एल्बम हेरेभैँ लाग्छ भन्ने विचार प्रस्तुत गर्दै यसमा प्रस्तुत भएको जेण्डाको अति नै मार्मिक दरिद्र अवस्थाको भाव संवादद्वारा नभई चित्रकारिताद्वारा प्रस्तुत गरिएको र उसका दर्द र

पीडालाई स्थिर तस्विर एल्वमका रूपमा समेट्दै जीवनका चित्रहरू चलचित्रका रूपमा रहेको कुरा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले जेण्डालाई शाहजहाँको र उसकी पत्नी रामदुलारीलाई मुमताजका रूपमा मूल्याङ्कन गर्दै जेण्डा आफ्नी पत्नीलाई असाध्यै माया गर्छ, जसको फलस्वरूप उसको सारङ्गीको सुरमा ताजमहल खडा गरेको छ, भने रामदुलारीको भावनात्मक स्पन्दनको स्मारकलाई आफ्नो सास रहुन्जेल पनि बजाइराख्ने प्रयत्नमा ऊ रहेको छ र संसारमा एउटै मात्र बाँसुरी रहुन्जेलसम्म पनि त्यसलाई बजाइराख्ने दृढ सङ्कल्पबाट शाहजहाँको प्रेमभन्दा पनि जेण्डाको प्रेम उच्च आदर्शले युक्त छ, जसमा प्रदर्शनको गन्ध समेत छैन भन्ने चिन्तन प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यस्तै आफ्नै पत्नीको मृत्युमा छट्पटिन पुगेको जेण्डा त्यसकै पीडामा डुबेर सारङ्गीका धुनभित्र आफ्नी पत्नीलाई खोजिरहेकै अवस्थामा उसलाई कथाकारले गुलाबबोको प्रेममा पागलको संज्ञा दिए पनि त्यसलाई त्रिपाठीले त्यो पागल नभई आत्मीय प्रेम भन्न सकिने सङ्केत गर्दै आत्मिक प्रेमप्रतिको सम्पूर्ण र आत्मविस्मृति नै उसका लागि पागलपनको संज्ञा बन्न पुगे पनि त्यो पागलपन नभई भावुक एकाग्रता मात्र हो भन्ने विचार समेत त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले जेण्डाको जीवनको तात्पर्य पागलपन होइन, रामदुलारी हो र सारङ्गी त्यसको सहायक, अनि गुलाबबो त्यस सारङ्गीको सहायक भन्ने विश्लेषण गर्दै जेण्डा रामदुलारीलाई प्रेम गर्छ, र त्यस प्रेमलाई सफल पार्न गुलाबबोको सहयोग लिन्छ, अर्थात् आफ्नो प्रेमलाई रामदुलारीरूपी सारङ्गीका सुरहरूमा गुलाबबोरूपी राग मिलाएर आफ्नो सङ्गीतलाई पूर्णता दिन खोज्छ । त्यसैले पनि रामदुलारी र गुलाबबो नै जेण्डाका निमित्त सम महत्त्वपूर्णताका बिन्दु हुन् जो एक अर्काविना पूर्ण हुन सक्दैनन् भन्ने निष्कर्ष समेत 'जेण्डा' कथाका आधारमा विश्लेषण गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको "बहुला काजी साँच्चै बहुला हो त ?" समालोचना कृतिपरक समालोचना पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यसमा त्रिपाठीले विजय मल्लको नाटक बहुला काजीको सपनालाई आफ्नो अध्ययनको केन्द्रबिन्दु बनाएकी छन् । यस नाटकलाई भरियाको दुःखपूर्ण जीवन, तिनका सन्तानले भोग्नु पर्ने शैक्षिक दुरुहताको स्थिति, रूपैयाँको अभावले गर्दा जीवनको अवसानभन्दा डाक्टरको फी बढी महत्त्वको हुन जानुजस्ता समस्याहरूले लिपिएको नाटकका रूपमा चिनाउँदै त्रिपाठीले 'बहुला काजी' प्रतीकात्मक रूपको चरित्र हो र ऊ बहुला नभई कुनै क्रान्तिकारी समाज सुधारक व्यक्तिको छद्म रूप हो भन्ने कुरा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

यसैगरी बहुलाकाजीको सपना भनेको भक्तेको छोरो बिरेलाई पढाउनु र अझ त्यसमा पनि उसलाई अकालबाट बचाउनु हो तर भन्नु अर्थाभावले औषधोपचार गर्न नसकी बिरे मरेको भन्ने सुनेपछि उसलाई मर्मान्त पीडा हुन्छ किनकि जसरी भए पनि बिरेलाई बचाएर देश जोगाउनु भन्ने सपना बोकेको काजी माग्दा नपाएपछि र अरू कुनै उपाय नभएपछि धनीका घरमा विनाकाम हुँडी परेर बसेको पैसा चोरेर भए पनि एउटा गरिब रोगीको उपचारका रूपमा खर्च गरिनु सो पैसाको सदुपयोग पनि हो भन्ने भाव व्यक्त गरेको बताउँदै त्रिपाठीले पुँजी एक ठाउँमा अनावश्यक रूपमा थुप्रिँदै समान वितरण हुन नसक्दा समाजमा देखा पर्ने विकृतिको रूप त्यस्तै र त्यसभन्दा बढी विकृति पनि हुन्छ भन्ने भाव व्यक्त गरेकी छन् ।

प्रस्तुत नाटकमा नाटककारले आफूलाई बहुलाकाजीका रूपमा उपस्थित गराएका छन् जो देशको भविष्यका निमित्त अत्यन्तै चिन्ता बोकेर हिँड्छन् र चिन्ता गरेर मात्र देशको भोलि सप्रँदैन, यसका निमित्त काम गर्नुपर्छ र यस्तै कामको थालनी बिरेलाई पढ्ने वातावरण मिलाइदिएर भएको छ भन्ने उल्लेख गरेकी त्रिपाठीले साम्यवादी विचारधाराका पृष्ठपोषकका रूपमा आएको यस सन्दर्भले व्यक्तिका तहबाट नभई वर्गीय तहबाट शिक्षा दिलाउने कार्य भएको दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यस्तै भक्तेको छोरोलाई देशको छोराका रूपमा सम्बोधन गर्न पुगेका एकाङ्कीकार मल्ल आफ्नो मुख पात्र काजीका माध्यमबाट धनी र गरिबका बिचको सीमारेखालाई परिवर्तन गर्नुपर्ने आवश्यकता देखाउँछन् जुन कुरा बहुलाकाजीको सपनाका रूपमा प्रस्तुत भएको कुरा त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

समाजबाट गरिबी नहटी यहाँ केही उन्नति हुन सक्तैन भन्दै काजीले आर्थिक समानताको नारालाई प्रचारमा ल्याएको छ र बिरे र बिरेजस्ता धेरै बालकहरू नै यस अभियानका हिमायती हुन सक्दछन् भन्ने कुरा हृदयङ्गम गरी सिकर्मी र डकर्मी नवनिर्माणकर्ताका रूपमा देखेको कुरा प्रस्तुत गर्दै एकाङ्कीकारले काम नगरी कसैको नखानू, ईश्वरसित पनि हात फैल्याएर केही नमागनु, आमाबुबासँग पनि आफूले क्यै नगरी नलिनू, भगवान्लाई कहिल्यै घुस ख्वाएर पुकारा नगर्नुजस्ता आदर्शहरू आफ्नो जीवनमा उतार्न सकेमा सधैं कर्मशील र सुखी रहिरहन सक्ने चिन्ता व्यक्त गरेको कुरा त्रिपाठीले उल्लेख गरेकी छन् । यसका साथै संसारमा विद्यमान परिस्थितिको ठ्याम्मै स्वीकार नगरी यसमा नयाँ परिवर्तनको चाहना गर्नु र कामना गर्नु नै बहुलाकाजीको वास्तविक सपना हो र बहुलाकाजीको सपना नै हामी सचेत नागरिकहरूको पनि सपना हो । त्यसैले यस सन्दर्भबाट हेर्दा

पनि यस एकाङ्कीको प्रमुख चरित्र काजी बहुला भनिन सक्दैन, ऊ त समाजको अत्यन्त सचेत र समाज सुधारक व्यक्तित्वका रूपमा प्रकट भएको विचार त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको यसै सङ्ग्रहमा सङ्कलित अर्को समालोचना “नेपाली साहित्यमा चित्रण भएका नारी चरित्रहरू” ऐतिहासिक पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । नेपाल नारी साहित्य सेवा केन्द्रद्वारा आयोजित गोष्ठीमा प्रस्तुत कार्यपत्रका रूपमा रहेको यस समालोचनाभित्र त्रिपाठीले पृष्ठभूमि, नेपाली साहित्यमा नारीको चित्र, वि.सं. १९८६ देखि २०१५ सम्म, वि.सं. २०१७ देखि २०५० सम्म र निष्कर्षजस्ता शीर्षकहरू छनोट गरेकी छन् । प्रस्तुत समालोचनामा नेपाली साहित्यको प्राथमिक काल र माध्यमिक कालमा नारी लेखनको शून्यप्रायः उपस्थितिले गर्दा र साहित्यमा पुरुष दृष्टिकोणको मात्र प्रस्तुति भएका कारण पनि आजसम्मको साहित्य भनेको पुरुष दृष्टिकोणकै वर्चस्व रहेको क्षेत्रका रूपमा रहेको कुरा उल्लेख गर्दै त्रिपाठीले सर्वसत्तावादी पुरुषका साहित्यिक कलमका छहारीमुनि नारीको उपस्थिति ढुङ्गामुनिको भारको स्थितिमा रहेको विचार प्रस्तुत गरेकी छन् ।

समालोचक त्रिपाठीले नेपाली साहित्यमा नारीको चित्रलाई स्पष्ट रूपमा अङ्कित गर्ने क्रममा वि.सं. १९८६ अर्थात् मुटुको व्यथापूर्व शीर्षकभित्र सिङ्गे नेपाली साहित्यको प्राथमिक कालीन जीवनका सन्दर्भले प्राथमिकता नपाएको अवधिमा नकारात्मक सन्दर्भबाट नै भए पनि नारीलाई आफ्नो लेखनमा पहिलो र विशेष प्राथमिकता दिने साहित्यकारका रूपमा भानुभक्तलाई चिनाउँदै उनीदेखि नै नेपाली साहित्यमा सामन्ती संस्कार मौलाएको र राष्ट्रका नारीको अस्तित्व र अस्मिताको घोर अपमान भएको युगका रूपमा प्राथमिक काललाई प्रस्तुत गरेकी छन् । त्रिपाठीले नेपाली साहित्यमा नेपाली समाजको सामन्त युगीन प्रवृत्तिको प्रतिनधित्व गर्ने क्रियाशील स्रष्टाहरूका रूपमा मोतीराम, शम्भुप्रसाद ढुङ्गेल र लक्ष्मीदत्त पन्तको नाम उल्लेख गर्दै नारीका आफ्ना इच्छा र आकाङ्क्षाको कुनै अस्तित्व नरहेको र त्यसभन्दा पर उसको अस्तित्वको मूल्याङ्कन नभएको नारी जीवनका सन्दर्भबाट हेर्दा नेपाली साहित्यको माध्यमिक काल अन्धकार युगका रूपमा स्थापित हुन पुगेको र त्यस अन्धकार युगको साहित्यिक प्रस्तुतिको चरम रूप सूक्तिसिन्धुमा प्रकट भएको र त्यसमा लेखनाथ पौड्यालको कविता समेत सामेल भएको जानकारी दिएकी छन् ।

त्यसैगरी वि.सं. १८८६ देखि २०१५ सालसम्मको समय भनेको नारीहरूले पुरुषका कलमबाट प्राप्त गरेको दयामा बाँच्ने समयका रूपमा चिनिएका कारण पनि नारीले पुरुषका लेखनबाट दया प्रशस्तै प्राप्त गरेको तर आँसुका पर्दाले ढपक्क ढाकेर राखिएकी नारीभित्रकी अदृश्य

नारीलाई भने कसैले देख्न, छुन पर्गेल्न नसकेको विचार प्रस्तुत गरेकी त्रिपाठीले रिमाल, गोठाले, विजय र प्रेमाका कलमले भने त्यस नारी जीवनका सम्पूर्णतामा नभई आंशिक रूपमा स्पर्शित गरेको भए पनि लेखकहरूले भने यिनै कुराभित्र नारीको समग्र अस्तित्वको परिचय खोजेर भेट्टाएजस्तो भ्रमपूर्ण अनुभव गरे तर वास्तवमा यस समयका नारीका अधिकांश प्रस्तुति लेखकका कलमका माध्यमले नारीलाई साधन बनाएर गरेका सिर्जनात्मक विलास मात्र हुन् भन्ने धारणा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले यस समालोचनाभित्र २०१७ सालसम्मका समयावधिभित्र नेपाली साहित्यमा देखा परेका एकथरि लेखकहरूले दयाका सागरमा चुर्लुम्म डुबाएर नारीको प्रस्तुति दिए भने अर्काथरि लेखक यस्ता पनि छन् जो समाजमा अग्रसर हुन प्रयत्नरत महिलाहरूको उत्साहलाई भाँच्न हरतरह प्रयत्न गर्छन् र साहित्यमा पनि त्यस्ता जागरुक महिलाका जागरुकतालाई कुपरिणतिका कारकका रूपमा उपहासपूर्वक प्रस्तुत गर्ने स्रष्टाहरूको पनि नेपाली साहित्यमा अभाव नभएको दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यस्तै नेपाली समाज र नेपाली साहित्यमा पनि नारीले 'मान्छे हुनु' को मूल्य प्राप्त गर्न सकेकी छैन, सामाजिक प्रपञ्चले गर्दा पुरुष पुरुषका विचमा भैं मित्रता नारी-पुरुषका विचमा हुन सक्दैन किनभने नारीले कुनै पुरुषसँग गरेको मित्रवत् व्यवहारलाई यौन चाहनाका रूपमा अर्थ्याइन्छ र व्यावहारिक जीवनमा समेत यस्तै र यिनै वैमनष्यहरू बोकेर नारी चरित्रहरू उपस्थित भएका छन् भन्ने चिन्तन प्रस्तुत गर्दै त्रिपाठीले नारी सम्बन्धी सोचाइमा परिष्कार नल्याई नारीका जीवनमा सामाजिक सुधार आउन सक्तैन । त्यसकारण पनि नारी जीवनका सन्दर्भसँग सम्बन्धित नवीन विचारयुक्त दृढ सङ्कल्पी, सङ्घर्षशील, आत्मविश्वासी जागरुक नारी चरित्रको उपस्थितिको आवश्यकता रहेको देखाएकी छन् । यसका साथै पुरुषका कलमबाट पूर्ण रूपमा नारी अस्तित्व र अस्मिताको पहिचान प्रस्तुत हुन सक्तैन र यसका लागि महिला लेखक आफै अग्रसर हुनु जरुरी छ, किनभने नारीका सम्बन्धमा पुरुषले रहरले लेख्छ तर नारीले भने पीडाको उच्छ्वासद्वारा लेख्छे । त्यसैले पनि यसको सत्यापन र प्रभावकारिताका लागि पनि नारीकै कलमको जरुरत पर्दछ, भन्ने तर्क प्रस्तुत गर्दै त्रिपाठीले नारीको पहिचानको प्रथम भिल्को नारीकै कलमबाट निस्कनुपर्छ, पुरुष लेखक त्यही भिल्कोलाई टपक्क टिपेर बढ्याई र धूर्तताका साथ आफ्ना रचनामा प्रस्तुत गर्न त अवश्यै सक्छन् तर त्यस प्रथम भिल्कोको आविष्कार भने उनीहरूबाट हुन नसक्ने दृष्टिकोण समेत प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको “समसामयिक नेपाली कथाको विकास क्रम” ऐतिहासिक समालोचना पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । त्रिपाठीले यस समालोचनामा कथाको विकासको पृष्ठभूमिकालको चर्चा गर्दै शारदा प्रकाशनदेखि ४० को दशक यतासम्म देखा परेका कथाहरूको चरण विभाजन गरी वि.सं. १९९२ देखि २०४० यतासम्मका समसामयिक कथाहरूको विश्लेषणका क्रममा समय सीमाङ्कन समेत गरेकी छन् । त्रिपाठीले जीवन भोगाइका असचेत माध्यम लोककथा र लोकगाथाका आवरणबाट विकास हुन पुगेको कथाले वि.सं. १९५८ को गोरखापत्रका साथै अन्य पत्रिकामा छापिएका कथामा पनि मौलिकता र संरचनागत सुगठितता पाउन नसकेको तथ्य स्पष्ट पार्दै शारदा पत्रिकामा प्रकाशित ‘नासो’ कथाले मात्र नेपाली कथाको स्पष्ट मोड सिर्जना गरेको छ, भन्ने धारणा व्यक्त गरेकी छन् ।

त्यसैगरी नेपाली साहित्यको कथा लेखनका क्रममा देशमा भएको राजनीतिक उथलपुथल र परिवर्तनले कथा लेखनमा पनि एउटा नवीन परम्परा छोड्दै गएको महसुस गरेकी त्रिपाठीले ०९७ साल, ००७ साल, ०१७ साल, ०३७ साल र ०४७ सालका राजनीतिक भूकम्पहरूले नेपाली कथाका नवीन प्रकृतिको विकास गराउँदै नयाँ नयाँ कथाकारहरूको प्रविष्टि गराएको उल्लेख गरेकी छन् ।

समसामयिक नेपाली कथाका विकासक्रमभित्र पृष्ठभूमिका रूपमा ९२ सालदेखि २०२५ सालसम्म रहेको र २०३० को दशक यताका कथालाई मात्रै समसामयिक कथा भनेर चिनिने तथ्य स्पष्ट पारेकी त्रिपाठीले १९९२ लाई नेपाली कथाको आधुनिक कालको प्रारम्भ मान्दा यस समसामयिक कथा धारालाई आधुनिकोत्तर कथा धारा पनि भन्न सकिने र त्यो आधुनिक कथा साहित्यको सर्वाधिक नवीन धारा हो (पृ. १६१) भन्ने जानकारी समेत यस समालोचनामा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

समसामयिक नेपाली कथाको विकासक्रमको अध्ययन गर्ने क्रममा त्रिपाठीले अधिल्ला चरणका सापेक्षतामा यस चरणमा उल्लेखनीय मात्रामा कथाकारका सङ्ख्यामा वृद्धि भएको र यो सङ्ख्या समसामयिक कथा धाराको उत्तरार्द्धमा आएर एकदमै धेरै बढेको तथ्य अधि साँदै महिला कथाकारको सङ्ख्या प्रत्येक अधिल्लो दशकका तुलनामा पहिलो दशकमा बढेकै भए तापनि उक्त वृद्धिलाई पुरुष कथाकारको सङ्ख्या वृद्धिका अनुपातमा उल्लेखनीय मान्न नसकिने, बरु अपेक्षाकृत कम नै मान्नुपर्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् ।

गुणात्मक दृष्टिले हेर्दा महिला र पुरुष कथाकारको स्थिति हाराहारीमै रहेको वर्णन गर्दै त्रिपाठीले अधिल्ला कथाका तुलनामा यस चरणका कथाले वस्तुगत स्थूलता, भाषा शैलीगत दुरुहता,

शिल्पगत जटिलता, अकथा लेखन आदि प्रवृत्तिलाई त्यागी त्यसका सट्टा वस्तुगत सूक्ष्मता, भाषा शैलीगत सरलता र कथायुक्त कथा लेखनलाई वर्णन गरेका र यी कथा बढीभन्दा बढी जीवन सस्पृश्य बन्न पुगेको कुरा चर्चा गरेकी छन् । त्यस्तै प्रगतिवादी कथा लेखनको पुष्टि उल्लेखनीय रूपमा मौलाउनु समसामयिक कथा शैलीको विशिष्टता हो भन्ने सन्दर्भ उल्लेख गर्न पुगेकी त्रिपाठीले २१ औं शताब्दीका सबै दशकका कथाकारका सक्रिय वा साधारण कुनै पनि किसिमको उपस्थिति समसामयिक नेपाली कथा धारामा देखिए तापनि यस धाराको प्रतिनिधित्व गर्ने कथाकार भने २०३० सालभन्दा अगाडिका कथाकारमध्येबाट परेका छैनन् अर्थात् अधिल्ला चरणका कथा लेखनका प्रवृत्तिगत विशिष्टताहरूको अवशेष यी चरणमा निमित्त्यान्न नभइसके पनि ती विशिष्टता यही चरणमा पनि उही रूप र स्तरको विशिष्टताका रूपमा कायम हुन नसकेको धारणा समेत राखेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको **महिला कथाकार र महिला** ऐतिहासिक पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यस समालोचनाभित्र त्रिपाठीले नेपाली साहित्यमा कथा विधाभित्र महिलाहरूको सर्वेक्षण गर्ने क्रममा नेपाली कथामा महिला हस्ताक्षर शीर्षकभित्र पृष्ठभूमि, प्रारम्भ, उत्थान, उपसंहार उपशीर्षक राखेकी छन् भने केही महिला कथाकारका महिला सम्बन्धी प्रस्तुति शीर्षकभित्र पारिजात, माया ठकुरी, भुवन ढुङ्गाना, भागीरथी श्रेष्ठ, पद्मावती सिंह, बेन्जु शर्मा, सीता पाण्डेको सामान्य परिचय दिँदै उपसंहार शीर्षक समेत समेटेकी छन् । त्रिपाठीले नेपाली कथा साहित्यमा माध्यमिक कालसम्मको साहित्य यात्रामा कतै पनि महिला कथाकारको उपस्थिति नरहेको चर्चा गर्दै आधुनिक कालमा आएर मात्रै महिला कथाकारको उपस्थिति रहेको उल्लेख गरेकी छन् भने १९९२ सालको **शारदा** पत्रिकामा प्रकाशित 'स्त्रीरत्न' पहिलो कथा हो र तुषार मल्लिकालाई प्रथम महिला कथाकारका रूपमा चिनाएकी छन् ।

त्रिपाठीले नेपाली कथा साहित्यको विकासमा धेरै महिला कथाकारहरूको पसिना परेको र तिनले खासखास समयमा खास ढङ्गले कथामा नवीन प्रवृत्ति प्रदान गरेको उल्लेख गर्दै कविता विधा पछिको दोस्रो उर्वर विधाका रूपमा रहेको कथा विधामा महिला स्रष्टाहरूले विशेष चासो देखाएको कुरा चर्चा गरेकी छन् । त्रिपाठीले महिला स्रष्टाको इतिहास लेखनका क्रममा पुरुष समुदायको उपस्थिति मात्र पर्याप्त नभएको चर्चा गर्दै पुरुष मानसिकता र दृष्टिकोणद्वारा आजसम्म महिला स्रष्टाहरू जेजसरी परिचित भए पनि अब चाहिं महिलाकै मानसिकता र दृष्टिकोणद्वारा महिलाहरूको परिचय स्थापित हुनु अति आवश्यक भइसकेको धारणा प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यसैगरी यस

समालोचनाभिन्न पुरुष र महिला दुवैथरि परिचयका बिचको साम्य र वैषम्यबाट समाजलाई केही विशेष नयाँ कुरा हात लाग्ने यसले अब उप्रान्त लेखिने नेपाली साहित्यको इतिहासका निम्ति ऊर्जा प्रदान गर्ने कुरा उल्लेख गर्दै त्रिपाठीले पुरुष साहित्यको इतिहास लेखिसकेपछि, इतिहासका पुछारमा मात्रै महिलाहरूको नाम जोडिनु अहिलेको इतिहास लेखनको मूल प्रवृत्ति बनिसकेको र यो प्रवृत्ति राष्ट्र, महिला समुदाय र अझ भन्ने हो भने कसैका हितमा समेत नभएको कुरा विश्लेषण गरेकी छन् ।

पारिजात, माया ठकुरी, भुवन ढुङ्गाना, भागीरथी श्रेष्ठ, पद्मावती सिंह, बेन्जु शर्मा र सीता पाण्डेलाई प्रतिनिधि महिला कथाकारका रूपमा चिनाउँदै उनीहरूका कथामा एकातिर महिला उत्पीडनका पारिवारिक परिस्थितिको आलेख पाइने र अर्कातिर बाहिरी संसारसँगको सम्पर्कका क्रममा पाएका अपमान लाञ्छना र षड्यन्त्रका भुमरीमा पर्नाले महिला हृदयमा उम्रिएको लोभ र त्यसको निवारणको चाहना र सङ्केत पाइने कुरा त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यस्तै त्रिपाठीले साहित्यमा नारी-पुरुषको सम्बन्धलाई केवल यौनका दृष्टिबाट मात्र पर्गेल्न खोज्नु र महिलाको अस्मिता सफल पत्नी हुनुमा मात्र संरक्षित भएको देख्नु जीवनलाई पशुका कोटिमा ओराल्नु रहेको उल्लेख गर्दै नारीले पत्नी र आमा बन्नुमा नै आफ्नो जीवनको सम्पूर्ण सफलता देख्ने हो भने त्यो जीवन तुच्छ छ भन्ने विचार समेत यस समालोचनामा प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै त्रिपाठीले महिला कथाकारले आमा र पत्नीभन्दा पर कतै लुकेर बसेको महिला अस्मितालाई पनि राम्ररी चिनी त्यसको परिचय समाजमा बाँड्दै आफ्नो जीवन र लेखनको लक्ष्य महिला अस्मिताको पहिचान र त्यसको संरक्षणमा केन्द्रित गरून् भन्ने अपेक्षा रहेको जानकारी दिएकी छन् ।

त्रिपाठीले सम्पूर्ण महिला मुक्तिकामीहरूले वैज्ञानिक दर्शनभिन्न स्पष्ट दृष्टिकोणगत आधारभूमिमा टेकेर सांस्कृतिक पुनर्निर्माणका लागि प्रयत्नशील रहनु र त्यसका लागि समाजलाई एउटा उत्प्रेरणा प्रदान गर्नु आजका महिला कथाकारको प्रमुख दायित्व रहेको उल्लेख गर्दै महिला शक्तिको आह्वानका लागि साहित्य एउटा सशक्त माध्यम र त्यसमा पनि कथा विधालाई चोटिलो प्रहारका रूपमा प्रस्तुत गर्न सकिने धारणा प्रस्तुत गरेकी छन् । त्रिपाठीले कथामा यथास्थितिको वर्णन गर्ने र महिला पीडाको उपचार करुणामा खोज्ने शैली अबका निम्ति साह्रै असामयिक भएकाले अब कथा लेख्न बस्दा प्रत्येक कथाकारले आफूले रोजेको विषयवस्तुको प्रस्तुतिमाथि गहिरो चिन्तन गर्नु आवश्यक भइसकेको विचार प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यस्तै त्रिपाठीले महिलाको हीन छविको प्रस्तुति पितृसत्तात्मक मानसिकताको उपज रहेको बताउँदै अबका कथाले समाजलाई महिलाको हीन

होइन, गरिमापूर्ण छवि पस्कनुपर्छ र महिला कथाकारले आफ्नो लेखनलाई स्वसमुदायगत प्रस्तुतिका क्रममा विशेष अस्मिता सचेत बनाउँदै लैजानु अति जरुरी रहेको कुरा समेत प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले महिला कथा साहित्यको इतिहास अपेक्षाकृत ढिलो प्रारम्भ भएको भए तापनि हाम्रो जस्तो सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेशको दोहोरो शोषणमा परेका महिलाले कथा विधाको समुन्नतिका लागि जे-जति गरेका छन् त्यो उनीहरूको त्याग, तपस्या र आत्मोत्थानको चाहनाको परिणाम हो, त्यसमा सङ्ख्यात्मक दृष्टिले हेर्दा हीनताबोध हुने स्थिति नरहेको र महिलाको शैक्षिक सामाजिक अवस्थामा परिवर्तन आउनासाथ कथा साहित्यमा समेत वृद्धि हुने कुरामा शङ्का नरहेको विचार प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै त्रिपाठीले महिला कथाकारहरूले जे-जति गर्नुपर्ने यथेष्ट गरिसक्यौं भनेर चुप लागेर बस्ने अवस्था भने नरहेको विचार समेत प्रस्तुत समालोचनामा व्यक्त गरेकी छन् ।

५.२.२ 'भूपिका कवितामा व्यङ्ग्यालङ्कार-चेतना' समालोचनाको विश्लेषण

सुधा त्रिपाठीका प्रकाशित कृतिहरूमध्ये भूपिका कवितामा व्यङ्ग्यालङ्कार-चेतना छैटौं कृति हो भने समालोचनाका क्षेत्रमा दोस्रो कृतिका रूपमा रहेको छ । वि.सं. २०५८ मा भुँडीपुराण प्रकाशनबाट प्रकाशित भएको उक्त समालोचना कृतिपरक समालोचना पद्धतिमा आधारित समालोचना हो जसमा त्रिपाठीले भूपिका नयाँ भ्याउरे, निर्भर र घुम्ने मेचमाथि अन्धो मान्छे कविता सङ्ग्रहमध्ये तेस्रो सङ्ग्रहलाई आफ्नो समालोचनात्मक अध्ययनको केन्द्रबिन्दु बनाएकी छन् । चारवटा मूल शीर्षक र तिनवटा छुट्टाछुट्टै उपशीर्षकहरू रहेको यस शोधपरक समालोचनात्मक कृतिमा समावेश गरिएका 'भूपिका कवितात्मक सन्दर्भहरू' मूल शीर्षकभित्र पृष्ठभूमि, भूपिका कवितात्मक प्रकृतिहरू, भूपिको व्यङ्ग्य कवित्वका उत्प्रेरक तत्त्वहरू उपशीर्षक रहेका छन् भने यी उपशीर्षकभित्र पनि त्रिपाठीले विभिन्न शीर्षक चयन गरी भूपिको घुम्ने मेचमाथि अन्धो मान्छे कविता सङ्ग्रहको विश्लेषण गर्न पुगेकी छन् ।

पृष्ठभूमिभित्र कविताको सामान्य परिचय दिँदै त्रिपाठीले यसभित्र 'भूपिको कवित्व-विकासका चरणगत पृष्ठभूमि' एउटा मात्र शीर्षक चयन गरेकी छन् जसमा भूपिको कविता यात्राको चरणगत विभाजन गर्दै २०१० सालमा प्रकाशित नयाँ भ्याउरे कविता सङ्ग्रहलाई प्रथम चरण, २०१५ सालमा प्रकाशित निर्भर कविता सङ्ग्रहलाई दोस्रो चरण र घुम्ने मेचमाथि अन्धो मान्छे कविता सङ्ग्रहलाई तेस्रो चरणका रूपमा वर्गीकरण गरेकी छन् । त्रिपाठीले भूपिको २०१६ सालदेखि २०२५ सालसम्मका

कविताहरू सङ्कलित घुम्ने मेचमाथि अन्धो मान्छे तेस्रो चरणको मात्रै उपलब्धि नभई उनको कवि जीवनको र कविता यात्राकै उत्कृष्ट उपलब्धिका रूपमा रहेको दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले 'भूपिका कवितात्मक प्रवृत्ति' शीर्षकभित्र प्रकृतिका कवि, नारी-जीवनको सौन्दर्य र स्थितिका सचेत स्रष्टा, प्रेमका प्रेमी कवि, सधैं देश र जनताका बारेमा सोच्ने कवि, राजनीतिक निरङ्कुशताका विरोधी र स्वतन्त्रताका प्रेमी कवि, सामाजिक सन्दर्भमा नवसंरचनाका पक्षपाती कवि, व्यङ्ग्य कवि, उपेक्षित उपमानका प्रयोक्ता कवि, उत्प्रेक्षा, रूपक एवम् उपमा अलङ्कारका प्रयोक्ता कवि, कविताको छरितो संरचनाका पक्षपाती कवि र विविध गरी जम्मा ११ वटा अन्य शीर्षकहरू राखेकी छन् जस अन्तर्गत भूपिका समग्र कवितात्मक विशेषताहरू औँल्याउँदै व्यवहारमा प्रचलित सरल सहज शब्दकै माध्यमबाट गहनभन्दा गहन भावको प्रस्तुति गर्न रूचाउने कवि शब्द चयनमा भन्दा पनि आलङ्कारिक संयोजनमा बढी रूचि राख्ने कविका रूपमा त्रिपाठीले भूपिको परिचय दिएकी छन् । प्रशस्त अङ्ग्रेजी शब्द प्रयोग गर्न पुगेका कविका यी शब्दहरू कतै सान्दर्भिक र कतै औचित्यहीन लाग्ने बताउँदै असावधानीपूर्वक केही हिन्दी शब्द समेत भूपिले प्रयोग गरेका तथ्य त्रिपाठीले यस समालोचनाभित्र प्रस्तुत गरेकी छन् ।

'भूपिका व्यङ्ग्य कवित्वका उत्प्रेरक तत्त्वहरू' उपशीर्षकभित्र राणा शासनको बर्बरताको अनुभूति, विश्वयुद्धले छाडेका विसङ्गत अवशेषबाट दिक्क हुनु, 'गोर्खा भर्ती केन्द्र' जस्तो परम्परागत दासताले आहत हुनु, आजको वैज्ञानिक उन्नतिले प्रदान गरेको आणविक सन्त्रासको आकुलता, पाश्चात्य संस्कृतिको अनुकरणप्रतिको वितृष्णा, नेपाली जनताको आर्थिक दुर्नियति, साम्यवादी स्वप्न र पञ्चायती अवस्थाको मार आदि शीर्षकहरू चयन गरी यस्तै अवस्थामा बाँच्न पुगेका स्रष्टा, स्वप्न द्रष्टा र भावुक कविका रूपमा भूपिका मनभित्रका असङ्ख्य भाव लहरहरू विद्रोही शैलीमा सत्त्वलाइरहेका थिए भन्ने विचार प्रस्तुत गर्दै त्रिपाठीले देशको राजनीतिक वाक्स्वतन्त्रताहीन स्थितिभित्र जीवन व्यतित गरिरहेका कविले पञ्चायत कालीन व्यवस्थाको आगमनपूर्व नै 'मेरो चोक' कविताभित्र वरण गरिसेकेको व्यङ्ग्य शैलीलाई निरन्तरता दिई उत्कृष्ट व्यङ्ग्य शैलीका स्रष्टा समेत बन्न पुगेको धारणा प्रस्ट पारेकी छन् ।

दोस्रो मूल शीर्षक त्रिपाठीले 'भूपिका कवितामा व्यङ्ग्य' राखेकी छन् भने यसको उपशीर्षकभित्र 'व्यङ्ग्य : परिचय र परम्परा' रहेको छ जसमा व्यङ्ग्यको सामान्य परिचय र यस परम्परामा पूर्विय पाश्चात्य साहित्यको व्यङ्ग्यको प्रयोगका सम्बन्धमा छोटो चर्चा गरेकी छन् । अर्को उपशीर्षक ...भूपिको व्यङ्ग्यात्मक कविताको विश्लेषण'भित्र 'घुम्ने मेचमाथि अन्धो मान्छे' कविता

सङ्ग्रहका २९ वटा कविताहरू प्रत्येकको शीर्षक दिई विश्लेषण गरेकी छन् । त्यसैगरी यसैभित्र 'नेपाली व्यङ्ग्य कविताका परम्परामा भूपि' शीर्षक राखेर आधुनिक व्यङ्ग्य कवि भूपि समग्र नेपाली व्यङ्ग्य कविताका परम्परामा व्यापक विषयवस्तु, उत्कृष्ट व्यङ्ग्य-कला र तिनमा सन्निहित समाज परिवर्तनको प्रबल आकाङ्क्षा आदिका कारणले भीमनिधि तिवारी एवम् लक्ष्मी प्रसाद देवकोटालाई समेत उछिनी सर्वोत्कृष्ट नेपाली व्यङ्ग्य कविका रूपमा प्रतिष्ठित भएको कुरा त्रिपाठीले प्रस्तुत शीर्षकभित्र उल्लेख गरेकी छन् । त्यस्तै अर्को शीर्षक 'व्यङ्ग्य प्रयोगका दृष्टिले भूपिका कविताको मूल्याङ्कन' भित्र त्रिपाठीले भूपिका व्यङ्ग्य कवितामा स्वाभाविक रूपमा देखा पर्ने दया, करुणा तथा उदारताको सट्टा क्रोध, घृणा तथा प्रतिशोध व्यङ्ग्य प्रवृत्तिका स्वभाव अनुकूल नै आएको भए तापनि उनका कवितामा दया, करुणा, ममता र उदारताले पर्याप्त स्थान पाएको उल्लेख गर्दै यिनै भावहरूको प्रस्तुतिद्वारा वक्रोक्तिका माध्यमले वाग्वैदग्ध्यपूर्वक कविले सम्बन्धित व्यक्ति वा निकायप्रति व्यङ्ग्य प्रहार गरेका छन् जुन व्यङ्ग्य प्रयोगको नौलो वैशिष्ट्य हो भनी मूल्याङ्कन समेत गरेकी छन् ।

तेस्रो मूल शीर्षक 'भूपिका कवितामा अलङ्कार' शीर्षकभित्र अलङ्कारको परिचय दिई संस्कृत साहित्यका अलङ्कारविद् भामहदेखि रुद्रटसम्मको समयलाई अलङ्कार सम्प्रदायको स्वर्ण युगका रूपमा चिनाएकी त्रिपाठीले अलङ्कारमाथि चिन्तन गर्ने परम्परा ध्वनि सम्प्रदायको उदयपछि पनि अक्षुण्ण नै रहेको जानकारी दिँदै अलङ्कारलाई काव्यको आभूषण र काव्योक्ति दुवैका रूपमा चिनाएकी छन् । त्यसैगरी ...भूपिका कवितामा परेका अलङ्कारहरूको परिचय' शीर्षकभित्र रहेर त्रिपाठीले भूपि गद्य कवि भए तापनि अलङ्कार प्रयोगका दृष्टिले यिनी सशक्त रहेको कुरा बताएकी छन् । यसका साथै मुख्य रूपमा भूपिका कवितामा उत्प्रेक्षा, रूपक, उपमा, परिकर, अतिशयोक्ति र स्वभावोक्ति अलङ्कार परेका छन् भने प्रयोग न्यूनताका दृष्टिले विरोधाभास, सहोक्ति, विभावना र विशेषोक्ति अलङ्कार परेको कुरा गरेकी त्रिपाठीले उपर्युक्त अलङ्कारहरूको परिचय समेत दिएकी छन् । त्रिपाठीले भूपिका कवितामा प्रयुक्त अलङ्कारहरूको विश्लेषण गर्ने क्रममा ४१ वटा कविताहरूलाई समेटेकी छन् ।

अलङ्कार प्रयोगका दृष्टिले भूपिका कविताको मूल्याङ्कन गर्ने क्रममा त्रिपाठीले भूपिका जतिसुकै छोटो कवितामा पनि एकाधिक अलङ्कार परेका र उनका कवितामा अलङ्कार प्रयोग गर्ने तरिका पनि एउटै रहेको कुराको चर्चा गरेकी छन् । त्रिपाठीले सहज कविको सहज सौन्दर्याभिव्यक्ति अलङ्कार हो भन्ने कुरा भूपिका कविताबाट सिद्ध भएको चर्चा गर्दै अलङ्कारको प्रयोगले नै उनका

भावको अभिव्यक्तिलाई विशिष्ट तुल्याउन सफल कविका रूपमा परिचित भएको विचार व्यक्त गरेकी छन् । त्रिपाठीले भूपिका कविताको अध्ययनबाट भूपिका कवितामा साध्य व्यङ्ग्य र साधन अलङ्कार रहेकाले पनि व्यङ्ग्य र अलङ्कार एक अर्काका पूरक भएर आएको कुरा प्रस्ट पार्दै भूपिका कवितामा यति सघन अलङ्कारको प्रयोगविना व्यङ्ग्य शक्तिशाली बन्ने थिएन र यति गहन व्यङ्ग्यको प्रयोगविना अलङ्कार पनि यति धेरै चमत्कारी बन्न सक्ने थिएन भन्ने विचार व्यक्त गर्दै उनलाई समन्वित व्यङ्ग्यालङ्कार चेतनाका कविका रूपमा समेत पुष्टि गरेकी छन् ।

यसरी समालोचक सुधा त्रिपाठीले समसामयिक समाजमा व्याप्त विकृति, बेथिति, विश्वव्यापी, निराशा, कुण्ठा, युगीन सन्त्रास एवम् अधुनातन यान्त्रिक सभ्यतासित सम्बन्धित मानवीय समस्याहरूलाई सहज संवेद्य रूपमा प्रभावशाली किसिमले व्यक्त गर्न सक्षम कवि भूपि शेरचनका कविताका विकास र चरणगत प्रवृत्ति समेत औल्याएकी छन् । भूपिका उनन्तिसवटा व्यङ्ग्यात्मक कविता र एकचालिसवटा कवितामा प्रयुक्त अलङ्कारको परिचय सहित विश्लेषण गरेकी छन् । त्रिपाठीले अलङ्कारका मिश्रित प्रयोक्ता भूपि शब्दालङ्कार नभई अर्थालङ्कारका कविका साथै परम्परित नभई अत्यन्त नवीन एवम् उपेक्षित विम्ब र प्रतीकका प्रयोक्ता कविका रूपमा चिनाउँदै भावसँग संश्लिष्ट भएर आएको अलङ्कार नै उनको कवित्वको शक्ति हो भन्ने निष्कर्ष निकालेकी छन् ।

५.२.३ 'नारीवादको कठघरामा नेपाली साहित्य' समालोचनाको विश्लेषण

सुधा त्रिपाठीका प्रकाशित कृतिहरू मध्ये नारीवादको कठघरामा नेपाली साहित्य एघारौँ कृतिका रूपमा रहेको छ, भने समालोचनाका क्षेत्रमा चौथो समालोचनात्मक कृतिका रूपमा रहेको छ । वि.सं. २०६७ मा साभा प्रकाशनबाट प्रकाशित भएको उक्त समालोचनामा तेह्रवटा छुट्टाछुट्टै शीर्षकका समालोचनात्मक लेखहरू सङ्गृहीत छन् । यस समालोचनात्मक कृतिमा सङ्कलित समालोचनाहरूमा 'नारीवादी चेतनाको संवाहकका रूपमा 'मानुषी' कविता', 'चिसो चूल्हो महाकाव्यमा नारी चिन्तन', औपन्यासिक परिवृत्तमा तरुनी छोरी', 'सहयात्री उपन्यासको नारीवादी विश्लेषण', 'इतिहासको यस घडीमामा पाइने आस्थाको स्वर', 'समाजवादी स्वप्न र सहयात्री उपन्यास', 'पवनका कवितामा युग दर्शनका अभिव्यक्ति', बसिवियाँलोमाथि बसिवियाँलो', 'हामीभित्रका ममाथि विविध आयामिक दृष्टि निक्षेप', 'नेपाली साहित्यमा महिला सहभागिता',

‘लैङ्गिक समानता र साहित्य’, ‘महिला हृदयकी अध्येता देव कुमारी’, ‘प्रगतिशील महिला लेखन : स्थिति, समस्या र सम्भावना’ रहेका छन् । यस समालोचनाका प्रत्येक शीर्षकभित्र रहेर सामान्य चर्चा मात्र गरिएको छ ।

सुधा त्रिपाठीको ‘नारीवादी चेतनाको संवाहकका रूपमा **मानुषी**’ कविता कृतिपरक पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यस समालोचनामा त्रिपाठीले पारिजातको ‘मानुषी’ कवितालाई आफ्नो समालोचनाको विषय बनाएकी छन् जसमा ‘पृष्ठभूमि र परिचय’, ‘मानुषी कवितामा नारीवादी चेतनाको स्वरूप’ र ‘उपसंहार’ जस्ता शीर्षकहरू छनोटमा परेका छन् । त्रिपाठीले पारिजातलाई नेपाली नारीवादी साहित्यकारका साथै नारीवादी आन्दोलन, महिला स्वतन्त्रता र सङ्घर्षकी हिमायतीका रूपमा चिनाउँदै पितृसत्ताका चेपमा पहेलिएका महिलालाई त्यस स्थितिबाट मुक्ति दिलाउनका लागि पुरुषको सहयोगको अपेक्षा गर्दै महिलाको मुक्ति महिलालाई लागि मात्र नभएर समग्र मानव समुदायकै सुख, शान्ति र समृद्धिको कामनासँग जोडिएको कुरालाई ‘मानुषी’ शीर्षकको कवितामा प्रस्तुत गरेको उल्लेख गर्दै उक्त कवितालाई पारिजातको महिलामुक्ति आन्दोलनसँग जोडिएको र स्पष्ट नारीवादी चेत अभिव्यक्त भएको उत्कृष्ट कविताका रूपमा चिनाएकी छन् ।

त्रिपाठीले मानवको पुलिङ्गी स्वरूप मनुष्य भए भैं स्त्रीलिङ्गी स्वरूप मानुषी हो र त्यसैलाई नारीको पहिचान ठानिनुपर्छ भन्ने आग्रहलाई यस कविताले अगाडि सारेको धारणा राख्दै ‘मान्छे’ शब्दमाथि पुरुषले एकलौटी अधिकार जमाउने परम्पराको विद्रोहको प्रकटीकरणका निम्ति मानुषी शब्दको प्रयोग गरिएको चिन्तन व्यक्त गरेकी छन् । यसैगरी सर्वत्र फैलिएको पुरुषवादी हैकमले समाज र संसारलाई विखण्डनतिर धकेलेकाले त्यसैका प्रतिकारका निम्ति, नारीको अस्तित्व जगेर्नाका निम्ति, समाज र संसारमा सम्भौतापूर्ण वातावरण कायम गर्नका निम्ति र संसारलाई करेप्टै लगेको पुरुषको एकलकाँटेपनको उच्छेदनका निम्ति सिर्जिएको नारीवादको नमुनालाई ‘मानुषी’ कविताले प्रस्तुत गरेको उल्लेख गर्दै त्रिपाठीले नारीमुक्ति अभियानमा सरिक हुनका निम्ति पुरुषलाई आह्वान गरी मानव समाजको सुख, समृद्धि र शान्तिका निम्ति प्रस्तुत कविता समर्पित रहेको दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्यस्तै आर्थिक, ऐतिहासिक, भौतिकवादलाई समाजवादी विश्लेषणको आधार बनाइएको ‘मानुषी’ कवितामा नारी समस्या र नारी शोषणको प्रमुख हतियारका रूपमा रहेको नरले नै सामाजिक संरचनामा विद्यमान पितृसत्ताका आडमा नारीमाथि शोषण र उत्पीडन गरेको उल्लेख गर्दै त्रिपाठीले पुरुषवाद कायम भएको पितृसत्तात्मक नीति, नियम र व्यवहारको प्रतिकारको निम्ति

नारीवादको उत्थान भएको जानकारी दिएकी छन् । 'मानुषी' कविताभित्रै मार्क्सवादलाई हेर्ने क्रममा त्रिपाठीले मार्क्सवादले लैङ्गिक शोषणको जग परिवार र निजी स्वामित्वको आरम्भ हो भनेर दिएको तर्क सत्य रहेको जानकारी दिँदै मार्क्सवादी नारीवादले अरू नारीवादले भन्दा नारीमुक्तिको सम्भावनालाई बढी निकट ल्याउने मान्यताभित्र रहेर विश्लेषण गर्दा पारिजातको 'मानुषी' कविता आंशिक रूपबाट अन्य नारीवादबाट प्रभावित भएको र अधिकांश त मार्क्सवादी नारीवादमा निहित रहेको धारणा समेत व्यक्त गरेकी छन् । यसका साथै समाज, संस्कृति, इतिहास र विकासका पाइलाहरूले पुरुषलाई निकै अग्रस्थानमा स्थापित गरे तापनि हृदयको उदारताले भने नारी नै अग्रस्थानमा रहेकी छ भन्ने तथ्यलाई यस कवितामा प्रस्तुत हरेक सन्दर्भले उद्घाटन गरेको निष्कर्ष त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको 'चिसो चूल्हो महाकाव्यमा नारी-चिन्तन' कृतिपरक पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यस समालोचनामा बालकृष्ण समको चिसो चूल्हो महाकाव्यभित्रको नारी चिन्तनलाई आफ्नो समालोचनाको विषयवस्तु बनाएकी त्रिपाठीले पृष्ठभूमि, प्रवेश र परिचय, नारीसमस्या, परिणति र सन्देश, प्रमुख नारी चरित्र, सन्तेको गौरीप्रतिको दृष्टिकोण, लेखकको नरनारीप्रतिको दृष्टिकोणजस्ता शीर्षकभित्र प्रमुख नारी चरित्रका सन्दर्भमा स्मृतीय परिधिका नारी सन्दर्भ, ऐतिहासिक नारी सन्दर्भ, समग्रमा समको नारी पक्षीय चेतनाजस्ता उपशीर्षकहरूको छनोट गरेकी छन् ।

नेपाल राणा शासनबाट मुक्त भई शिक्षामा नयाँ चेतना, जागरण र विकास भई विभिन्न क्षेत्रमा समेत नारीहरूको सक्रियता रहेको समय अर्थात् २०१५ सालमा प्रकाशित भएको चिसो चूल्हो महाकाव्यमा मूल विषय प्रेमजन्य र सन्दर्भ विषय प्रेमेतर रहेको उल्लेख गर्दै त्रिपाठीले महाकाव्यभित्र एकातिर सम्पन्न क्षेत्रीय कुलकी गौरीको दमाई जातको विपन्न सन्तेमाथि बसेको प्रेम र अर्कातिर त्यसै व्यक्तिको तथाकथित जातीय निचता व्यवधान बनेर मार्ग अवरोध बनेका जाति र वर्ग सम्बद्ध यी दुई समस्या प्रमुख चरित्रका व्यक्तिगत समस्या नभएर सिङ्गो नेपालकै सामाजिक समस्या हुन् जसका उत्पीडनमा अन्य असङ्ख्य नरनारीका साथै गौरी र सन्ते पनि परेको जानकारी प्रस्तुत गरेकी छन् ।

पितृसत्तात्मक समाजमा नारीका स्वभाव र चरित्रको निर्माता पुरुष नै हुने गर्छ भन्ने दृष्टिकोण राखेका समले परम्परागत आदर्शको परिपालनालाई नारीका चरित्रको अपरिहार्यताका रूपमा स्विकार्दै युगले नारीबाट अपेक्षा गरेको मर्यादा र आदर्शप्रति समर्पित नारी पात्र (इन्दिरा

आदि) लाई विजयी गराएका तर मनैले मात्र भए पनि परम्परा विचलित रहेका कपिला र गौरी आदिलाई भने पराजयी गराएका कारणले हेर्दा पनि समले चिसो चूल्होकी गौरीले प्राप्त गरेको परिणति मार्फत सम्पूर्ण नेपाली नारीलाई उनीहरूले परम्परागत आदर्शको अनुशरण गर्दा नै जीवनको सफलता अवश्यम्भावी छ भन्ने सन्देश प्रदान गर्न खोजेका छन् भन्ने धारणा त्रिपाठीले राखेकी छन् ।

त्रिपाठीले कुनै किसिमको चारित्रिक उत्थान पतन नभएकी प्रमुख नारी चरित्रका रूपमा प्रयोग गरिएकी समकी अस्तित्वहीन गौरीका जीवनको स्वाधीनता महाकाव्यको कथानकभित्र कतै पनि सङ्केतित भएर आएको छैन जसका कारण पनि समको उदारता र मानवता पुरुषवादमा मात्र सीमित भएको दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् । समले उनका नारी पात्रलाई प्रमुख भूमिका दिए तापनि करुणा र सहानुभूतिका साथै पितृसत्ताले परिभाषित गर्ने गरेको नारीका अबोलापन, कातरता, रुन्चे, पिलन्धरेपन, आत्मपीडन परम्परागत आदर्शप्रति समर्पण आदि पक्ष मात्र उपस्थित गराएका छन् भन्ने विचार त्रिपाठीले यस समालोचना प्रस्तुत गरेकी छन् ।

प्रस्तुत महाकाव्यमा अनमेल विवाहका साथै उच्च र निम्न वर्ग एवं तथाकथित माथिल्लो र तल्लो जातका बिचको प्रेम प्रसङ्गलाई आफ्नो विषयवस्तुका रूपमा चयन गरी आफ्नो प्रस्तुतिलाई बढीभन्दा बढी 'बिकाउ माल' बनाउने चलचित्रिय शैलीको अनुकरणमा आधारित रहेको उल्लेख गर्दै यसै कारणले पनि नारीको व्यक्तित्वलाई नभएर सम कृतिका पाठकको सङ्ख्या चाहिं मध्यनजर गर्न पुगेको कुरा त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् । नारीको जीवन दुःखी छ भन्ने बुझेका समले त्यस दुःखको निवारणको माध्यम उनीहरूप्रतिको करुणा र सहानुभूति होइन भन्ने चाहिं बुझ्न सकेका छैनन् जसका कारण उनको नारीप्रतिको दृष्टिकोण यसै बिन्दुमा आएर दुर्घटित भएको उल्लेख गरेकी त्रिपाठीले नारी पक्षीय कोणबाट उनका रचनाको मूल्याङ्कन गर्दा उनी अधिकांशतः कटु आलोचनाका सिकार हुने परिस्थितिका चौतारामा उभिएका छन् भन्ने धारणा व्यक्त गरेकी छन् । त्यस्तै पुरुष समुदायलाई उनीहरू नारीका आसपासबाट मुक्त हुन सके मात्र समाज र राष्ट्रकै हितका निम्ति सक्षम र उदात्त जीवन बाँच्न सक्छन् भन्ने सन्देश प्रदान गर्नुको कुनै औचित्यबोध नै नगरेको विचार समेत त्रिपाठीले यस समालोचनामा प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै समालोचक सुधा त्रिपाठीले निष्कर्षमा चिसो चूल्हो महाकाव्यको नारीप्रतिको दृष्टिकोण भनेको पितृसत्तात्मक समाजको भर्खरै सामन्ती संस्कृतिबाट अन्य सन्दर्भमा त मुक्ति चाहिरहेको तर नारीका अस्मिताका सन्दर्भप्रति

आस्थावान् पुरुष लेखकको भावुकताजन्य आदर्श दृष्टिकोण हो जहाँ नारी करुणाकी सिकार बढी हुन पुगेकी छ (त्रिपाठी, २०६७ : ४४/४५) भन्ने धारणा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको 'औपन्यासिकताका परिवृत्तमा तरुनी छोरी' समालोचना कृतिपरक पद्धतिमा आधारित छ । यस समालोचनामा त्रिपाठीले शङ्कर कोइरालाको उपन्यास तरुनी छोरीलाई आफ्नो अध्ययनको केन्द्र बनाई उपन्यासको आख्यानभिन्न वस्तु, पात्र तथा परिवेशलाई तथा प्रस्तुतीकरणभिन्न संरचना, भाषाशैली, प्रतीकविम्बलाई समावेश गर्दै उपन्यासका विविध पक्षलाई समग्रतामा समेटेकी छन् ।

त्रिपाठीले नेपालको पूर्वी पहाडी भेकको ग्रामीण जनजीवनका साथै सामाजिक यथार्थ मूल विषयवस्तुको भिनो आख्यानमा आधारित प्रस्तुत उपन्यासले जीवनको समग्रता दिन र विद्रोहको सही गति समात्न नसके तापनि लेखकको तत्कालीन व्यवस्था विरोधी भावलाई भने प्रकट गरेको दृष्टिकोण राखेकी छन् । वर्गीय पात्रहरूको प्रयोग गरिएको उनको यस उपन्यासमा जोगीराम सर्वाधिक उच्च सम्भावना लिएर आएको वर्गीय पात्रलाई उपन्यासकारले यथोचित स्याहारसम्भार गर्न सकेका भए उपन्यासको स्तरमा नै धेरै भिन्नता अनुभूत हुन सक्ने विचार राखेकी त्रिपाठीले उपन्यासमा प्रस्तुत वस्तु, पात्र र तिनको बोलीचाली, प्रस्तुतिको चित्रात्मकता आदि अनेक सन्दर्भले उपन्यासकारले आफूलाई आञ्चलिक उपन्यासकारका पङ्क्तिमा उभ्याउन सफल भएको धारणा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

लघु आयामको प्रस्तुत उपन्यास प्राकृतिक शैलीशिल्पले सजिए पनि भाषिक सन्दर्भले भने कथाकारको उपन्यासकारितालाई सीमाङ्कित गरिदिएको विचार प्रस्तुत गर्दै धेरै लेखेर पनि सफलता नपाउने शङ्कर (त्रिपाठी, २०६६ : ६६) को यो उपन्यास लेखकीय सम्भाषण, व्याख्या, लामा-लामा संवाद, एउटै सन्दर्भको लामो दिक्कलाग्दो प्रस्तुति, अनपेक्षित पात्र र सन्दर्भको उपस्थितिजस्ता औपन्यासिक दुर्गुणबाट मुक्त भएको जानकारी त्रिपाठीले यस समालोचनामा दिएकी छन् ।

त्यसैगरी तरुनी छोरीका सट्टा बौलाहा छोरोका केन्द्रीयतामा उपन्यास रचिएर बुकीको कथालाई जोगीरामको कथाभिन्न अन्तर्भूत गरी प्रस्तुत गरिएको भए उपन्यासको स्तर नै बेग्लै हुने धारणा राखेकी त्रिपाठीले तरुनी छोरीको केन्द्रीयतामा जोगीको कथालाई प्रस्तुत गर्नु सायद लेखकको तत्कालीन राजनीतिक विवशता थियो तर यसै परिस्थितिमा पनि जोगीको सन्दर्भले उपन्यासमा प्राण सञ्चार गराएको छ अन्यथा यो उपन्यास नेपाली साहित्यको इतिहासमा लागेको एउटा लिसो सिवाय केही हुने थिएन भन्ने निष्कर्ष समेत प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको 'सहयात्री' उपन्यासको नारीवादी विश्लेषण' कृतिपरक पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यस समालोचनामा त्रिपाठीले प्रदीप जवालीको सहयात्री उपन्यासको विश्लेषणका क्रममा पृष्ठभूमि, नारीसमस्या शीर्षक र त्यसभित्र निम्न पुँजीवादी संस्कारले उमारेका समस्या उपशीर्षकका साथै पारिवारिक समस्या, सामाजिक समस्या, परिणति र सन्देश, लेखकको नारीप्रतिको दृष्टिकोणको विश्लेषण र निष्कर्ष आदि शीर्षकहरूको चयन गरेकी छन् । नारीलाई प्रमुख भूमिका प्रदान गरी सामाजिक शक्ति आन्दोलनका कोणबाट लेखिएको सहयात्री उपन्यासमा थोरै सहरिया शिक्षित सम्पन्न महिलाको र अधिकांश ग्रामीण अशिक्षित विपन्न महिलाका समस्याको व्याख्या विश्लेषण गर्नुका साथै हरेक समस्याको एउटै औषधिका रूपमा समाजवादी रूपान्तरणलाई पहिल्याइएको तथ्यलाई अगाडि सार्दै त्रिपाठीले नारी उत्पीडन अब वर्गीय र भौतिक मात्र नभई मनोवैज्ञानिक समस्या समेत बनिसकेको कुरा चाहिँ यस उपन्यासले बिसर्पित गरेको छ भन्ने धारणा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

नेपाली समाजको नारीप्रतिको परम्परागत दृष्टिकोण रहस्यवादका जालमा बेरिएको र उनीहरू आफ्ना हरेक पीडा 'पूर्वजन्मको कर्मको फल' हो भन्ने भ्रम दिएर पीडक पक्ष सजिलै उमिकरहेको अवस्थामा यस उपन्यासले नारी पीडाको अर्थ लगाउन सिकाएको छ र भाग्यका भरमा नपरी यसबाट मुक्ति प्राप्त गर्ने गोरेटो देखाएको उल्लेख गर्दै समाजको सामन्ती संरचना र पञ्चायती कुराजनीतिको अन्त्यसँगै नारी पीडाको पनि अन्त्य हुने भएकाले सबै शोषित पीडित महिला सामाजिक मुक्ति आन्दोलनको सहयात्री बन्नुपर्छ भन्ने लेखकीय दृष्टिकोण उपन्यासमा प्रस्तुत भएको विचार त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सहयात्री उपन्यासलाई नेपाली समाजकी एउटा स्नातक महिलाको आत्मरूपान्तरण र सामाजिक रूपान्तरणका निमित्तको सङ्घर्षपूर्ण प्रयासको कथाका रूपमा प्रस्तुत गर्दै मानिस अचाक्ली पिसिएका बखत उचित मार्गनिर्देशनद्वारा उसका पीडाबाट निःसृत ऊर्जाको सदुपयोग गर्न सके त्यसबाट समुदायलाई मात्र होइन, राष्ट्रलाई नै समुचित भविष्य निर्माणका सन्दर्भमा लाभ हासिल हुन सक्छ भन्ने कुराको दृष्टान्त सहित लेखिएको यस उपन्यासको दीर्घकालीन लक्ष्य समाजवाद स्थापना र अल्पकालीन लक्ष्य निरङ्कुश तानाशाही पञ्चायती व्यवस्थाको उच्छेदनका निमित्त साहित्यतर्फ योगदान गर्नु रहेको कुरा त्रिपाठीले यस समालोचनामा प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै उपन्यासमा महिला अस्मिताका कोणबाट हेर्दा केही त्रुटि देखिए तापनि समग्रमा यो महिलाका अहितका पक्षमा लेखिएको भने नभएको उल्लेख गर्दै त्रिपाठीले सामाजिक मुक्तिभित्रै महिला मुक्ति

पनि निहित हुन्छ भन्ने दृष्टिकोणबाट रचना गरिएको प्रस्तुत उपन्यासमा सिङ्गो समाजवादी आन्दोलनकै पहिचानका रूपमा देखा परेका महिला पीडाका मनोवैज्ञानिक पक्षलाई उपन्यासकारले बेवास्ता गरे पनि भूमिगत वामपन्थी राजनीतिक आन्दोलनमा रहेको महिलाको योगदानको कदर गर्दै लेखिएको यो उपन्यास महिलाका कोणबाट हेर्दा समष्टिमा भने सफल रहेको धारणा समेत यस समालोचनामा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको 'इतिहासको यस घडीमा पाइने आस्थाको स्वर' कृतिपरक समालोचना पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यस समालोचनामा त्रिपाठीले कवि कृष्ण सेन 'इच्छुक' को इतिहासको यस घडीमा कविता सङ्ग्रहभित्र सङ्कलित ३१ वटा कविताको विश्लेषण गरेकी छन् जसमा विषय प्रवेश, कविताको परिचय, कविताको विश्लेषणजस्ता शीर्षक र यसैभित्र नेपाली समाजको स्थितिबोध, ग्रामीण परिवेश प्रस्तुतिको चाह, श्रमप्रति अगाध श्रद्धा, वर्गीय पक्षधरता, महिला शोषणको विरोध, साम्राज्यवादको विरोध, अवसरको खोजीमा विदेसिने प्रवृत्तिको विरोध, क्रान्तिकारी विश्व आशावाद, सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रियवाद, जनयुद्धका कथाव्यथा र उपसंहार आदि उपशीर्षक राखेकी छन् । सिङ्गो मानव समुदायको मुक्तिको सपना, त्यसको प्राप्तिका लागि वर्ग सङ्घर्ष र त्यसबाट अझ अघि बढेर गरिएको वर्गयुद्धलाई आफ्नो लेखनगत पृष्ठभूमिका रूपमा रोज्ने कवि 'इच्छुक' का यस सङ्ग्रहका कविताहरू क्रान्तिकारी आस्थाको प्रतिनिधित्व गर्दै यही क्रान्तिकारिताभित्र पनि विविधतामा प्रस्तुत हुन पुगेका छन् भन्ने दृष्टिकोण राखेकी त्रिपाठीले तिनै विविधतालाई यस समालोचनामा पर्गेल्ने प्रयत्न गरिएको जानकारी प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले कवि सेनले जुन लक्ष्य प्राप्तिका निम्ति आस्था विसाएर अघि बढे, शब्दले पनि त्यसको पुर्पक्ष गरे र कर्मले पनि त्यसकै सिपाही बने भन्ने उल्लेख गर्दै कविले आफ्ना कवितामा जेजस्ता भाव व्यक्त गरे ती सबै एउटा सुयोग्य क्रान्तिकारी व्यक्तित्वका अनुकूल छन् भन्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यस्तै नेपाली समाजको सटिक अध्ययन गरेर सिधासादा असचेत आम जनता र तिनको बासस्थान बनेको ग्रामीण परिवेशलाई विशेष स्नेह गरेर श्रम र श्रमजीवी जनतामाथि अगाध श्रद्धाभाव राख्दै तिनकै हितकामनाले डोरिएर सधैंभरि शोषक र शासकको विरोध तथा शोषित र शासितहरूको वकालत गर्दै, शोषित-उत्पीडित महिलाप्रति पनि विशिष्ट चासो व्यक्त गर्दै जनतालाई सधैं बन्धनमा राख्न प्रयत्नरत सामन्तवाद र साम्राज्यवादको उछित्तो काह्दै कविले जुन क्रान्तिकारी विश्व आशावाद प्रकट गरेका छन्, जुन सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रियतावाद अँगालेका छन् त्यसले उनलाई जनयुद्धको सिपाही हुन सक्ने अत्यन्त सुयोग्य व्यक्तिका रूपमा प्रस्तुत गरेको भन्ने

विचार त्रिपाठीले यस समालोचनामा व्यक्त गर्दै कविताहरू कवि सेनकै पर्याय र उनको अनुपस्थितिमा पनि उपस्थितिकै बोध गराइरहने किसिमका छन् भन्ने भाव समेत प्रस्तुत गरेकी छन् ।

कविताको अन्तर्वस्तुमा भुलेर कवि सेनले रूप पक्षको अवहेलना नगरेको बताउँदै त्रिपाठीले अधिकांश नवीन विम्बसज्जा रहेका उनका कवितामा मूलतः उपमा र रूपक तथा अन्य अलङ्कारको समेत उपस्थिति रहेको चिन्तन व्यक्त गरेकी छन् । यसका साथै सरल शब्दशैया, उत्पीडित वर्गको पक्षधरता, अलङ्कारको यथोचित प्रयोगले कवि सेन **घुम्ने मेचमाथि अन्धो मान्छे** कालीन कवि सिद्ध भएको उल्लेख गर्दै त्रिपाठीले अझ क्रान्तिकारी भावधाराका दृष्टिले त उनले भूपिका कवितालाई पनि माथ गरेको कुरा बताएकी छन् । अझ यो योग्यता समेत थप्दा सेन भूपिभन्दा एक पाइला अगाडिका कविका रूपमा प्रकट भएका छन् भन्ने चिन्तन व्यक्त गर्दै त्रिपाठीले जम्माजम्मीमा कवि सेन नयाँ नेपालका लागि अन्याय अत्याचार चरम रहेको युगका एक अनमोल उपहार नै हुन् भन्ने निष्कर्ष समेत यस समालोचनामा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको 'समाजवादी स्वप्न र **सहयात्री** उपन्यास' कृतिपरक पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यसमा त्रिपाठीले प्रदीप ज्ञवालीको **सहयात्री** उपन्यासलाई आफ्नो समालोचनात्मक अध्ययनको केन्द्रबिन्दु बनाएकी छन् । पृष्ठभूमि, प्रवेश र परिचय, **सहयात्री** उपन्यासको विश्लेषण, **सहयात्री** उपन्यासमा उठाइएका प्रश्नहरू, चरित्र र चरित्रचित्रण, परिवेश चित्रण, विषयवस्तु र निष्कर्षजस्ता विभिन्न शीर्षक-उपशीर्षकको चयन गरेकी त्रिपाठीले जनताको क्रान्तिकारी आशा एवं नयाँ संसार निर्माण गर्ने हुट्हुटी र अठोट खिपिएको उपन्यास समाजवादी यथार्थवादको एउटा नमुनाका रूपमा प्रस्तुत भएको विचार व्यक्त गरेकी छन् ।

समाजवादी साहित्यले शोषणमा आधारित सामाजिक व्यवस्थालाई समूल नष्ट गर्ने उद्देश्य राख्छ भन्ने उल्लेख गर्दै त्रिपाठीले **सहयात्री** उपन्यासले यही उद्देश्य बोकेको कुरा व्यक्त गरेकी छन् । नेपालको राष्ट्रिय, सहरिया र ग्रामीण सामाजिक परिवेशका पुस्तान्तरका अन्तर्विरोध, लैङ्गिक वैषम्य, अशिक्षा, सामन्ती संस्कार, चेतनाशून्यता, बगुन्द्रबथान सन्तान जन्माउने परिपाटी, देवरानी-जेठानीका बिचको प्रतिस्पर्धा, बुहारीलाई अर्घेलो ठहर्‍याउने परिपाटी, निम्नपुँजीवादी मानसिकता र व्यवहार, कुशासनको भ्रष्टता र त्यसबाट जोगिन आफ्नै छोरी समेतलाई गुण्डालाई जिम्मा लगाउने पुरुष चरित्र आदिसँग सम्बन्धित समस्याका जगमा उपन्यासको कथ्य आधारित रहेको र यिनैका माध्यमले सामाजिक रूपान्तरणको दृष्टिकोणलाई अघि सारिएको उल्लेख गर्दै त्रिपाठीले उपन्यासभित्र

सामाजिक रूपान्तरणको प्रश्नलाई मार्क्सवादी विश्वदृष्टिकोणले मार्गदर्शन गरेको विचार समेत व्यक्त गरेकी छन् ।

पहिलो खण्डमा पूर्ण राजनीतिक बन्न पुगेको **सहयात्री** उपन्यासमा मूलतः निम्न मध्यम वर्गीय, समस्या पीडित र पछौटे परिवार एवं समाजभित्रका अन्तर्विरोधहरू केलाउँदै राजनीतिक सक्रियता र सङ्घर्षले सबै समस्याको समाधान हुन्छ भन्ने आग्रह निष्कर्षका रूपमा अगाडि आएको कुरा त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् । त्यस्तै नवराज, ज्योति र कृष्ण मार्फत राजनीतिक प्रचारलाई औपन्यासिकीकरण गरी यिनै तिनजना पात्रजस्ता राजनीतिकर्मीको आस्था र विश्वास त्यस बेलाको भूमिगत राजनीतिको कालखण्डमा साह्रै बलिया हुन्थे भन्ने विचार समेत त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको 'पवनका कविता : युग दर्शनका अभिव्यक्ति' कृतिपरक पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यस समालोचनामा त्रिपाठीले पवन चामलिङ 'किरण' का सन् १९७६ देखि ८५ सम्म लेखिएका कविताहरूको सँगालोका रूपमा रहेको **अन्त्यहीन सपना : मेरो विपना** कविता सङ्ग्रहलाई आफ्नो समालोचनाको केन्द्रबिन्दु बनाएकी छन् । परिवर्तनको अपेक्षा, सङ्गठनको महत्त्वबोध, भौतिकवादी दृष्टिकोण, वर्ग सचेतता, युद्ध विरोधी स्वर, क्रान्तिको पक्षधरता, निराशाका कुरा, साम्यवादको कामना, सिक्किमको पीडा र निष्कर्षजस्ता शीर्षकहरू राख्न पुगेकी त्रिपाठीले सिक्किम पराधीन भइसकेपछिका कविका अनुभूतिहरू समेटिएका पवनका कवितामा एकातिर आम शोषित पीडित मानव मुक्तिका कुरा छन् भने अर्कातिर पराधीनताले उब्जेका सिक्किमेली मनका पीडा व्यक्त भएको कुरा उल्लेख गरेकी छन् ।

भारतीय विस्तारवादले थोपरेको सिक्किम परतन्त्रताको पीडा बोकेको तथा विस्तारवाद र साम्राज्यवादी हिंसा विरोधी कवि पवन चामलिङका कवितामा भौतिकवादी जीवनदृष्टि र सचेत वर्ग पक्षधरता पाइने दृष्टिकोण प्रस्तुत गर्दै त्रिपाठीले आमूल परिवर्तनका हिमायतीका रूपमा रहेका कविमा आमूल परिवर्तन जनक्रान्तिविना प्राप्त हुँदैन भन्ने स्पष्ट दृष्टिकोण रहेको विचार प्रस्तुत गरेकी छन् । आफू पनि क्रान्तिमाथि असीमित आस्था राख्ने र अरूलाई पनि त्यसो गर्न आह्वान गर्ने कविको विचारमा द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विशेषता पाइने चिन्तन त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् । उनले क्रान्तिको स्वीकार र आह्वान गर्दागर्दै पनि त्यसमा देखिएका विसङ्गतिको विरोध गर्दै जनता शोषित हुनुका पछाडि तिनका आफ्नै कमजोरी उदाङ्गो भएको देखाउने कवि सिक्किम पराधीन हुनुका पछाडि त्यहाँका जनताको पनि कमजोरी रहेको तथ्य औल्याउन पुगेका छन् भन्ने दृष्टिकोण

प्रस्तुत गरेकी छन् । त्रिपाठीले पवनका कवितामा साम्यवादी लक्ष्य स्पष्टै इङ्गित भएको उल्लेख गर्दै जम्माजम्मीमा यिनी सबै विशेषताहरूको निचोड निकाल्दा प्रगतिवादी कविका रूपमा सिद्ध भएको धारणा समेत प्रस्तुत समालोचनामा व्यक्त गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको 'बसिबियाँलो माथि बसिबियाँलो' समालोचना कृतिपरक पद्धतिमा आधारित रहेको छ । यस समालोचनामा त्रिपाठीले डिल्लीराम तिमसिनाको **बसिबियाँलो** नामक पुस्तकभित्रका सामग्रीलाई विभिन्न भाषा, शिक्षा, साहित्य समीक्षा, व्यक्तित्व परिचय र अन्य गरी पाँच वर्गमा विभाजन गरी अध्ययन गर्न सकिने कुरा व्यक्त गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले **बसिबियाँलो** नामक पुस्तकको अध्ययन गर्दा तिमसिनाको व्यक्तित्वमा निहित विभिन्न प्रवृत्तिहरू उद्घाटित भएको उल्लेख गर्दै यस पुस्तकले उनको व्यक्तित्वको परिचयलाई प्रस्तुत गरेको विचार व्यक्त गरेकी छन् । आफ्नो सम्पूर्ण जीवन शिक्षा क्षेत्रमा अर्पित गर्न पुगेका र जीवनमा शिक्षाको महत्त्वलाई सर्वाधिक देखेका तिमसिनाले मानिस शिक्षाले गर्दा नै वास्तविक अर्थमा मानिस बन्छु भन्ने धारणा आफ्ना पुस्तकका प्रत्येक रचनाका पृष्ठभूमिमा उल्लेख गरेको कुरा त्रिपाठीले यस समालोचनामा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले जतिसुकै दुःख कष्ट भए पनि शिक्षार्जन गर्नु मानिसको प्रथम कर्तव्य रहेको कुरालाई विभिन्न व्यक्तित्वका दृष्टान्त मार्फत अधि सारेका तिमसिनाले शिक्षालाई नै उन्नति मार्गको प्रवेशद्वार खोल्ने साँचोका रूपमा लिएका छन् भन्ने धारणा व्यक्त गरेकी छन् । त्यस्तै शिक्षा बाहेक उनले राष्ट्रसेवा, समाजसेवा, साहित्यसेवा, भाषासेवा आदिलाई मानव जीवनका विभिन्न चरणका कर्तव्य मान्दै हिन्दुधर्म र प्रजावत्सल राजसंस्थामाथि पनि आफ्नो आस्था र श्रद्धा व्यक्त गरे तापनि अरू धर्ममाथिको अनादर र जनतामाथि निरङ्कुशतन्त्र चलाउने राजामाथिको आदर भने उनलाई स्वीकार्य नभएको दृष्टिकोण त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् । जीवनको समृद्धि र राष्ट्रको सभ्यताको संवर्द्धन गर्ने काम साहित्यले गर्ने हुनाले उनले साहित्यकार र साहित्यको उच्च महत्त्व परिलक्षित गरी यसैका सेरोफेरोमा **बसिबियाँलो** पुस्तकको निर्माण गरेका छन् भन्ने निष्कर्ष समेत त्रिपाठीले यस समालोचनामा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको 'हामीभित्रका ममाथि विविध आयामिक दृष्टिनिक्षेप' समालोचना कृतिपरक पद्धतिमा आधारित छ । यस समालोचनामा त्रिपाठीले डा. विष्णुराज आत्रेयको **हामीभित्रका म** उपन्यासलाई आफ्नो समालोचनात्मक विषयको केन्द्रबिन्दु बनाएकी छन् । पृष्ठभूमि, परिचय, सन्दर्भ, प्रमुख समस्या, परिणति र सन्देश, 'म' का एकाइहरू (प्रतिभा, राम प्रसाद, पार्वती, अनुराग, लोहनी)

पात्रगत अन्तरसम्बन्ध, लेखकीय दृष्टिकोण र निष्कर्षजस्ता विभिन्न शीर्षक उपशीर्षक राखेकी त्रिपाठीले २०३६ सालभन्दा पहिलेको समय सन्दर्भमा लेखिई २०३६ सालमा प्रकाशित प्रस्तुत उपन्यासभिन्न नेपालको राजनीतिक इतिहासमा भएको २०३६ सालको विद्यार्थी आन्दोलन, २०४२ सालको सत्याग्रह र बमकाण्ड एवं २०४६ सालको प्रजातन्त्र पुनः स्थापनाको आन्दोलनको रन्को नगुञ्जिसकेको सामाजिक सन्दर्भका मानिसको सङ्क्रमण कालीन मानसिक सन्दर्भका केन्द्रीयताका विषयवस्तु समेटिएको धारणा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले उपन्यासका प्रारम्भ र मध्यतिर उपन्यासकार परम्परागत हुन खोजेका हुन् कि आधुनिक हुन खोजेका हुन् ? अथवा आधुनिक हुन खोजेर पनि संस्कारवश पुरातन पो भइराखेका हुन् कि ? अथवा पुरुषका सन्दर्भमा परिवर्तनकामी र महिलाका सन्दर्भमा परिवर्तन विरोधी पो हुन् कि भन्ने जिज्ञासा उपस्थित भएको उल्लेख गर्दै यिनै दृष्टिकोणको अन्योलमा नै उपन्यासको यात्रा विसर्जनको छेउमा पुगेको विचार प्रस्तुत गरेकी छन् ।

जीवन आदर्श रुढ नभएर यथार्थपरक र व्यावहारिक हुनुपर्छ र जीवनशैलीको परिवर्तनसँगै परिवर्तित हुँदै जाने लचकता त्यसमा रहनैपर्छ । अन्यथा जीवन विसङ्गत बन्दछ र व्यक्ति द्वैध प्रकृतिको हुन्छ, भन्ने दृष्टिकोण राखेकी त्रिपाठीले एक-अर्काको ठिक उल्टो र ती दुईथरिका बिचमा पिसिन विवश भएको जीवन विसङ्गत बन्दछ भन्ने चिन्तन प्रस्तुत समालोचनामा व्यक्त गरेकी छन् । उपन्यासका अन्त्यमा पार्वती र अनुरागको दाम्पत्य सम्बन्ध कायम भई उनीहरूले प्रतिभाको उत्तराधिकार ग्रहण गरेको देखाउनुले उपन्यासलाई एउटा निष्कर्षतिर डोच्याएको छ र त्यस निष्कर्षले समाज परिवर्तनको आकाङ्क्षालाई अगाडि सारेको छ भन्ने अभिव्यक्ति त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् । त्रिपाठीले यस उपन्यासकी पात्र प्रतिभाको पुस्ताले निस्सीम बनाउन नसकेको व्यक्ति द्वैधताको अचानोमा पर्याप्त चेष्टिएर पनि अनुरागको आफ्ना घरमा पालिएकी कामदार पार्वतीसँगको वैवाहिक सम्बन्धले त्यस घरका व्यक्तिहरूको व्यक्तित्वको द्वैधताको निरन्तरतालाई खण्डित गरेको र यस कार्यले नेपाली समाजको बन्द स्वभावलाई क्रमशः खुलातर्फ अग्रसर गराउने प्रयत्न गरेको छ भन्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् ।

संस्कृति सभ्यताको प्रतीक हो तर त्यसले रुढता अँगाल्यो र आफ्ना ठाउँबाट टसको मस नै भएन भने फेरि त्यही नै असभ्यताको प्रतीक बन्न पुग्ने धारणा राख्ने त्रिपाठीका अनुसार संस्कृतिको परिवर्तनको क्रम निरन्तर चलिरहेको हुन्छ र व्यक्ति सांस्कृतिक परिवर्तनका पक्षमा हुन्छ तर समाज अधिकांशतः त्यसको विरोधमा उभिएको हुन्छ । यसैले उनले यस्तो सांस्कृतिक सङ्घर्ष भनेको एक

किसिमले व्यक्ति र समाजको सङ्घर्ष पनि हो भन्ने विचार प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै उपन्यासका अन्त्यमा अनुरागले पार्वतीसँग विवाह गरेर समाजलाई पौँठाजोरीको हाँक दिनुले उपन्यासमा नवीन संस्कृतिको उद्बोधन भएको तथ्य उल्लेख गर्दै त्यसले व्यक्तिले समाजलाई परिवर्तनका गारेटोमा अगाडि बढाउनुपर्छ भन्ने निष्कर्ष प्रवाहित गरेको छ भन्ने पुष्टि त्रिपाठीले यस समालोचनामा गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको 'नेपाली साहित्यमा महिला सहभागिता' ऐतिहासिक पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यस समालोचनामा त्रिपाठीले नेपाली साहित्यमा महिला लेखनको सहभागिता वि.सं. १९९० देखि यताको इतिहासलाई क्रमशः प्रथम चरण १९९० देखि २०१९, द्वितीय चरण २०२० देखि २०३५ र तृतीय चरण २०३५-३६ प्रस्तुत गरी त्यसअघि देखिएको महिला लेखनलाई पृष्ठभूमिका रूपमा प्रस्तुत गरिएको जानकारी दिएकी छन् । प्रस्तुत समालोचनामा त्रिपाठीले चरणगत विभाजन गर्दै कविता, कथा, उपन्यास, समीक्षा-समालोचना, निबन्ध, नाटक/लघु नाटक, महाकाव्य र खण्डकाव्यजस्ता शीर्षक राखी प्रत्येकको ऐतिहासिक विश्लेषण गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले वि.सं. १९९० को दशकमा प्रकाशित शारदा पत्रिकाले महिला स्रष्टाको उत्थानमा महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह गरेको विचार व्यक्त गर्दै शारदा कालमा देखिएका सबै स्रष्टाले आजको महिला लेखनको इतिहासका लागि महत्त्वपूर्ण पृष्ठभूमि तयार पारी 'हामीले पनि लेख्नु हुने रहेछ' भन्ने मात्र होइन 'हामीले पनि लेख्नै पर्ने रहेछ' भन्ने भाव तत्कालीन महिलामा जागृत गराउनुमा शारदा पत्रिकाको महत्त्वपूर्ण योगदान रहेको कुरा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

नेपाली साहित्यको अहिलेसम्म प्राप्त इतिहास अनुसार प्राणमञ्जरीदेवी नै आद्य महिला स्रष्टाका रूपमा उल्लेख गरेकी त्रिपाठीले महिला स्रष्टाहरूको समग्र साहित्य यात्रामा पारिजातलाई सर्वोपरि स्रष्टाका रूपमा चित्रण गर्दै नेपालमा विद्यमान आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक आदि कुराहरू उन्नति मार्गमा बाधक बनेकै कारण नेपाली साहित्यमा पुरुष लेखकका तुलनामा महिला लेखकको उपस्थिति न्यून रहन गएको विचार व्यक्त गरेकी छन् ।

पुरुषका सन्दर्भमा बढी उदार र महिलाका सन्दर्भमा बढी कठोर हुने उपर्युक्त बन्धनहरूले गर्दा साहित्यिकमा या अन्य सबै प्रकारका गतिहरूमा पुरुष सधैं अग्रगतिमा रहन्छ भन्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत गर्न पुगेकी त्रिपाठीले सबैका लागि समान भनिएको शिक्षा प्राप्त गर्न पनि महिलाले पारिवारिक सामाजिक युद्ध गर्नुपर्ने अवस्था, यी सबै बन्धन फाँड्दै अगाडि आइपुगेका महिलाहरूले महिला भएकै कारणले हेपिनुपर्ने कुराका विरुद्ध अर्को निर्णायक युद्ध गर्नुपर्ने विवशता,

आत्मनिर्भरतामा परिवारका पुरुष सरह भएर पनि घर गृहस्थी र बालबच्चाको एककाँधे जिम्मेवारी बोध गर्नुपर्ने बाध्यताजस्ता कुराले पनि महिलालाई अभि बढी विचलित तुल्याई समर्पणका भावले लेखनमा आफूलाई प्रवृत्त तुल्याउन नसकेको विचार प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै मनमस्तिष्कलाई जीवनवृत्तका सन्दर्भहरूले यसरी जकडिराखेको स्थितिमा सिर्जना पलाउनु भनेको त मरुभूमिमा कुवा खन्नुजत्तिकै हो, स्तरीयताको कुरा र पुरुष लेखकसँग प्रतिस्पर्धा गर्ने कुरा त कहाँ हो कहाँ भन्ने धारणा समेत त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् ।

अनुभूतिको एक लहरको पोखाइमा कविता र कथा रचिन सक्ने विधा भएकाले ती विधा उर्वर हुँदै गएको स्पष्ट अभिव्यक्ति दिँदै उपन्यास, निबन्ध, समालोचना, खण्डकाव्य, महाकाव्यजस्ता विधामा अत्यधिक समय, भावुक एकाग्रता, बौद्धिक चिन्तन, गहन अध्ययनको आवश्यकता रहेका कारण पनि यी विधामा महिला लेखकहरूको उपस्थिति न्यून हुन गएको तथ्य त्रिपाठीले यस समालोचनामा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले लेखन जीविकाको बाटो हुन नसकिरहेको हाम्रो जस्तो मुलुकमा पेट पाल्ने सन्दर्भमा नै सम्पूर्ण लेखकीय उर्जाको दुरुपयोग भइरहेको अवस्थामा सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक आदि सन्दर्भका रुढिनिबद्ध कृविचारले महिलाको मस्तिष्क भुटिएन र तिनले उचित अवसर पाउँदै गए भने ती पनि कम छैनन् भन्ने दृष्टान्त पारिजातका माध्यमबाट प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यस्तै त्रिपाठीले पितृसत्ताका सेपमा पहुँलिएर पनि नेपाली साहित्यको उषा कालदेखि नै सचेत असचेत जेजस्तो रूपमा भए पनि सृजनधर्मिता अँगाल्दै आउनु चानचुने कुरा नभएको उल्लेख गर्दै विभिन्न पृष्ठभूमिगत सन्दर्भमा हेर्दा नेपाली साहित्य इतिहासको निर्माणका सन्दर्भमा महिला समुदायबाट जे जति योगदान भएको छ त्यसले आजका महिला स्रष्टाका मनमा हीनताबोध उमाने अवस्था सृजना नगरी बरु महिला लेखनको प्रगतिको यस इतिहासले उनीहरूको अग्रगामिताका निम्ति बल प्रदान गर्ने छ भन्ने धारणा प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै ढुङ्गामुनि चेपिएर पहुँलिएको भारको मौलिक रूप त्यो पहुँलोपन होइन, खुल्ला आकाशमुनि बस्न पाउनासाथ त्यसले आफ्नो मौलिक रङ्ग र स्वरूप ग्रहण गर्न थालिहाल्छ भन्ने दृष्टान्त दिँदै त्रिपाठीले अशिक्षा र रुढिको अजडको चट्टान मुनिबाट उम्किन पाएका महिलाहरूले लिएको रङ्ग र स्वरूपबाट उक्त कुरा प्रमाणित भइसकेको विचार समेत यस समालोचनामा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको 'लैङ्गिक समानता र साहित्य' समालोचनात्मक लेखमा त्रिपाठीले पृष्ठभूमि, परिचय, साहित्यिक मञ्चमा लैङ्गिक समानता, नेपाली नारी साहित्यमा लैङ्गिक प्रस्तुतिको स्थिति,

विद्यमान लैङ्गिक विषमताका कारक तत्त्व, युगको अपेक्षाको स्वरूप, युगको अपेक्षापूर्तिको स्वरूप र साहित्यिक मञ्चमा लैङ्गिक समानता र साहित्यको विश्लेषण गर्ने क्रममा त्रिपाठीले महिला र पुरुष गरी जैविक आधारमा दुई प्याकमा विभाजित मानव समुदायमा 'मान्छे' भनेको 'पुरुष' हो भन्ने रुढ बुझाइभित्र 'मान्छे' शब्दका अगाडि 'स्वास्नी' भन्ने शब्द थपी 'यौन' र 'महिला' पर्यायवाची बन्न पुगेका कारण महिलालाई पर्गेल्ने हरेक सन्दर्भको चुरोमा यौन रहन पुग्यो र महिलाको यस परिचयभित्र पुरुषको 'तुष्टि' सँगै गाँसियो यसैबाट आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि सबै क्षेत्रमा यही पुरुषवाद कायम हुन पुग्यो भन्ने तथ्य अघि सार्दै पुरुषवादले नै एकातिर नारीवादको जन्म गरायो भने अर्कातिर लैङ्गिक समानताको खोजी गरायो भन्ने मान्यता अघि सारेकी छन् ।

महिला र पुरुष कसैलाई हेला नगरी समान रूपले अघि बढ्ने कुरा नै लैङ्गिक समानता हो भन्ने परिचय दिएकी त्रिपाठीले मान्छे, पुरुष भएर जन्मनासाथ 'वन्दनीय' र महिला भएर जन्मनासाथ 'निन्दनीय' ठानिने मानसिकताभित्र बीजाधान मात्र गरेर सृष्टिको सम्पूर्ण प्रक्रियाबाट अलग बस्ने पुरुषको चाहिँ सम्प्रभुता कायम हुनु तर बीज धारणदेखिका सृष्टिका सम्पूर्ण दायित्व एकल रूपमा निर्वाह गर्ने महिलाको सम्प्रभुता भने नामेट हुनु निश्चय नै न्यायिक कुरा नभएको उल्लेख गर्दै यही अन्यायका विरुद्धको आवाजका रूपमा 'लैङ्गिक समानता' को आवाज अगाडि बढेको धारणा व्यक्त गरेकी छन् ।

प्रस्तुत समालोचनामा 'लैङ्गिक समानता'को कुरो एउटा सामाजिक आन्दोलनको रूपमा रहेको तर्क प्रस्तुत गर्दै साहित्यिक मञ्चलाई नछोर्दैकन बाँकी सम्पूर्ण मञ्चहरूको उपयोग निरन्तर गरिरहँदा पनि लैङ्गिक समानता सम्बन्धी आन्दोलन पूर्ण हुन कठिन भएकाले नै यस आन्दोलनका लागि सर्वाधिक सशक्त माध्यम नै साहित्यिक मञ्च हो भन्ने विचार त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै साहित्यिक मञ्चमा लैङ्गिक समानताको चर्चा सान्दर्भिक नभएको चर्चा गर्नु भनेको 'प्रजातन्त्र' पुरुषको मात्र अधिकारको कुरा हो भन्नु जत्तिकै हो भन्दै साहित्यिक मञ्चमा लैङ्गिक समानताको प्रस्तुतिलाई असान्दर्भिक मान्नु वास्तवमा अप्रजातान्त्रिक सोच र आचरणको विकास हुनु हो भन्ने दृष्टिकोण त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

पितृसत्ताको अस्तित्व समाप्त नभएको यस युगमा महिलाका सहज स्वाभाविक चारित्रिक विकास हुन सक्ने पारिवारिक-सामाजिक-राष्ट्रिय परिवेशको सिर्जना नभएसम्म उसबाट भएका र गरेका व्यक्तिगत कमजोरीलाई उसको समुदायगत कमजोरी भन्न नमिल्ने धारणा राख्दै पितृसत्तात्मक संरचनाको घेराभित्र निर्मित उसको मानसिक र चारित्रिक स्थितिले नै उसबाट त्यस्ता

गल्ती कमजोरी देखिएका हुनाले समाजमा होस् वा साहित्यमा होस् महिलालाई 'वेश्या' भनेर तिरस्कृत गरिनु र महिलालाई वेश्या भनिनु सरासर गलत हो किनभने त्यहाँ उसको चाहना समावेश भएको हुँदैन, बरु आफ्नी श्रीमतीसँग सन्तुष्ट हुन नसकेर तृष्णाको भोली फैलाएर हिंड्ने पुरुष चाहिं वेश्या हो तर उल्टै महिला 'वेश्या' भनिएका छन्, विवश र बाध्य हुनु चारित्रिक कमजोरी नभई स्वतन्त्र रूपले त्यस्तो आचरण गर्नु चारित्रिक कमजोरी भएको पुरुष नै वेश्या भएको तर्क समेत प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले साहित्यिक मञ्चमा लेखकको हैसियतमा आधिकारिक रूपमा पुरुष नै आउनाले साहित्यमा उसकै दृष्टिकोण स्थापित भएको सन्दर्भलाई हेर्दा विगत र वर्तमानमा लिखित साहित्यमा महिला प्रस्तुतिको स्वरूपको सर्वेक्षण र मूल्याङ्कन हुनु आवश्यक रहेको उल्लेख गर्दै आजसम्मको साहित्यिक परम्पराले पुरुषका सापेक्षतामा महिलालाई कसरी हेरको छ र अब त्यस हेराइमा कस्तो परिवर्तन आउनु आवश्यक छ भन्ने कुराको खोजी आजको युगको अपेक्षा भएको र यस अपेक्षालाई फलीभूत बनाउनका लागि यसलाई आन्दोलनका रूपमा अघि बढाउनुपर्ने दृष्टिकोण त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

साहित्यमा लैङ्गिक समानताका पक्षपाती महिला मात्र नभई पुरुष पनि भएको उल्लेख गर्दै त्रिपाठीले लैङ्गिक समानताका आवाजका विरुद्ध निरङ्कुश राक्षसी स्वभावको प्रदर्शन नगर्ने सभ्य महिला र पुरुषका सुसंस्कृत लेखनको उचित कदर गरेर पनि युगको अपेक्षा प्राप्तिका निम्ति सघाउन सकिने धारणा प्रस्तुत गरी साहित्यबाट महिलालाई कहिल्यै पनि 'मान्छे' को परिभाषाबाट अलग्याउनु हुँदैन र उसलाई पुरुषको परिचयका केन्द्रीयतामा नभई उसकै परिचयका आलोकमा प्रस्तुत गरिनुपर्छ भन्ने मान्यता प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले साहित्यमा महिलाको प्रस्तुतिको स्वरूपको रेखाचित्र सचेत महिलालाई लेखनबाट ग्रहण गरिनुपर्ने विचार राख्दै महिलालाई अस्वाभाविक र फोहोरी विम्वमा उतारेर आफ्नो लेखकीय अहम्को तुष्टि लिने कतिपय लेखकहरूले महिलालाई स्वाभाविक र सभ्य विम्वमा उतार्दा लेखन अझ बढी सुन्दर हुनसक्छ भन्ने सोचको विकास गरी पुरुष पाठक र तिनका तथाकथित आकाङ्क्षालाई सन्तुष्ट गर्ने गरी साहित्यमा महिलाको प्रस्तुति गर्ने परिपाटीलाई अन्त्य गरिनुपर्ने विचार प्रस्तुत गरेकी छन् ।

यसका साथै साहित्यिक मञ्चमा लैङ्गिक असमानता जुन उद्देश्यद्वारा अभिप्रेरित छ त्यो अत्यन्त नकारात्मक भएको उल्लेख गर्दै यस प्रवृत्तिले कहिल्यै पनि स्वस्थ एवं समानुपातिक

समाजको निर्माणका लागि मार्गदर्शन गर्न नसक्ने र उक्त अवस्थालाई स्वस्थतामा परिणत गर्नका लागि लैङ्गिक समानताको आन्दोलन चलाउनु जरुरी भएको दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी त्रिपाठीले महिला-श्रमका समग्र पक्षलाई राष्ट्रिय आयमा समावेश गराई लैङ्गिक समानताका लागि एउटा महत्त्वपूर्ण पहल गरी यसका लागि सही मार्गदर्शन पनि साहित्यिक मञ्चले गर्न सक्ने धारणा यस समालोचनामा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको 'महिला हृदयकी अध्येता देवकुमारी' कृतिपरक पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यस समालोचनामा त्रिपाठीले देव कुमारी थापाको देव कुमारी थापाका प्रतिनिधि कथा शीर्षकको कथा सङ्ग्रहभित्र रहेर उनका महिला सम्बन्धी प्रस्तुतिलाई केलाउने जमर्को गरिएको जानकारी दिँदै कथाकार देव कुमारी थापालाई नेपाली साहित्यको इतिहासकी गौरवमय पानाका रूपमा स्थापित गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले प्रस्तुत कथा सङ्ग्रहका कथाहरूमा कथाकार थापा महिला सन्दर्भप्रति निकै नै आकर्षित देखिएकी बताउँदै उनले आफ्ना कथाहरूमा शिक्षित-अशिक्षित, आत्मनिर्भर-परनिर्भर सबै किसिमका महिलाका समस्यालाई पहिचान गरी विभिन्न पात्रको चारित्रीकरणका माध्यमले प्रस्तुत गर्न सफल कथाकारका रूपमा रहेको विचार प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यस्तै उनको कथाकारीय कलात्मकतालाई नाराले बिटुल्याएको हैन बरु कथा विधाको कलात्मक बान्कीमा उनले महिला अस्मिताको पक्षधरताका सन्दर्भलाई समावेश गरेको जानकारी दिँदै त्रिपाठीले नेपाली समाजका महिलाले अस्मिता रक्षार्थ गरेका प्रयास र त्यसमाथिको प्रहारलाई पनि उनले सफलताका साथ पहिचान गरेको कुरा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

महिला हृदयका प्रेम, त्याग र स्वाभिमानलाई चिनाउने उनका कथाहरू विषयको स्थूलतातिर नभई सूक्ष्मतातिर भुकेका छन् भन्ने मान्यता अघि साँदै त्रिपाठीले देव कुमारीका कथा आँखी भ्यालका एक-एकवटा प्वाल मात्र हुन् जसको निर्माण साना-साना मार्मिक क्षणहरूलाई टिपेर गरिएको छ र ती मार्मिक क्षणहरू अधिकांशतः महिलाका भावनासँग सम्बन्धित भएको धारणा समेत व्यक्त गरेकी छन् । यसका साथै विषयगत पृथकताले मात्र कथाहरू एक अर्काबाट पृथक् भए पनि छरितो संरचनाका बान्किला कथा लेख्ने थापाको कथा निर्माणको प्रविधि एउटै रहेको उल्लेख गर्दै त्रिपाठीले समग्रमा कथाकार देव कुमारी थापालाई आफूले इच्छाईएका कुरालाई सरल एवं सहज ढङ्गले सम्प्रेषित गर्न सक्ने स्रष्टाका रूपमा चिनाएकी छन् ।

सुधा त्रिपाठीको 'प्रगतिशील महिला लेखन : स्थिति, समस्या र सम्भावना' ऐतिहासिक पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । यस समालोचनामा त्रिपाठीले पृष्ठभूमि, प्रगतिशील महिला लेखनको स्थिति, प्रगतिशील महिला लेखनका समस्या र प्रगतिशील महिला लेखनका सम्भावना शीर्षकहरू समावेश गरी प्रगतिशील महिला लेखनको स्थिति, समस्या र सम्भावनाको विश्लेषण गरेकी छन् । त्रिपाठीले पाश्चात्य जगतमा महिलाका बारेमा विशिष्ट किसिमले सोच्ने परम्पराको थाली र वस्तुनिष्ठ ढङ्गले महिलाको जीवनको स्थितिको विश्लेषणलाई एङ्ग्लिसले अगाडि सारेको तथ्य प्रस्तुत गर्दै महिलाले कुमारी छउन्जेल पिताका अधीनमा, विवाहित अवस्थामा श्रीमान्का अधीनमा र वृद्धावस्थामा पुत्रका अधीनमा बस्नुपर्छ भन्ने पूर्वीय चिन्तनले पनि एङ्ग्लिसले दिग्दर्शित गरेको आर्थिक परनिर्भरताको पुष्टि गरेको र समाजमा पुरुष सत्ता कायम हुनुको मूलाधार पनि यही रहेको विश्लेषण गरेकी छन् र नेपाली समाजका महिलाका जीवनको परिस्थितिको विश्लेषण यिनै बुँदागत आधारमा सहज ढङ्गले गर्न सकिने कुरा समेत त्रिपाठीले अघि सारेकी छन् ।

त्रिपाठीले महिलाले जीवनका पीडाका कथालाई आमूल परिवर्तनको अपेक्षा सहित प्रस्तुत गर्नु प्रगतिशील लेखनको पहिचान भएको उल्लेख गर्ने महिलाका जीवनको मर्मको प्रस्तुति अधिकांश लेखकको रूचिको क्षेत्र भइराखेका सन्दर्भमा प्रगतिशील महिला लेखकहरूले पनि सोही क्षेत्रलाई विशेष रूचाउन कुनै आश्चर्यको विषय नभएको विचार प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यस्तै त्रिपाठीले आफ्नो जीवन सहित परिवार, समाज, राष्ट्र र विश्वकै समेत परिवर्तनको कामना गर्नु र तत्सम्बन्धी सङ्घर्षका स्वरूपलाई आफ्ना लेखन मार्फत प्रस्तुत गर्नु प्रगतिशील महिला लेखनको पहिचान भएको उल्लेख गर्दै यस फाँटका सबै लेखकका कलमले यस विशिष्टतालाई आफ्नो पहिचान बनाउने कार्यमा सफलता भने पाइनसकेको र महिलाहरू भने उक्त विशिष्टता प्राप्तिका निम्ति प्रयत्नशील रहेको कुरा यस समालोचनामा विश्लेषण गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले आम नागरिकको महिला सम्बन्धी दृष्टिकोण पनि अधिकांशतः नकारात्मक र हेपाहा किसिमको हुनु र यदाकदा राखिएका सकारात्मक दृष्टिकोण पनि यथार्थ नभएर आदर्शप्रेरित हुनुले पनि महिलाका जीवनमा नकारात्मक प्रभाव पार्न प्रभावकारी देखिएको धारणा राख्दै राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिदृश्यका बिच सक्रिय रहेका प्रगतिशील महिला लेखनको लेखन यिनै कारणले पर्याप्त प्रभावित बनेकाले कुण्ठित रहेको र धक फुकाएर अगाडि बढ्न नसकेका अवस्थामा रहेको विचार प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले प्रस्तुत समालोचना सङ्ग्रहमा महिला आफैमा चेतना आउनु प्रगतिशील महिला लेखनका क्षेत्रको प्रमुख सम्भावना रहेको उल्लेख गर्दै जीवनका अथक सङ्घर्ष, शिक्षाको अवसर, राष्ट्रिय जीवनका अप्ठ्याराहरू, अन्तर्राष्ट्रिय सन्दर्भका सङ्गति-विसङ्गति आदि विविध कारणले हरेक नागरिकमा भैँँ प्रगतिशील महिला लेखकमा पनि जीवन र जगत्प्रतिको चासोमा वृद्धि भइरहेको र यसले उज्ज्वल भविष्यको सम्भावना समेत देखाएको कुरा विश्लेषण गरेकी छन् । यसका साथै आफूले भोग्नु परेका विविध समस्यालाई चुनौतीका रूपमा स्वीकारेर अघि बढ्ने धर्ममा नै महिला लेखनको भविष्य निर्भर रहेको कुरा उल्लेख गर्दै त्रिपाठीले महिला लेखकहरू भर्खरै जीवनमा देखा परेका समस्या र चुनौतीको सामना गर्दै साहसका साथ अघि बढ्न प्रयत्नशील देखिन थालेका छन् र यस क्षेत्रको उज्ज्वल सम्भावनाको सबैभन्दा बलियो आधार पनि यही रहेको छ, भन्ने विचार व्यक्त गरेकी छन् ।

५.२.४ 'नेपाली उपन्यासमा नारीवाद' समालोचनाको विश्लेषण

सुधा त्रिपाठीका प्रकाशित कृतिहरूमध्ये तेह्रौँ कृतिका रूपमा रहेको **नेपाली उपन्यासमा नारीवाद : पद्धति र प्रयोग** समालोचना उनको चौथो समालोचनात्मक कृति हो । मार्च ८, २०१२ अर्थात् वि.सं. २०६९ मा 'भृकुटी एकेडेमिक पब्लिकेसन्स' बाट प्रकाशित **नेपाली उपन्यासमा नारीवाद** कृतिपरक समालोचना पद्धतिमा आधारित समालोचनात्मक कृति हो । यस कृतिका जम्मा दश परिच्छेदका विभिन्न शीर्षक र उपशीर्षकमा नेपाली साहित्यिक कृतिहरूको समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत गरिएको छ । त्यस समालोचनाको प्रायोगिक पद्धतिका आधारमा प्रस्तुत कृतिको सङ्क्षिप्त विश्लेषण तलका अनुच्छेदहरूमा समग्र रूपमा गरिएको छ ।

प्रस्तुत समालोचनात्मक ग्रन्थभित्रको पहिलो अनुच्छेदमा 'नारी समस्यापरक नेपाली उपन्यासहरूको सर्वेक्षण' शीर्षकभित्र पुरुष लिखित समस्यापरक नेपाली उपन्यासहरूको सर्वेक्षण, नारी लिखित नारी समस्यापरक नेपाली उपन्यासको सर्वेक्षण, नारी समस्यापरक नेपाली उपन्यास सम्बन्धी सर्वेक्षणको निष्कर्ष उपशीर्षकहरू रहेका छन् । समालोचक त्रिपाठीले २०५९ सालसम्मका नेपाली उपन्यासमा प्रस्तुत नारीकेन्द्री र नारी समस्यापरक उपन्यासको सर्वेक्षण प्रस्तुत गरेकी छन् । उनले अन्य नेपाली उपन्यासको भ्रमहीन गोरेटो नपक्की सकेको अवस्था नै कायम रहेको चर्चा गर्दै सम्बन्धित उपन्यासकारको राजनीतिक चिन्तनले पनि नारीवादी चेतनामा पर्याप्त प्रभाव पारेको उल्लेख गरेकी छन् । विश्लेषित नारी चेतनाका कोणबाट अलि बढी सशक्त देखिएका पुरुष उपन्यासकारद्वारा लिखित रूपमती, स्वास्नीमान्छे, शान्ति, अनुराधा र तिन घुम्ती गरी पाँचवटा

उपन्यासको विश्लेषणलाई नमुनाका रूपमा प्रस्तुत गरेको कुरा उल्लेख गर्दै यी उपन्यासको नारीवादी चिन्तनको विश्लेषण सङ्क्षिप्त रूपमा गरेकी छन् ।

दोस्रो उपशीर्षकमा उनले महिला लिखित नेपाली उपन्यासको सङ्क्षिप्त सर्वेक्षण प्रस्तुत गरेकी छन् । सर्वेक्षणका क्रममा महिला लिखित नेपाली उपन्यासको सङ्ख्या त्यति निराशलाग्दो नभए पनि उनले अधिक सङ्ख्याका उपन्यासमा सामन्तवादी पुरुष चिन्तनकेन्द्री दृष्टिकोण नै बलिष्ठ रहेको तथ्य अघि सार्दै नारीलाई विषयका केन्द्रमा राख्ने कुरामा अधिकांश महिला उपन्यासकारहरू सचेत देखिए पनि सबै महिला उपन्यासकारले मौलिक लैङ्गिक चिन्तन अँगाल्न नसकेको निष्कर्ष प्रस्तुत गरेकी छन् । समालोचक त्रिपाठीले नारी केन्द्रीयता नै भए पनि सस्ता प्रेम कथामा आधारित न्यूनतम साहित्यिक हैसियत समेत प्राप्त नगरेका उपन्यासलाई भने यस सर्वेक्षणमा नसमेटेको जानकारी दिएकी छन् । दोस्रो उपशीर्षकमा उनले महिला लिखित नेपाली उपन्यासको सर्वेक्षण प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै नारीवादी चेतनाका कोणबाट सफल देखिएका २०५९ साल अधिका महिला उपन्यासकारहरूमा पारिजात, वानीरा गिरी र गीता केशरीको नाम लिन सकिए पनि सर्वाधिक शक्तिशाली नारी चिन्तन भने पारिजातको उपन्यासमा भेटिने तथ्य अघि सारी त्रिपाठीले नमुनाका रूपमा पारिजातको **अनिंदो पहाडसँगै** उपन्यासको विश्लेषणलाई प्रस्तुत गरेकी छन् ।

समालोचनाको दोस्रो परिच्छेदभित्र 'उपन्यास विश्लेषणका प्रतिमान' मूल शीर्षकमा केन्द्रित रहेर विभिन्न उपशीर्षकहरू पृष्ठभूमि, शीर्षक, औपन्यासिक सामाजिक परिवेश र नारी सन्दर्भ, मूल नारी समस्या, परिणति र सन्देश, प्रमुख नारी चरित्र, नारीनारीका बिचको स्थिति, नारीप्रति पुरुषको दृष्टिकोण, पुरुषप्रति नारीको दृष्टिकोण, समुच्चा औपन्यासिक परिवेशमा नारीको अवस्थिति, नारीप्रति लेखकीय दृष्टिजस्ता शीर्षकहरू छनोट गरेकी त्रिपाठीले नारीवादी प्रमुख नेपाली उपन्यासहरूको विश्लेषणका क्रममा यिनै प्रतिमानहरूका आधारमा वि.सं. १९९१ देखिको आधुनिक नेपाली उपन्यास फाँटका पूर्वोक्त छवटा औपन्यासिक कृतिको नारीवादी समालोचनात्मक विश्लेषण क्रमशः गरेको उल्लेख गरेकी छन् ।

तेस्रो परिच्छेद अन्तर्गत **रूपमती** उपन्यास, चौथो परिच्छेदमा **स्वास्ती मान्छे** उपन्यास, पाँचौं परिच्छेदमा **शान्ति** उपन्यास, छैटौंमा **अनुराधा** उपन्यास, सातौं परिच्छेदमा **तिन घुम्ती** उपन्यास, आठौं परिच्छेदमा **अनिंदो पहाडसँगै** उपन्यास गरी छवटा उपन्यासहरूको नारीवादी प्रवृत्तिको विश्लेषण गरिएको छ । प्रत्येक उपन्यासको विश्लेषणभित्र त्रिपाठीले पृष्ठभूमि, शीर्षक, औपन्यासिक सामाजिक परिवेश र नारी जगत्, मूल नारी समस्या, परिणति र सन्देश, प्रमुख नारी चरित्र, नारी-

नारीका बिचको सम्बन्ध, नारीप्रति पुरुषको दृष्टिकोण, पुरुषप्रति नारीको दृष्टिकोण, समुच्चा औपन्यासिक परिवेशमा नारीको अवस्थिति, नारीप्रति लेखकीय दृष्टि र निष्कर्षजस्ता उपशीर्षकहरू छनोट गरी अझ ती शीर्षकभित्र पनि अन्य उपशीर्षक राखी प्रत्येक उपन्यासको छुट्टाछुट्टै विश्लेषण गरेकी

छन् ।

प्रस्तुत समालोचनात्मक कृतिको तेस्रो परिच्छेदमा **रूपमती** उपन्यासको विश्लेषण गर्ने क्रममा त्रिपाठीले नेपालमा जहानियाँ राणा शासनका उत्कर्षका समयमा रचना गरिएको **रूपमती** उपन्यासमा यस उपन्यासकी प्रमुख चरित्र रूपमतीका माध्यमबाट तत्कालीन समयजन्य नारी समस्याहरू प्रस्तुत गर्दै त्यतिखेर विनम्रता र सहनशीलतालाई नारीका सर्वाधिक उच्च गुण मानिने परिप्रेक्ष्यमा तिनै गुणले रूपमतीलाई उपन्यासका अन्त्यमा विजयी बनाई उसको चारित्रिक विजय मार्फत उपन्यासमा परम्परागत मूल्य मान्यताको विरोध नगर्नेहरूकै मात्र भलो हुन्छ भन्ने चिन्तन उपन्यासमा प्रस्ट भएको विचार व्यक्त गरेकी छन् । त्यस्तै उपन्यासमा सत् र असत् पात्र उपस्थित गराएर अन्ततः लेखकका चेतनाले सत् ठहर्‍याएको पात्रको विजय देखाई परम्परागत चिन्तनकै पक्षधरता अँगालिएको यस उपन्यासले पुराना कुरामा बहुविवाह, बाल विवाह गर्ने, नारीलाई शिक्षाको अवसर नदिनेजस्ता चलनलाई नारी समस्याका रूपमा प्रस्तुत गरी तिनको विरोध गर्दै सन्तान प्राप्तिका सन्दर्भमा वैज्ञानिक दृष्टिकोण अँगालिए तापनि लैङ्गिक कोणबाट पुरुषलाई ठुलो र नारीलाई सानो ठान्ने दृष्टिकोण उपन्यासमा कायमै रहेको धारणा पनि त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् ।

प्रस्तुत उपन्यासमा तत्कालीन नेपाली समाजका उत्पीडित नारीका लागि परमेश्वरको भर, सहनशीलताको आधार र सत्को विजयका लागि पुस्ताभरको अन्तराल समेत कुनै सक्ने धैर्यजस्ता तिनवटा जीवनाधारगत तथ्याङ्कनका कोणबाट नियाल्दा यस उपन्यासमा लैङ्गिक चेतना झल्किनुका साथै नारी पीडित छ भन्ने बोध प्रकट भएको तर त्यसको समाधान भने विप्लवकारी नभएर नीतिवादी सुधारवादी परम्परित मध्यम मार्गबाट प्राप्त हुने स्पष्टोक्ति दिइएको कुरा त्रिपाठीले प्रस्तुत समालोचनामा उल्लेख गरेकी छन् । यसका साथै त्रिपाठीले यिनै आधारबाट यस उपन्यासमा प्रस्तुत नारी पक्षधरतालाई नारीवादी कोणबाट उदार नारीवादी संज्ञा दिन सकिने चिन्तन समेत प्रस्तुत गरेकी छन् ।

उक्त समालोचना कृतिको चौथो परिच्छेदमा **स्वास्तीमान्छे** उपन्यासको विश्लेषण गर्ने क्रममा महिलाको मुक्ति नभईकन समाजको मुक्ति सम्भव छैन भन्दै त्यसका निम्ति प्रथम अग्रसरता

महिलाको र सहयोग पुरुषको चाहिन्छ भन्ने कुरा उपन्यासको अध्ययनपछि बोध भएको जानकारी दिन पुगेकी त्रिपाठीले नारी र नारी आन्दोलनप्रति सकारात्मक दृष्टिकोण राख्ने उपन्यासकार प्रधानले यस उपन्यासमा सतीत्वको नयाँ परिभाषा अगाडि सार्दै उपन्यासको समग्र कथा र चरित्रको बुनोटबाट लेखकले अस्तित्वको लडाइँ नै नारी जीवनको प्रथम कर्तव्य हो भन्ने कुरा प्रस्तुत गर्न खोजेका हुन् भन्ने धारणा प्रस्ट पोरकी छन् ।

उक्त उपन्यासले सामाजिक परिवर्तनका निम्ति आफ्ना हरेक प्रयत्नलाई केन्द्रित गरेका कारणले पनि उक्त उपन्यासमा प्रस्तुत भएको नारी पक्षधरतालाई नारीवादी कोणबाट हेरी समाजवादी संज्ञा दिनु उपयुक्त हुने दृष्टिकोण त्रिपाठीले राखेकी छन् । यसका साथै अव्यक्त हतियारले सामाजिक परिवर्तन सम्भव नभएको र विचारले बिगारेको समाजलाई फेर्न विचारमाथि नै प्रहार गर्नुपर्छ भन्ने कुरालाई यस उपन्यासले पहिल्याउन नसकेको सन्दर्भले उपन्यासलाई स्वच्छन्दतावादी क्रान्तिकारी धारतर्फ उन्मुख गराउन खोजेको भए तापनि बाँकी सम्पूर्ण सन्दर्भले भने यस उपन्यासको नारी पक्षधरतालाई समाजवादी नारीवाद भन्नु नै उपयुक्त हुने (त्रिपाठी, २०६८ : १४९) विचार त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

शान्ति उपन्यासको विश्लेषण गर्ने क्रममा यस समालोचनाको कृतिको पाँचौँ परिच्छेदभित्र २००७ र २०१७ सालका विचको धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक हरेक दृष्टिकोणले उत्तरोत्तर पतनशील नेपाली जनजीवनको चित्रलाई प्रस्तुत गरिएको **शान्ति** उपन्यासमा तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक उत्पीडनको स्वरूपलाई नारीका कोणबाट नियालिएको तथ्य प्रस्तुत गर्दै शीर्षकदेखि नै नारीकेन्द्री यस उपन्यासमा अनमेल विवाह, चर्चामा मात्र सीमित विधवा विवाह, नारीका जीवनको मूल्यहीनता, पुरुषको स्वेच्छाचारिता, धर्मका खोलभित्रको व्यभिचार, नेताको दुश्चरित्रताजस्ता समस्याबाट पीडित तत्कालीन नारी प्रीतिनधि चरित्रका रूपमा प्रस्तुत गरिएकी शान्तिकै केन्द्रीयतामा यस उपन्यासको परिणति प्रस्तुत (त्रिपाठी, २०६९ : २०४) भएको धारणा त्रिपाठीले राखेकी छन् ।

समाजमा नारीप्रति दुर्भाव राख्ने पुरुषहरूको बिगबिगी नै भए पनि सद्भाव राख्ने पुरुषको पनि खाँचो नभएको र त्यस्ता थोरै पुरुषले पनि सामाजिक परिवर्तनका निम्ति मार्ग दर्शनको दीपको काम गर्न सक्छन् भन्ने चिन्तन प्रस्तुत उपन्यासमा देखिएको चर्चा गर्दै त्रिपाठीले अधिकांश पुरुषहरूको नारीद्वेषी चरित्रले गर्दा नारीहरूले असल पुरुषमाथि पनि हतपत्त विश्वास गरिहाल्ने परिस्थिति नभएको तत्कालीन वातावरणका नारीहरूको सामाजिक अवस्थितिलाई उपन्यासले

सङ्क्रमणशील देखाएको दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै कुनै पनि मानिस सम्पन्न र पुरुष भएकै कारणले महान् हुन सक्दैन भन्ने कुरालाई उपन्यासका अन्त्यमा देखिएको शान्तिको हैसियतले पुष्टि गरेको उल्लेख गर्दै नारी शक्तिलाई सिङ्गो राष्ट्रको सामाजिक-राजनीतिक आन्दोलनसँगै गाँसेर खोजिँदा मात्र अपेक्षित सफलता हासिल हुन सक्छ, र त्यसका लागि नारी शिक्षा र चेतना जरुरी छ, भन्ने निष्कर्ष नै प्रस्तुत उपन्यासको रहेको छ, भन्ने विश्लेषण उनले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

छैटौँ परिच्छेदमा अनुराधा उपन्यासको विश्लेषण गर्ने क्रममा नारीको मूल्य मांसल सौन्दर्यमा आँकिनु, समाज पुरै सामन्ती संस्कारमा डुबेको हुनु, नारी शिक्षा नै समस्या मानिनु, उच्च वर्गीय समस्या भन्नु विकराल हुनु, नारीले पाएको अवसरदेखि नारी नै इर्ष्यालु बन्नुजस्ता कुराले यस उपन्यासकी प्रमुख नारी चरित्र अनुराधामा मनोवैज्ञानिक समस्या सिर्जना हुन पुगेको विचार त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् ।

प्रस्तुत उपन्यासको लक्ष्य नारी मुक्ति र समाज सुधार नभए पनि अनुराधाको चारित्रिक प्रस्तुतिका माध्यमले भने पुरुषले नारीप्रति राखेको गलत दृष्टिकोण नै नारी समस्याको मूल जरो हो भन्ने कुरा प्रस्तुत गरेर लेखक नारी पक्षधर देखिएका छन् र मनोविश्लेषणात्मक नेपाली उपन्यासका संसारको यो महत्त्वपूर्ण उपलब्धि रहेको निष्कर्ष त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै उपन्यासकारले विक्षिप्त नायिकाको उपस्थिति देखाए पनि उसलाई भीरु चरित्रको नदेखाई दृढताका साथ सङ्घर्ष गर्न र आफ्ना समस्याको विश्लेषण गर्न सक्ने बनाइदिएकाले पनि लेखकमा नारी पक्षधरता प्रकट भएको स्पष्ट पाउँ उपन्यासमा यी सबै परिस्थितिहरू अनुराधाकै कोणबाट भएका र ती सबै मनोवैज्ञानिक किसिमका रहेकाले पनि नारीवादी चिन्तनका कोणबाट समष्टिमा मनोविश्लेषणात्मक नारीवादी चेतना भनेर सम्बोधन गर्नुपर्छ र त्यो चेतना उपन्यासकी प्रमुख नारी चरित्र अनुराधाकै परिवृत्तमा समेटिएको छ, भन्ने धारणा समेत त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सातौँ परिच्छेदमा त्रिपाठीले तिन घुम्ती उपन्यासको विश्लेषण गर्ने क्रममा राणा शासन कालका अन्तिम समय सन्दर्भ पारेर रचना गरिएको तिन घुम्ती उपन्यास पुरुषको तत्कालीन सामन्ती संस्कारजन्य सोच र नारीको समयभन्दा निकै अग्रगामी तथा देशकाल परिस्थितिसँग नसुहाउँदो सोचका बिचको सङ्घर्षका कारणले दाम्पत्य जीवनमा पारेको दुष्प्रभाव एवं त्यसैको परिणाम स्वरूप प्रभावित बनेको नारीको जीवनस्थितिलाई नारीकै कोणबाट प्रस्तुत गरिएको उपन्यासका रूपमा त्रिपाठीले चित्रण गरेकी छन् । त्यस्तै उपन्यासको आदि, मध्य र अन्त्य सर्वत्र

प्रमुख भूमिकामा प्रस्तुत भएकी नारी पात्र र उपन्यासको समग्र चिन्तनलाई उसैका दृष्टिकोणबाट प्रस्तुत गरी मूल रूपमा त्यस नारीको वास्तविक चेतना र त्यसैसँग जोडिएर आएको सतीत्वको नवीन परिभाषा एवं आफ्नो जीवन चिन्तनप्रतिको दृढ आस्थाका कारणले त्यस नारी चरित्रको जीवन सङ्कटग्रस्त बन्न पुगेको विचार त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले उपन्यासमा चित्रित नारी पात्र इन्द्रमायाले पुरुषको अस्तित्व भैं नारी अस्तित्व जगेर्ना गर्न चाहेको र आफ्नो जीवनमाथिको आफ्नै नयाँ परिभाषा अनुसारको जीवन प्राप्तिका निम्ति सक्रियता र त्यस पश्चात् प्राप्त परिणतिको स्वीकार नै इन्द्रमायाका जीवनको पहिचान भएर आएको बताएकी छन् । इन्द्रमायामा सामाजिक चेतनाभन्दा पनि व्यक्ति चेतना प्रबल रहेको, नारी समस्या सामाजिक सन्दर्भबाट नभएर व्यक्ति सन्दर्भबाट भएको र नारी समुदायको मुक्तिभन्दा पनि नारीको स्वच्छ जीवन प्रस्तुतिको परिभाषा दिएर लेखिएको यस उपन्यासको चिन्तनको धरातल अस्तित्ववादी किसिमको रहेको निष्कर्ष समेत त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

अनिँदो पहाडसँगै उपन्यासको कृतिपरक विश्लेषण गर्ने क्रममा आठौँ परिच्छेदमा आइपुग्दा समालोचक सुधा त्रिपाठीले यस उपन्यासका नारी चरित्रमा नारीवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत भएको देखाउँदै पारिजातले आफ्ना उपन्यासमा नेपाली समाजका यथार्थ पात्र टिपेर तिनलाई नारी वर्गीय सन्दर्भमा अग्रगामी सोचले सुसज्जित गरी प्रस्तुत गरेकी छन् भन्ने धारणा राखेकी छन् । त्यसैगरी त्रिपाठीले साधारण नारी जीवनका परम्परागत उत्पीडनलाई मात्र नपक्री अग्रगामी चिन्तन अँगाले नारीका पीडालाई अझ बढी सम्बोधन गरी उत्पीडनका सही कारण पहिल्याउँदै तिनका निराकरणका निम्ति राजनीतिक परिवर्तन जरुरी भएको र त्यसका निम्ति नारीहरूले अझ बढी उत्सर्गित हुनुपर्ने आवश्यकता समेत औल्याउन सफल उपन्यासकारका रूपमा पारिजातलाई परिचित गराएकी छन् ।

त्यसैगरी सिङ्गे समाजको मुक्तिविना नारीको मात्रै मुक्ति सम्भव नदेख्ने पारिजातले नारीमुक्तिका लागि नारीलाई नै सामाजिक मुक्तिका अभियानमा सक्रिय बनाई नारी मुक्तिकामीहरूले आफ्नो आन्दोलनलाई सामाजिक मुक्तिसँग जोडेर मात्र सफलता हासिल गर्न सक्छन् भन्ने दृष्टिकोण सहितको नारीवादी सोच अगाडि सारेकी छन् भन्ने निष्कर्ष समेत त्रिपाठीले प्रस्तुत समालोचनामा अधि सारेकी छन् । यसका साथै नारीलाई जतिसुकै सशक्त देखाए तापनि सधैं पुरुषभन्दा निम्न कोटिमै राख्ने परम्परालाई भाँचेर पारिजातले यस उपन्यासमा पुरुषलाई भन्दा नारीलाई उच्चता प्रदान गरेकी छन् । नारीलाई दोस्रो दर्जाबाट उकालेर पहिलो दर्जामा पुऱ्याउने पारिजातको नारीप्रतिको दृष्टिकोण अत्यन्त सकारात्मक रहेको धारणा त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

प्रस्तुत समालोचनात्मक कृतिको नवौं परिच्छेद अन्तर्गत विश्लेषित उपन्यासको तुलनात्मक निष्कर्ष मूल शीर्षकभित्र त्रिपाठीले आधुनिक नेपाली उपन्यासमा नारीवादी चेतना खुट्याउँदै साहित्यिक हैसियत प्राप्त भएका नारीकेन्द्री र नारी समस्याकेन्द्री उपन्यासको विश्लेषण गर्ने क्रममा १९९१ सालको रूपमतीदेखि २०३९ सालको अनिंदो पहाडसँगैसम्मका पुरुष एवं महिला उपन्यासकारद्वारा लिखित छवटा नेपाली उपन्यासलाई समावेश गरेको बताउँदै तीमध्ये पनि महिला उपन्यासकारका रूपमा पारिजातलाई मात्र समावेश गरेको जानकारी दिएकी छन् भने पाश्चात्य नारीवादको सग्लो स्वरूप उपर्युक्त उपन्यासमा नपाइए तापनि नेपाली साहित्यमा २०५९ सालसम्म लेखिएका उपन्यासमध्येमा सर्वाधिक स्पष्ट नारीवादी चेतना पाइने छवटै उपन्यासभित्रका रूपमतीमा उदार नारीवाद, स्वास्थ्यमान्छेमा समाजवादी नारीवाद, शान्तिमा स्वच्छन्दतावादी नारीवाद, अनुराधामा मनोविश्लेषणात्मक नारीवाद, तिन घुम्तीमा अस्तित्ववादी नारीवाद र अनिंदो पहाडसँगै उपन्यासमा मार्क्सवादी नारीवादका स्वरूप प्रकट भएको विचार प्रस्तुत गरेकी छन् । यसका साथै उपर्युक्त छवटा उपन्यासमध्ये अनिंदो पहाडसँगै उपन्यासलाई नारीवादी चेतनाका कोणबाट विशिष्ट मान्नुपर्ने धारणा समेत त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्यस्तै यस समालोचनाको दसौं परिच्छेद अन्तर्गत 'उपसंहार : समीक्षा तथा निष्कर्ष' शीर्षकभित्र त्रिपाठीले नारीकेन्द्री र नारी समस्याकेन्द्री आधुनिक नेपाली उपन्यासको सर्वेक्षण र विश्लेषण गर्दा नेपाली साहित्यिक फाँटमा पाश्चात्य नारीवादी चिन्तनको औपचारिक प्रवेशले अहिलेभन्दा डेढ दशकअघि मात्रै भए तापनि साहित्य सिर्जनामा भने नारी चिन्तनको मौलिक विकास आधुनिक कालको प्रारम्भदेखि हुन थालेको र पछिल्ला दिनमा त्यो नित्य खारिँदो अवस्थामा रहेको निष्कर्ष उपर्युक्त उपन्यासहरूको विश्लेषणबाट (त्रिपाठी, २०६८ : ४२४) प्राप्त भएको जानकारी समालोचक त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

५.२.५ 'नारीवादी सौन्दर्य चिन्तन' समालोचनाको विश्लेषण

सुधा त्रिपाठीका प्रकाशित कृतिहरूमध्ये नारीवादी सौन्दर्य चिन्तन समालोचना चौधौं कृति हो भने समालोचनाका क्षेत्रमा पाँचौं कृतिका रूपमा रहेको छ । ८ मार्च २०१२ अर्थात् वि.सं. २०६९ मा 'भृकुटी एकेडेमी पब्लिकेसन'बाट प्रकाशित भएको उक्त समालोचना ऐतिहासिक समालोचना पद्धतिमा आधारित समालोचना हो । त्रिपाठीले पाश्चात्य नारीवादी साहित्यको ऐतिहासिक विश्लेषण गर्दै पाश्चात्य साहित्यभित्र देखा परेका विभिन्न नारीवादी साहित्य सिद्धान्त र त्यसभित्र देखा परेका विभिन्न वादहरूको समेत विश्लेषण गरेकी छन् ।

पृष्ठ सङ्ख्या १९१ भएको प्रस्तुत समालोचनालाई त्रिपाठीले चारवटा परिच्छेदमा विभाजित गरेकी छन् जस अन्तर्गत पहिलो परिच्छेदमा 'पाश्चात्य जगतमा नारी जागरण र नारीमुक्ति आन्दोलन तथा नारीवाद' शीर्षकभित्र 'अमेरिकामा नारी जागरण र नारीमुक्ति आन्दोलन', 'युरोपमा नारी जागरण र नारीमुक्ति आन्दोलन' र 'पाश्चात्य जगतमा नारीवाद' गरी तिनवटा उपशीर्षकहरू रहेका छन् । त्यस्तै दोस्रो परिच्छेदमा 'पाश्चात्य नारीलेखन र नारीवादका सिर्जनात्मक पक्षहरू' शीर्षक अन्तर्गत प्रारम्भिक युग, माध्यमिक युग, पूर्व आधुनिक (भिक्टोरिया) युग, नव आधुनिक युग गरी चारवटा उपशीर्षक रहेका छन् । त्यस्तै तेस्रो परिच्छेदमा 'पाश्चात्य नारीवादी समालोचनाका प्रमुख सिद्धान्तहरू' शीर्षक अन्तर्गत 'पाश्चात्य नारीवादी समालोचना' मूलधारा र त्यसका स्थापना, उदार नारीवाद, मार्क्सवादी नारीवाद, आमूल नारीवाद, समाजवादी नारीवाद, सहायक धारा र त्यसका स्थापना, मनोविश्लेषणात्मक नारीवाद, फ्रायडेली नारीवाद, लकानेली नारीवाद, उत्तर संरचनावादी नारीवाद, उत्तर आधुनिक नारीवाद, जाति/जनजाति सांस्कृतिक नारीवादी धारा, कालावादी नारीवादी धारा, काला नारी समलैङ्गिक नारीवादी धारा र निष्कर्ष गरी बिसवटा उपशीर्षक रहेका छन् । त्यस्तै चौथो परिच्छेदमा नेपाली साहित्यसँग सम्बन्धित 'नेपालमा नारी जागरण र नारीवादी चेतनाको विकास' शीर्षक रहेका छन् भने यसै परिच्छेदभित्र ...नेपाली परम्परागत समाजमा नारीको स्थिति र नारी जागरण' शीर्षकभित्र नेपाली परम्परागत समाजमा नारीको स्थिति, नेपालमा नारी जागरण, नेपालमा सामाजिक नारी जागरण, नेपालमा राजनीतिक नारी जागरण' गरी तिनवटा उपशीर्षक रहेका छन् । त्यसै गरी यसै परिच्छेदभित्र नेपाली नारी जागरण र नारीवादका प्रसारमा पाश्चात्य र एसियाली प्रभाव शीर्षकका साथै 'नेपाली बौद्धिक, सांस्कृतिक र साहित्यिक क्षेत्रमा नारीवादको विकास' शीर्षकभित्र विभिन्न 'नेपाली बौद्धिक क्षेत्रमा नारीवादको विकास, नेपालमा नारीवादको विकासमा अस्मिता पत्रिकाको योगदान, नेपालमा नारीवादको विकासमा अन्य बौद्धिक क्षेत्रको योगदान, नेपाली सांस्कृतिक क्षेत्रमा नारीवादको विकास, नेपाली साहित्यिक क्षेत्रमा नारीवादको विकास आदि उपशीर्षकहरू रहेका छन् भने त्रिपाठीले निष्कर्षका रूपमा नेपाली नारीवादी चेतनाको स्वरूपको विश्लेषण गरेकी छन् ।

प्रस्तुत समालोचनामा पाश्चात्य साहित्य जगतमा नारी जागरण र नारीमुक्ति आन्दोलन तथा नारीवाद शीर्षकभित्र अमेरिका र युरोपमा भएका नारी जागरण र नारीवादी आन्दोलनको विश्लेषण गर्न पुगेकी त्रिपाठीले विश्वमा प्रचलित धेरैजसो धर्म, दर्शन, साहित्य र चालचलनले महिलाहरूलाई साह्रै अवहेलना गरेको बताउँदै त्यस समयमा प्रस्तुत विभिन्न अभिव्यक्तिहरूमा कुनै पनि विद्वान्ले दास युगमा भएको दास प्रथाका विरोधमा हजारौं महिलाहरू सहिद भएका र युग परिवर्तनका

सन्दर्भमा उनीहरूको योगदान समेत अविस्मरणीय रहेको सन्दर्भलाई कतै पनि उल्लेख नगर्नुको मुख्य कारण अरू केही नभई महिलाहरूलाई हीन सावित गर्नका लागि मात्रै हो भन्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् ।

मानव विकासको धेरै समयपछि मात्र अर्थात् १९ औं शताब्दीतिर चलेको नारीवादी आन्दोलनको आधारशिलाले महिलाहरूलाई मताधिकार प्राप्त गर्ने अवसरका साथै पारपाचुके गर्न समेत सहज बनाई सम्पत्ति राख्न पाउने अधिकार दिलाइदिए पनि १८०४ को नेपोलियन कोडले महिलालाई प्राप्त अधिकार खोसेर उसलाई श्रीमान्का अधीनस्थ गरिदिएको कुरा त्रिपाठीले उल्लेख गर्दै मार्क्सवादीहरूले महिलामुक्ति आन्दोलनको ठोस धरातल प्रदान गर्ने क्रममा मार्क्स स्वयंले आफ्नो पुँजी नामक पुस्तकमा महिला पराधीनताका विरुद्ध आवाज उठाउँदै महिला मुक्तिको मार्ग देखाएका छन् भन्ने विचार प्रस्तुत गरेकी छन् ।

एङ्गोल्सको परिवार, निजी सम्पत्ति र राज्यको उत्पत्ति भन्ने पुस्तकमा वर्गीयताको अन्त्य नभई महिला शक्ति सम्भव नहुने कुराको खुलासा गर्दै महिला मुक्ति आन्दोलनलाई वर्गीय मुक्ति आन्दोलनसँग जोड्ने काम गरेको चर्चा समेत त्रिपाठीले गरेकी छन् भने मार्क्स, एङ्गोल्स, लेनिन, स्टालिन, माओले महिलाको पूर्ण मुक्तिविना सर्वहारा वर्गको पूर्ण मुक्ति सम्भव छैन भन्दै महिला मुक्तिलाई अत्यन्त महत्त्व प्रदान गरेको विचार त्रिपाठीले यस समालोचनामा व्यक्त गरेकी छन् ।

व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र र विश्वले महिला र पुरुषका बिच गरेको भेदभावको तित्त प्रभावका विरुद्ध छेडिएको आन्दोलनको नाम नै नारीवाद हो भनी परिचय दिन पुगेकी त्रिपाठीले नारीमाथि पुरुषका हरेक प्रकारका अधीनस्थताहरू समाप्त गर्नु नै नारीवादको मूल सारका रूपमा प्रस्तुत गर्दै एकातिर नारीका पक्षमा क्रमिक रूपमा सामाजिक परिवर्तन हुँदै जानु र अर्कातिर साहित्यको अर्को समृद्ध परम्परा कायम हुनु नै पाश्चात्य नारीवादी साहित्यको देन भएको दृष्टिकोण व्यक्त गरेकी छन् ।

त्यस्तै तेस्रो परिच्छेद अन्तर्गत पाश्चात्य नारीवादी समालोचनाका प्रमुख सिद्धान्तहरू शीर्षकभित्र पाश्चात्य नारीवादी समालोचनाका मूल मान्यताका साथै उदार, मार्क्सवादी, आमूल र समाजवादी भनिने नारीवादका विशेष स्थापनाका साथै सहसन्दर्भित मनोविश्लेषणात्मक उत्तरसंरचनावादी उत्तर आधुनिकतावादी र जातीय-सांस्कृतिक, कालावादी, काला नारी समलैङ्गिक, उत्तर उपनिवेशवादी, उत्तर नारीवादी र तेस्रो धार भनिने समेत नारीवादी समालोचनात्मक पक्षका बारेमा पनि त्रिपाठीले विवेचना गरेकी छन् ।

त्यस्तै चौथो परिच्छेद अन्तर्गत नेपालमा नारी जागरण र नारीवादी चेतनाको विकास शीर्षक अन्तर्गत नेपाली समाजमा नारीको स्थिति र क्रमिक नारी जागरणको विश्लेषण गर्दै नारीवादको प्रसारमा परेको पाश्चात्य र एसियाली प्रभावको उल्लेख गर्नुका साथै नेपाली बौद्धिक सांस्कृतिक र साहित्यिक क्षेत्रमा नारीवादी विकासका बारेमा गरेकी छन् ।

यसरी विश्वका अमेरिका र युरोपजस्ता ठुला राष्ट्रतिर महिलामाथि दोहोरो जिम्मेवारीको अन्त्य, बाहिरी क्षेत्रमा कामको अवसर, समान ज्याला, निश्चित कार्यालय अवधि, नागरिकता, मताधिकार, राजनीतिक अधिकारजस्ता कुराका लागि प्रारम्भ भएको महिला आन्दोलनले समाजका हरेक क्षेत्रमा आफूलाई विस्तार गरिसकेको र यसको स्वरूपमा पनि विविधता देखा परिसकेको आन्दोलनको नाम नै पाश्चात्य जगतमा नारीवादी आन्दोलन हो भन्ने निष्कर्ष निकाल्न पुगेकी त्रिपाठीले अन्तिम परिच्छेद अन्तर्गत नेपाली समाजमा नारीको स्थिति र क्रमिक नारी जागरणको विकासका, नारीवादको प्रसारमा परेको पाश्चात्य र एसियाली प्रभावको उल्लेख गर्नुका साथै नेपाली बौद्धिक सांस्कृतिक र साहित्यिक क्षेत्रमा नारीवादी विकासका बारेमा विवेचना गरेकी छन् ।

यसरी विश्वका अन्य मुलुकका समाज भन्ने नेपाली समाज पनि विकासका विभिन्न चरणहरू पार गर्दै आजको स्थितिसम्म आइपुगेको उल्लेख गर्दै त्रिपाठीले अन्य मुलुकका नारीलाई भन्ने नेपालका नारीलाई पनि पितृसत्तात्मक सामन्तकाल सर्वाधिक पीडादायी रहेको र नेपाली नारीका सदर्थमा राणा शासनकाल नै त्यो अवधि हो भन्ने निष्कर्ष यस नारीवादी सौन्दर्य चिन्तन नामक सैद्धान्तिक समालोचनात्मक कृतिमा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

५.२.६ 'सिर्जनवृत्तका परिधिमा गुणराज उपाध्याय' कृतिको विश्लेषण

सुधा त्रिपाठीका प्रकाशित कृतिहरूमध्ये सिर्जनवृत्तका परिधिमा गुणराज उपाध्याय सत्रौं कृति हो । अनुसन्धानात्मक कृतिका रूपमा रहेको उक्त कृति वि.सं. २०६९ मा विवेक सृजनशील प्रकाशन प्रा.लि. बाट प्रकाशित भएको हो । जीवनीपरक समालोचना पद्धतिमा आधारित यो कृति आठ परिच्छेदमा विभाजित छ । ती आठ परिच्छेदको सामान्य विश्लेषणलाई यहाँ परिच्छेदगत रूपमा सङ्क्षेपमा विश्लेषण गरिएको छ । सो पुस्तकको प्रथम परिच्छेदमा त्रिपाठीले सामान्य परिचय दिने क्रममा 'गुणराज उपाध्यायको जीवनीको विश्लेषण' मूल शीर्षक राखी त्यस शीर्षकभित्र जन्म, पारिवारिक पूर्वपृष्ठभूमिमा जीवनको प्रथम चरण र शिक्षा-दीक्षाको क्रम, व्यावहारिक जिम्मेवारी तथा

पेसागत आर्थिक सङ्घर्ष, दाम्पत्य जीवन र सन्तान, दिनचर्या र साहित्य लेखनजस्ता शीर्षकहरू छनौट गरेकी छन् भने 'साहित्य लेखन' शीर्षकभित्र नै प्रेरणा र प्रभाव, काव्यहेतुको प्रसङ्ग, आनुवंशिक भक्ति-परम्पराको प्रेरणा, आर्थिक स्थितिले लेखनमा पारेको प्रभाव, प्रारम्भिक लेखन र प्रथम प्रकाशन र साहित्य लेखनको विकास उपशीर्षकहरू चयन गरेकी छन् । त्यसैगरी यसै परिच्छेदमा जीवनको अन्तिम प्रहर र देहावसान शीर्षक पनि राखेकी त्रिपाठीले गुणराज उपाध्यायका पारिवारिक पूर्वपृष्ठभूमि देखि बाल्यकाल, शिक्षादीक्षा, साहित्य लेखनको प्रेरणा र साहित्यको विकास लगायत देहावसानसम्मको चर्चा प्रथम परिच्छेदभित्र गरेकी छन् ।

दोस्रो परिच्छेद अर्न्तगत त्रिपाठीले 'गुणराज उपाध्यायको व्यक्तित्वका विभिन्न पाटाहरू' मूल शीर्षकभित्र शारीरिक व्यक्तित्व, स्वभाव र अभिरुचि उपशीर्षकमा गुणराज उपाध्यायको व्यक्तित्वको चर्चा गरेकी छन् । उनले नम्र र सरल स्वभावका साथै प्रसन्न चेहरा भएका गुणराजमा भट्ट हेर्दा कुनै साधु सन्तको चेहरा आइहाल्ने विचार व्यक्त गरेकी छन् । त्रिपाठीले राम र कृष्णजस्ता आराध्य देवका भक्तिमा लीन हुन पुगेका गुणराजले प्रभुभक्तिकै सन्दर्भमा लेखन कार्य सुरु गरेका र यसकै माध्यमबाट आकार प्रकार र सङ्ख्याका दृष्टिले पनि नेपाली साहित्यलाई निकै कृति दिन सक्षम भएको कुरा व्यक्त गरेकी छन् ।

यसै परिच्छेदभित्र 'व्यक्तित्वका विभिन्न पाटा' शीर्षकभित्र गुणराजका पण्डित व्यक्तित्व, भक्त व्यक्तित्व, कर्मयोगी व्यक्तित्व र साहित्यिक व्यक्तित्वजस्ता उपशीर्षक राखेकी त्रिपाठीले गुणराजको पण्डित व्यक्तित्वको चिनारी दिँदै उनी कुनै शास्त्रका प्रकाण्ड पण्डित नभए पनि संस्कृत साहित्यका ज्ञाता थिए र यही संस्कृतबाट प्राप्त ज्ञान र यसैबाट उत्प्रेरित पाण्डित्य मुख्यतः भविष्य र साहित्यसँग सम्बद्ध थियो भन्ने कुरा चर्चा गरेकी छन् । यसका साथै गुणराजको पाण्डित्य त्यही भक्तियोग र भक्ति साहित्यको सिर्जना सम्बन्धी कर्मयोगका सन्दर्भमा सार्थक रहेको कुरा समेत त्रिपाठीले प्रस्ट पारेकी छन् ।

'भक्त व्यक्तित्व' शीर्षक अन्तर्गत आराध्यदेव श्रीकृष्ण र श्रीराम रहेका कवि गुणराजको भक्त व्यक्तित्वलाई आजको युग सन्दर्भमा निकै दुर्लभ व्यक्तित्वका रूपमा चिनाउँदै त्रिपाठीले भौतिकतापरक यस युगमा पनि भक्तिमय आध्यात्मिक व्यक्तित्व लिएर अटल रहन सक्नु केवल उनको धैर्यशीलता र आत्मविश्वासको परिणाम हो, बदलिँदो युगका प्रभावमा नपरी नेपालको भक्ति परम्परालाई आफ्ना जीवन सन्दर्भमा ग्रहण गर्दै त्यसलाई जोगाइराख्नका निम्ति गुणराजले महत्त्वपूर्ण सिर्जनात्मक भूमिका खेली क्षीणप्रायः हुँदै गइरहेको र प्रायः मक्कन लागिसकेको भक्ति र अध्यात्म

संस्कारको परम्परागत बिरुवालाई उनले सक्दो रचनात्मक परिपोषण दिन खोजेको कुरा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले गुणराजलाई कर्मयोगी व्यक्तित्वका रूपमा चिनाउने क्रममा निष्क्रियता मन नपराउने गुणराजको व्यक्तित्व क्रियाशील व्यक्तित्व हो र यसैले गर्दा उनले आफ्नो यशस्वी मुख्य कर्मका रूपमा काव्यरचनालाई रोजेका हुन् भन्ने धारणा राख्दै व्यवसाय कर्म र रचना कर्मबाट नै उनी कर्मयोगी व्यक्तित्वका रूपमा चिनिन पुगेका हुन् भन्ने चिन्तन प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सोही परिच्छेदमा साहित्यिक व्यक्तित्व शीर्षकभित्र कवि व्यक्तित्व, नाटककार व्यक्तित्व र भाषागत विविधताका रूपमा चिनाउँदै साहित्यका क्षेत्रमा मुख्यतया कविका रूपमा प्रतिष्ठित गुणराजको प्रिय विधा कविता हो र यसै विधामा उनको साहित्यिक व्यक्तित्व अडेको उल्लेख गरेकी त्रिपाठीले **कलङ्क मोचन** गद्य नाटक लेखेर यिनले आफ्नो गद्य लेखनको फाँटलाई बाँभो हुनबाट जोगाए पनि कवि व्यक्तित्वका सामु यो नाटककार व्यक्तित्व त्यति समुन्नत हुन नसकेको कुरा व्यक्त गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले भाषागत विविधताभित्र नेपाली भाषाको राम्रो दखल भएका गुणराजले नेपाली भाषालाई रचनात्मक स्तरसम्म उचाली यस भाषामा फुटकर र खण्डकाव्य हुँदै महाकाव्य-नाटकसम्म उकासेका छन् भन्ने विचार प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यसैगरी नेपाली भाषामा मात्र नभई संस्कृत काव्यलाई नेपाली भाषामा रूपान्तरण मात्र गरेका छैनन्, संस्कृत साहित्यमा पनि फुटकर कविता सहित **रुक्मिणी परिणयम्** नामक संस्कृत खण्डकाव्यको समेत रचना गरेका छन् जसले गर्दा पनि उनी संस्कृत र नेपाली दुवै भाषाका कवि हुन् भन्ने चर्चा त्रिपाठीले यस परिच्छेदमा गरेकी छन् ।

तेस्रो परिच्छेद अन्तर्गत त्रिपाठीले साहित्य यात्रा र त्यसका प्रमुख मोड शीर्षकभित्र गुणराज उपाध्यायको साहित्य यात्रा (१९८७-२०३१) पुग नपुग आधा शताब्दी अर्थात् ४४ वर्ष लामो रहेको देखाएकी छन् भने अर्को शीर्षक चरण विभाजन तथा चरणगत कृतिक्रमभित्र वि.सं. १९८७ बाट साहित्य-रचना प्रारम्भ गरेका गुणराजको साहित्य यात्रामा देखा पर्ने आएका १९८७-२००० सालको अवधिको आभ्यासिक प्रथम चरण, २००१ सालदेखि २०१५ सम्मको मध्यवर्ती र विकासशील एवं सक्रिय द्वितीय चरण र वि.सं. २०१६ सालदेखि तेस्रो र अन्तिम तथा निर्णयात्मक तृतीय चरणमा विभाजन गरी कृतिक्रमलाई समेत यस परिच्छेदमा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले चौथो परिच्छेदमा 'गुणराजका प्रथम चरणका कृतिहरूको विवेचना' मूल शीर्षक चयन गरी लय, भाव, विम्ब, अलङ्कार भाषाशैली र संरचनालाई कृति विवेचनाको आधार बनाएकी छन् । त्यस्तै प्रथम चरणका मुख्य प्रवृत्तिको चर्चा गर्ने क्रममा त्रिपाठीले गुणराज उपाध्यायको नेपाली कविता यात्राको आभ्यासिक प्रथम चरणमा सिर्जना भएका मूलतः फुटकर कविताहरूमा विषयवस्तु प्रस्तुत गर्ने क्षमता प्राप्त भइरहे तापनि भावको नवीनता र गहिराइ भने त्यति नभएको, त्यतिविधि अन्तर्गठित सुरम्य संरचना प्राप्त गर्न नसकेको तर विषयवस्तुको मोटो वस्तुगत कथनलाई श्लोकको ढाँचामा ग्रथित गर्न भने सक्षम गुणराजका प्रथम चरणका रचनाहरूबाट उनको कवित्वको प्रारम्भिकताभित्र दृष्टिगत हुने तथ्य त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

यसरी परिमाणात्मक र गुणात्मक दृष्टिले प्रथम चरण त्यति उपलब्धिपूर्ण र गरिमामय नभए पनि गुणराजको भक्तिमार्गी भावी कविता यात्राको सङ्केत दिई आगामी यात्राका लागि पृष्ठभूमिको निर्माण भने उनका यी फुटकर रचनाहरूले राम्ररी गरेका छन् भन्ने निष्कर्ष समालोचक त्रिपाठीले निकालेकी छन् ।

सोही समालोचनाको पाँचौं परिच्छेदमा त्रिपाठीले 'द्वितीय चरणका कृतिहरूको विवेचना' मूल शीर्षक राखी यस चरणका रचनाहरूको विधागत रूप महाकाव्य र खण्डकाव्य रहेको र यिनको विवेचनागत आधारका रूपमा खण्डकाव्य र महाकाव्यकै सैद्धान्तिक पक्षको चर्चा गरिनु पर्ने आवश्यकता औल्याउँदै कथावस्तु, पात्र विधान, परिवेश रचना, भाव विधान, लय विधान, भाषाशैली, विम्बालङ्कार विधान र संरचनाको समेत विश्लेषण गरेकी छन् । विवेचनागत आधारका रूपमा त्रिपाठीले माथि प्रस्तुत गरिएको महाकाव्यगत सैद्धान्तिक तत्त्वलाई नै आधार मानेकी छन् ।

सोही परिच्छेदमा खण्डकाव्यको विवेचना गर्ने क्रममा त्रिपाठीले गुणराजका अनुदित दुई खण्डकाव्यहरू **मेघदूत** र **श्रीमद्भगवद्भक्ति महिमा**बारे टिप्पणी गर्दै **गोविन्द गीत**, **अश्रुपात** र **सुदामा चरित्र** गरी तिनवटा खण्डकाव्यको विवेचना खण्डकाव्यकै सैद्धान्तिक तत्त्वका आधारबाट गरेकी छन् भने **विचार लहरी** र **शान्ति शतक** खण्डकाव्यको विवेचनामा कुनै सैद्धान्तिक आधार प्रयोग गरेकी छैनन् । त्यसैगरी यसै चरण फुटकर कविताको विवेचनाका रूपमा गुणराजका **अमोघ दर्शन** कविता सङ्ग्रहमा **काव्यसङ्गम**मा सङ्कलित फुटकर कविता र **अश्रुपात** खण्डकाव्यमा गाभिएका फुटकर कवितालाई छनोट गरेकी छन् । द्वितीय चरणको समग्र मूल्याङ्कन गर्ने क्रममा प्रथम चरणमा प्रायः स्फुट रचनामा सीमित रहने गुणराजलाई दोस्रो चरणको प्रारम्भिक अवस्थामा नै **श्रीकृष्ण सन्देश**जस्ता कृष्ण भक्तिपरक महाकाव्य दिन समर्थ भएका व्यक्तित्वका रूपमा चिनाउन

पुगेकी त्रिपाठीले यस चरणमा छायानुवाद, भावानुवाद र मौलिक गरी ८ वटा खण्डकाव्य दिन सफल कवि गुणराजको सङ्ख्यात्मक दृष्टिले यस चरणको काव्य सृजना सापेक्ष रूपमा उपलब्धिपूर्ण भए पनि गुणात्मक प्रगतिको सङ्केतका रूपमा कवित्व भने मध्यम स्तरकै नजिक रहेको धारणा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

त्रिपाठीले यस समालोचनात्मक कृतिको छैटौँ परिच्छेदभिन्न रहेको 'तृतीय चरणका कृतिहरूको विवेचना' शीर्षकमा रहेर **भरत मिलन** महाकाव्य र **शाहवंश** महाकाव्यको विवेचना गर्ने क्रममा महाकाव्यका शास्त्रीय मान्यतालाई अनुसरण गरेकी छन् भने **कलङ्क मोचन** नाटकको विवेचनामा पनि पूर्वीय शास्त्रीय नाट्य मान्यतालाई आधार बनाएकी छन् । त्यसैगरी यसै परिच्छेदभिन्न **अमोघ दर्शन** कविता सङ्ग्रह तथा **काव्यसङ्गम** खण्डकाव्यमा रहेका र तिनलाई प्रथम चरणमा चर्चा गरिएको फुटकर कविताको विवेचनाका आधार स्वरूप नै भएको (पृ. १९८) जानकारी समेत त्रिपाठीले दिएकी छन् ।

विधागत वैविध्यका दृष्टिले पनि गुणराजको साहित्यिक जीवनमा तेस्रो चरण विशेष उल्लेखनीय भएको बताउँदै त्रिपाठीले यसअघि गुणराजले कलम नै नचोपेको नाटक विधामा समेत हात हाली पूर्वीय पद्धतिको नाट्य प्रयास गरेका र **कलङ्क मोचन** नाटकका माध्यमबाट उनी कविका अतिरिक्त नाटककार समेत हुन सकेको धारणा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

हिन्दु धर्म र संस्कृतिको चेत प्रबल भएका कवि साध्य भक्ति र साधन कवित्व दुवैका परिप्रेक्ष्यमा नेपाली भक्ति काव्यका सबभन्दा पछिल्ला स्मरणीय साधक ठहरिन आएको तर्क प्रस्तुत गरेकी त्रिपाठीले गुणराजलाई प्रगतिवादी कविताका युगमा पाइलो टेक्दो नेपाली कविताका क्रममा मौलिक भक्तिकाव्यको नवोत्थान गर्ने कविका रूपमा चिनाउँदै यो नै उनको सर्वोपरि उपलब्धि रहेको चिन्तन व्यक्त गरेकी छन् । कविताका स्तरका दृष्टिले भने यस अन्तिम चरणसम्ममा पनि कवि गुणराज खासगरी मध्यम र उच्च मध्यम स्तरका विचका बिन्दुमा नै आइपुग्न सकेका, उनको स्वच्छ स्वस्फूर्त प्रतिभामा उच्च स्तरीय कवित्व ऊर्जा त्यति नरहेको र त्यसले परिष्कृतिको बाटो समेत नसमातेको तर कविता रचनाक्रममा त्यसमा आन्तरिक गुणात्मक विकास चाहिँ धेरथोर भइरहेको साक्ष्य यस तृतीय चरणका ठुला-साना रचनाबाट भल्किन आएको मूल्याङ्कन त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् ।

सातौँ परिच्छेदमा त्रिपाठीले 'कवि गुणराजको आधारभूत कृतित्व स्वरूप महाकाव्यकारिताको मूल्याङ्कन' शीर्षक अन्तर्गत महाकाव्यकारका रूपमा गुणराजका मुख्य विशेषता वा प्रवृत्तिभिन्न

समाज र संस्कृति, प्रकृति र जीवन दर्शन तथा भक्तिभाव र दोस्रो प्रविधिभिन्न आख्यानीकरण, लय विधान, संरचना, भाषाशैली, अलङ्करण शिल्पजस्ता शीर्षकहरू समेटेकी छन् । गुणराजको महाकाव्यको स्तर मूल्याङ्कन गर्दै समग्र नेपाली महाकाव्य परम्परामा कवि गुणराजको स्थान महाकाव्यको गौण धारामा रहेको देखिएको र भक्तिमूलक महाकाव्य परम्परामा कृष्णभक्तितर्फ पनि मौलिक तथा विधा सचेत महाकाव्य प्रदान गर्ने कवि तथा रामभक्तितर्फ पनि मौलिक एवं वृहत्तर श्लोक विस्तारका दृष्टिले पहिलो र रामभक्ति परम्पराका दृष्टिले भानुभक्तपछि दोस्रो भक्ति महाकाव्यकारका रूपमा गुणराज देखा परेको निष्कर्ष त्रिपाठीले निकालेकी छन् । त्यस्तै ऐतिहासिक महाकाव्य परम्पराका क्षेत्रमा पनि राम शाहको मानव व्यक्तित्वलाई ईश्वरीय व्यक्तित्व प्रदान गर्ने दृष्टिले उनी उल्लेख्य रहेको जानकारी दिएकी त्रिपाठीले कवि गुणराज नेपाली महाकाव्यको गतिशील मूल धाराको युगप्रवाहसँग कम संबद्ध देखिएकाले पनि उनको महाकाव्यात्मक योगदान नेपाली महाकाव्यको समग्रतामा नभएर मूलतः भक्ति परम्परा र वीर स्तुति परम्पराका महाकाव्यकारका रूपमा अभिनन्दनीय (पृ. २१९) रहेको कुरा उल्लेख गरेकी छन् ।

प्रस्तुत समालोचनात्मक कृतिको आठौं अर्थात् अन्तिम परिच्छेदमा सुधा त्रिपाठीले 'गुणराजको साहित्य यात्रा एवं प्राप्तिको मूल्याङ्कन र निष्कर्ष' शीर्षकभिन्न गुणराजको साहित्य यात्रालाई नियाल्दा उनको कवित्वको खास आधारस्तम्भ उनको भक्ति धाराको महाकाव्यकारिता नै देखिन आउने कुरा प्रस्तुत गर्दै नेपाली कविताको प्राथमिक कालमा केन्द्रीय भूमिका खेली माध्यमिक कालमा गौण रूपमा क्रियाशील रहेको भक्ति परम्परा आधुनिक कालमा निकै शिथिल रहेकोमा गुणराजको कृतित्वले त्यस भक्ति धारालाई मौलिक महाकाव्य विस्तारसम्म पुनर्जाग्रत गराउने प्रयास गरेका छन् भन्ने कुरा उल्लेख गरेकी छन् । यसका साथै उनको काव्यात्मक सफलता मध्यम र उच्च मध्यम स्तरका साँधमा रहे पनि भक्ति धाराप्रति यो दृष्टिकोण समेत त्रिपाठीले गुणराजका जीवनी, व्यक्तित्व, कृतिका समग्र पाटाहरूको विश्लेषण वर्गीकरण सहित श्रीकृष्ण सन्देश, भरतमिलन र शाहवंशजस्ता महत्त्वपूर्ण महाकाव्यको विवेचना, मेघदूत, गोविन्दगीत, विचार लहरी, शान्तिशतक, अश्रुपात, सुदामा चरित्र खण्डकाव्यको विवेचनाका साथै फुटकर कविता र कलङ्क मोचन नाटकको विवेचना तथा विश्लेषण गरेकी छन् ।

गुणराजको जीवनी र व्यक्तित्वका आधारमा उनको कृतित्वको निरूपण गरिएको यस अनुसन्धानमा उनको पण्डित व्यक्तित्व, भक्त व्यक्तित्व तथा कर्मयोगी व्यक्तित्वको प्रभाव उनका सिर्जनामा परेको र त्यस व्यक्तित्वकै कारण श्रीकृष्ण सन्देश र भरत मिलनजस्ता महाकाव्य सिर्जना

गर्न सकेको साहित्यिक सत्यतालाई त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेकी छन् । अनुसन्धानकर्ताका रूपमा आफ्नो स्थान सुरक्षित गर्न सफल त्रिपाठी कवि गुणराजका महाकाव्यगत विशेषता र प्रवृत्ति केलाउँदै उनको महाकाव्यको स्तर मध्यम र उच्च मध्यम कायम गरी र नेपाली महाकाव्यका परम्परामा उनको मध्यम र उच्च मध्यम स्थान समेत निक्योल गर्न सफल भएकी छन् । यो नै उनको अनुसन्धानमूलक कार्यको महत्त्वपूर्ण प्राप्ति हो ।

५.२.७ 'महिला समालोचक र नेपाली समालोचना'को विश्लेषण

सुधा त्रिपाठीका प्रकाशित कृतिहरूमध्ये **महिला समालोचक र नेपाली समालोचना** पहिलो सम्पादित कृति हो । २०६२ सालमा साभा प्रकाशनबाट प्रकाशित यस समालोचनात्मक कृतिमा फुटकर रूपमा कम्तीमा पाँचवटा समालोचना प्रकाशित गरेका महिला समालोचकलाई सकेसम्म खोजी समावेश गरिएको कुरा त्रिपाठीले उल्लेख गरेकी छन् । प्रामाणिकताका लागि प्रारम्भका पाँच समालोचना प्रकाशनका माध्यम, शीर्षक तथा प्रकाशन समयको पनि उल्लेख गरिएको जानकारी दिँदै यस पूर्वसर्तमा अट्ने पच्चिसजना महिला समालोचक मात्र फेला परेका छन् तर नेपाल बाहिर बसेर कलम चलाउने महिला समालोचकलाई भने यस समालोचनामा समावेश नगरिएको कुरा त्रिपाठीले प्रस्ट पारेकी छन् । प्रारम्भका दुईजना समालोचकहरू (प्रभादेवी र स्नेहलता पन्त) लाई भने यी पूर्व सर्तमा राखिएको छैन । उनीहरूका एक एकवटा बाहेक अरू समालोचना आजसम्म फेला नपरेको र महिला लिखित समालोचनाको इतिहास लेखनका क्रममा यिनको उल्लेखको अपरिहार्य आवश्यकता रहनाले यिनलाई यस सङ्ग्रहमा नछुटाइएको (त्रिपाठी, २०६२ : ३) विचार त्रिपाठीले व्यक्त गरेकी छन् ।

उक्त समालोचनामा सङ्कलित समालोचकहरूमा प्रभादेवी उपाध्याय— नेपाली साहित्यमा पीडाको साधना, स्नेहलता पन्त— 'उसैको लागि' पर्वमाथि एक दृष्टि, सरिता ढकाल— आलोचनाको दृष्टिमा 'त्यो फेरि फर्कला', गोमा उपाध्याय— नारी चेत र मातृत्व, डा. गार्गी शर्मा— 'मालती-मङ्गले'मा प्रेम र मर्म, रमा शर्मा— नेपाली उपन्यास जगतमा थप सिर्जना 'हेरफेर'मा एक दृष्टि, देवी शर्मा— मैनालीको 'चित्ताको ज्वाला' कथाको परिक्रमा, सुशीला भट्ट— चाँदनी शाहको काव्य साधना, रञ्जुश्री पराजुली— समका नाटकका दुई नारी पात्रको तुलनात्मक अध्ययन, डा. सुषमा आचार्य— **माइतघर** उपन्यासको प्रकृतिपरक विश्लेषण, बिन्दु कोइराला— 'खैरेनीघाट'मा शङ्कर कोइराला, सुधा त्रिपाठी— कथाकार भवानी भिक्षु र उनका नारी पात्र, ज्योति खड्का (पाण्डे)— कवि दिनेश अधिकारीका दुई कविताहरूको परिधि र दृष्टि स्वरूप विवेचना, गायत्री श्रेष्ठ— 'रातभरी हूरी चल्थो'

कथाभित्रको जीवनदृष्टि, ललिता अधिकारी- नेपाली साहित्यमा नाटक परम्परा र माया नाटक, नन्दमाया नकर्मि- प्रेम र घृणाको उत्कर्षमा सरुभक्तको 'विस्फोटको तेस्रो पाइलो', डा. उषा ठाकुर- महाकवि देवकोटाको जीवन दर्शन, सावित्री मल्ल (कक्षपति)- कथाकार मोहनराज शर्मा र उनको 'माछो' कथा, ज्ञानु पाण्डे- अस्तित्ववादी नारीवाद र इन्दिरा प्रसाईको कथा, जया पाठक- नाटककार शक्तिवल्लभ अर्याल र उनको 'हास्य कदम्ब' नाटकको विवेचना, शान्ता शाक्य 'सुभाषिता'- औपन्यासिक धरातलमा **पटाचारी** उपन्यासको विवेचना, शारदा अधिकारी (ढकाल)- **योजनगन्धा** उपन्यासको अन्तरङ्ग विश्लेषण, प्रभा भट्टराई (आचार्य)- **अन्धवेग**की पम्फा र पम्फाको अन्धवेग, रमा शिवाकोटी- कथाकार विजय मल्ल र उनका कथाहरू, मोमिला जोशी- **शिरीषको फुल**मा काव्यिक चेतना रहेका छन् ।

यसरी **महिला समालोचक र नेपाली समालोचना** सम्पादित समालोचनात्मक कृतिमा त्रिपाठीले वि.सं. २००० देखि २०५९ सालसम्मका नेपाली समालोचनाका क्षेत्रमा कलम चलाउने नारी प्रतिभालाई समेटेकी छन् जसमा २५ जना नारी समालोचकलाई समावेश गरिएको छ भने उनीहरूको सामान्य परिचय सहित प्रकाशित कृतिहरू र एक एकवटा समालोचनात्मक लेख समेतलाई सङ्कलन गरी नेपाली साहित्यका समालोचनात्मक क्षेत्रमा नारीको उपस्थितिलाई त्रिपाठीले स्पष्ट रूपमा इतिहास सहित प्रस्तुत गरेकी छन् । यो नै यस कृतिको महत्त्वपूर्ण विशेषता हो ।

५.२.८ निष्कर्ष

सर्वप्रथम २०३५ सालमा 'मनोरमा' पत्रिकामा समालोचना प्रकाशित गरी समालोचना विधामा कलम चलाउन पुगेकी त्रिपाठीका हालसम्म पाँचवटा समालोचना र दुईवटा अनुसन्धानात्मक कृति प्रकाशित भएका छन् । २०५९ सालमा प्रकाशित **दृष्टिचौतारी** समालोचनामा जीवनी, इतिहास र विद्यालाई आफ्नो समालोचनाको मुख्य विषयवस्तु बनाएकी त्रिपाठीले विधाका रूपमा कथा, कविता, उपन्यास र महाकाव्यलाई रोजेकी छन् भने इतिहासका रूपमा पृष्ठभूमिदेखि वर्तमानसम्म महिला स्रष्टाको अवस्थालाई प्रस्तुत गरेकी छन् । कुनै कुनै ठाउँमा पुरुष पात्र उपस्थित भए पनि उनका अधिकांश समालोचनामा नारी पात्रहरू नै केन्द्रबिन्दुका रूपमा उपस्थित छन् । त्रिपाठीले नेपाली साहित्यमा नारीवादी चिन्तनको प्रयोग गर्नुका साथै सो सिद्धान्तलाई स्थापित समेत गरी **नारीवादी सौन्दर्य चिन्तन** समालोचनात्मक कृति समेत प्रकाशित गरेकी छन् । त्रिपाठीका

अनुसन्धानात्मक कृतिमा नेपाली उपन्यासमा नारीवाद र सिर्जनवृत्तका परिधिमा गुणराज उपाध्याय रहेका छन् ।

नेपाली उपन्यासमा नारीवाद समालोचनाभिन्न त्रिपाठीले रूपमती, स्वास्नीमान्छे, शान्ति, अनुराधा, तिन घुम्ती र अनिंदो पहाडसँगै उपन्यासलाई आफ्नो समालोचनाको केन्द्रबिन्दु बनाएर ती उपन्यासभिन्न नारीवादी दृष्टिकोण पहिल्याउँदै उदार नारीवाद, समाजवादी नारीवाद, अस्तित्ववादी नारीवाद र मार्क्सवादी नारीवादका स्वरूपहरू आएको विचार प्रस्तुत गरेकी छन् । अनुसन्धानकर्ताका रूपमा आफ्नो स्थान सुरक्षित राख्न सफल त्रिपाठीले कवि गुणराजको व्यक्तिगत परिचयका साथै उनको महाकाव्यगत विशेषता र प्रवृत्ति केलाउँदै नेपाली महाकाव्यका परम्परामा उनको स्थान र स्तर समेत निकर्षण गरेकी छन् । यसरी नारीवादी दृष्टिकोणलाई प्रस्तुत गर्नु त्रिपाठीको समालोचनात्मक विशेषता हो भने नेपाली साहित्यमा नारीवादलाई स्थापित गर्नु उनको महत्त्वपूर्ण समालोचनात्मक उपलब्धि हो ।

५.३ सुधा त्रिपाठीका नाटकको विश्लेषण

५.३.१ 'निःश्वासका गुजुल्टाहरू' नाटक सङ्ग्रहको विश्लेषण

सुधा त्रिपाठीका प्रकाशित कृतिहरूमध्ये निःश्वासका गुजुल्टाहरू लघु नाटक सङ्ग्रह चौथो कृति हो । पहिलो अर्थात् एउटै मात्र लघु नाटक सङ्ग्रहका रूपमा प्रकाशित यस पुस्तकले उनलाई नाटककारका रूपमा चिनाउन सफल भएको छ । त्यसैले पनि यस कृतिलाई ऐतिहासिक मूल्य बोकेको महत्त्वपूर्ण कृतिका रूपमा लिन सकिन्छ । वि.सं. २०५५ वैशाख १३ गते मातातीर्थ औंसीका दिन नेपाल राजकीय प्रज्ञाप्रतिष्ठानबाट प्रकाशित हुन पुगेको उक्त नाटक सङ्ग्रहमा सातवटा नाटकहरू सङ्गृहित छन् । यस सङ्ग्रहभिन्नका नाटकहरूमा 'उनी फर्कँदिनन् कि !' 'अवेर नगरौं', 'बादल फाट्न खोजिरहेछ', 'पहाडलाई के सजाय दिन्छौ ?', 'दोभान', 'क्षत-विक्षत मुटुहरू' र 'दोषी को ?' रहेका छन् । यस लघु नाटक सङ्ग्रहको विश्लेषण नाटककै तत्त्वहरू : विषयवस्तु, चरित्र, परिवेश, उद्देश्य, द्वन्द्व, संवाद र भाषाशैलीका आधारमा गरिएको छ ।

५.३.१.१ विषयवस्तु

त्रिपाठीको प्रस्तुत निःश्वासका गुजुल्टाहरू नाटक सङ्ग्रहमा सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिक, नारीवादी विषयवस्तु समेटिएर आएका छन् जसलाई विभिन्न उपशीर्षकमा विश्लेषण गरिएको छ :

क) सामाजिक

नाटककार त्रिपाठीले 'उनी फर्कदिनन् कि !', 'अवेर नगरौं', 'बादल फाट्न खोजिरहेछ', 'पहाडलाई के सजाय दिन्छौ ?' 'दोभान', 'क्षत-विक्षत मुटुहरू' र 'दोषी को ?' नाटकहरूमा सामाजिक विषयवस्तुको प्रयोग गरेकी छन् । 'उनी फर्कदिनन् कि !' नाटकमा सामाजिक विषयवस्तु प्रयोग गर्ने क्रममा उनले लेखेकी छन् :

... तिम्रो सट्टा त बरु एउटा अपढ, असभ्य, जँड्याहासँग मेरो सम्बन्ध जुटेको भए म खुसी र सुखी पनि हुन्थे । कुट्थ्यो, पिट्थ्यो, गाली गथ्यो तर त्यस अशिक्षित व्यक्तिले मलाई आजजस्तो मुटुमा कोपरी-कोपरी आहत अवश्य बनाउने थिएन । मेरो चेतना यसरी विक्षिप्त बन्न पाउँदैनथ्यो (पृ. ८/९) ।

उक्त नाटकमा प्रमुख नारी पात्र शिक्षित पुरुषले दयामायाका नाममा आफूमाथि गरेको बर्बरता, शारीरिक, मानसिक शोषण सहनुभन्दा त अशिक्षित पुरुषसँग विवाह गरेर क्षणिक पीडामा बाँच्नुमा नै खुसी देख्छे । ऊ आफ्नो चेतना शिक्षित पुरुषबाट विक्षिप्त भएको कहिल्यै देख्न सकिदैन भन्ने चिन्तन प्रस्तुत गर्ने त्रिपाठीले अशिक्षित पुरुषबाट भन्दा पनि शिक्षित पुरुषबाट नारी सधैं शोषित र पीडित बन्छे मात्र होइन, उसले दिएको यातना अझ चर्को हुन्छ भन्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् ।

यसरी नाटककार त्रिपाठीले माथि प्रस्तुत नाटकहरूमा पितृसत्तात्मक समाजमा नारीमाथि हुने गरेका र भएका अन्याय र अत्याचार सम्बन्धी यथार्थ घटनाहरूलाई विषयवस्तुका रूपमा प्रस्तुत गरेकी छन् । समाजमा विद्यमान पुरुषका असमान व्यवहारबाट पारिवारिक विखण्डन भएका र नारीले आफ्नो स्वतन्त्रता र अस्तित्व रक्षाका लागि विद्रोही भई आत्मसम्मान र स्वाभिमानको रक्षाका लागि आफ्नो पारिवारिक विखण्डनलाई सहर्ष स्वीकार्नु पर्ने बाध्यतालाई त्रिपाठीले सामाजिक विषयवस्तुका रूपमा अँगालेकी छन् ।

ख) सांस्कृतिक

समाजमा परम्परादेखि विद्यमान सांस्कृतिक पक्षहरूलाई त्रिपाठीले यस नटक सङ्ग्रहको विषयवस्तुका रूपमा चित्रण गरेकी छन् । उनका यस सङ्ग्रहभित्रका 'उनी फर्कदिनन् कि !', 'अबेर नगरौं', 'बादल फाट्न खोजिरहेछ', 'पहाडलाई के सजाय दिन्छौ ?', 'दोभान', 'क्षत-विक्षत मुटुहरू' नाटकहरूमा सांस्कृतिक विषयवस्तु प्रस्तुत भएका छन् । नाटककार त्रिपाठीले पितृसत्तात्मक सामाजिक परम्परा र मूल्य मान्यता अनुसार नारी सधैं पुरुषकै अधीनमा बस्न बाध्य भएको अवस्था 'अबेर नगरौं' नटकमा यसरी प्रस्तुत गरेकी छन् : *हाम्रो समाजमा विधवा हुनु के छ, सबैको हेला, घृणा उसमाथि बर्सन थाल्छन् । परम्पराले विधवालाई सद्धे हुँदाहुँदै पनि आडे लौरी टेकेर हिंड्न कर लगाउँछ* (पृ. १७) ।

प्रस्तुत भनाइमा त्रिपाठीले पति बाँचुन्जेल त पतिका अधीनमा जीवन बिताउन विवश नारी पतिको मृत्युपछि पनि उसकै नाम लिएर वैधव्य जीवन बिताउन बाध्य हुनुपर्ने सांस्कृतिक मूल्यलाई सङ्केत गर्दै पतिविनाकी नारी समाजमा सधैं शक्तिहीन र लड्गडी हुन्छे, समाजले नै उसको शक्तिलाई समाप्त पारी शक्तिहीन र कमजोरको ताज भिराइदिन्छ, हेला र घृणा गर्छ भन्ने सांस्कृतिक मूल्य र मान्यतालाई प्रस्तुत गरेकी छन् ।

ग) आर्थिक

सुधा त्रिपाठीका निःश्वासका गुजुल्टाहरू नाटक सङ्ग्रहभित्रका 'उनी फर्कदिनन् कि !', 'बादल फाट्न खोजिरहेछ', 'पहाडलाई के सजाय दिन्छौ ?' र 'दोषी को ?' नाटकहरूमा आर्थिक विषयवस्तु प्रस्तुत भएका छन् । आर्थिक विषयका कारण नै समाजमा नारीले सधैं पुरुषबाट अपमान र तिरस्कार भोग्नुपर्छ भन्ने सन्देश त्रिपाठीका 'उनी फर्कदिनन् कि !' नाटकमा यसरी प्रस्तुत भएको छ-

आखिर तिमिले मर्यादाको ख्याल राख्न सकिनौ । अब म पनि चुप लाग्न सक्तिनँ । बुभ्यौ बिन्दु ? मैले राम्री, सम्पन्न तथा कुलीन परिवारकी केटीसँग जोडिन लागेको सम्बन्धलाई लत्याएर तिमिलाई स्विकारेको थिएँ । कमसेकम त्यतिका लागि पनि तिमिले मप्रति कृतज्ञता जनाउनु पर्ने हो (पृ. ८) ।

आर्थिक असमानताका कारण पुरुषका माध्यमबाट नारीले अपमान र तिरस्कार सहनुपर्छ भन्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत गर्दै धनी र सम्पन्न परिवारकी छोरी भए उसलाई जसले पनि स्विकार्ने तर

गरिब परिवारकी छोरीलाई पत्नीका रूपमा स्विकार्नु भनेको उसप्रति गरेको दया मात्र सम्झने पुरुषले नारीलाई आफ्नो जीवन साथीका रूपमा नभई दासीका रूपमा स्विकारेको हुन्छ भन्ने विचार त्रिपाठीले उक्त नाटकमा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

घ) नारीवादी दृष्टिकोण

निःश्वासका गुजुल्टाहरू नाटकभित्रका 'उनी फर्कदिनन् कि !', 'अबेर नगरौं', 'बादल फाट्न खोजिरहेछ', 'पहाडलाई के सजाय दिन्छौ ?', 'दोभान' नाटकहरूमा त्रिपाठीले नारीवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् । उदाहरणका रूपमा त्रिपाठीको 'दोभान' नाटकभित्रका केही अंशलाई यहाँ प्रस्तुत गरिएको छ-

म प्रीतिमा चाकरी गर्न सक्तिनँ । ऊ मेरो मालिक होइन । म आफूलाई दासी बनेर उसको चरणमा घोट्याउन सक्तिनँ । अगाध स्नेहमा पग्लेर उसको छातीमा टाउको अड्याएर आँसु झार्न सक्छु तर त्यही आँसुलाई माध्यम बनाएर हेपेको सहन सक्तिनँ । उसको पौरखमा उसलाई सहस्र चुम्बन गर्न सक्छु तर 'हजुरकै शरणमा छु' भनेर आत्मसमर्पण गर्न सक्तिनँ (पृ. ५४) ।

पितृसत्तात्मक समाजका अधिनायकका रूपमा स्थापित भएका पुरुषहरूले नारीलाई दासी बनाएर राख्ने प्रवृत्तिको विरोध गर्दै त्रिपाठीले नारी पुरुषको सहपाठी वा सहयात्री बनेर हिंड्न रुचाउने तर आत्मसमर्पण गरेर पुरुषको चरणमा घोटिन नचाहने दृष्टिकोण 'दोभान' नाटकमा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

यसरी त्रिपाठीले निःश्वासका गुजुल्टाहरू नाटक सङ्ग्रहमा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक र नारी केन्द्रित विषयवस्तु प्रस्तुत गरेकी छन् ।

५.३.१.२ चरित्र चित्रण

सुधा त्रिपाठीले उनका निःश्वासका गुजुल्टाहरू नाटक सङ्ग्रहमा समाजमा प्रचलित सामान्य पात्रहरूको प्रयोग गरेकी छन् । नारी केन्द्रित नाटक सङ्ग्रहमा नारी पात्रको आधिक्य बढी रहेको देखिन्छ । 'अबेर नगरौं' नाटकका सबै पात्रहरू कुमारी, शान्ता, सीता, गीता, रूपा, शकुन्तला, कमला र आमा नारी नै रहेका छन् । यस नाटकमा नेपथ्य वा पात्रले प्रसङ्ग अनुसार चर्चा गर्ने क्रममा पुरुष पात्र आए पनि मञ्चीय पात्रका रूपमा कतै पनि पुरुष पात्र देख्न पाइँदैन । अन्य

नाटकहरू 'बादल फाट्न खोजिरहेछ'मा राम र रमेश पुरुष पात्र र रमा र दीप्ति नारी पात्र, 'पहाडलाई के सजाय दिन्छौ'मा रमेश, उमेश र वकिल तिन पुरुष पात्र र शोभा, ज्ञानु र आमा तिनजना नारी पात्र गरी जम्मा छजना मञ्चीय पात्र रहेका छन् । 'दोभान' नाटकमा सन्ध्या र स्मृति नारी पात्र, किरण र अतीत पुरुष पात्र गरी चारजना पात्र, 'उनी फर्कदिनन् कि !' नाटकमा छोरा (अमृत) र नोकर पुरुष पात्र, आमा र बिन्दु नारी पात्र जम्मा चारजना, 'क्षत-विक्षत मुटुहरू' मा महिमा, मेघा र विस्मृति नारी पात्र र मधु पुरुष पात्र गरी सबै नाटकमा पुरुष र नारी पात्रको बराबर प्रयोग गरेकी त्रिपाठीले 'दोषी को ?' नाटकमा सुशील, सुधीर, विजय र कान्छो चारजना पुरुष पात्र र प्रेरणा एकजना नारी पात्र गरी जम्मा पाँचजना मञ्चीय पात्रहरूको प्रयोग गरेकी छन् ।

यसरी मध्यम वर्गीय शिक्षित पात्रहरूको चित्रण गर्न पुगेकी त्रिपाठीले आफ्ना प्रत्येक नाटकमा नारी पात्रको नै प्रमुख भूमिका रहेको देखाएकी छन् । नारी पात्रकै केन्द्रीयताबाट पितृसत्तात्मक समाजभित्र पुरुषबाट नारीले भोग्नु परेको अन्याय अत्याचारलाई प्रस्तुत गर्दै आजका नारी पुरुषको त्यस्तो घनलाग्दो शोषण र दमन सहेर चुपचाप बस्न सक्दैनन् र बस्नु समेत हुँदैन भन्ने सन्देश त्रिपाठीले यस नाटक सङ्ग्रहमा प्रयोग भएका नारी पात्रका माध्यमबाट प्रस्तुत गरेकी छन् ।

५.३.१.३ परिवेश

काठमाडौं अर्थात् सहरको परिवेशलाई रोजेर सम्पूर्ण नाटकको रचना गर्न पुगेकी त्रिपाठीले 'उनी फर्कदिनन् कि !', 'अबेर नगरौं', 'बादल फाट्न खोजिरहेछ', 'दोषी को ?' नाटकभित्र घरभित्रको सीमित कोठालाई नाटकको परिवेश बनाउन रुचि देखाएकी छन् । 'पहाडलाई के सजाय दिन्छौ ?' नाटकको अगाडिको दृश्य घरभित्रको कोठा रहेको छ भने नाटकको पछाडिको दृश्य जेलभित्रको परिवेश रहेको देखिन्छ । त्यसैगरी 'दोभान' नाटकभित्र परिवेशका रूपमा अगाडिको दृश्यका रूपमा विद्यालयको चौर आएको छ भने यसै नाटकको पछाडिको दृश्य घरभित्रको परिवेशमा नै सीमित रहेको छ । त्रिपाठीले नाटकका परिवेश चयन गर्ने क्रममा 'क्षतविक्षत मुटुहरू' नाटकभित्र अस्पतालभित्रको दृश्यलाई आफ्नो नाटकगत परिवेश बनाएकी छन् । यसरी मञ्चीय हिसाबले अन्वितित्रयको पालना गरेका उनका नाटकहरूको परिवेश उपयुक्त नै देख्न सकिन्छ ।

५.३.१.४ सन्देश

सुधा त्रिपाठीद्वारा रचना गरिएको निःश्वासका गुजुल्टाहरू नाटक सङ्ग्रहभित्रका नाटकहरू नारीवादी दृष्टिकोणबाट उत्कृष्ट रहेका छन् । त्रिपाठीले पितृसत्तात्मक समाजभित्र आफूले सुनेका, देखेका र भोगेका नारीहरूका सामाजिक समस्याहरूलाई यस नाटकमा विषयवस्तु बनाएर प्रस्तुत गरेकी छन् । पितृसत्तात्मक समाजभित्र नारीले भोग्नु परेको परतन्त्रता, पराधीनता र पुरुषले नारीप्रति गरेको परपीडक व्यवहारलाई प्रस्तुत गर्दै समाजमा लैङ्गिक समानताविना स्वच्छ परिवार र समाजको निर्माण हुन सक्दैन, त्यसैले समाजमा नारी र पुरुष दुवैको हक र अधिकारमा समानता भई स्वस्थ समाजको निर्माण हुनुपर्ने, यदि यसो हुन नसकेमा लैङ्गिक विद्रोहले पारिवारिक विघटन समेत हुन सक्ने दृष्टिकोण समेत त्रिपाठीले आफ्ना नाटकमा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

यसरी त्रिपाठीले यस नाटक सङ्ग्रहमा पितृसत्तात्मक समाजमा विद्यमान अन्धविश्वासबाट ग्रसित परम्परागत विभेदपूर्ण मूल्य र मान्यताको विरोध गर्दै नयाँ मूल्य र मान्यताको स्थापना गर्न सक्नुपर्ने सन्देश दिएकी छन् ।

५.३.१.५ द्वन्द्व

त्रिपाठीले यस नाटक सङ्ग्रहमा आन्तरिक द्वन्द्वलाई भन्दा पनि बाह्य द्वन्द्वलाई सबल रूपमा भित्र्याएकी छन् । आधुनिक र परम्परा बिचको द्वन्द्व, पति र पत्नी बिचको द्वन्द्व, कैदी र वकिलबिचको द्वन्द्व, धनी र गरिब बिचको द्वन्द्व, आमा र छोरा बिचको द्वन्द्व यस सङ्ग्रहभित्र आएका महत्त्वपूर्ण द्वन्द्वहरू हुन् । प्रस्तुत नाटक सङ्ग्रहमा समग्र रूपमा पितृसत्तात्मक समाज विरुद्धको विद्रोह आएकाले परम्परागत मूल्य र मान्यता बोकेको समाज बिचको द्वन्द्व प्रमुख रूपमा देखा परेको छ । नाटककार त्रिपाठीले पितृसत्तात्मक समाजको द्वन्द्वभित्र नै पति र पत्नीबिचको द्वन्द्वलाई सबल रूपमा प्रयोग गरेकी छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका 'उनी फर्कदिनन् कि !', 'दोभान', 'दोषी को ?', 'क्षत विक्षत मुटुहरू' शीर्षकका नाटकहरूमा पति र पत्नी बिचको द्वन्द्व नै प्रमुख रूपमा आएको छ भने 'अबेर नगरौं' नाटकमा धनी र गरिब बिचको वर्गीय द्वन्द्व देखा परेको छ ।

यसरी यस नाटक सङ्ग्रहमा पितृसत्तात्मक समाजभित्र पुरुष वर्गका विरुद्ध नारी वर्गले आफ्नो अधिकार र स्वतन्त्रता प्राप्तिका लागि गर्नुपर्ने विद्रोह र सङ्घर्षका वास्तविक पक्षलाई प्रस्तुत गर्ने क्रममा त्रिपाठीले बाह्य द्वन्द्वलाई नै विशेष महत्त्व दिएकी छन् । यही नै यस नाटक सङ्ग्रहको विशिष्ट र सबल पक्ष हो ।

५.३.१.६ रङ्गमञ्चियता

‘निःश्वासका गुजुल्टाहरु’ एकाङ्की सङ्ग्रह रङ्गमञ्च कलाका दृष्टिले उपयुक्त रहेको छ । उनका नाटक विभिन्न विद्यालय तथा स्थलहरुमा मञ्चित भएका छन् । नाटकमा मञ्च निर्देश कलालाई पनि सुन्दर रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । यस्ता निर्देशहरु ‘बत्ती बलिसकेपछि’ (पृ. १), ‘कान्छो चिया लिएर निस्कन्छ’ (पृ. १) ‘उठेर कोठामा चक्कर लगाउँदै’ (पृ. ११) ‘कुमारी चिया लिन जान्छे । ऊ हिंडेपछि’ ‘उनीहरु कुमारीकै बारेमा कुरा गर्न थाल्छन्’ (पृ. १५) रहेका छन् । प्रत्येक पृष्ठमा दिइएका यस्ता निर्देशनले नाटक मञ्चनमा सहयोग पुऱ्याएका छन् भने कुनै निर्देश त सिङ्गो पृष्ठ नै ओगट्ने किसिमका छन् । मञ्चीय सन्दर्भ पनि उनका प्रायः सबै एकाङ्कीमा रहेका छन् । ‘दोषी को ?’ एकाङ्कीमा सुरुमा नै एकाङ्कीकारले लेखेकी छन्:

मध्यम वर्गीय परिवारको एउटा कोठा दुईवटा पलड, एउटा दराज सोफासेट, ट्याङ्गर आदि छन् । भित्तामा एउटा फ्रेम हालेको मान्छेको तस्विर भुण्ड्याइएको छ । अन्य एकाध हिमाली सौन्दर्य सम्बन्धी तस्विरहरु पनि भित्तामा टाँगिएका छन् (पृ. ६९) ।

यसरी त्रिपाठीका एकाङ्की स्थल घर, कोठा, चौतारी रहेका छन् र मञ्चनका दृष्टिले उनका नाटक सहज र सरल रहेका छन् । संवाद चयनका दृष्टिले पनि उनका एकाङ्की प्रायः सफल रहेका छन् । उनका सरल संवादको नमुना निम्न अनुसार रहेको छ:

शोभा : आउनुस न, जाऊँ भित्रै ।

रमेश : तपाईं किन स्कुल नआउनु भएको ?

शोभा : यत्तिकै पढाइ निकै छुट्यो होला हगि ?

उमेश : तपाईं विरामी हुनु भएछ क्यारे ! भनेर हेर्न आएका हामी त ? (पृ. ३६)

उनका प्रायः एकाङ्कीमा संवादको सरलता रहेको छ र यसले मञ्चीयतालाई सहयोग पुऱ्याएको छ । ‘पहाडलाई के सजाय दिन्छौ ?’, ‘क्षत विक्षत मुटुहरु’ जस्ता दुईवटा एकाङ्कीमा अपेक्षाकृत लामा संवादका कारण अभिनय पक्ष केही कमजोर रहे पनि अन्य एकाङ्कीको अभिनय कला सशक्त रहेको छ ।

५.३.१.७ संवाद

सुधा त्रिपाठीले निःश्वासका गुजुल्टा नाटक सङ्ग्रहभित्र पात्र अनुकूलकै सरल र सहज संवादको प्रयोग गरेकी छन् । छोटोछोटा वाक्यको प्रयोग हुनु, प्रायः सरल वाक्यको बाहुल्य पाइनु, भङ्गटलाग्दो, दुर्बोध्य अनुच्छेदको प्रयोग नहुनुले त्रिपाठीका नाटकको संवाद उत्कृष्ट नै रहेको देखिन्छ । लामा भए पनि सरल र मञ्चनयोग्य संवादका कारण उनका नाटकलाई गति प्रदान गर्न सहज देखिएको छ । जस्तै :

आमा- अँ, अब तँ मलाई अर्ती उपदेश पनि दिने भइस् होइन ? छोरा- अर्ती दिन खोजेको होइन आमा ! एउटा यथार्थको उद्घाटन गर्न खोजेको मात्र हुँ । मैले तपाईंको जातलाई चिन्न सकिनछु । आमा, बिन्दु निर्दोष छे । मैले उसलाई, आफूले दुःखसुख सँगै भोगेकी आफ्नी पत्नीलाई चिन्न सकिनँ (पृ. ३) ।

- - -

कुमारी- आमा ! हामीलाई यही परम्परा र यिनै परम्परावादीहरूले निकै सताइराखेका छन् । तर, तर ... (आवेशमा आउँदा सास फुल्छ), (दर्शक देखाउँदै) तिमीहरू हाम्रो मस्तिष्कलाई भुटेर ऊर्वरताहीन, बिल्कुल बाँझो तुल्याउँछौ । यही होइन तिमीहरूको परम्परा ? आखिर त्यस परम्पराको साइलोमा खिया जम्दै गएपछि एकदिन अवश्य चुँडिने छ र अझै तिमीहरू पछिल्लिरै धकेलिने छौ । हाम्रा गतिशील पाइलाहरूलाई रोक्न त के ? छुनै पनि सक्ने छैनौ, बुझ्यौ ! (पृ. १७)

माथिका संवादलाई हेर्दा लामालामा संवाद भए पनि वाक्य छोटो र सरल भएकाले बुझ्न सहज रहेको छ ।

५.३.१.८ भाषा शैली

त्रिपाठीका नाटकमा संस्कृत, हिन्दी, अङ्ग्रेजी आदि भाषाका शब्दहरूको प्रयोग ज्यादै कम पाइन्छ । उनले सरल नेपाली भाषाकै प्रयोगमा जोड दिएकी छन् । सरल वाक्यको अधिक प्रयोग र संयुक्त र मिश्र वाक्यको कम प्रयोग उनको भाषागत विशेषता हुन् । पात्र अनुकूलका भाषामा आदरार्थी, सामान्य र निम्न आदरार्थी भाषाको प्रयोग पनि यस नाटकमा भएको देखिन्छ ।

आख्यानात्मक भाषामा संवादात्मक नाटकीय शैली नै यस नाटकको महत्त्वपूर्ण शैलीगत विशेषता हो ।

५.३.१.९ निष्कर्ष

सुधा त्रिपाठीको सातवटा नाटकहरू सङ्कलित पहिलो र त्यसका पनि एउटै मात्र नाटक सङ्ग्रहका रूपमा प्रकाशित हुन पुगेको निःश्वासका गुजुल्टाहरू नाटक सङ्ग्रहभित्र त्रिपाठीले प्रमुख रूपमा नारीवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् । त्रिपाठीले पितृसत्तात्मक समाजमा पुरुषले नारीमाथि गरेको अन्याय र अत्याचार प्रस्तुत गर्दै आजका नारीहरू पुरुषको अन्याय र अत्याचार मात्र सहेर बस्न चाहँदैनन्, त्यसको प्रतिकारमा उनीहरू घर परिवार समेत छाड्न तयार हुन्छन् भन्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यसैगरी पितृसत्तात्मक समाजभित्र आफूले सुनेका, देखेका र भोगेका नारीहरूका सामाजिक समस्याहरूलाई यस नाटकमा विषयवस्तु बनाएर प्रस्तुत गर्न पुगेकी त्रिपाठीले पारिवारिक विखण्डनको प्रमुख कारण पारिवारिक बेमेल हो भन्दै पति र पत्नीको सहभाव र सहयात्राबाट नै पारिवारिक विखण्डन जोगिन सक्ने विचार समेत प्रस्तुत गरेकी छन् । आन्तरिक द्वन्द्वलाई भन्दा बाह्य द्वन्द्वलाई सबल रूपमा प्रस्तुत गर्न सफल भएकी त्रिपाठीले पितृसत्तात्मक समाजको विरोध गर्दै नारीवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेकी छन् भने एउटै मात्र नाटक सङ्ग्रह प्रकाश गरेकी त्रिपाठी सफल लघु नाटककारका रूपमा परिचित हुन पुगेकी छन् ।

५.४ सुधा त्रिपाठीका कविताको विश्लेषण

५.४.१ 'जिराहा वर्तमान' कविता सङ्ग्रहको विश्लेषण

सुधा त्रिपाठीका हालसम्म प्रकाशित कृतिहरूमध्ये जिराहा वर्तमान कविता सङ्ग्रह बाह्रौँ कृतिका रूपमा रहेको देखिन्छ । २०६७ सालमा जिजीविषा प्रकाशनबाट प्रकाशित प्रस्तुत कविता सङ्ग्रहमा ३५वटा फुटकर कविताहरू सङ्कलन गरिएका छन् । प्रकाशनका दृष्टिले प्रथम कविता सङ्ग्रहका रूपमा यसमा २०३६ सालदेखि २०६५ सम्म ३० वर्षको समयावधिमा लेखिएका कविताहरू यस सङ्ग्रहमा सङ्कलित छन् । २०३१ सालदेखि नै अनौपचारिक रूपबाट कविता लेख्न सुरु गरेकी त्रिपाठीले प्रकाशनका हिसाबले २०३४ सालमा औपचारिक रूपबाट कविता लेखन यात्रा सुरु गरेकी हुन् भने यस सङ्ग्रहमा उनका २०३६ सालदेखिका कविताहरू मात्रै सङ्कलित छन् । २०३६ सालमा 'मन लागेको छ' शीर्षकको एउटा मात्र कविता प्रकाशित छ भने २०३७ सालमा 'सगरमाथा' र 'जोडी आँखा' गरी दुईवटा कविताहरू प्रकाशित भएका छन् । त्यसैगरी २०३८

सालमा 'बहिनीलाई सन्देश', 'रातो रगतको आहाल', 'मेरा लागि नेपाल', 'रातो रगतको चिहानमाथि सेतो फूल फुलेछ', २०३९ सालमा 'मलाई जन्माइदेऊ', २०४० सालमा 'मन दुखेको दुःख्यै छ', २०४५ सालमा 'युद्ध आमाहरूको', २०४६ सालमा 'म बीज हुँ असिनाको' र 'कालीमाटी', २०५३ मा 'जेब्राक्रसमा दुर्घटित हुन्छु म', 'जीवन हराएको सूचना', 'मलामी बिहान र म', २०५५ मा 'कालापानी दुःखेको छ', २०५७ मा 'कमरेड रिसाउनु भो', 'सरकारमा राहु पसेको छ', २०५८ मा 'समय र आमाहरू', २०५९ मा 'विदग्ध वर्तमान', २०६० मा 'आँखा खोलेरै मूर्च्छित छु', 'लुतो र परेवा', २०६१ मा 'व्यस्त छु अचेल', २०६२ मा 'कर्प्यु', २०६३ मा 'खबर गरूँ कि नगरूँ ?' 'सकछौं भने जोगाऊ', 'विजयको कविता', विश्रान्त वर्तमान', 'जिन्दगीको भित्तो', 'पाखण्डीहरूबाट जोगाएकै बेस', 'गणतन्त्रको सूर्य', 'म तामाकोसी', २०६४ मा 'जिराहा वर्तमान', 'अँजुलिको पानी' र २०६५ सालमा 'रामसाईली' गरी ३५ वटा फुटकर कविताहरू रहेका छन् । 'गणतन्त्रको सूर्य' र 'म तामाकोसी' एकै दिनमा लेखिएका दुई कविताहरू हुन् ।

जिराहा वर्तमान कविता सङ्ग्रहको शीर्षक सङ्ग्रहभित्र समेटिएको 'जिराहा वर्तमान' कविताबाट राखिएको छ । यस कविता सङ्ग्रहको विश्लेषण कवितागत तत्त्व विषयवस्तु, भाषा, शैलीशिल्प, विम्ब, प्रतीक, संरचना र लय चेतनाका आधारमा गरिएको छ ।

५.४.१.१ भाव/विषयवस्तु

जिराहा वर्तमान सङ्ग्रहमा रहेका अधिकांश कवितामा राजनीतिक विषयवस्तु आएका छन् भने केही कवितामा सामाजिक, नारी चेतना, देशप्रेम र देशभक्तिपूर्ण विषयवस्तुहरू देखा परेका छन् ।

क) राजनीतिक

कवि सुधा त्रिपाठीले यस कविता सङ्ग्रहमा तत्कालीन राजनीतिक यथार्थलाई प्रस्तुत गर्दै २०३६ देखि २०६५ सालसम्मका समयावधिमा देशमा देखिएका विभिन्न राजनीतिक परिवर्तन र सो परिवर्तनले जनजीवनमा पारेका विभिन्न प्रभावहरूलाई विश्लेषण गरेकी छन् । राजनीतिका माध्यमबाट राजतन्त्रकालीन पञ्चायती निरङ्कुशताको विरोधका रूपमा देशमा भएको हत्या, हिंसा र त्यसबाट उत्पन्न वर्तमान सङ्कटलाई यहाँ प्रस्तुत गरिएको छ । त्यसैगरी त्रिपाठीले विभिन्न सत्तासीन वर्ग विरुद्धको चेतना, प्रतिगमन प्रतिको विरोध, सहिदप्रति श्रद्धाभाव, प्रगतिवादी, क्रान्तिकारी मानववादको प्रस्तुतिका साथै गणतान्त्रिक चेतना राजनीतिक विषयवस्तुका रूपमा

भिन्नाएकी छन् । यस सङ्ग्रहमा विषयवस्तुका दृष्टिले प्रगतिशील/प्रगतिवादी धारा भित्रका सिर्जनाको समावेश भएको छ । 'जिराहा वर्तमान', 'समय र आमाहरू', विदग्ध वर्तमान', 'लुतो र परेवा', 'खबर गरूँ कि नगरूँ', 'सक्छौ भने जोगाऊ', 'कफ्यु', 'विजयको कविता', 'विश्रान्त वर्तमान', 'जिन्दगीको भित्तो', 'पाखण्डीहरूबाट जोगाएकै वेश', 'गणतन्त्रको सूर्य', 'म तामाकोशी', 'अँजुलिको पानी', 'कमरेड रिसाउनुभो', 'रामसाईली' कविताहरूमा त्रिपाठीले राजनीतिक विषयवस्तु प्रस्तुत गरेकी छन् । समकालीन, समयुगीन जीवनका कुरूप यथार्थलाई राजनीतिक विषयवस्तुका साथ प्रस्तुत गर्ने सन्दर्भमा 'विश्रान्त वर्तमान' कवितामा क्रान्तिकारी मानवतावादी चिन्तन प्रस्तुत गर्दै त्रिपाठी लेखिछन् :

हृदयहीनताको एम्बुसमा छटपटाइरहेको देश !

परिसरमा अहिले सग्लो मानवता खोजिरहेको छ

विवेकहीनताको एम्बुसमा छटपटाइरहेको मानवता !

परिसरमा अहिले सग्लो देश खोजिरहेको छ । (पृ. ३१)

राजनीतिक विषयवस्तु प्रस्तुत गर्ने क्रममा त्रिपाठीले प्रस्तुत पङ्क्तिमा माओवादी द्वन्द्वकालीन परिवेशलाई सङ्केत गर्दै जताततै एम्बुसका पीडामा बाँच्न विवश भएका नेपालीको दयनीय अवस्था र त्यस समयमा मानवताको खोजी भएको यथार्थलाई प्रस्तुत गरी जताततै हत्या, हिंसा, तोडफोड र विध्वंसको कारण सग्लो देश प्राप्त गर्न नसक्ने अवस्थाको चित्रण प्रस्तुत भएको छ ।

ख) सामाजिक

जिराहा वर्तमान सङ्ग्रहभित्रका कवितामा पितृसत्तात्मक मूल्य र मान्यताको विरोध गर्दै सामाजिक परिवर्तनको चाहना, वैयक्तिक पीडा, निम्न वर्गीय चेतना त्रिपाठीले प्रस्तुत गरेका सामाजिक विषयवस्तु हुन् । यस सङ्ग्रहभित्रका 'जिराहा वर्तमान', 'समय र आमाहरू', 'आँखा खोलेरै मूर्छित छु म', 'व्यस्त छु अचेल', 'जोडी आँखा', 'जीवन हराएको सूचना', 'रामसाईली', 'मलाई जन्माइदेऊ' शीर्षकका कविताहरूमा समकालीन समयुगीन नेपाली समाजका वर्गीय द्वन्द्वशील विषयवस्तु प्रस्तुत गरिएको छ । जिराहा वर्तमान कविताभित्र पितृसत्तात्मक मूल्य र मान्यता बोकेको भयग्रस्त जीवन प्रस्तुत गर्ने सन्दर्भमा त्रिपाठीले यसरी लेखेकी छन् :

सङ्ग्रहस्त छन् दाइहरू

जति नै रङ्गरोगन दले पनि सपनाको

मुहार शान्ति छर्न नसकेपछि

भयग्रस्त छन् दाइहरू (पृ. २)

पितृसत्तात्मक समाजमा आफ्नो हैकम र प्रभुत्व कायम गरी आफ्ना सपनाहरू सजाइरहेको अवस्थामा देशमा अशान्ति बढ्दै गएपछि उनीहरू नै सङ्कटग्रस्त जीवन बाँच्न बाध्य दाइहरूको भयग्रस्त जीवनलाई प्रस्तुत गरेकी छन् ।

ग) सांस्कृतिक

पितृसत्तात्मक समाजभित्र परम्परागत मूल्य र मान्यताले अङ्गीकार गरेका सांस्कृतिक पक्षहरू त्रिपाठीका कविता सङ्ग्रहमा सांस्कृतिक विषयवस्तुका रूपमा समेटिएका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका कविताहरू 'जिराहा वर्तमान', 'कालीमाटी', आँखा खोलेरै मूर्च्छित छु', 'मलाई जन्माइदेऊ' आदिमा सांस्कृतिक विषयवस्तु आएका छन् ।

पितृसत्तात्मक समाजमा चलिआएका सांस्कृतिक मूल्य र मान्यता परम्परागत संस्कारलाई आत्मसात् गर्ने आमाहरूको परम्परालाई प्रस्तुत गर्दै हरेक नेपाली आमाहरूले सांस्कृतिक रूपमा सौभाग्यको प्रतीक स्वरूप भित्रिएको सिन्दुर र पोतेको रातो रङ्गमा आफ्नो सर्वस्व खुसी र नारी हुनुको अस्तित्व खोज्छन् भन्ने दृष्टिकोण प्रस्तुत गर्दै त्रिपाठीले आफू नारी भए पनि त्यसलाई पटकै स्वीकार नगर्ने र त्यसलाई पुरुषसत्ताको हैकमका रूपमा बुझेको विचार 'आँखा खोलेरै मूर्च्छित छु म' भन्ने कवितामा यसरी लेखेकी छन् :

मेरी प्यारी आमालाई

बस उहाँलाई पनि सिन्दुर र पोतेको मात्र

आँखै तिरमिराउने रातो रङ्ग मन पथर्यो ।

... अर्थ खुट्ट्याएपछि

र, त्यसलाई हैकमको प्रतीकका रूपमा बुझेपछि

मसँग न त सिन्दुर पोते नै छ

न त तिनको आँखै तिमिराउने रातोपन नै छ

पृ. १०/११

पितृसत्तात्मक समाजमा हुर्केका हरेक आमाले आफ्नो सौभाग्य स्वरूप आँखै तिमिराउने रातो रङ सिन्दुर र पोतेलाई आफ्नो जीवनभन्दा बढी मूल्यवान् ठान्ने प्रवृत्तिलाई यस कवितामा स्वयं म पात्रका रूपमा उपस्थित भएकी कवि त्रिपाठीले त्यसलाई हैकमका प्रतीकका रूपमा बुझेपछि आफूले स्वीकार नगर्ने दृष्टिकोण सांस्कृतिक विषयवस्तुका रूपमा प्रस्तुत गरेकी छन् ।

घ) नारीवादी

पितृसत्तात्मक सामाजिक मूल्य र मान्यताले ग्रसित समाजमा नारीको मूल्य मान्यताको पहिचान गर्दै उनीहरूले परम्परादेखि हालसम्म नै स्वतन्त्रतापूर्वक आफ्नो अधिकार प्राप्त गर्न नसकेको विडम्बनालाई त्रिपाठीले यस सङ्ग्रहका कविताहरूमा प्रस्तुत गरेकी छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका 'जिराहा वर्तमान', 'समय र आमाहरू', 'आँखा खोलेरै मूर्च्छित छु म', 'युद्ध आमाहरूको', 'बहिनीलाई सन्देश', 'कालीमाटी' कविताहरूमा नारीवादी चेतना प्रस्तुत भएका छन् । नारीवादी चेतना प्रस्तुत गर्ने सन्दर्भमा त्रिपाठी लेखिछन् :

महिलामुक्तिको

भाषण सुनेर घर फर्केपछि

ढिला भएकामा वचनवाणले घाइते भएका

स्वतन्त्र नेपाली नारीहरूको

मुटु चह्याउने कथा सुनाउँथे

(पृ. ५३)

पुरुष सत्ताले भाषण र सिद्धान्तमा जतिसुकै नारी स्वतन्त्रता र हकहितको वकालत गरे पनि व्यवहारमा पटकै स्वतन्त्रता दिन नसकेको चिन्ता व्यक्त गर्दै 'बहिनीलाई सन्देश' कविता मार्फत त्रिपाठीले आफ्नो विचार व्यक्त गरेकी छन् ।

ड) राष्ट्रभक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति

आफ्नो देश र माटोको माया, ममतामा रमन पुगेकी त्रिपाठीले देशप्रेम, राष्ट्रप्रेमयुक्त भाव प्रस्तुत गर्दै सहिदहरूप्रति आस्था र श्रद्धा भाव राखेकी छन् । देशको राष्ट्रियता र अखण्डताका पक्षमा लड्दा लड्दै वीरगति प्राप्त गरेका सहिदहरूको त्याग, बलिदान र सौर्यलाई उजागर गर्न पुगेकी त्रिपाठीले नेपाली राष्ट्रियता र अखण्डताप्रति यस सङ्ग्रहका कविता मार्फत चिन्ता व्यक्त गरेकी छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका 'विजयको कविता', 'म बीज हुँ असिनाको', 'मेरो लागि नेपाल', 'कालापानी दुखेको छ' कविताहरूमा राष्ट्रप्रेम र देशभक्तिपूर्ण भावले भरिएका विषयवस्तु समेटिएका छन् । राष्ट्रिय प्रेम र देशभक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति प्रस्तुत गर्ने क्रममा त्रिपाठीले लेखेकी छन् :

कसैलाई राष्ट्रियता पजेरो र कुसीमा दुखेको छ

र कसैलाई राष्ट्रियता अजिङ्गरको प्रश्वासले विषाक्त

नेपालको सीमाभूमिभन्दा ६०० मिटर वरै दुखेको छ

... अजिङ्गरको विषाक्त श्वासप्रश्वासहरूमा निरन्तर

उचालिने र पछारिनेलाई दुखेको छ

करेसाबारीमा नङ्गा खियाउनेहरूलाई दुखेको छ

(पृ. ६६)

राष्ट्रले बारम्बार भोग्दै आएको विदेशी विस्तारवादी हैकम र अतिक्रमणको विरोध गरेकी त्रिपाठीले सत्ता, कुसी र पदका लोभबाट कहिल्यै माथि उठ्न नसकेका भ्रष्ट नेताहरूलाई विदेशी अतिक्रमणबाट कुनै प्रभाव नपारेको तर आफ्नै करेसाबारीमा दश नङ्गा खियाउने स्वाभिमानी नेपालीलाई अत्यन्तै मर्माहत तुल्याएको राष्ट्रवादी दृष्टिकोण 'कालापानी दुखेको छ' कवितामा यसरी प्रस्तुत गरेकी हुन् ।

यसरी समसामयिक युगजन्य राजनीतिक परिस्थितिको यथार्थ चित्रण गर्दै त्यसले समाजमा निम्त्याएको हत्या हिंसाको विरोध कवि त्रिपाठीले यस सङ्ग्रहमा गरेकी छन् । देशभक्तिपूर्ण भावना, राष्ट्रियता, गणतन्त्रको कामना, सहिदप्रतिको आस्था र श्रद्धाका साथै नारीवादी दृष्टिकोण समेत यस सङ्ग्रहका कवितात्मक विषयवस्तुका रूपमा देखिएका छन् ।

५.४.१.२ भाषा

त्रिपाठीले जिराहा वर्तमान कविता सङ्ग्रहमा सौन्दर्यमूलक, लयात्मक, ध्वन्यात्मक, आलङ्कारिक काव्यात्मक भाषाको प्रयोग गरेकी छन् । उनको कविताको भाषामा शब्द, अर्थ र वाक्यका तहमा सरलता हुँदा सिङ्गो अभिव्यक्ति र संरचनामा नै सरलता आएको छ । शब्द, अर्थ र वाक्यका तहमा सरलता वरण गर्नु नै यस सङ्ग्रहको काव्यात्मक भाषिक विशेषता हो ।

त्रिपाठीका कवितामा स्तरीयता नेपाली भाषाको प्रयोगका साथै शिरपोशजस्ता अति उच्च आदरार्थी भाषा, बुख्याचा नेवारी भाषा, मिसाइल, तोप, ट्याङ्क, स्टेरिड, सेरेमोनियल, ड्राइभर, एस्ट्रेजस्ता अङ्ग्रेजी (आगन्तुक) भाषा र शिरफूल, चन्द्रमा, सूर्य, जिजीविषा, शीत आदि संस्कृत (तत्सम) भाषाका शब्दहरू प्रशस्त भेट्न सकिन्छ ।

त्यसैगरी अहिल्या, इन्द्र, बुद्ध, हिरण्यकशिपु, विष्णु, अरनिको, रिपुमर्दिनी, दुर्गा, चण्डी, महिषमर्दिनी आदि मिथकीय भाषिक शब्दहरूको प्रयोग पनि यस सङ्ग्रहमा प्राप्त गर्न सकिन्छ । आख्यानात्मक, वर्णनात्मक संस्मरणात्मक, मनोगतता आदि भाषाको प्रयोग पनि त्रिपाठीका सङ्ग्रहभित्र भेट्न सकिन्छ ।

यसरी सहजता र सरलताभित्र आलङ्कारिकता भित्र्याउनुका साथै गद्य काव्यात्मक भाषाको प्रयोग गरी कवितालाई सौन्दर्यमूलक लयात्मक, ध्वन्यात्मक श्रुतिमय बनाउनु त्रिपाठीको काव्यात्मक भाषिक विशेषता हो ।

५.४.१.३ शैलीशिल्प

गद्यात्मक काव्यशैलीको प्रयोग त्रिपाठीको कविताको शैलीगत विशेषता हो । प्रकृतिको वर्णन गर्दा वर्णनात्मक शैली प्रयोग भएको छ भने कही कतै त्रिपाठीका वैयक्तिक भावना प्रस्तुत भएकाले निजात्मक शैली पनि भेट्न सकिन्छ । आख्यानात्मक शैली पनि कविता सङ्ग्रहभित्र देख्न सकिन्छ । 'जोडी आँखा' कवितामा आख्यानात्मक शैलीको प्रयोग त्रिपाठीले यसरी व्यक्त गरेकी छन्:

'हजुर पैसा ! पाँच पैसा !!'

एउटा रोगी गरिब

यताउता आफ्ना आँखाहरूलाई

ती रसाउन छाडिसकेका, बिसिसकेका आँखालाई

जतासुकै फिंजारिदिन्छ,

अकासिन्छन्, बेसरी अकासिन्छन्

(पृ. ५०)

‘समय र आमाहरू’ कवितामा प्रश्नोत्तर शैलीका माध्यमबाट त्रिपाठी लेखिन्छन् :

तोतेबोलीमा मेरी आमासँग सोध्थेँ

आमा, तिनीहरूले किन भगडा गरेको ?

मेरी आमाले सजिलै उत्तर दिनुभएथ्यो

तिनीहरू पशु हुन्

मान्छेको जस्तो बुद्धि तिनीहरूसँग छैन

यसैले लडिरहेछन् ।

(पृ. ४)

कवि त्रिपाठीले ‘विजयको कविता’ माफत जनयुद्धका क्रममा सहिद भएका विजय ढकाललाई स्मरण गर्दै रचना गरेको कविताका माध्यमबाट संस्मरणात्मक शैलीको प्रयोग गरेकी छन् ।

वर्णनात्मक शैलीको प्रयोग गर्ने क्रममा ‘सरकारमा राहू पसेको छ’ कवितामा त्रिपाठी लेखिन्छन् :

उसले अखवारमा

दिउँसै राजधानीको मुटुमा छुरी देखाएर

लाखौं रुपियाँ लुटेको खबर पढिन्छ

प्रातः भ्रमणमा निस्केको मान्छेको

सिक्री औंठी खोसेको खबर पढिछ

छन त छ, तर सरकारमा राहु पसेको छ ।

(पृ. ७५)

निजात्मक शैलीको प्रयोग गर्दै कालीमाटी कवितामा कविले यसरी प्रस्तुत गरेकी छन् :

मभिन्न निरन्तर एउटा

कालीमाटीको अस्तित्व जाग्दै आइरहेछ

कालीमाटीको अस्तित्व

मानौं, एउटा चिर प्रतीक्षामा छ

स्पर्शशील अरनिकोको

म कालीमाटीको एउटा थुप्रो ... ।

(पृ. ६०)

यसरी आख्यानात्मक, वर्णनात्मक, निजात्मक, प्रश्नोत्तरात्मक, रूपकात्मक, प्रतीकात्मक, लाक्षणिक व्यञ्जनात्मक आदि विविध शैलीको प्रयोग गरिएको यस कविता सङ्ग्रहमा सहज र सरल शैलीशिल्पको प्रयोग गरिएको पाइन्छ ।

५.४.१.४ बिम्ब प्रतीक

कवि त्रिपाठीले यस कविता सङ्ग्रहमा समाज, प्रकृति, जीवन व्यवहार र वस्तुजगतका विभिन्न क्षेत्रबाट आएका बिम्ब प्रतीकको प्रयोग गरेकी छन् । उनका यस सङ्ग्रहका सम्पूर्ण कविताभरि 'जिराहा वर्तमान' बिम्ब भएर छरिएको छ । त्रिपाठीले 'कर्पूर्यु' कवितामा तत्कालीन राजा ज्ञानेन्द्रलाई जुद्ध महाराज, हिरण्यकशिपु र विष्णुका प्रतीकका रूपमा प्रस्तुत गरेकी छन् । त्यस्तै 'योगमाया' लाई आलम्बन बनाई राजनीतिक यथार्थको चित्रण गरिएको छ । भ्रष्टाचारी नेतालाई विरालोको प्रतीक, राजा र राजतन्त्रका समर्थकहरूलाई चमेराको प्रतीकका रूपमा, बाजलाई शोषक

र परेवालाई शोषितका रूपमा, बुद्ध र कलमलाई शान्तिको प्रतीकका रूपमा प्रयोग गरिएको पाइन्छ ।

यसरी समाज प्रकृति, जीवन, जगत्, वस्तुजगत्का विभिन्न क्षेत्रबाट टिपिएका विम्ब प्रतीकहरूको सघन प्रस्तुतिबाट कविता बौद्धिक बनेका छन् । बौद्धिक-विचार सघनता र निजात्मक विम्बको प्रयोग गरी कविता रचना गर्नु त्रिपाठीको महत्त्वपूर्ण काव्यात्मक विशेषता हो ।

५.४.१.५ संरचना

संरचनाका दृष्टिले यस सङ्ग्रहका फुटकर कविताहरू मझौला किसिमका छन् । आयाम विस्तारका दृष्टिले 'गणतन्त्रको सूर्य' र 'मन लागेको छ' कविता सबैभन्दा छोटो उन्नाइस पङ्क्तिको रहेको छ भने सबैभन्दा लामो कविता 'मलामी बिहान र म' उनान्सय सम्मका पङ्क्तिमा विस्तारित भएको पाइन्छ । यस सङ्ग्रहका कविताहरूले उन्नाइस पङ्क्तिदेखि उनान्सय सम्मका पङ्क्तिमा विस्तार प्राप्त गरेका छन् ।

यसरी नै अनुच्छेद विभाजनमा 'मन लागेको छ' कवितामा प्रयोग गरिएका तिनवटा अनुच्छेददेखि 'सगरमाथा' कवितामा प्रयोग भएको दश अनुच्छेदसम्ममा यस सङ्ग्रहका कविताहरू विस्तारित भएका छन् । मुक्त लयमा प्रस्तुत यस सङ्ग्रहका कविताहरू सम विषम पङ्क्तिहरूका कारण लयात्मक श्रुतिरम्यतामा विविधता भेट्न सकिन्छ ।

५.४.१.६ निष्कर्ष

एउटै मात्र कविता सङ्ग्रहको सिर्जना गरेकी कवि त्रिपाठीका कवितामा प्रगतिवादी संचेतनाको स्वर तीव्र छ भने त्यसले नेपाली राजनीतिमा रहेको उच्च वर्गीय वर्चस्व, सामाजिक अन्याय र विसङ्गति, राष्ट्रिय हस्तक्षेप र अतिक्रमणको विरोध लगायत नेपाली उत्पीडित वर्ग तथा नारीहरूले भोग्न परेको पीडाका माध्यमबाट वर्गीय, लिङ्गीय मुक्तिको खोजी पनि गरिएको छ । समसामयिक जीवन र समाजका तत् परिस्थितिका सन्दर्भबाट मानवीय संवेदनालाई व्यक्त गर्ने क्षमता त्रिपाठीका कवितामा पाइन्छ । उनी मानवतावादमध्ये सर्वहारा मानवतावादी चेत भएकी कवि हुन् भने नारीवादी संचेतना उनका कविताको प्रमुख विषय हो । यसरी राजनीतिक, सामाजिक र सांस्कृतिक विषयवस्तुलाई प्रस्तुत गर्ने उनको भाषा सरल छ भने शैलीशिल्पका दृष्टिले पनि उनी शक्तिशाली छन् । कविताको लघु संरचनामा पनि मानवीय भावलाई विम्ब र प्रतीकका माध्यमबाट

प्रस्तुत गर्ने बेजोड कवितात्मक शैलीका कारण थोरै लेखेर पनि उनी शक्तिशाली कविका रूपमा देखा परेकी छन् ।

छैटौं परिच्छेद

उपसंहार तथा निष्कर्ष

पुख्यौली घर दोलखा, सुनखानी भएकी सुधा त्रिपाठी वि.सं. २०१५ जेष्ठ २८ गते दार्जिलिङको मिरिक बस्तीमा पिता विद्वत्केशरी जगन्नाथ शर्मा त्रिपाठी र माता भवानी त्रिपाठी (पन्त)का दश सन्तानमध्ये पहिलो सन्तानका रूप जन्मिएकी हुन् । बाबु आमाको साथ एकैपटक नपाउनुको पीडा त थियो नै, आर्थिक अभावबाट पनि गुज्रनु परेकाले त्रिपाठीको बाल्यकाल खासै सुखद् रूपमा बित्न सकेन । प्राध्यापन पेसा अँगालेका पिताको एकलैको कमाई र खाने मुख धेरै हुँदा पनि मध्यम वर्गीय परिवारमा जन्मेकी त्रिपाठीले बाल्यकालदेखि आर्थिक अभावबाट सिर्जित हरेक समस्याको सामना गर्नु परेको थियो । आर्थिक अभावका बावजुद पनि पढाइलाई निरन्तरता दिन पुगेकी त्रिपाठी त्रिभुवन विश्व विद्यालय, नेपाली केन्द्रीय विभागबाट एम्.ए.मा प्रथम श्रेणीमा प्रथम भएकी छिन् । उनले नेपाली विषयबाटै विद्यावारिधिसम्मको औपचारिक अध्ययन समेत पुरा गरेकी छिन् । वि.सं. २०४० देखि औपचारिक रूपबाट अध्यापन पेसालाई अँगालेकी त्रिपाठी प्राध्यापक पदमा पहिलो नम्बरमा नाम निकाली त्रिभुवन विश्व विद्यालयको इतिहासमा आजसम्मको सर्वाधिक अङ्क (पूर्णाङ्क २०० मा १९३.८) प्राप्त गर्न सफल भएकी छिन् भने हालसम्म त्रिभुवन विश्व विद्यालय कीर्तिपुरस्थित नेपाली केन्द्रीय विभागमा प्राध्यापन पेसामा नै संलग्न छिन् । यसै विभागमा कार्यरत सहप्राध्यापक रमेश भट्टराईसँग ३१ वर्षको उमेरमा वैवाहिक जीवन प्रारम्भ गर्न पुगेकी त्रिपाठीका दुई छोरीहरू रहेका छिन् । जीवनभर प्राध्यापन पेसा अँगालेकी त्रिपाठीले कथा, कविता, निबन्ध, नाटक, समालोचनाजस्ता साहित्यका विविध विधामा कलम चलाएकी छिन् । बहुमुखी प्रतिभाकी धनी त्रिपाठीको विशेष रूपमा निबन्ध र समालोचना विधामा विशिष्टता प्राप्त भएको छ ।

आधुनिक नेपाली निबन्धका क्षेत्रमा तिसको दशक अर्थात् वि.सं. २०३४ बाट देखा परेकी त्रिपाठीका 'बादल धर्ती र आस्थाहरू', 'जीवनसूत्र र स्वप्नाभास', 'सुट, टाई र सुँगुर', 'अमर सिर्जना', र 'चेलीबेटीका बेग्लै कुरा' गरी पाँचवटा निबन्ध सङ्ग्रह प्रकाशित भएका छिन् । यात्रा संस्मरणात्मक विषयवस्तुका साथै प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनीतिक व्यङ्ग्य विद्रोहजस्ता विषय लगायत मार्क्सवादी दृष्टिकोण, नारीवादी चेतना, पितृसत्तात्मक समाजको विरोध र समतामूलक समाजको स्थापनाको चाहनाजस्ता प्रवृत्तिहरू उनका निबन्धमा देखिएका छिन् ।

आधुनिक नेपाली समालोचनाका क्षेत्रमा पनि तिसको दशकदेखि नै कलम चलाउन पुगेकी नारी प्रतिभा त्रिपाठीले नेपाली समालोचनाका क्षेत्रमा पनि महत्त्वपूर्ण योगदान दिएकी छन् । नेपाली साहित्यको समालोचनात्मक विधामा नारी समालोचकको उपस्थितिमा कमी रहेको अवस्थामा त्रिपाठीको बेजोड उपस्थिति रहेको देखिन्छ । उनका दृष्टिचौतारी, भूपिका कवितामा व्यङ्ग्यालङ्कार चेतना, नारीवादका कठघरामा नेपाली साहित्य, नारीवादी सौन्दर्य चिन्तन, नेपाली उपन्यासमा नारीवाद, सिर्जनवृत्तका परिधिमा गुणराज उपाध्यायजस्ता समालोचनात्मक कृतिका साथै महिला समालोचक र नेपाली समालोचना, नेपाली नारीवादी समालोचना, विद्वत्केशरी जगन्नाथ शर्मा त्रिपाठी : अनेक आयामजस्ता सम्पादन गरिएका कृतिहरू समेत प्रकाशित भएका छन् ।

उनका समालोचनात्मक कृतिहरूमा मूलतः नारीवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत भएका छन् । पाश्चात्य साहित्यमा नारीवादी आन्दोलन र नारीवादी सिद्धान्तको विश्लेषण गर्दै नेपाली साहित्यको समालोचनात्मक क्षेत्रभित्र परम्परागत मूल्य र मान्यताले ग्रसित पितृसत्तात्मक समाजमा नारीको स्थान कुन ठाउँमा छ भन्ने कुराको पहिचान गरी राजनीति र समालोचनात्मक क्षेत्रमा नारी प्रतिभाको उपस्थिति आदि विषयलाई त्रिपाठीले आफ्नो समालोचनात्मक लेखनमा स्थान दिएकी छन् ।

पितृसत्तात्मक समाजमा स्थापित विभेदजन्य परम्परागत मूल्य र मान्यताका साथै अन्धविश्वास र आडम्बरयुक्त संस्कृतिको पहिचान गर्दै यसैभित्र जकडिएर पीडित बनेका महिलाहरूको अवस्थालाई प्रस्तुत गर्न पुगेकी त्रिपाठीले महिलाहरू स्वअस्तित्वमा आउन र स्वाभिमानी नारी बन्नका लागि महिला स्वयंलाई अग्रसर बन्न समेत आग्रह गरेकी छन् । समाजमा नारीहरू पछि पर्नाको मुख्य कारण भनेको नारी स्वयं आत्मनिर्भर बन्न नसक्नु र आर्थिक रूपबाट कमजोर हुनुले पनि पुरुषहरूको अधीनमा रही उनीहरूकै सेवामा आफ्नो सम्पूर्ण जीवन समर्पण गर्नुपरेको दृष्टिकोण पनि त्रिपाठीले आफ्ना समालोचनाहरूमा राखेकी छन् । त्रिपाठीले सम्पूर्ण महिलाहरूलाई पितृसत्तात्मक समाजभित्र आफ्नो स्वतन्त्रता, अधिकार र स्वअस्तित्व प्राप्त गर्नका लागि आत्मनिर्भर बन्नुपर्ने सन्देश समेत आफ्ना समालोचनात्मक लेखहरूमा प्रदान गरेकी छन् ।

नेपाली साहित्यका क्षेत्रमा नाटक विधामा पनि त्रिपाठीले तिसको दशक अर्थात् २०३८ सालदेखि नै कलम चलाएकी छन् । उनको हालसम्म निःश्वासका गुजुल्टाहरू शीर्षकको एक मात्र नाटक सङ्ग्रह प्रकाशित भएको छ, जसले उनलाई नाटककारका रूपमा परिचित गराएको छ । नारी

दृष्टिकोणबाट प्रस्तुत भएको नाटकमा पितृसत्तात्मक समाजभित्र देखिएका नारीका विभिन्न समस्याहरू प्रस्तुत भएका छन् ।

कविता विधाबाट साहित्य यात्रा सुरु गरेकी त्रिपाठीले कविता विधामा पनि तिसकै दशकबाट आफ्नो यात्रा सुरु गरेकी छन् । उनका ३६ वटा फुटकर कविताहरू समेटिएको एउटै मात्र कविता सङ्ग्रह **जिराहा वर्तमान** प्रकाशित भएको छ । २०५५ सालपछिको राजनीतिक घटनालाई आफ्नो कविताको विषयवस्तु बनाएकी त्रिपाठीले समसामयिक राजनीतिक व्यवस्थाप्रति व्यङ्ग्य गर्दै विद्रोह समेत प्रस्तुत गरेकी छन् ।

कथाकार त्रिपाठीका रूपमा हालसम्म उनलाई फुटकर कथाहरूले मात्रै चिनाएका छन् । वि.सं. २०३५ अर्थात् तिसको दशकमा नै साहित्यिक पत्रिकामा **विदीर्ण मातृहृदय** कथा प्रकाशित भए पनि हालसम्म कुनै पनि सङ्ग्रह प्रकाशित नभएको जानकारी त्रिपाठीबाट नै प्राप्त भएको छ ।

महिला समालोचक र नेपाली समालोचना, आधुनिक नेपाली उपन्यासमा नारीवादी चेतना, मदनमणि दीक्षितका उपन्यासमा नारीवादी चेतना र लैनसिंह बाइदेलका उपन्यासमा नारीवादी चेतना शीर्षकमा अनुसन्धान गरेकी हुनाले उनी अनुसन्धानकर्ताका रूपमा समेत चिनिएकी छन् ।

यसरी डेढ दर्जनजति कृतिहरू प्रकाशित भइसकेका त्रिपाठीका अझै पनि पौने दर्जन कृतिहरू प्रकाशनोन्मुख अवस्थामा रहेका छन् ।

साहित्यका विभिन्न विधामा आफ्नो परिचयलाई सुरक्षित राख्न सफल त्रिपाठी साहित्यका विभिन्न कार्यक्रमका साथै विभिन्न आधा दर्जनजति साहित्यिक सङ्घ संस्थाहरूमा आवद्ध रहेकी छन् । स्नातकोत्तर शोधपत्रको निर्देशनदेखि लिएर पुस्तकहरूको समीक्षा, भूमिका लेखन लगायत विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रममा कार्यपत्रको प्रस्तुति आदिमा समेत सक्रियता जनाएकी छन् ।

सङ्घर्षशील व्यक्तित्वकी धनी त्रिपाठीले कक्षा छमा अध्ययनरत हुँदा त्यहाँ जिल्ला शिक्षा अधिकारीबाट १०० रूपियाँ प्राप्त गरेकी थिइन् भने हालसम्म दुई दर्जनजति पुरस्कार र प्रशंसापत्र प्राप्त गरिसकेकी छन् । भ्रमणका क्रममा आफ्नै देशका थुप्रै भूभाग घुमिसकेकी त्रिपाठी चीन, भारत र हङ्कङ समेत पुगेकी छन् ।

यसरी साहित्य साधना र सिर्जनाका माध्यमबाट नारी वर्गकै हक, हित र उत्थानमा सङ्घर्षरत त्रिपाठीले नारीकै पक्षधरतामा रहेर साहित्य सिर्जना गरेकी छन् । समतामूलक समाज निर्माणमा

जोड दिएकी त्रिपाठीले आफ्नो कार्यक्षेत्र भने प्राध्यापन पेसालाई नै बनाएकी छन् । दुई दर्जनजति विभिन्न विधामा रचना गरिएका साहित्यिक कृतिहरूले साहित्यको भण्डार भर्न सफल नारी प्रतिभा त्रिपाठीको साहित्यिक क्षेत्रमा विशिष्ट स्थान रहेको छ । उनलाई नेपाली साहित्यमा नारीवादी चिन्तन भित्र्याउने महत्त्वपूर्ण नारी स्रष्टाका रूपमा समेत चिन्तन सकिन्छ ।

सन्दर्भ सामग्री

अधिकारी, ज्ञानु (२०६६), “नेपाली नारी समालोचनाको विकास प्रकृया”, **समकालीन** (वर्ष १९/२०, अङ्क १, माघ-फागुन-चैत्र) पृ. १४३-१५२ ।

.....(२०७०), “समकालीन नेपाली नारी कथामा नारीवादी प्रवृत्ति”, **नेपाली नारीवादी समालोचना**, काठमाडौं : नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, ।

अस्ट्रेलियाका अधिकार वादी वेन (२०६७), “डा. विनायक सेन र जिराहा वर्तमान”, **अन्नपूर्ण पोष्ट** (पुस २४ गते) पृ. ६ ।

कार्की, गीता (२०५७), “व्यक्तित्व परिचय”, **सत्याग्रह** (पुष १० गते), पृ. ६ ।

कोइराला, विदुर (२०५६), “नारी स्वतन्त्रताको आवाज”, **मधुपर्क** (वर्ष ३२, अङ्क ९, माघ) पृ. २४/२५ ।

खड्का, सूर्य (२०५३), “यात्रा निबन्धकार अर्थात् साहित्यकार सुधा त्रिपाठी”, **लोकपत्र** (पुस २० गते) पृ. ४ ।

खड्का, सूर्य (२०५४), “दोलखाकी छोरी अर्थात् साहित्यकार सुधा त्रिपाठी”, **गौरीशङ्कर** (वर्ष १, अङ्क १, कार्तिक ३० गते) पृ. १० ।

गिरी, गोविन्द (२०६०), “सुट, टाई, र सुँगुर”, **गोरखापत्र** (कार्तिक १ गते) पृ. ख ।

गौतम, राजाराम (२०६०), “महिला प्रा.डा. का पीडा”, **कान्तिपुर** (साउन १९ गते) पृ. ६ ।

गौतम, लक्ष्मण (२०७०), “उत्तरवर्ती नेपाली नारीका कविता लेखनमा नारीवादी चेतना”, **नेपाली नारीवादी समालोचना**, काठमाडौं : नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, ।

घर्ती, ओनसरी (२०६९), “महिलाका लागि गतिलो खुराक”, **अभ्युत्थान** (अङ्क २, असोज) पृ. ५२-५५ ।

जयदेव (२०६७), “अमर सिर्जना”, **गोरखापत्र** (वैशाख ४ गते) पृ. ख ।

जिगीषा र जिजीविषा (२०६७), “प्रकाशकीय”, **जिराहा वर्तमान** (कविता सङ्ग्रह), काठमाडौं : जिजीविषा प्रकाशन ।

ढकाल, करुण (२०६४), “बादल, धर्ती र आस्थाहरू : समाज शास्त्रीय पठन”, सिसार (वर्ष २६ विशेष अङ्क, वैशाख) पृ. ९२-९६ ।

ढकाल, वन्दना (२०६८), “साहित्यका सन्दर्भमा नारीवादी विमर्श”, नयाँ पत्रिका (साउन २१ गते पृ. ५ ।

त्रिपाठी, गीता (२०६६), “उत्तरवर्ती नेपाली कवितामा नारी आस्तित्विक चेतना”, नेपाली नारीवादी समालोचना, काठमाडौं : नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान ।

.....(२०६८), वाङ्मय, गोरखापत्र (मङ्सिर) पृ. ख ।

त्रिपाठी सुधा (२०५०), बादल, धर्ती र आस्थाहरू, काठमाडौं : जिगीषा प्रकाशन ।

.....(२०५३), जीवनसूत्र र स्वप्नाभास, काठमाडौं : जिगीषा प्रकाशनका निमित्त रमेश भट्टराई ।

.....(२०५५), निःश्वासका गुजुल्टाहरू, काठमाडौं : नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान ।

.....(२०५९), दृष्टिचौतारी, ललितपुर : साभा प्रकाशन ।

.....(२०५८), भूपिका कवितामा व्यङ्ग्यालङ्कार-चेतना, काठमाडौं : भुँडीपुराण प्रकाशन ।

.....(२०६२), महिला समालोचक र नेपाली समालोचना (सम्पा.), ललितपुर : साभा प्रकाशन ।

.....(२०६५), अमर सिर्जना, ललितपुर : साभा प्रकाशन, ।

.....(२०६७), जिराहा वर्तमान, काठमाडौं : जिजीविषा प्रकाशन ।

.....(२०६७), नारीवादको कठघरामा नेपाली साहित्य, ललितपुर : साभा प्रकाशन ।

.....(मार्च ८, २०१२), नेपाली उपन्यासमा नारीवाद : पद्धति र प्रयोग, काठमाडौं : भृकुटी एकेडेमी पब्लिकेसन्स ।

.....(८ मार्च २०१२), नारीवादी सौन्दर्य चिन्तन, काठमाडौं : भृकुटी एकेडेमिक पब्लिकेसन्स ।

.....(८ मार्च २०१२), **चेलीबेटीका बेगलै कुरा**, काठमाडौं : भृकुटी एकेडेमिक पब्लिकेसन्स ।

.....(२०६९), **सिर्जनवृत्तका परिधिमा गुणराज उपाध्याय**, काठमाडौं : विवेक सिर्जनशील प्रकाशन ।

दाहाल, मनोज (२०५८), “नोराजस्ता पात्र भएनन्”, **कान्तिपुर** (चैत्र २४ गते) पृ. च ।

दाहाल, लोकनाथ (२०६१), **राजवको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन**, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, त्रिभुवन विश्व विद्यालय, काठमाडौं : नेपाली केन्द्रीय विभाग ।

नयाँघरे, युवराज (२०५९), “दृष्टिचौतारी”, **गोरखापत्र** (असार १ गते), पृ. ख ।

निर्मल (२०६९), “सिर्जनवृत्तका परिधिमा गुणराज उपाध्याय”, **गोरखापत्र** (चैत्र १० गते) पृ. ख ।

पन्थी, सीता (२०६९), “नारीवादी लेखनको नमुना”, **कान्तिपुर कोसेली** (कार्तिक १८ गते) पृ. च ।

पराजुली, कमला (२०५६), “नारी संवेदना र निःश्वासका गुजुल्टाहरू”, **समकालीन साहित्य** (पौष ८ गते) पृ. छ ।

पराजुली, कृष्ण प्रसाद (२०५३), “जीवनसूत्र र स्वप्नाभासमा चहार्दा”, **जीवनसूत्र र स्वप्नाभास**, काठमाडौं : जिगीषा प्रकाशनका निमित्त रमेश भट्टराई ।

प्रजापति, रत्न (२०६८), “सम्प्रेषणीय समालोचनात्मक कृति : दृष्टिचौतारी”, **स्पेसटाइम**

(मङ्सिर २३ गते) पृ. २ ।

पौडेल, हेमनाथ (२०६७), “जिराहा वर्तमानका कवितामा प्रतिविम्बित यथार्थ”, **जिराहा वर्तमान**

(भूमिका), काठमाडौं : जिजीविषा प्रकाशन ।

भट्टराई, यादव (२०६०), “सुधा त्रिपाठीको कलम र भूपिको कवित्व”, **छलफल** (जेष्ठ २५ गते) पृ. ६ ।

भण्डारी, कल्पना (२०६९), “त्रिपाठीका तिन नयाँ पुस्तक”, **गोरखापत्र** (असोज २७ गते) पृ. ख ।

भण्डारी, लेखनाथ (२०५२), “सुखको पहिलो सर्त नै समझदारी”, **विमोचन** (वर्ष १५, अङ्क १, चैत्र) पृ. ८ ।

मानन्धर, सुलोचना (२०५५), “निःश्वासका गुजुल्टाहरू : एक दृष्टि”, बुधवार साप्ताहिक (कार्तिक २५ गते) पृ. ३ ।

मैनाली, बिन्दा (२०६७), “जिराहा वर्तमानभित्रको अन्तर्वस्तु”, गरिमा (वर्ष २९, अङ्क ३, फाल्गुण) पृ. १३६ ।

राकेश, रामदयाल (२०५७), “दृष्टिचौतारीको चियोचर्चो”, नेपाल (वर्ष २, अङ्क १५, चैत) पृ. ५० ।

राई, देविका (२०७०), “अमर सिर्जनाभित्रको अमर सिर्जना”, नेपाली नारीवादी समालोचना, काठमाडौं : नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, ।

विवश, ज्ञानेन्द्र (२०५२), “बादल, धर्ती र आस्थाहरू”, परिस्थिति (भदौ ३० गते) पृ. ४ ।

वैद्य, मोहन (२०६७), “नारीवादी कि मार्क्सवादी”, जनएकता (पुस १२-१७) पृ. ४ ।

शर्मा, घनश्याम (२०६६), “मौलिक सिर्जनाको संगालो”, गरिमा (वर्ष २८, अङ्क ३, फागुन), पृ. ११७ ।

शर्मा, बिन्दु (२०६७), “अमर सिर्जनामा मातृत्वबोध”, गरिमा (वर्ष २८, अङ्क ७, असार) पृ. १०६-११० ।

श्रोता, सङ्गीत (२०६६), “अमर सिर्जना : आमाजस्ता निबन्ध”, नयाँ पत्रिका (असोज ३० गते) पृ. ६-७ ।

सुवेदी, कमल (२०५९), “हो भूपि ! जीउन भन् गाहो रहेछ”, कान्तिपुर (पुस २४ गते) पृ. ७ ।

सत्याल, नर्मदेश्वरी (२०७०), “जीवनसूत्र र स्वप्नाभासभित्र पौडिँदा”, शब्दका चिमालहरू, काठमाडौं : आकृति प्रकृति प्रकाशन ।

साउद, भरत कुमार (२०७०), “सुधा त्रिपाठीका नारीवादी निबन्धहरू”, नेपाली नारीवादी समालोचना, काठमाडौं : नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, ।

सुवेदी, राजेन्द्र र गौतम, लक्ष्मण प्रसाद (२०६८), “डा. सुधा त्रिपाठी” (सम्पा.), रत्न बृहत् नेपाली समालोचना (सैद्धान्तिक खण्ड), काठमाडौं : रत्न पुस्तक भण्डार ।

सुवेदी, राजेन्द्र (२०६१), “आधुनिक नेपाली समालेचनाको दोस्रो उठान”, नेपाली समालोचना परम्परा
र प्रवृत्ति, वाराणसी : भूमिका प्रकाशन ।

स्रोत व्यक्तिहरू:

सुधा त्रिपाठी

रमेश भट्टराई

जिगीषा भट्टराई